बाबा कदम

लोगंरची मैना

TABLE OF CONTENTS

शीर्षक पेज
समर्पण
अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
अध्याय 12
अध्याय 13
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 16
अध्याय 17
अध्याय 18
अध्याय 19
अध्याय 20
अध्याय 21
अध्याय 22
अध्याय 23

अध्याय 24

पर्वतीय मैना

उपन्यास

बाबा कदम

दिलीपराज प्रकाशन

प्रकाशक
राजीव दत्तात्रेय बर्वे,
प्रबंध निदेशक,
दिलीपराज पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड,
251 सी, शनिवार पेठ, पुणे - 411030।

वेबसाइट: www.diliprajprakashan.in
ईमेल: info@diliprajprakashan.in

© सौ. कुमुदिनी वीरसेन कदम
'आनंद', बालक मंदिर के पास,
ताराबाई पार्क, कोल्हापुर।

नया संस्करण - 1 दिसंबर 2007

ईबुक: जुलाई 2020

प्रकाशन क्रमांक - १५४६

मुखपृष्ठ - विजय मराठे

या कादंबरितिल इंटरमीडिएट विजन एप्लीकेशन

क्या यह सब

सच है? इसलिए,

सुश्री सुधाताई और श्री प्रभाकर मायदेव

यन्ना सुप्रीम अर्पण

- बाबा कदम

4}}0

4}}0

4}}

अध्याय 1

दोपहर के ढाई या साढ़े दो बजे होंगे। प्रताप ऊपर की गैलरी में बैठकर खेल रहा था। तभी नीचे गली से एक आवाज़ आई।

‘आओ, आओ, आओ, पर्वतीय मैना आ गई है। पर्वतीय मैना आ गई है।’ प्रताप ने गैलरी से नीचे देखा, और जो आदमी चिल्ला रहा था, वह सिर पर टोकरी लिए आगे बढ़ रहा था। प्रताप को समझ नहीं आया कि ‘पर्वतीय मैना’ का क्या मतलब है? वह तीसरी मंजिल पर स्थित झुंझरराव के कमरे में गया और पूछा।

"बड़े पापा, पर्वतीय मैना क्या होती है?" झुंजाराव, जो अपने बाएं हाथ से पलंग पर बैठा था, जम्हाई लेते हुए बोला।

अपने पापा से पूछो।

प्रताप दूसरी मंजिल पर संग्राम के कमरे में आया। "पापा, पहाड़ी मैना क्या होती है?"

संग्राम ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, "मुझे नहीं पता, अपने बड़ों से पूछो।" वहां से प्रताप नीचे भूतल पर आया और स्वेटर बुन रही सरलाबाई से पूछा,

‘‘बडी मॉम, पहाड़ों का महीना कौन सा है?’’

सरलाबाई ने प्रताप को अपने करीब खींचा, हाथ में पकड़ी ऊन की लोई नीचे रखी, प्रताप के माथे पर गिरे बालों को पीछे किया और उसके माथे पर थपथपाते हुए कहा, "अपनी माँ से पूछो।" प्रताप गुस्से में यशोमती के कमरे में चला गया।

वह कोई अंग्रेज़ी किताब पढ़ रही थी। उसके पास एक नोटबुक रखी थी। किताब को एक तरफ रखकर उसने प्रताप को कसकर गले लगाया और कहा, "बेटा, जब तुम बड़े हो जाओगे, तब तुम्हें समझ आएगा कि 'पहाड़ी मैना' का क्या मतलब होता है!"

"मुझे यह समझने दीजिए, अगर आप समझना चाहते हैं, तो मुझे अभी बताइए कि 'पर्वतीय मैना' से आपका क्या मतलब है?"

एक गहरी आह भरते हुए यशोमती ने कहा, "पर्वतीय मैना' इन दो शब्दों का अर्थ समझाने में दो महीने लगेंगे।"

"लेकिन अब मुझे संक्षेप में बताओ, ठीक है?"

"बेटा, उन शब्दों का अर्थ संक्षेप में समझाने की कोई ज़रूरत नहीं है। जाओ, गैलरी में बैठो और खेलो।"
अंत में, यशोमती ने प्रताप को 'पर्वतीय मैना' शब्दों का अर्थ बताने से भी परहेज किया।
प्रताप ऊपर गैलरी में आया। वहाँ उसने अपना खेलने का क्षेत्र बना रखा था। वहाँ एक छोटी बैटरी से चलने वाली ट्रेन थी। एक मोटरबोट भी थी। जब उसने उसमें मोमबत्ती जलाकर उसे पानी से भरे टब में डाला, तो वह टब में ऊपर-नीचे होने लगी। लेकिन उसने खेल पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया।
जब झुंझरराव किसी काम से पुणे और मुंबई जाते थे, तो अपने पोते के लिए तरह-तरह के खिलौने लाते थे। प्रताप जब तक नए रहते थे, दिन-रात उनसे खेलता रहता था। जब तक स्प्रिंग से चलने वाला उछलने वाला कुत्ता नया था, प्रताप उसे अपने बिस्तर पर रखकर सोता था।
झुंजाराव मोरे एक समय कोल्हापुर के एक अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। उनकी तीन पीढ़ियों ने कोल्हापुर के छत्रपति की सेवा की थी। छत्रपति शाहू महाराज के पिता, श्रीमंत अबासाहेब घाटगे, कागल के जागीरदार थे! यशवंतराव और बापूसाहेब उनके दो पुत्र थे। यशवंतराव को कोल्हापुर की गद्दी पर बैठाया गया और उन्हें 'शाहू छत्रपति' नाम दिया गया। हैबतराव मोरे उन साथियों में से थे जो शाहू के साथ कागल से कोल्हापुर आए थे। जब छत्रपति शाहू महाराज इंग्लैंड गए, तो उनके हमउम्र साथी, जैसे पीराजीराव इंगले, बाला कदम आदि भी इंग्लैंड गए।
छत्रपति शाहू ने ब्रिटिश शासकों का गहन अध्ययन किया। इनमें समय की पाबंदी, कूटनीति, जातिवाद को न मानने का उनका रवैया, शिक्षा का महत्व आदि शामिल थे।
भारत के राजकुमारों के बच्चों को इंग्लैंड ले जाने के पीछे ब्रिटिश शासकों का एक खास मकसद था। राजकुमारों को विलासितापूर्ण जीवन जीने का मौका मिलना चाहिए; उन्हें शराब और शराबी लोगों की संगति में रहने का अवसर मिलना चाहिए। उन्हें राजनीति से दूर रखने के लिए, कई कानूनों से भी छूट दी गई थी। भारतीय दंड संहिता राजकुमारों पर लागू नहीं होती थी। शासकों का इरादा भारत में कुछ और वर्षों तक बिना किसी बाधा के सत्ता का आनंद लेना था।

धनी शाहू छत्रपति ने शासकों की भ्रष्ट नीतियों को भलीभांति पहचाना। वे शराब से दूर रहे। साथ ही, उन्होंने अंग्रेजों की जातिविहीन सामाजिक संरचना का गहन अध्ययन किया। जिस प्रकार लंदन की सड़कों की सफाई करने वाला 'जॉन' ईसाई था, उसी प्रकार इंग्लैंड का राजा 'जॉर्ज' भी ईसाई था। उनमें प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक जैसे कुछ मामूली अंतर थे, लेकिन वे आमतौर पर युद्ध नहीं करते थे। हालांकि, अंग्रेजों के आगमन से पहले भारत में सत्रह सौ साठ जातियां और उपजातियां थीं। अनेक धर्म प्रचलित थे। अंग्रेज शासक इन जातियों और धर्मों को लुप्त नहीं होने देना चाहते थे। उनका सिद्धांत था 'बांटो और राज करो'।

इंग्लैंड से लौटने के बाद, धनी शाहू छत्रपति ने अपने राज्य में जातिवाद को समाप्त करने के लिए कदम उठाने शुरू किए। उन्होंने शिक्षा को प्राथमिकता दी और विभिन्न जातियों के बच्चों को शिक्षा की सुविधाएँ प्रदान करना शुरू किया। चूंकि केवल पुरुष ही शिक्षित नहीं थे, इसलिए उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को भी प्रोत्साहित किया। अपने पुत्र की असमय और आकस्मिक मृत्यु से छत्रपति शाहू बहुत दुखी हुए। राजकुमार शिवाजीराजे, जो नेजकुंभोज के जंगलों में जंगली सूअर का शिकार करने गए थे, घोड़े से गिर गए और उनकी मृत्यु हो गई। छत्रपति शाहू के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि हाल ही में बहू के रूप में राजपरिवार में शामिल हुई रानी इंदुमती के साथ आगे क्या किया जाए? राजपरिवार की परंपराओं के अनुसार, उनका पुनर्विवाह संभव नहीं था। इसलिए, छत्रपति महाराज ने इंदुमती को अच्छी तरह से शिक्षित करने और उन्हें डॉक्टर बनाने का निर्णय लिया। लेकिन दुर्भाग्य से, इंदुमती के मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करते ही छत्रपति शाहू महाराज का देहांत हो गया।

हालांकि, शाहू महाराज के करीबी साथी हैबतराव मोरे ने उनकी शिक्षाओं को संरक्षित रखा। उन्होंने अपने बेटे झुंझर में बचपन से ही जाति का सम्मान न करने की संस्कृति को विकसित करना शुरू कर दिया था।

झुंझरराव बहुत ही सौम्य, सुंदर और बहादुर थे। छत्रपति शाहू की मृत्यु के बाद, छत्रपति राजाराम करवीर के सिंहासन पर आसीन हुए। वे स्वभाव से काफी सौम्य और शांत थे। उन्होंने कुछ समय तक समाज को शिक्षित करने के अपने पिता के रिवाज को भी आगे बढ़ाया।

बी.ए. की पढ़ाई पूरी करने के बाद झुंजाराव कानून की पढ़ाई करने पुणे गए। उन्होंने प्रथम वर्ष में ही एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली और उसी समय उनके पिता हैबतराव का देहांत हो गया। अंबवाडे फार्म की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। इसलिए झुंजाराव को अपनी कानून की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर कोल्हापुर लौटना पड़ा। मोरिया परिवार की संपत्ति पन्हाला तालुका के अंबवाडे गांव की सीमा के भीतर थी। गांव में एक बड़ा किला भी था, जिसे मोरिया परिवार का 'किला' कहा जाता था। चिरेबंदी पत्थर से बना यह 'किला' आज भी मजबूती से खड़ा है।

हैबतराव की मृत्यु के बाद, झुंजाराव का विवाह एक वर्ष के भीतर ही हो गया। फलटन के निम्बालकर परिवार की सदस्य सरलताई, मोर्या की बहू बनकर कोल्हापुर आईं। शहर में पली-बढ़ी सरलताई के लिए अंबवाड़ा जैसे गाँव में रहना संभव नहीं था। इसलिए, झुंजाराव ने रंकाला झील के पास एक पुराना मकान लिया, उसे तुड़वा दिया और उसकी जगह तीन मंजिला मकान बनवाया। बाईं ओर एक बगीचा था और दाईं ओर एक घाट और मीनार थी, जिसके सामने रंकाला झील थी, जो हर साल पानी से भर जाती थी।

झुंजाराव ने तीसरी मंजिल पर अपने लिए एक कमरा बनवाया। कमरे के सामने उन्होंने दस गुणा बारह फीट का एक चबूतरा बनवाया। उस चबूतरे से झुंजाराव ने आज तक कई सूर्यास्त देखे हैं। सूर्यास्त के समय पश्चिमी आकाश इतना मनमोहक लगता था कि सूरज डूबने के बाद भी वहां से उठने का मन नहीं करता था।

झुंजाराव और सरलताई दोनों तीसरी मंजिल पर रहते थे।

विवाह के बाद, शर्मीले निम्बालकर परिवार ने जल्दी ही मोर्या परिवार में घुलमिल गए। उनका पहला पुत्र संग्राम था! अपने पिता की तरह ही उनका रंग गोरा था, पर वे थोड़े गुस्सैल स्वभाव के थे। सरला जब संग्राम से पुत्री चाहती थीं, तभी उनके गर्भाशय में कुछ गड़बड़ी हो गई और उन्हें 'आपातकालीन गर्भाशय प्रत्यारोपण' नामक एक कठिन ऑपरेशन करवाना पड़ा। सरलाबाई दर्द से उबर गईं, लेकिन दूसरे बच्चे की उनकी आशा हमेशा के लिए टूट गई। उस क्षण से, उन्हें संभोग का सुख भी नहीं मिलता था।

झुंझरराव संग्राम को ज्यादा पसंद नहीं करते थे। वे कहते थे, 'इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि पिता द्वारा छोड़ी गई एक-दो सौ एकड़ जमीन हमेशा उनके पास रहेगी। खुद के पैरों पर खड़े होने के लिए शिक्षा प्राप्त करो!'

लगभग उसी समय देश स्वतंत्र हुआ। कांग्रेस सत्ता में आई। उस कांग्रेस सरकार में किसानों को खुश करने के लिए वंशवाद लागू किया गया। 'जिसकी जमीन उसी की है' के कानून के तहत किसानों ने मौर्यों की जमीनों पर दावा करना शुरू कर दिया। ठीक वही हो रहा था जिसकी भविष्यवाणी झुंझरराव ने की थी।

झुंजाराव का स्वभाव ऐसा नहीं था कि वे हर दिन उठकर दरबार में जाएँ। उन्होंने अपने कुलों के साथ समझौता करने का निर्णय लिया। उन्होंने कुलों से कहा, 'मुझे केवल पचास एकड़ जमीन दे दो, बाकी तुम आपस में बाँट लो!' इस तरह कुलों को 200 एकड़ जमीन का स्वामित्व प्राप्त हुआ।

अंबावाडे गांव के मुखिया बहुत समझदार थे। उन्होंने हस्तक्षेप किया और झुंजाराव एक मुश्किल स्थिति से बच गए। अगर झुंजाराव को पचास एकड़ जमीन भी मिल जाती, तो भी वे अकेले उस पर खेती नहीं कर पाते। उन्हें अंबावाडे क्षेत्र के किसानों की मदद लेनी पड़ती।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, महंगाई बढ़ने लगी। उन्हें केवल 50 एकड़ ज़मीन से होने वाली आय पर निर्भर रहना पड़ा। बारिश दिन-ब-दिन कम होती जा रही थी और खेतों में काम करने वाले लोग भी नहीं थे। उर्वरकों की कीमतें भी बढ़ती देख झुंझरराव ने जीविका कमाने के लिए कुछ व्यापार करने का फैसला किया।

झुंजाराव के पुराने मित्र दाजीबा घोरपड़े युवावस्था में कुश्ती करते थे। कोल्हापुर राज्य में कुश्ती को बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। चौधरी शाहू महाराज के बाद चौधरी राजाराम महाराज ने भी कुश्ती को प्रोत्साहित करना जारी रखा। मोतीबाग तालीम, गंगावेश तालीम, पताकड़ तालीम, दिलबहार तालीम जैसी कई गल्लूगल्ली तालीमें थीं। साल में तीन से चार बार खासबाग के विशाल मैदान में प्रतिष्ठित कुश्ती प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती थीं। पंजाब, लुधियाना और हरियाणा के प्रसिद्ध पहलवान कुश्ती के लिए कोल्हापुर आते थे और वहां अपना शिविर लगाते थे। उन्हें राज्य से आवश्यक सहायता मिलती थी। जब लोहे की बाड़ को मोड़ने की शक्ति रखने वाले पहलवान शाम को हाथियों की तरह कोल्हापुर की

राजसी सड़क पर चलते थे, तो लोग उन्हें देखने के लिए उमड़ पड़ते थे। उस समय कोल्हापुर में दस से बीस ऐसे पहलवान थे जो उत्तर से आने वाले पहलवानों को चुनौती दे सकते थे। उत्तर से आने वाले पहलवान बहुत बलवान होते थे, जबकि कोल्हापुर के पहलवान रणनीति में माहिर थे। कुश्ती के मुकाबलों के दौरान, खासबाग का मैदान, जिसकी बैठने की क्षमता पांच लाख लोगों की थी, लोगों से खचाखच भरा रहता था। पुराने पहलवानों का विशेष सम्मान होता था। अनुभवी पहलवान, जो नए पहलवानों को कुश्ती की रणनीति सिखाते थे, उन्हें 'वास्ताद' कहा जाता था। कुछ लोग वास्तादों को 'उस्ताद' भी कहते थे। यह उस्तादों की पहचान का एक तरीका था। उनके दोनों कान घंटी की तरह फूले हुए होते थे और चलते समय वे ऐसे डगमगाते थे मानो बाहों में गेंद पकड़े हों। ये उस्ताद कमर पर लुंगी और ऊपर मलमल की कमीज पहनते थे। वे गले में चांदी का डिब्बा पहनते थे।

दाजीबा घोरपड़े उस्ताद के पास दो गाड़ियाँ थीं। वे कोल्हापुर, जोतिबा और पन्हाला जैसी सड़कों पर चलते थे। लेकिन बाद में दाजीबा उस्ताद के लिए यह धंधा चलाना मुश्किल हो गया।

उस दिन जब झुंजाराव गंगावेश तलमी से मंदिर के लिए निकल रहे थे, तो दाजीबा ने उन्हें देखा और आगे आकर उनका अभिवादन किया और कहा, "सरकार, क्या आप आज शाम गांव आए थे?"

झुंजाराव को अपनी मूंछें घुमाने का शौक था। उन्होंने दाजीबा का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और कहा, "दाजीबा, अगर तुम कुश्ती छोड़ कर कार खरीद लो, तो मुझे भी कोई व्यवसाय सुझा दो! खेती में अब कोई जान नहीं बची है। जमीनें कुलों को दे दी गईं और उन्होंने मुझे 50 एकड़ जंगल देने का वादा किया, लेकिन गांव के लोग भी अब मेरे प्रति वफादार नहीं रहे!"

"'अक्षी, आपने बहुत अच्छा कहा, महोदय! मलाबी के महान महाराजा ने मुझे कट्टयान में यह एक एकड़ ज़मीन दी थी। मैं इसे समतल करके इसमें खेती करता! लेकिन जैसा कि आपने कहा, खेती के लिए क्या बचा था?' लेकिन क्या मैं आपको कुछ बता सकता हूँ, महोदय?"

‘‘सांग की.’’

"तुम अपने खेत में एक लंबा घर बनाओ! जब ज़मीन का मालिक तुम्हारी आँखों के सामने प्रणाम करे, तो कोई छल नहीं चलेगा! बीज बोने के बाद मैंने खेत में घर बनाया, लकड़ी के दो टुकड़े घर में आ रहे हैं, इसलिए कुछ नहीं कहा गया।"
"लेकिन मैं सिर्फ खेती पर निर्भर नहीं रह सकता। खर्चे बहुत ज्यादा हैं। मुझे कोई दूसरा व्यवसाय सुझाइए!"
सूजे हुए कान के लोबों पर हाथ फेरते हुए उस्ताद ने कहा, "क्या तुम बूढ़े ज्योतिबा पनाला का हाथ पकड़ोगे? मैं तुम्हारा हाथ काट डालूंगा!"
झुंजाराव ने कहा, "लेकिन ज्योतिबा पन्हाला जाने के लिए प्रतिदिन कितने लोग आएंगे-जाएंगे?"
"गगन बावड़ा, मैंगो, ईशालगढ़, आदि की सेवाओं की प्रशंसा करके शुरुआत करें!"
"ठीक है। आपके सुझाव पर विचार करने में कोई समस्या नहीं है।" उस रात, उन्होंने सरलाबाई को उस्ताद घोरपड़े का सुझाव बताया। सरलाबाई ने कहा, "मोटर व्यवसाय में कोई प्रतिष्ठा नहीं है, सरकार!"
“ये प्रतिष्ठा तो वाकई चौंकाने वाली है। ईमानदारी से व्यापार करके जीविका कमाने से कौन डरता है? हमारे महल के वे लोग जो खुद को सरकार और जमींदार कहते हैं, इसी प्रतिष्ठा के बल पर बर्बाद हो गए। उन्होंने अपने पूर्वजों की जमीनें कौड़ियों में बेच दीं। हम देख सकते हैं कि अब उनकी क्या हालत है, है ना? हमारे जाधवराव के बेटे ने पुणे में एक होटल खोला। तब हमारे जाति भाइयों ने कहा, ‘आखिरकार तुमने लोगों का पैसा लूटने का पेशा ही चुन लिया है, है ना?’”
जाधव राव ने लोगों की बातों को अनसुना करते हुए ईमानदारी से होटल चलाया। आज उनके दोनों बच्चे विदेश में पढ़ाई कर रहे हैं! बच्चे अभी बीस-पच्चीस साल के भी नहीं हुए हैं कि लोग उन्हें राजाओं और राजकुमारियों की बेटियाँ कहने लगे हैं!
अगर संग्राम अच्छे से सबक सीख लेता है, तो मैं चाहता हूं कि वह बैरिस्टर बने।
मैं कानून की पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाई। क्या अबासाहेब के असमय निधन के कारण मुझे कानून की पढ़ाई बीच में ही नहीं छोड़नी पड़ी? अब कम से कम मेरा बेटा मेरी अधूरी इच्छा पूरी कर दे।

"संग्राम कितना होशियार है!"
"वह होशियार तो है, लेकिन दूसरे क्षेत्रों में! पिछले दिनों मेरी मुलाकात न्यू हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक से हुई। उन्होंने बताया कि संग्रामबल खेलों में तो होशियार है, लेकिन पढ़ाई में उतना ध्यान नहीं देता जितना देना चाहिए।"
"आप हर साल पास होते हैं, है ना?"
"पास? क्या आपको पता है पास कैसे होते हैं? मैंने सुना है कि आप नकल करते हैं! इससे मेरे अधूरे सपने कैसे पूरे होंगे?"
"वे अभी बहुत छोटे हैं, सांगुबल।"
"'जवान? अरे, तुम अठारह साल के घोड़े हो? तुम तीन बार मैट्रिक परीक्षा में फेल हो चुके हो। नकल करके पास नहीं हो सकते! तुम ही हो जो जवान हो, तुम ही हो जो जवान हो।"
घर में जब भी कोई बात होती, चर्चा संग्राम पर ही आकर रुक जाती थी। झुंझरराव उसकी आलोचना करते और सरलाबाई उसका पक्ष लेतीं। 'संग्राम, आज मैं शिकार पर जाना चाहता हूँ,' वह कहता और हम तैयार हो जाते! क्या हम शिकार नहीं करते थे? लेकिन अबासाहेब ने हमें 25 साल की उम्र में हमारी पहली बंदूक दी थी। हम मानते हैं कि शिकार करना मोर्या परिवार के खून में है। लेकिन यह गुण तो उनके खून में कुछ ज़्यादा ही है! पहले खुद कुछ पैसे कमाओ, फिर शिकार पर जाओ। कौन मना करता है?'
तभी संग्राम एक हॉकी स्टिक लेकर आया, जिसे वह झुंझरराव की लघु प्रतिकृति समझ रहा था। संग्राम उनके चेहरों के भावों से समझ गया कि उसके माता-पिता ने हाल ही में उसके बारे में चर्चा की थी। आजकल वह झुंझरराव का चेहरा देखने से बच रहा था।
वह बाथरूम गया और उसने अपने हाथ-पैर धोए। तौलिए से चेहरा पोंछकर वह रसोई में चला गया। झुंझरराव तिरछी निगाहों से उसकी हरकतों को देख रहा था।
रसोई में सरलाबाई ने दूध गर्म किया और उसे एक कप में डाला। संग्राम ने अलमारी से एक चम्मच बोर्नविटा निकाला और उसे दूध में डाल दिया।
"माँ, मुझे आज बहुत भूख लगी है। मुझे क्या खाना चाहिए और क्या साथ ले जाना चाहिए?"
"क्या मैं आपको कुछ बिस्कुट दूं?"
"दे दो। लेकिन मुझे चॉकलेट क्रीम वाला दो, पार्ले वाला नहीं! मुझे वो पसंद नहीं है।"

हॉल के बाहर बैठे झुंझरराव, मां-बेटे की ये बातचीत सुन रहे थे और मुट्ठी बांधकर अपनी मूंछें घुमा रहे थे। संग्राम का दूध पीकर बाहर आने पर झुंझरराव ने कहा, "अगर इस साल मैट्रिक पास नहीं हुए तो अंबवाड़ा में ही रहकर खेती कर लेना! नहीं तो, जैसा दाजी घोरपड़ा ने सुझाव दिया है, हम गगनबावाड़ा-विशालगढ़ सेवा शुरू करने जा रहे हैं। ध्यान रखना।"

संग्राम गोरा था, उसकी नाक और होंठों पर तलवार के आकार का निशान था, और एक नया तिल अभी-अभी निकला था। उसे अपने सिर और माथे पर उगे बालों को पीछे की ओर संवारने की आदत थी। उसे देखकर झुंझरराव ने कहा,

"पहले तालुक्य में इस जंगल को कम करो! नाटक और सिनेमा जगत के लोगों को ऐसे पेड़ उगाने चाहिए!"

संग्राम सिर झुकाए चुपचाप झुंझरराव का उपदेश सुन रहा था। उसमें झुंझरराव के विरुद्ध बोलने का साहस नहीं था। वह चुपचाप उनकी हर बात सुनता रहा, और उसे पूरा विश्वास था कि एक बार जब वह चला जाएगा, तो सब कुछ भूल जाएगा।

"जाओ, और 7:30 बजे तक घर वापस आ जाना! किसी चट्टान पर बैठकर उड़ते हुए लड़कों से मत लड़ना!"

सरलाबाई ने भी झुंझरराव का भाषण चुपचाप सुना। जब उन्हें उस दिन रुकने की अनुमति नहीं मिली, तो उन्होंने कहा,

सरकार, आपके समय में हालात अलग थे। अब समय बदल गया है। आज के युवा इसी तरह व्यवहार करेंगे!

"बैसाहेब, आपने उसे बहुत बिगाड़ दिया है! अगर एक दिन वह पश्चाताप का समय न लाए, तो मुझसे पूछना?"

झुंजाराव अपनी सीट से उठ खड़े हुए और मुट्ठी बांधकर अपनी मूंछों को सहलाने लगे।

अध्याय दो

गंगावेशी स्थित मौर्य परिवार के पुराने महल का जीर्णोद्धार किया गया। रंकाला में ज़मीन खरीदने से पहले झुंझरराव इसी महल में रहते थे। यहीं पर सरलाबाई ने मौर्य परिवार की बहू बनकर दहलीज पर रखे अनाज के बर्तन को पैर से धकेल कर घर में प्रवेश किया था। दो साल बाद, संग्राम का जन्म भी इसी महल के एक अंधेरे कमरे में हुआ था।

हालांकि झुंजाराव रंकालियार स्थित घर में रहने लगे थे, फिर भी वे दिन में कम से कम एक बार पुराने महल में टहलने जरूर जाते थे।

कुम्भरगल्ली से गंगावेशी की ओर जाने वाली इस सड़क पर मौर्यों के महल के सामने एक बड़ा बोर्ड लगाया गया था।

झुंझरराव मोरे (अंबावडेकर), 'झुंझर मोटर सर्विस' के मालिक।

दाजी घोरपड़ा की गाड़ियाँ पुरानी थीं। उन्हें लक्ष्मीपुरी के कबाड़खानों में बेच दिया गया। झुंझरराव ने फोर्ड कंपनी से चार सर्विस कारें खरीदीं। उनमें से दो, कोल्हापुर गगनबावड़ा और दो अन्य गाड़ियाँ, कोल्हापुर-विशालगढ़ मार्ग पर चलने लगीं। हर गाड़ी में दो लोग होते थे: एक ड्राइवर और एक सफाईकर्मी! सफाईकर्मी यात्रियों से पैसे वसूलने का काम करता था। ड्राइवर को गाड़ी चलाने के साथ-साथ मैकेनिक का काम भी करना पड़ता था।

कार में ड्राइवर के बगल में आगे की सीट थी और पीछे की तरफ एक क्षैतिज सीट थी। उसके पीछे, दोनों तरफ दो बेंच थीं, और बीच में खाली जगह थी जिसमें यात्री बैठे थे।

झुंजार मोटर सर्विस शुरू होने से पहले, दोनों संस्थाएँ आपस में विलय हो चुकी थीं। झुंजारराव ने महाराजा के मोटर गैराज में काम कर चुके अनुभवी ड्राइवरों और सफाईकर्मियों को काम पर रखा। इसलिए, मोटर व्यवसाय में अक्सर पाई जाने वाली धोखाधड़ी का कोई नामोनिशान नहीं था। यदि सफाईकर्मी यात्री से पैसे लेते समय चार से आठ आना कम पड़ जाते थे, तो वह उन्हें अपनी जेब में रख लेता था और यात्री को उसके गंतव्य तक पहुँचा देता था।

उस सेवा के लिए कोई समय सारिणी नहीं थी। जब गाड़ी भर जाती थी, तो सफाईकर्मी सीटी बजाता था। चालक गाड़ी स्टार्ट करता था। यात्री को रास्ते में कहीं भी हाथ हिलाना पड़ता था। गाड़ी रुक जाती थी या यदि कोई यात्री बस्ती में किसी घर जाना चाहता था, तो सफाईकर्मी उसके अनुरोध पर गाड़ी रोक देता था।

धीरे-धीरे झुंजार ट्रांसपोर्ट कंपनी लोकप्रिय हो गई। ड्राइवर का वेतन, सफाईकर्मी का वेतन, पेट्रोल और परिवहन खर्च काटने के बाद, झुंजारराव प्रतिदिन लगभग 100-1400 रुपये कमाने लगे।

किसी में भी यह पूछने की हिम्मत नहीं थी कि आप इस लाइट मोटर व्यवसाय में क्यों हैं।

झुंजाराव का आने-जाने वाले किसानों के साथ घनिष्ठ संबंध धीरे-धीरे गहराता गया। झुंजाराव जातिगत भेदभाव के घोर विरोधी थे। वे सभी जातियों के लोगों के साथ समान व्यवहार करते थे। उन्होंने अपने ड्राइवर-सफाईकर्मी को भी यही निर्देश दिया था। सफाईकर्मी बूढ़े, विकलांग और दिव्यांग यात्रियों का हाथ पकड़कर उन्हें गाड़ी में बिठाता था।

अंबा, मलकापुर, विशालगढ़ और उदगीर के वन प्रभाग में झुंझरराव का विशेष लगाव था। क्योंकि उस जंगल में शिकार के भरपूर अवसर थे। उदगीर में धनगर समुदाय की बड़ी आबादी थी। झुंझरराव का उनमें से मंगू धनगर समुदाय से घनिष्ठ संबंध था।

छह-सात साल पहले, मई के महीने में, दोपहर करीब 2:30 या 3:00 बजे, एक अधेड़ उम्र का धनगर एक टोकरी में कोंकण का करवंदा और जाम्भल बेच रहा था और चिल्ला रहा था, "देखो, पहाड़ का मैना आ रहा है, देखो, पहाड़ का मैना आ रहा है।" उसके पीछे उसकी आठ-नौ साल की गोरी ज़िपरी बेटी बिंदीदार स्कर्ट पहने चल रही थी। उसके सिर पर भी एक छोटी टोकरी थी। सरला की लड़कियों को करवंदा खाने की इच्छा हुई। उन्होंने धनगर को महल में बुलाया। सिर से टोकरी उतारकर नीचे रखते हुए उसने लड़की की ओर देखा और कहा, "शेवा, अपनी टोकरी नीचे रख दो!"

सरलाभाई ने मंगू से पूछा, "उसका नाम। तुमने उसका क्या नाम बताया था?"

"उसका नाम शेवंता है, हम उसे 'शेवा' कहते हैं!"

"मुझे एक रुपये के सिक्के दो। क्या वे नए हैं?" सरलाबाई ने पूछा।

‘‘चलो, इसे अपने मुंह में डालो, अक्का, और उठ खड़े हुए पहाड़ों में नफरत देखो! अब, शर्म से लाल हो जाओ!’’

"जब मैं बच्चा था, तो मैं अपने पिता के साथ कोंकण में शिकार पर जाया करता था, और जब वे चले जाते थे, तो मैं वहाँ के विश्राम गृह के पीछे घूमता रहता था! अरे, मुझे डालियों को हाथों से

तोड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। मैं डाली को मोड़कर अपने मुँह तक लाता था और बिना छुए ही खा लेता था! आपको क्या लगता है उसका स्वाद कैसा होता होगा?"
"यह बीज बिल्कुल वैसा ही है। कल मैंने इसे अपनी माँ के हाथों में तोड़ा था।" सरलाबाई ने अपने द्वारा लिए गए बीजों को पानी में भिगोया और उनमें से एक को अपने मुँह में डालते हुए, लड़की को ध्यान से देखते हुए कहा,
‘‘क्या तुम अंत में स्कूल जाओगे?’’
"तुम इतने बूढ़े कैसे हो गए कि तुम्हें मालिक का पता तक नहीं पता!"
लेकिन इतनी जल्दी शादी मत कर लेना!
"मैं ऐसा कहता हूं, लेकिन हमारा समुदाय अभी भी यहीं है। जल्द ही, मैं शेवांता को अपना पति कहूंगा।"
"लेकिन अब यह कानून है। 18 साल की उम्र से पहले किसी लड़की की शादी करना अपराध है। उसकी शादी कराने वाले माता-पिता पर जुर्माना और सजा भी हो सकती है।"
शेवंता, जिसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसकी शादी पर उस महल में चर्चा होगी, अप्रत्याशित रूप से हंसी का पात्र बन गई।
"अगर हद से ज्यादा हो जाए, तो उसे और सिखाओ!"
"अक्कासब, तुम क्या सीख रहे हो?"
घर पर कौन है?
“शेवंता के अलावा कोई और तीसरा सदस्य नहीं है। उसकी माँ का निधन तब हुआ जब वह डेढ़ साल की थी।”
"आप गर्मियों में ये बैंगनी शकरकंद बेचते हैं। आप और क्या व्यवसाय करते हैं?"
‘‘मगिंद्या में भेड़ें थीं, और वे मर गईं। अब सात-आठ गायें और एक भैंस है!”
जब वे अभी बात ही कर रहे थे, झुंझरराव बाहर से महल में आए। उन्होंने अपने खनकते जूते उतारे और दहलीज के पास रख दिए। उन्हें देखकर सरलाबाई ने अपने सिर से घूंघट हटाया। सरलाबाई को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, “देखो ये करवंद! खराब करवंद बीमारियों को ठीक कर सकता है!”

"मेरे पास एक विचार है। इसीलिए मैं इसे नमक वाले पानी में डालकर खाता हूँ। आप किस गाँव से हैं?"
"उदगीर के पास हम धनगरों की एक बस्ती है! अगर तुमने उदगीर के पहाड़ों पर हमला किया होता, तो मैं वहाँ होता।"
"पांच से पचास लोग आ रहे हैं। आप अपनी पहचान किस रूप में बताएंगे? तो उस क्षेत्र में अभी क्या स्थिति है?"
"अरे वाह, ये तो अच्छी बात है। लेकिन फिर एक तेंदुआ आता है और एक गाय को मार डालता है!"
"हमें यहाँ से जाना होगा! जंगल सिकुड़ते जा रहे हैं। वे जानवर कैसे जीवित रह पाएंगे?"
जब वे दोनों इस बारे में बात कर रहे थे, सरला ने पिता और बेटी के लिए चाय बनाई। उसने बिस्कुट एक तश्तरी में रखे। उसे देखकर मंगू ने हिचकिचाते हुए कहा।
"तुम इतने गुस्से में क्यों हो? क्या हमें सुबह भुनी हुई बंगला और नाचन्या रोटी खानी चाहिए?"
"रहने दो! इस तरह एक कप चाय से कुछ नहीं होगा। पी लो!"
गांवों से लोग शिकार की वर्दी पहनकर झुंझरराव आते थे। उस समय उनका भी चाय से स्वागत किया जाता था। मोर्या परिवार में सभी के साथ समान व्यवहार किया जाता था।
चाय पीने के बाद सरलाबाई ने कर के पैसे दिए, लेकिन मंगू ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। तब सरलाबाई ने कहा, "अरे, पैसे ले लो, तुम इतनी दूर से आए हो, इतनी धूप में इस बोझ को सिर पर लेकर घूम रहे हो, इस मेहनत का कुछ तो इनाम मिलना चाहिए!"
‘‘नांग नांग अक्कासाब। आज सरकारें एक-दूसरे के करीब आ गईं, और मैं संतुष्ट था। “अक्कासाहब, मोर सरकार हमारे पक्ष में नहीं है! मैंने उन्हें एक-दो बार उनके शिकारी की पुकार पर देखा है!”
“अच्छा, अगर तुम कभी-कभार आती रहो, तो आती रहो।” मोरे परिवार के मंगू धनगर का स्नेह धीरे-धीरे बढ़ रहा था। वह हमेशा शिकेकाई, रिठे और आमला को पहाड़ों से लाकर सरलाबाई को दे देते थे! शेवंता हमेशा मंगू के साथ नहीं आती थी, लेकिन सरलाबाई हर बार उसे अपनी बहन की बेटी के पुराने शहर के कपड़े, जैसे फ्रॉक, स्कर्ट, ब्लाउज और सलवार कमीज दे देती थीं! दरअसल, सरलाबाई को शेवंता से प्यार हो गया था। गोरी रंगत वाली

शेवंता कुछ हद तक बेबस थी। उसकी बेटी की चाहत कभी पूरी नहीं हो सकती थी। इसलिए वह अपनी बहन की बेटी को भी पाने की लालसा रखती थी। नन्ही चंदा भी कभी-कभार मोरे के महल में रहने आती थी!

दिन बीतते गए। एक दिन, मंगू धनगर जल्दी में आया और झुंझरराव के चरणों में सिर झुकाकर रोने लगा। झुंझरराव समझ नहीं पाए कि क्या हुआ है। उन्होंने उसे अपने पैरों से उठाया और पूछा, "क्या तुम मुझे बताओगे कि क्या हुआ है या नहीं?"

मंगू ने आह भरते हुए बोलना शुरू किया।

मैं सरकार के भरोसे नहीं रहता। मेरी दूध देने वाली गाय को बाघ ने मार डाला था।

"क्या आपका मतलब 'टूटा हुआ' था?"

‘‘हां, जी! मैं पहले दूध दुहने वाली गाय हुआ करती थी!

"जो हो गया उसका शोक मत मनाओ। मैं तुम्हारे साथ आ रहा हूँ। हम कल बात करेंगे। जब तक वह तेंदुए को नहीं मार देता, मैं वापस नहीं आऊँगा!"

बाद में मंगू ने सरलाबाई को सच बताया। सरलाबाई के प्रति सहानुभूति जताते हुए सरलाबाई ने कहा, "लेकिन क्या आप ग्रामीणों को बाघ के बारे में पहले से पता नहीं था?"

‘‘जंगल स्थापित हो चुका है। ग्रामीणों ने वन विभाग में आवेदन किया था। वन अधिकारी ने कहा, बाघ को जानवर को नुकसान पहुँचाने दो, फिर हम देखेंगे! जब मेरी गाय घायल हो गई, तो मैं वन विभाग गया और उन्होंने कहा, हम उसमें पिंजरा लगा देंगे! आठ दिन बीत गए हैं और उसका कोई पता नहीं चला है!’’

"सरकारी कामकाज ऐसे ही चलता है! हमारी सरकार आएगी और इसे संभाल लेगी! क्या शेवांता ठीक है?"

"हाय जी। वह गयारा के साथ उसी जगह गई थी। वह रोते हुए वापस आई और बोली, ''

"मंगू। लेकिन इतनी बड़ी गाय बाघ को नहीं मार सकती!"

‘‘यह एक गाय है, और उसका शव वहीं पड़ा है।’’

झुंजाराव मोरे मंगू के साथ उदगीर आए। उनके आने की खबर सुनते ही धनगरवाड़ा की एक बड़ी भीड़ जमा हो गई। उन्होंने बताना शुरू किया कि उन्होंने बाघ को कब और कहाँ देखा था। झुंजाराव ने अब तक जितने भी बाघ मारे थे, वे सभी आदमखोर थे। उन्होंने उनका गहन

अध्ययन किया था। स्तब्ध धनगर को दिलासा देते हुए उन्होंने कहा, “अगर तुम बाघ को पकड़ लोगे, तो बच नहीं पाओगे।”

लेकिन सरकार का कहना है कि 'फरिश्तार' में तेंदुओं को मारना प्रतिबंधित है।

"उसके पिता के दफ्तर में बैठकर प्रतिबंध लगाने का क्या मतलब है? देखते हैं कानून तोड़ने पर उसे क्या सजा मिलती है?"

झुंजाराव ने कानून का खूब अध्ययन किया था। 'जीवन और संपत्ति की सुरक्षा का अधिकार' शीर्षक वाला अनुच्छेद बहुत स्पष्ट था। किसी व्यक्ति को अपने जीवन को खतरे में डालने वाले या अपनी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाले किसी भी व्यक्ति को रोकने का अधिकार है। यह अनुच्छेद मुख्य रूप से मनुष्यों के मामले में लागू होता था! लेकिन यहाँ, अगर जंगल में एक तेंदुआ दिन दहाड़े धनगरों की गायों को मारने लगे, तो क्या ग्रामीणों को चुपचाप बैठकर देखना चाहिए? यह वन विभाग बेकार है। अगर कोई बाघ किसी व्यक्ति को नुकसान पहुंचाता है, तो वे उसे देख सकते हैं! किसी व्यक्ति की जान जाने के बाद वे क्या देखेंगे?

वन विभाग झुंझरराव को जानता था। वह उस क्षेत्र का एक प्रसिद्ध शिकारी था। उसके खिलाफ कोई भी शिकायत दर्ज करने से पहले वन विभाग को दो बार सोचना पड़ता था।

अगले दिन, सभी ग्रामीणों ने शोर मचाया। झुंझरराव अपनी 'थर्टी स्प्रिंगफील्ड' राइफल को 'भरी हुई' स्थिति में लेकर उस जगह बैठ गए जहाँ बाघ के आने की संभावना थी। जब भी बाघ उनके सामने आता, झुंझरराव की गोली उसे लगने ही वाली होती थी। ग्रामीण अपनी जान के डर से चीख-चिल्ला रहे थे और हाथों में पकड़े केरोसिन के डिब्बे फूंक रहे थे। उसी क्षण, उन्हें किसी जानवर के फूंक मारने की आवाज सुनाई दी। झुंझरराव ने अपनी बंदूक उठाई। लेकिन वह एक भेड़िया था जो फूंक मारते हुए आ रहा था। झुंझरराव ने अपनी राइफल उठाई। वह भेड़िये का शिकार करने नहीं आए थे।

सुबह करीब नौ बजे तक ग्रामीणों का शोरगुल जारी रहा। ग्रामीणों के गले में 'हू' की आवाज गूंज रही थी। वे हाथ हिला रहे थे और गोलियां चला रहे थे, लेकिन बाघ उन सभी से बच निकला। लोगों को नहीं पता था कि वह कब और कहाँ गायब हो गया। सूरज डूबने के बाद शोरगुल बंद हुआ। झुंझरराव अपनी सीट से उठे। मंगू धनगर ने निराशा से कहा।

"सरकार, तुम जानवर बन जाओगी। तुम उस गांव की चीखों से बच निकली हो जो कभी इतना गौरवशाली था।"
"हाँ, लेकिन हमें उसे हर हाल में मारना होगा। नहीं तो, इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि वह आदमखोर बन जाएगा। क्या इससे पहले किसी ने उस पर गोली चलाई थी? मैंने आज सुबह पानी पर उसका शव देखा। उसका दाहिना पिछला पैर कटा हुआ होना चाहिए। इसीलिए तुम्हारी गाय को मारने के बाद उसने सिर्फ गाय का खून पिया। आम तौर पर, बाघ को गाय को घसीटकर ले जाना चाहिए था।"
"हमें लगा कि यह एक मज़ाक था! लेकिन आपका अनुमान बिल्कुल सही है, महोदय, त्योहार के दिन मगिद्या गांव के लोगों ने नारा लगाया, और फिर माया धांगरा ने अपनी थ्रेशिंग मशीन का डंडा उस पर फेंक दिया, और फिर उसका पैर टूट गया!"
"हाँ, लेकिन ऐसे जंगली जानवरों को बांधकर नहीं छोड़ना चाहिए। समय के साथ वे नरभक्षी बन जाते हैं। अब, तेंदुए का दाहिना पैर घायल हो गया था, इसलिए वह अपने मारे हुए जानवर को घसीट नहीं सका! जब इस बाघ जैसा जानवर कमजोर हो जाता है, तो वह निश्चित रूप से नरभक्षी बन जाएगा।"
"ऐसा सरकार क्यों कर रही है?"
जाते हुए झुंझरराव ने कहा, "अरे, इस दुनिया में सबसे आसानी से मारा जाने वाला जानवर कौन सा है? इंसान! उसमें न तो हिरण जैसी ताकत होती है, न ही भेड़िये जैसी फुर्ती। जब कोई बाघ अचानक हमला करे तो इंसान के लिए उसके चंगुल से बच निकलना मुश्किल हो जाता है!"
इस पर चर्चा करते हुए सभी लोग मंगू की बस्ती में लौट आए। सूर्यास्त से कुछ ही समय पहले का समय था। डूबते सूरज की सुनहरी किरणें जंगल पर फैल रही थीं। ठंडी हवा चल रही थी। वातावरण सुहावना था। लेकिन झुंझरराव और गाँव के लोग कुछ परेशान थे। बाघ ने उन सबको डराकर भगा दिया था और मार डाला था।
मोरे सरकार आज भी धनगर वाडी में ही रहेगी।
"मंगू, आज दोपहर के खाने में क्या खा रहे हो?"

मैं क्या करूँ? क्या मैं अंडे का सूप बना दूँ? क्यों न तुम मुझे अपनी बारह कमर दे दो, और मैं देखूँगी कि क्या मुझे पेड़ पर बैठी कोई मुर्गी मिल सकती है!

झुंजाराव अपने साथ दो बैरल वाली 12 बोर की बंदूक लाया था। उसने उसे थैले से निकाला, मंगू को दिया और कहा, "बस चारों ओर देखो और एक गोली चलाओ। ये कारतूस ले लो!"

"हमें इसकी चिंता क्यों करनी चाहिए, सरकार? मैं तो बस पेड़ पर बैठे मुर्गे को मारना चाहता हूँ।"

मंगू झुंजाररराव को बस्ती में छोड़कर, वह अकेले ही 'लालपानी' नामक एक पहाड़ी धारा के पास आया।

लालपानी उस इलाके में एक ऐसा जलस्रोत था जो बारह महीने तक कभी सूखता नहीं था। हर शाम जंगली मुर्गा कस्तर पानी पीने आता था। जी भरकर पानी पीने के बाद वह फड़फड़ाता और पास के किसी पेड़ या गूलर के पेड़ पर बैठ जाता। मंगू लालपानी आया और जंगली मुर्गों का एक झुंड पानी पीने आया। सबसे पहले कुरेबाज़ तुरेवाला नाम का मुर्गा आया। वह चारों ओर बड़ी सावधानी से देख रहा था। उसे डर था कि कहीं कोई जंगली बकरी या नेवला उस पर हमला न कर दे। जंगली पक्षी पानी पीने आया और अपने मुंह से 'क्रैक क्रैक' की आवाज़ निकालकर झुंड के दूसरे मुर्गों को चेतावनी देने लगा। उसके आदेश पर, बाकी मुर्गे सबसे पहले पानी पीने लगे, जबकि झुंड के मुखिया पीछे रहकर उन पर नज़र रखते रहे। जब सारे मुर्गे पानी पी चुके, तभी उसने अपनी चोंच पानी में डाली।

किनारे झाड़ियों में छिपा हुआ मंगू, धुंधली रोशनी में उसे साफ देख सकता था। लेकिन मंगू का मन उस पर हमला करने का नहीं हुआ। उसका मन सात-आठ महिलाओं को बेबस और असहाय करने का नहीं हुआ।

मुर्गे ने बड़ी सावधानी से अपनी प्यास बुझाई और झाड़ियों में गायब हो गया। मंगू ने उसी शिसवी के पेड़ की चोटी पर एक छोटी मुर्गी को बैठे देखा, जिसके नीचे वह बैठा था, और उसे गोली मार दी। घायल मुर्गी अपने पंख फड़फड़ाते हुए नीचे गिर गई। धड़ाम से उसकी आवाज बंद हो गई। मंगू ने उसे टांगों से पकड़कर उठाया। उसने अपनी बंदूक कंधे पर रखी और बस्ती की ओर चल पड़ा। जाते-जाते वह मुर्गी के पंख नोचने लगा।

यहां, बस्ती में, झुंजाराव एक बेंत की कुर्सी पर आराम कर रहे थे। पूर्णिमा एक-दो दिन पहले ही आ चुकी थी, इसलिए चांदनी खूब चमक रही थी। अनगिनत जुगनू पेड़ों की चोटियों पर लगे सामूहिक दीयों को रोशन कर रहे थे। बुलबुल भी गा रही थीं। धुंधली रोशनी में, झुंजाराव को भय का आभास हुआ। उन्होंने कहा।

"क्या, तुम्हें मुर्गी मिल गई? मैंने तो सुना था कि वह एक बार है।"

मंगू पडवी के पास आया। तब तक वह सभी मुर्गों का छिलका उतार चुका था। उसने शेवंता को पुकारा, "आओ और थाली खा लो, मेरी प्यारी!"

"क्या तुम्हें चिकन मिल गया?"

"हे भगवान, तुम तो डरपोक हो। लेकिन तुमने मुझे मारा नहीं!"

"तुमने मुझे क्यों नहीं मारा!"

सरकार के व्यवहार के बारे में मैं क्या कहूँ? मुझे उसे मारने का मन ही नहीं हुआ!

"यह एक कुशल शिकारी की निशानी है। शिकार किया भी जाए तो उसकी कुछ सीमाएँ होती हैं। इसके अलावा, एक कानून है जो पानी के पास आने वाले पक्षियों और जानवरों को मारने पर रोक लगाता है। इसका एकमात्र अपवाद 'सैंडग्रोव्स' पक्षी है, जो ज़मीन पर रहता है और घास के बीज खाता है। लेकिन इसके पंख इसे प्रकृति से भरपूर सुरक्षा प्रदान करते हैं। जब तक यह पक्षी पानी के पास नहीं आता, तब तक कोई इसे नहीं देख पाता। इसीलिए शिकार कानून में इसे यह छूट दी गई है।"

मोर सरकार से जानकारी सुनते हुए, मंगू ने मुर्गे को साफ किया और चाकू से उसके टुकड़े किए। शेवांता उसे अंदर ले गई और चूल्हे पर पकाने लगी।

कुछ देर बाद गंध गायब हो गई, "मंगू, मेरे बैग से रम की बोतल निकालो, बगल में गिलास भी रखे हैं। दो गिलास निकालो!"

"यह किसकी सरकार है?"

"क्या आप रम पीना चाहेंगे? यह सिक्किम की बढ़िया, परिपक्व रम है!"

मंगू रम की एक बोतल और एक गिलास लेकर आया और उसे मोरे सरकार को दे दिया। मोरे ने अपने लिए एक पिंट रम डाली, उसमें थोड़ा पानी मिलाया और मंगू की ओर गिलास उठाते हुए कहा, "चीयर्स!"

मंगू ने थोड़ा पानी मिलाया, अपना गिलास एक ही घूंट में खत्म कर दिया और कहा, "मेरे प्यारे, गरीब लोगों को वही पेय नहीं मिला जो मेरे पिता को मिला था।"

चाँद अब काफी ऊपर आ चुका था। मंगू ने झुंझरराव का पलंग समेटा। उसने उस पर गद्दा बिछाया। चादर बिछाते हुए उसने कहा, "सच है, सरकार भैरव सो रहे हैं, दरारें ठंडी हो रही हैं!"

"कोई बात नहीं।"

शेवांता ने मसालेदार जंगली मुर्गी का सूप बनाया। झुंजाराव खाने के लिए बैठ गया।

झुंजाराव ने कहा, "मेरे बच्चे, तुम्हारे हाथ का स्वाद अजीब है।"

शेवंता उस प्रशंसा पर झिझक गया। मंगू ने कहा, "यदि वैनी सरकार ने मगिद्या मछली को सुखाया होता, तो क्या वे मुझे उसमें से कुछ देते? मछली का स्वाद कैसा होता है?"

अगर वह छह महीने तक सरला के मार्गदर्शन में रहती है, तो वह उससे भी बेहतर व्यंजन बनाना सीख जाएगी।

खाना खाते समय हम बातें करते रहे। झुंझरराव बाहर आया। चाँद आसमान में काफी ऊपर आ चुका था। वह चाँद से भी ज़्यादा सफ़ेद था। जुगनुओं की रोशनी फीकी पड़ रही थी। दूर कहीं एक कैपुचिन बंदर "कूक, कूक, कूक" की आवाज़ निकाल रहा था। जंगल के बीचोंबीच एक टिटमाउस "टिट, टिट, टिट, टिट, टिट, टिट" की आवाज़ निकाल रही थी। उसके पीछे-पीछे खेत में मौजूद काला कुत्ता भयानक आवाज़ में भौंकने लगा।

उस इलाके में चिड़िया की चहचहाहट और कुत्ते का भौंकना अशुभ माना जाता था!

झुंझरराव को ऐसी बेतुकी बातों पर ज़रा भी विश्वास नहीं था। उन्होंने पलंग की मच्छरदानी नीचे खींची और आराम से सो गए।

0-0

अध्याय 3

मांगू झुंझरराव के पलंग के नीचे ज़मीन पर सो रहा था। उसने अपने ऊपर ओढ़ने के लिए हाथ से बुना हुआ कंबल लिया था। सोने से पहले मांगू ने अपने पूर्वज देवता 'बिरोबा' को याद किया। उसने यह भी प्रार्थना की कि गाँव पर मंडरा रहे तेंदुओं का आतंक समाप्त हो जाए।

आधी रात बीत चुकी थी। बुलबुलों ने गाना शुरू कर दिया था। जैसे ही चाँद निकला, पास के पेड़ों पर जुगनुओं की रोशनी मंद पड़ने लगी। गर्मी का मौसम था। हवा एकदम थम सी गई थी मानो किसी ने उसे बाँध दिया हो। चहचहाती हुई छोटी चिड़िया और भौंकता हुआ कुत्ता दोनों चुप हो गए थे। लेकिन दूर से आती हुई कप्पुकावड़ा की आवाज़ ऐसी लग रही थी मानो कहीं आटा चक्की चल रही हो।

जब झुंजाराव गहरी नींद में सो गया, तो मंगू भी अपने चारों ओर कंबल लपेटकर सो गया।

आधी रात के करीब, बाघ की चीखें सुनाई दीं, जो अपना सीना फाड़ रहा था, 'मंगू, मंगू, तुम मर गए।' उसी समय, मंगू को बाघ तेंदुए की दहाड़ भी सुनाई दी। मंगू झट से जाग गया। उसने कंबल के पास पड़ी दरांती उठाई और झुंझरराव के पिंजरे की ओर भागा। तेंदुआ झुंझरराव पर झपट पड़ा था। पहले तो वह मच्छरदानी में थोड़ा छिपा रहा। फिर उसने झुंझरराव पर हमला कर दिया। अचानक, झुंझरराव नींद से जाग उठा और उसने बाघ के दोनों अगले पैर अपने हाथों में पकड़ लिए। दहाड़ता हुआ तेंदुआ उसे गिराकर उसके दांत निकालने ही वाला था कि बाघ खुद चीखा और पीछे गिर गया। झुंझरराव पर जानलेवा हमला करने वाला क्रूर तेंदुआ, मंगू द्वारा चलाई गई दरांती के वार से चीखता हुआ गिर पड़ा। उसकी खोपड़ी दो टुकड़ों में फट गई थी। बाहर शोर सुनकर शेवंता हाथ में लालटेन लिए बाहर भागी। झुंझरराव के सीने पर बाघ के पंजों के निशान थे। उसके शरीर के भीतर से खून बह रहा था। एक तेंदुए का धड़ से अलग हुआ सिर, उसकी उलटी हुई चारपाई के पास बेजान पड़ा था।

अचानक, खड़ा धनगरवाड़ा इकट्ठा हो गया। दिन भर छिपा हुआ तेंदुआ, ग्रामीणों की पुकार सुनकर सिर झुकाकर, औंधा गिर पड़ा।

मंगू धनगारा ने झुंजाराव को बचाया। एक-दो पल और बीत जाते तो तेंदुआ उसकी खोपड़ी तोड़कर उसका खून पी जाता।

झुंजाराव, जिसे अपने सीने में दर्द महसूस हो रहा था, ने मंगू का हाथ पकड़ा और कहा।

"आज मेरी जान बच गई क्योंकि तुम बगल वाले घर में थे। वो मेरी राइफल की गोली से नहीं मरा, तुम्हारी दरांती से मरा।" खून से सनी दरांती को देखते हुए झुंजाराव ने कहा, "फिर भी, तुम मुझे रात को बाहर सोने से मना करते रहे।"

भीड़ का शोर बढ़ता गया। धीरे-धीरे पूरब की ओर उजाला छा गया। उस क्षेत्र में सूर्योदय के समय नियमित रूप से तरह-तरह की आवाज़ें निकालने वाले पक्षी जाग उठे। वे इधर-उधर चहचहाना शुरू कर दिए।

सूरज की किरणें छनकर आ रही थीं। पहले पेड़ों की चोटियाँ रोशन हुईं। फिर धीरे-धीरे जंगल साफ दिखाई देने लगा।

उदगीर पुलिस स्टेशन को खबर मिली और उन्होंने मलकापुर को सूचित किया कि बाघ मारा गया है। वन विभाग के गार्ड और पुलिस सुबह करीब 10 बजे मौके पर पहुंचे।

झुंजाररराव ने अपने घावों पर लगाने के लिए एक बुजुर्ग भिक्षु से पेड़ की एक शाखा ली।

दोपहर करीब 1:30 बजे झुंजाराव को कोल्हापुर के सी.पी.आर. में भर्ती कराया गया। खबर मिलते ही जिले के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी झुंजाराव से पूछताछ करने पहुंचे। सच्चाई का पता चलने पर उन्होंने झुंजाराव और मंगू को बधाई दी।

सरलाबैना और संग्राम को घर पर खबर मिलते ही वे दोनों सी.पी.आर. अस्पताल पहुंचे। झुंझरराव को विशेष वार्ड में रखा गया था। दो नर्सें और एक डॉक्टर झुंझरराव के बिस्तर के पास बैठे थे।

अखबार के संपादक प्रताप सिंह जाधव खुद अस्पताल आए। झुंझरराव की रोमांचक लड़ाई की खबर सुनकर वे हैरान रह गए। उन्होंने कहा, "कोल्हापुर राज्य में अब तक कई खतरनाक तेंदुओं को मारा जा चुका है। लेकिन मंगू द्वारा इस तेंदुए को इस तरह मार गिराना वाकई चौंकाने वाला है। सरकार, तेंदुए से इतनी बहादुरी से लड़ने के लिए आपको भी बधाई!"

दोपहर में जैसे ही खबर आई कि झुंझरराव को कोल्हापुर लाया गया है, कई परिचित भी अस्पताल पहुंच गए। झुंझरराव की हालत स्थिर थी। लेकिन आगंतुकों की संख्या बढ़ने पर सिविल सर्जन ने उत्साही 'आगंतुकों' पर प्रतिबंध लगा दिया।

सामान्य तौर पर, मंगू धनगारा पर किसी का ध्यान नहीं जाता। लेकिन चूंकि उन्होंने एक तेंदुए को बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली, इसलिए पुणे और मुंबई के अखबारों ने मंगू की तस्वीरें प्रकाशित कीं।

सबसे घिनौनी हरकत तो जिला वन अधिकारी ने की! उन्हें मंगू द्वारा तेंदुए को मारने की घटना पसंद नहीं आई। उन्होंने कहा, “बाघ एक संरक्षित जानवर है! कोई इसे मार नहीं सकता। इसके अलावा, उदगीर का जंगल एक संरक्षित वन है।”

"लेकिन अगर आपके संरक्षित जानवर इंसानों को मारने लगें तो लोग क्या करेंगे?" झुंजाराव ने कहा। "यह आपकी ज़िम्मेदारी है कि ये जानवर मानव बस्तियों में प्रवेश न करें!"

"हां, ऐसा ही है। लेकिन इसके लिए ग्रामीणों या धनगरों को अपने क्षेत्र में तेंदुओं की लगातार आवाजाही के बारे में हमारे कार्यालय को सूचित करना चाहिए था।"

मंगू ने कहा, "तुम बारह बार विनती कर चुके हो। तुम यह कहकर टाल रहे थे कि 'मैं आज जाल बिछाऊंगा, मैं कल बिछाऊंगा'।"

अस्पताल में झुंझरराव को पता चला कि पंचनामा करने के बाद वनवासियों ने तेंदुए की खाल पर कब्ज़ा कर लिया है। झुंझरराव ने वन अधिकारी से कहा, "मुझे वह खाल एक ट्रॉफी के रूप में चाहिए!"

"इसे इस तरह नहीं दिया जा सकता।"

"ठीक है!"

अगले दिन, पुणे और मुंबई के सभी समाचार पत्रों ने झुंझरराव और मंगू के बीच हुई उस अभूतपूर्व लड़ाई की खबर एक तस्वीर के साथ प्रकाशित की। गृह मंत्रालय से गृह मंत्री के पी. ए. चे झुंझरराव की ओर से बधाई पत्र प्राप्त हुआ। उसमें लिखा था, "गृह मंत्री ने कोल्हापुर जिले का दौरा करने के बाद आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलने और आपको और मंगू धनगारा को बधाई देने का निर्णय लिया है!"

अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए झुंजाराव ने सरला से कहा, "अब तो उस बाघ की खाल भी बिना किसी मदद के घर आ जाएगी।"

सी.पी.आर. में एक सप्ताह के इलाज के बाद झुंजाराव को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। छुट्टी मिलने के बाद कई लोग उनसे मिलने रंकालियार स्थित उनके घर आए। इनमें से कई अजनबी थे। परिचितों के साथ-साथ अजनबी भी घर में जमा हो गए।

कोल्हापुर आने से पहले झुंजाराव को पुणे में अपनी कानून की पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। कानून की परीक्षा देने की उनकी इच्छा अधूरी रह गई। उनकी शिक्षा रुक गई, लेकिन कानून के प्रति झुंजाराव का आकर्षण कम नहीं हुआ।

वे लॉ रिपोर्टर्स से विभिन्न उच्च न्यायालयों के प्रसिद्ध फैसले पढ़ते थे। यदि कोई किसान या परिचित किसी छोटी-मोटी बात पर सलाह लेने उनके पास आता, तो वे खुशी-खुशी मुफ्त सलाह देते थे। एक बार सरदार मित्रा ने उनसे पूछा, "क्या आपने कानून की पढ़ाई पूरी करने के बाद अदालत में वकील बनने का फैसला कर लिया है?"

बिलकुल नहीं! मैं कानून की पढ़ाई करना चाहती थी क्योंकि मैं खुद को पसंद करती हूँ। मेरी लाइब्रेरी तो देखो!

सरदार मित्रा ने कहा, "आप ऐसी चीज में क्यों शामिल हो रहे हैं जो आपकी उम्र के लिए उपयुक्त नहीं है? अगर आपका बच्चा वकील बनना चाहता है, तो वह अच्छा दिखेगा।"

मुझे अच्छी तरह पता है कि मेरे लिए क्या उपयुक्त है और क्या नहीं। इसके लिए मुझे किसी की सलाह की जरूरत नहीं है।

उस समय झुंजाराव की उम्र चालीस के आसपास थी। इस उम्र में उनके द्वारा कानून की पढ़ाई करने का विचार कई लोगों को पसंद नहीं आया।

मंगू अस्पताल से छुट्टी मिलने तक कोल्हापुर में ही सेवारत रहा। अस्पताल से छुट्टी मिलते ही वह अपने धनगर वाडा चला गया। आठ दिन बाद वह अचानक झुंझरराव से मिलने आया।

“देखिए, सरकारी वन विभाग ने मुझे यह नोटिस भेजा है!”

झुंजारावानी ने नोटिस पढ़ा और मुस्कुराते हुए कहा, "यह इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि कितने मूर्ख लोगों को इस सरकारी नौकरी में भर दिया गया है," नोटिस में लिखा था।

"तुम दोनों, झुंझरराव मोरे और मंगू बिस धनगर, ने तेंदुए को मारने की साजिश रची। तुम्हारे पास उसे मारने का लाइसेंस नहीं था। तुम्हें आठ दिनों के भीतर यह बताना होगा कि इस संबंध में तुम्हारे खिलाफ कानूनी कार्रवाई क्यों नहीं की जानी चाहिए।"

इस नोटिस की एक प्रति झुंझरराव मोरे और कोल्हापुर के कलेक्टर को भी भेजी गई है।
वह मामला अच्छे से निपट गया।
अगले दिन झुंजाराओ को नोटिस की एक प्रति प्राप्त हुई। उन्होंने नोटिस का विस्तृत उत्तर भी तैयार किया।
'श्रीमान वन अधिकारी, कोल्हापुर'
झुंजाराव हैबतराव मोरे, रा रांकाला द्वारा भेजे गए नोटिस का उत्तर इस प्रकार है:
महाशय,
25 मई को मैं उदगीर के धनगरवाड़ा में मंगू धनगारा की बस्ती में ठहरा हुआ था। मैं वहाँ इसलिए गया था क्योंकि धनगर बस्ती के कई लोगों ने मुझे बताया था कि तेंदुए परेशानी पैदा कर रहे हैं। उसी समय एक बाघ ने मंगू धनगारा की दूध देने वाली गाय को मार डाला। इससे पहले, मंगू और अन्य धनगरों ने तेंदुए को नियंत्रित करने के लिए आपके कार्यालय में आठ-दस आवेदन जमा किए थे। आपने उन्हें कूड़ेदान में फेंक दिया होगा। आपके विभाग को नागरिकों के जीवन और आर्थिक स्थिति में कोई दिलचस्पी नहीं है।
मैं 24 मई को उस इलाके में तेंदुए का शिकार करने गया था। लेकिन तेंदुआ शिकार छोड़कर वापस लौट गया। मैं उस दिन उसे मार नहीं पाया। इसलिए अगले दिन, 25 मई को, मैंने फिर से शिकार करने का फैसला किया और मंगू धांगरा के घर पर रुका। मैं मंगू की छत के सामने आंगन में एक चारपाई पर सोया। मंगू मेरी चारपाई के बगल में ज़मीन पर कंबल बिछाकर सो गया। आधी रात के बाद, लगभग 1:30 बजे, तेंदुए ने अचानक मुझ पर हमला कर दिया। मैं चीख उठा। मेरी चीखें सुनकर, चारपाई के बगल में सो रहे मंगू तुरंत जाग गए। उन्होंने अपनी दरांती से तेंदुए के सिर पर वार किया और मुझे बचा लिया। अगर मंगू ने एक पल भी देर की होती, तो वह क्रूर जानवर मुझे मार डालता। भारतीय आपराधिक कानून किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति पर हमला करने की कोशिश करने पर हमलावर को जान से मारने का अधिकार देता है। तो फिर इस अधिकार का इस्तेमाल किसी क्रूर जानवर के मामले में क्यों नहीं किया जा सकता? आपने नोटिस में कहा है कि मंगू और मैंने तेंदुए को मारने की साजिश रची थी, लेकिन तेंदुए के काटने से मेरी छाती पर जो खरोंचें आईं और मेरे बाएं हाथ की कलाई में जो फ्रैक्चर हुआ, उसका इलाज सीपीआर के डॉक्टरों ने किया था। क्या यह सिर्फ एक मजाक है?

आपको हमारे खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए, आपके खाते की खामियां सार्वजनिक की जाएंगी। इसके अलावा, आपके खिलाफ (दुर्भावनापूर्ण अभियोग) के लिए कानूनी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही, मंगू ने अपनी जान जोखिम में डालकर मुझे उस संकट से बचाया जिसके लिए वह प्रशंसा का पात्र है।

पंचनामा करने के बाद आपने बाघ की खाल प्राप्त कर ली है। इसे ठीक से रंगकर और तपाकर मुझे दे दीजिए।

हमें आगे क्या कार्रवाई करनी है, इस बारे में विशेषज्ञों से पहले ही सलाह लेनी चाहिए।

मैं जानना चाहता हूँ।

झुंजाररात्र है. मोरे.

अंबावडेकर

महँगू बीस बंदगर, (धननगर रा.उदगीर)

तालुका शाहूवाड़ी

उस नोटिस के जवाब को पढ़ने के बाद वन अधिकारी पिसाल बेहद क्रोधित हुए, लेकिन उन्हें लगा कि उन्होंने एक प्रतिभाशाली और शक्तिशाली व्यक्ति के साथ अन्याय किया है। फिर भी, पिसाल मोरी जनजाति को खालें लौटाना नहीं चाहते थे।

पंद्रह दिन बाद वन मंत्री झुंझरराव से मिलने आए। उन्होंने आदरपूर्वक झुंझरराव को तेंदुए की खाल सौंपी। “मुख्यमंत्री के आदेश पर, मैंने पूरे मामले की गहन जांच के बाद आपको यह तेंदुए की खाल सौंप रहा हूँ।”

"तो, निर्वाचित प्रतिनिधियों ने अभी तक इस मामले को छोड़ा नहीं है! खैर! उपमुख्यमंत्री मुझसे मिलने आ रहे हैं, इसलिए मैं उन्हें भी धन्यवाद दूंगा!"

इस तेंदुए के मामले ने झुंझरराव की प्रतिष्ठा को और भी बढ़ा दिया। यह सब इसलिए संभव हुआ क्योंकि झुंझरराव जमींदार या कुलीन परिवार से नहीं थे, बल्कि इसलिए कि उन्हें कानून का गहरा ज्ञान था। वे हमेशा सरलाबाई से कहते थे, 'मैं संग्राम को इस मामले के लिए एक 'पूर्ण' वकील बनाना चाहता हूँ! उसे पचास-सौ रुपये के लिए एक अदालत से दूसरी अदालत भटकना नहीं चाहिए! अगर वह सिर्फ चार-दो सत्र भी लड़े, तो भी काफी है! अब वह युग बीत चुका है! फिर भी, मैं कोशिश करता रहूँगा।'

सरलाभाई अपने बुद्धिमान और साहसी पति का बहुत सम्मान करती थीं। उन्हें विशेष रूप से वे लोग नापसंद थे जो परिवार के बारे में शेखी बघारते थे और शाही परिवार से अपनी निकटता का बखान करते थे।

मंगू गांव लौटने से पहले मोरे के महल में आया। उस समय सरलाबाई ने उससे कहा, "मंगू, मैं सोच भी नहीं सकती कि अगर तुम सरकार के करीबी न होते तो क्या होता!"

“वैनीसरकार को ये कैसे हो गया? मैंने तुम्हारे हाथों का नमक चख लिया है। ये मीठा तो है, लेकिन मैं जागने वाला हूँ!”

"आपने मेरी कुमकु की जान बचाई। आपने मुझ पर जो एहसान किया है, उसके बदले मैं आपको कैसे धन्यवाद दूं?"

"दुश्मन सरकार, इस बात को अपने दिमाग में मत लाओ। जब तक मेरे दिल में जान है, मैं हमेशा सरकार के साथ खड़ा रहूंगा!"

एक साधारण, गरीब धनगर और दूसरे, खानदान परिवार के झुंझरराव, जो राजपरिवार के बीच पले-बढ़े थे, के बीच की दोस्ती बहुत ही बनावटी थी।

तेंदुए वाली घटना के बाद, झुंझरराव ने मंगू को पुलिस मुख्यालय में रखी एक 12 बोर की सिंगल बैरल वाली तोप दे दी। मंगू धनगर तोप को कंधे पर रखकर उदगीर के घने जंगलों में बेखौफ घूमने लगा। कभी-कभार अगर उसे कोई जंगली मुर्गा या कुश्तर मिल जाता, तो वह उसे कोल्हापुर में मोरे सरकार के लिए ले आता। सरलाबाई उसे खाने और गाड़ी किराए पर लेने के लिए 10-20 रुपये देती थीं।

एक बार जब उन्होंने एक जंगली मुर्गे को मारकर झुंझरराव के पास लाया, तो संग्राम के अलावा घर में कोई नहीं था। सरलाबाई अपनी बहन के घर गई हुई थीं। झुंझरराव दफ्तर में थे।

संग्राम ने मुर्गे को देखा और मंगू से कहा, "मंगू चाचा, मैं एक बार जंगली मुर्गे का शिकार करना चाहता हूँ! मैं कारतूस ले आऊँगा।"

क्या आपके पास सरकार की अनुमति है?

"वे मुझे अनुमति नहीं देंगे। मैं अपनी माँ की अनुमति ले लूँगा!"

“कुछ महीने बीतने दो, अब तो बारिश हो रही है, कांटेदार झाड़ियों में!

"कांटों से तुम्हारा क्या मतलब है?"
"कांटे चुभते हैं! उन्हें कभी अपने शरीर में चुभने मत दो, वे खून निकाल देंगे!"
अपनी पिंडारी दिखाते हुए मंगू ने कहा, "बारिश को जाने दो। तुम आओ और मुर्गियों को मार डालो।"
झुंजाराव ने संग्राम को जर्मनी में बनी साइज 2 की एयर गन दी थी। वह उसे लेकर अंबा के फार्म में हिरणों का शिकार करता था। पढ़ाई-लिखाई में लापरवाही बरतने वाला संग्राम एक कुशल निशानेबाज था। बाद में शिकार के प्रति उसका जुनून बढ़ता चला गया। लगभग उसी समय, झुंजाराव के बहनोई बाजीराव भोसले अमेरिका में व्यापार प्रबंधन में 11 साल का अनुभव लेकर भारत आए। वे भारत आने तक अपनी बहन सरलाबाई के साथ रहे। जब बाजीराव को पता चला कि झुंजाराव ने अंबा, विशालगढ़ और उदगीर के पहाड़ी इलाकों में एक यात्री परिवहन कंपनी शुरू की है, तो उन्होंने कहा, "जीजाजी ने तो बढ़िया कारोबार शुरू किया है।"
सरलाबाई ने कहा, "व्यापार बहुत बढ़ गया है। कभी-कभी तो वे कार से थाने तक भी चले जाते हैं!"
और शिकार का शौक?
"यह सिलसिला अभी भी जारी है! क्या आपको नहीं पता कि उन्होंने एक साल पहले तेंदुओं को मारने का अभियान चलाया था? उसी तेंदुए का शिकार होने वाला था। मंगू धनगारा ने उसकी जान बचाई।"
तब सरलाभाई ने बाजीराव को पूरी घटना सुनाई और कहा, "इसी तरह, जब विशालगढ़ जाने वाली सड़क पर गाड़ी खराब हो गई, तो हमें रात सड़क पर ही सोकर गुजारनी पड़ी।"
इसका एक अच्छा समाधान है।
"कौन सा?"
"अमेरिका में एक कार बनती है जिसे मोटर होम कहते हैं। इसे कहीं भी पार्क किया जा सकता है। इसमें चार लोगों के सोने, रहने और खाने की सारी सुविधाएँ होती हैं। इसमें एक छोटा बाथरूम और शौचालय भी होता है। मैं ऐसी ही कार में मैक्सिको तक का सफर कर चुका हूँ। मेरे जीजाजी अब कार के कारोबार में हैं। मैंने उन्हें इस मोटर होम का आइडिया

बताया। वो कोल्हापुर में भी ऐसी कार बना सकते हैं! आज आपने इतना समय कहाँ बिताया?"
मुझे कभी-कभार खेत जाना पड़ता है। मैं रात को वापस आ जाऊँगा!
"तो तुम कबीले के कानून से बच निकले?"
"वे कितने पुराने कबीले थे! उन्होंने 200 एकड़ जमीन बांटी। हमारे पास सिर्फ 50 एकड़ जमीन बची। सरकार ने कहा कि हमारे लिए 200 एकड़ जमीन पर खेती करना असंभव है।"
"तुमने बहुत अच्छा किया, अक्का। अगर इन पचास एकड़ जमीन पर अच्छी तरह खेती की जाए, तो तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं होगी। अच्छा, हमारे भतीजे क्या कहते हैं?"
"सरकारें चाहती हैं कि वे स्नातक हों और कानून की पढ़ाई करें, लेकिन..."
"लेकिन क्या? क्या आपने शिक्षा रोक दी या आपने लड़ाई लड़ी?"
"वे कहते हैं कि उन्होंने इसे बंद नहीं किया, लेकिन वे शिक्षा पर उतना ध्यान नहीं देते जितना उन्हें देना चाहिए।"
"कल की दुनिया में शिक्षा के बिना कोई मुक्ति नहीं है!"
"सरकार भी यही बात कहती है। उन्हें अब भी वकील न बन पाने का अफसोस है। लेकिन वे कानून की किताबें मंगवाते हैं, लोगों को कानूनी सलाह देते हैं, यही उनका शौक है!"
"वाह! खेती और ऑटोमोबाइल व्यवसाय में व्यस्त रहते हुए भी, आपको कानून में रुचि है? ऐसे उदाहरण दुर्लभ हैं, अक्कासाहेब!"
"जब तेंदुए-बाघ का मामला सामने आया, तो केवल कानून के उनके ज्ञान के कारण ही उस पर पर्दा गिर पाया।"
भाई-बहन काफी देर तक घर के मामलों पर चर्चा करते रहे। अंत में, बहन ने उनसे पूछा,
"बाजीराव, अब शादी कर लो।"
"शादी? अक्कासाहेब, मैंने उस जाल में न फंसने का फैसला कर लिया है!"
"मैंने उस समय कुछ सुना था।"
"इसका मतलब है कि मेरी अमेरिका में एक गर्लफ्रेंड है, है ना?"
"हाँ, लेकिन गोरी चमड़ी वाली महिलाएं वफादार नहीं होतीं। एक-दो साल बाद, वे किसी न किसी कारण से अपने साथी को छोड़ देती हैं!"

"इसीलिए मैं शादी के जाल में नहीं फंसना चाहती! मैं अभी वहीं बहुत खुश हूँ! तीन साल में मैं भारत में स्थायी रूप से रहने आ जाऊंगी! अब मुझे वहाँ जाने का मन नहीं करता! मैं समंगड़ की तलहटी में एक छोटा सा बंगला बनाना चाहती हूँ और अपने जीजाजी की तरह खेती करना चाहती हूँ! मैं अब जीवन की भागदौड़ से थक चुकी हूँ! मुझे समझ नहीं आता कि ग्यारह साल कैसे बीत गए!"
"लेकिन मुझे लगता है कि अभी समय नहीं आया है। तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए!"
"देखते हैं, यहां स्थायी रूप से रहने के बाद हम फैसला करेंगे।"
इसी बीच, बाहर गए झुंझरराव लौट आए। बाजीराव को आते देख उन्होंने कहा,
"आप अमेरिका कब आए? और कितनी अचानक? क्या आपने शादी करने का फैसला किया है या कुछ और?"
"जीजाजी, क्या आप लोग नहीं चाहते कि इंसान आज़ाद और बंधनमुक्त रहे? अब अक्कासाहेब ने भी मुझे यही बात सुनाई है! लेकिन जीजाजी, मुझे थोड़ा और खुलकर बोलने दीजिए, मुझे माफ़ कीजिएगा। सैन डिएगो में मेरी एक दोस्त है जिसका नाम एवलिन है। हमारी दोस्ती पिछले छह-सात सालों से चली आ रही है। हम दोनों ने एक-दूसरे से वादे किए थे!"
"कैसे हो?" झुंजाराव ने अपना कोट खोलते हुए और उसे हैंगर पर टांगते हुए पूछा।
"हम एक-दूसरे से अलग नहीं होना चाहते। चाहे कितने भी मतभेद हों, हमें उन्हें किसी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप के बिना आपसी परामर्श से सुलझाना चाहिए!"
"आप यहां आकर बसने के बाद?"
"वह अब भी कहती है कि मैं तुम्हारे साथ भारत आऊंगी! देखते हैं आगे क्या होता है, आज उसके बारे में क्यों चिंता करें!"
झुंजाराव को बाजीराव का मोटरहोम का सुझाव बहुत पसंद आया।
उद्यमनगर में मॉडर्न बॉडी बिल्डर्स नामक एक गैराज के रचनात्मक मालिक से उन्होंने इस बारे में बात की। उन्होंने फोर्ड कंपनी से एक नया चेसिस खरीदा। काम दो महीने में पूरा होना था। गांवों में रहने के दौरान यह मोटरहोम उनके लिए बहुत उपयोगी साबित होगा। बाजीराव ने मोटरहोम का डिज़ाइन अमेरिका से मंगवाया। वे समय-समय पर अपने गांव से कोल्हापुर

आते थे और बॉडी बिल्डिंग के काम की निगरानी करते थे। एक नई चुनौती को समझते हुए, कार बनाने वाले मैकेनिक ने अपने कौशल का परीक्षण किया। एक ऐसा मोटरहोम तैयार किया गया जिसमें पांच के बजाय चार लोग रह सकते थे, खा सकते थे और सो सकते थे। कार में एक छोटा रेफ्रिजरेटर, गैस स्टोव, चार दिन तक चलने वाला पानी का टैंक और एक छोटा बाथरूम-सह-शौचालय इस तरह से व्यवस्थित रूप से लगाया गया था कि इसे पहली बार देखने वाला व्यक्ति सोचेगा कि यह आधुनिक कार विदेश से आयात की गई है।

कार पूरी होने के बाद, झुंझरराव इसे पास कराने के लिए कोल्हापुर के आरटीओ कार्यालय ले गए। वहां जमा हुए मोटर व्यापारियों ने कार को देखकर आश्चर्य व्यक्त किया। नेवी ब्लू रंग में रंगी कार को देखकर सभी कोल्हापुर के कारीगरों की प्रशंसा करने लगे। कोल्हापुर में, माधबा मेस्त्री ने सबसे पहले तेल इंजन बनाया। बाद में, उन्होंने आचार्य अत्रिय की सलाह पर एक चलता-फिरता मंच भी बनाया। जब कार कोल्हापुर की सड़कों पर चलने लगी, तो लोग इसे देखने के लिए सड़कों पर रुकने लगे।

झुंजरराव ने उस कार का नाम 'सह्याद्रि' रखा।

0-0

अध्याय 4

दिन बीतते गए। झुंजाराव ने कानून की खूब पढ़ाई की, लेकिन परीक्षा नहीं दे पाए। तभी उन पर एक विपत्ति आ पड़ी। उनके द्वारा शुरू किया गया झुंजार मोटर ट्रांसपोर्ट व्यवसाय बंद करना पड़ा। महाराष्ट्र में राज्य सड़क परिवहन शुरू होने वाला था। लेकिन इसके शुरू होने से पहले, यात्री वाहनों के मालिकों को अनुसूचित जनजाति विभाग में उपयुक्त नौकरियां दी जानी थीं। उनके कर्मचारियों को भी अनुसूचित जनजाति विभाग में शामिल किया जाना था।

झुंझरराव को इस संबंध में एक पत्र मिला। उन्हें साक्षात्कार के लिए बुलाया गया। उस समय तक मोरे परिवार में किसी ने भी सरकारी नौकरी नहीं की थी। वे केवल छत्रपति की सेवा करते थे। झुंझरराव ने भी कभी सरकारी नौकरी नहीं की थी। क्योंकि उनका स्वभाव किसी के अधिकार को मानने वाला नहीं था। इसके अलावा, उसी समय के आसपास रियासतों का विलय भी हो गया था। रियासतों को वेतन पर निर्भर रहना पड़ता था। उनके लिए पहले की तरह नौकर रखना संभव नहीं था।

इसीलिए, जब वंश कानून लागू हुआ, तो झुंजाराव ने अपनी 250 एकड़ जमीन कुलों को दे दी और अपनी आजीविका के लिए केवल 50 एकड़ जमीन अपने पास रखी। झुंजाराव केवल कृषि से होने वाली आय से संतुष्ट नहीं थे। इसलिए उन्होंने झुंजार मोटर ट्रांसपोर्ट शुरू किया। उन्होंने कुछ छह गाड़ियां खरीदीं। उन्होंने एक भरोसेमंद ड्राइवर और एक सफाईकर्मी को काम पर रखा। वे प्रतिदिन 100-400 रुपये कमा रहे थे। सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा था और इसी समय परिवहन व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण करने का निर्णय लिया गया।

झुंजाराव निर्धारित समय पर सूचना के अनुसार एस.टी. कार्यालय पहुंचे। वहां 'मिरांडा' नाम के एक ईसाई अधिकारी को संभागीय नियंत्रक नियुक्त किया गया था। मिरांडा साहब पूर्व में भारतीय सेना में थे। लालची और प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले मिरांडा साहब झुंजाराव के आने की खबर सुनते ही स्वयं उठकर केबिन से बाहर आ गए।

गोरे रंग के, नाक निकले गालों वाले और मूंछों वाले झुंझरराव खड़े हो गए। मिरांडा साहब ने उनका दाहिना हाथ मिलाया। और उन्हें उनके केबिन में ले जाते हुए उन्होंने कहा,

"मैं आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक था। मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। आप एक शिकारी लगते हैं!"

"हां, मैं कभी-कभी शिकार पर जाता हूँ!"
मिरांडा साहब ने कहा, "हमें जंगली सूअर का मांस बहुत पसंद है। हम एक दिन आपको शिकार करते देखना चाहेंगे।"
"ज़रूर जाएंगे। लेकिन अगर आप मुझे एसटी खाते में शामिल कर लेते हैं तो आप असल में क्या करेंगे?"
"हम आपको आपकी योग्यता के अनुरूप नौकरी देंगे। हमारे पास डीटीओ, एटीएस जैसे पद हैं। आपको इनमें से उपयुक्त पद मिल जाएगा।"
झुंझरराव जोर से हँसे। "मैं डीटीओ या एटीएस जैसी नौकरी नहीं करूँगा। हमारे पूर्वज केवल छत्रपति की सेवा करते थे। लेकिन अब रियासतें आपस में मिल गई हैं। कुलीनता का वह युग समाप्त हो गया है।"
"लेकिन अब आप राष्ट्रीयकृत एसटी में एक पद पर हैं, है ना?"
"मैं खाकी कोट पहने कितनी गाड़ियाँ आई हैं, इसका हिसाब नहीं रख पाऊँगा। इस जन्म में मैं अपने वरिष्ठों को सलाम भी नहीं कर पाऊँगा। बस आज मेरे यहाँ ड्राइवर और सफाईकर्मी के तौर पर काम करने वाले सोलह-सत्रह लोगों को ही अपने खाते में शामिल कर लीजिए, बस! मेरी चिंता मत कीजिए, मेरे पास खेती-बाड़ी से अपना गुजारा चलाने के लिए काफी कुछ है, अब से मैं यहीं रहूँगा और खेती पर ही ध्यान दूँगा! मुझे अपनी छह यात्री गाड़ियाँ बेचनी पड़ेंगी। उनकी कीमत भी कुछ खास नहीं होगी। देखिए, क्या आपका विभाग हम जैसे कार मालिकों को कुछ मुआवज़ा दे सकता है!"
मिरांडा साहब ने विनम्रता से कहा, "आप जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सही और उचित है। लेकिन मुझे खेद है। अभी भी मुआवजे का कोई प्रावधान नहीं है।"
"देखिए, अपने विभाग को हमारी अपेक्षाओं से अवगत कराइए। यह मत सोचिए कि यह मेरा एकमात्र सुझाव है। निजी क्षेत्र के संचालकों के तौर पर, मैं लगभग बीस लोगों से मिला, छोटे-बड़े सभी। उन्होंने कहा, 'देखते हैं कि क्या सरकार कुछ मुआवजा देती है!'"
"मैं आपको और इंतजार नहीं करवाऊंगा! विभाग द्वारा अभी तक ऐसा कोई प्रस्ताव स्वीकृत नहीं किया गया है!"
"ठीक है, हम अदालत में अपील करेंगे।"

‘‘माय सिंपथीज आर वुईथ यू!’’
"धन्यवाद! लेकिन महोदय, मुझे आपकी स्पष्टवादिता बहुत पसंद आई! चलिए कभी मेरे मोटरहोम में आम या विशालगढ़ के जंगलों में शिकार करने चलते हैं।"
"श्री मोरे, मैंने कई लोगों को देखा है जो सरकार द्वारा उनके कारोबार पर लाठीचार्ज किए जाने से नाराज हैं। लेकिन आज पहली बार मैंने आपके जैसा समझदार और विवेकशील व्यक्ति देखा है।"
"धन्यवाद," झुंजाराव ने अपनी कुर्सी से उठते हुए कहा। "निजी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण तो देर-सवेर होना ही था। यह अपरिहार्य है। इस पर हंगामा करने का कोई फायदा नहीं! बस मेरे ड्राइवरों और सफाईकर्मियों को अपने खाते में ठीक से शामिल कर लीजिए, बस इतना ही!"
मिरांडा साहब झुंझरराव को विदाई देने के लिए अपनी कुर्सी से उठे। बाहर के दरवाजे की ओर चलते हुए उन्होंने कहा, "श्रीमान मोरे, इस बारे में बिल्कुल दृढ़ रहें। जब हमारा अधिकारी पहुंचे, तो उन लोगों की ओर से एक सामूहिक बयान जारी करवाएं, बस!"
झुंजाराव जूते पहने हुए ही अंदर आए थे। दरवाजे से बाहर आते ही उन्होंने जूते पहन लिए। मिरांडा साहब झुंजाराव से पहली ही मुलाकात में प्रभावित हो गईं।
चलते हुए झुंजाराव ने कुछ याद आने का नाटक करते हुए कहा, "साहब, जब आपका शिकार करने का मन करे तब आइएगा, लेकिन अगर उससे पहले शिकार खत्म हो जाए तो क्या हम आपको 'सूअर का मांस' भेज सकते हैं?"
"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! इसे जरूर भेज दीजिएगा!"
झुंजाराव महल में आए। वे मन ही मन कुछ बेचैन थे। आठ-दस वर्षों से वे जिस झुंजाराव मोटर परिवहन का संचालन कर रहे थे, वह अब अतीत का हिस्सा बनने वाला था। उसके स्थान पर, लाल और पीले रंग से रंगी हुई गुमनाम एस.टी. ट्रेनें अंबा, विशालगढ़, गगनबावड़ा और उदगीर के मार्गों पर चलने वाली थीं।
झुंजाराव कपड़े बदलकर अंदर आया। सरलाबाई ने उससे कुछ पूछा।
"क्या आप बॉस से मिले? उन्होंने क्या कहा?"
"हमारी मुलाकात हुई थी। लेकिन मैंने उसे साफ-साफ कह दिया था कि मैं उसके द्वारा प्रस्तावित कोई भी नौकरी स्वीकार नहीं करूंगी! संग्राम कहाँ है?"

"क्या आज परिणाम घोषित किए गए?"
संग्राम की पढ़ाई आंसू बहाते हुए चल रही थी। संग्राम ने अपने तीसरे प्रयास में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की थी और अब वह राजाराम कॉलेज में इंटरमीडिएट की परीक्षा की तैयारी कर रहा था।
मैंने सोचा था कि मैं एस.टी. प्रमुख से कहूँ कि क्या वे मेरे बेटे को मेरी जगह एस.टी. नियुक्त कर सकते हैं, देखिए!
"अनुरोध करने में कोई समस्या नहीं थी।"
"लेकिन बैसाहेब, अगर आपको सरकारी या अर्ध-सरकारी नौकरी मिल भी जाए, तो आपको उसे जिम्मेदारी से निभाना होगा। आपने उन्हें बिगाड़ दिया है।"
"हमारे बाद क्या होगा, कौन जाने?"
"परसों अमेरिका से बाजीराव का एक पत्र आया। उसमें लिखा था, 'देखो संग्राम यहाँ आने के लिए तैयार है या नहीं!'"
"आप वहां किस तरह की नौकरी करने जा रहे हैं?"
"बाजीराव के कई कंपनियों में जान-पहचान है। वे इसे कहीं न कहीं शामिल कर देंगे।"
मुझे नहीं लगता कि वह जाएगा। अगर वह जाता भी है तो ऐसा नहीं लगता कि वह अपना नाम बना पाएगा।
"परसों मेरी मां आई थीं। वह कह रही थीं कि कई लड़कियों के पिताओं ने उनसे संग्राम नामक स्थान के बारे में पूछा था।"
"उसे अभी तक एक पैसा भी कमाने की अक्ल नहीं आई है और फिर भी वह उससे शादी कर रहा है! क्या वह उस लड़की का पेट पाल सकता है? उसे हमारे साथ ही रहने दो। हम पेट भर खा लेंगे। उसके दिमाग में शादी का जुनून मत भरो।"
"लेकिन शादी हो जाने के बाद बच्चे अधिक समझदार हो जाते हैं। वे अपनी जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक हो जाते हैं।"
"तुम्हें गलतफहमी है। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। वह बहुत ही गैरजिम्मेदार और लापरवाह इंसान है!" "उसे अब तक ग्रेजुएट हो जाना चाहिए था। एल.एल.बी. छोड़ो भी! यही तो हमारा उसके लिए एकमात्र सपना था। वह खेत संभाल सकता था और पन्हाला जा सकता

था, या मलकापुर अदालत में वकालत भी कर सकता था। उस इलाके में कई लोग मुझे मोटर व्यवसाय की वजह से जानते हैं, और इससे उसे ज़रूर फ़ायदा होता! लेकिन ये तो बस बातें हैं। जाने दो। वह आजकल मुझसे बच रहा है। यह मत सोचो कि मैं समझ नहीं पा रहा हूँ! तुमने उसे बिगाड़ दिया है।"

हाल ही में सरलाबाई संग्राम को लेकर थोड़ी चिंतित हो गई थीं। हालाँकि संग्राम विवाह योग्य आयु का था, झुंझरराव का मानना था कि जब तक वह कुछ कमाने न लगे, तब तक उसकी शादी नहीं होनी चाहिए, और इसमें कोई बुराई नहीं थी।

झुंजाराव रंकाला स्थित अपने घर की छत पर खड़े थे। सामने फैली रंकाला झील को वे चाहे जितनी देर देखते, उनका मन नहीं भरता था। दिन के किसी भी समय झील का नज़ारा मनमोहक होता था। सर्दियों में झील पर घना कोहरा छा जाता था। दोपहर में जब कोहरा छंटता, तो लहरें सूरज की रोशनी में चमक उठती थीं। शाम को उनका मन करता कि वे छत से उठ ही न पाएं। हर शाम नए रंग और आकृतियां लेकर आती थी। पश्चिमी क्षितिज पर रंगों के इस अद्भुत नज़ारे को देखकर उनका मन करता था कि सूर्यास्त तक वे वहां से उठ ही न पाएं।

उस शाम जब झुंजाराव छत पर बैठे थे, सरलताई सीढ़ियों से ऊपर आईं।

झुंजाराव के बगल में खड़ी होकर उन्होंने कहा, "मेरी बचपन की दोस्त पद्माबाई आई हैं। उन्हें कुछ कानूनी सलाह की जरूरत है!"

"कानूनी सलाह? किसी वकील से लो। मेरे पास तो कानून की अधूरी डिग्री है! अगर मामला पेचीदा हो तो मैं उन्हें क्या सलाह दे सकता हूँ?"

"चाची उनके साथ आई हैं। घर पहुँचने के बाद उन्हें किसी और वकील से सलाह लेने के लिए भेजना ठीक नहीं लगता! इसके अलावा, पद्माबाई विधवा हैं!"

जैसे ही उसने विधवा शब्द का प्रयोग किया, झुंजाराव की आवाज में थोड़ा बदलाव आ गया।

"लेकिन अगर ये पद्माबाई हैं, तो कृपया मुझे बताएं कि वो कौन हैं, कहां से हैं और उनकी समस्या क्या है?"

सरलाबाई ने कहा, "तुमने ये सब पद्माबाई के मुंह से सुना! क्या हम उसे ऊपर भेज दें?"

शुरू में एक परिपक्व वकील न होने के कारण सलाह देने में अनिच्छुक रहे झुंजारराव विधवा को बताए जाने पर सहमत हो गए।
"उन्हें भेजो। तुम भी भेज दो।"
"मैं सीढ़ियाँ कहाँ से चढ़ूँ, चाची? पद्माबाई आ जाएँगी!"
नीचे सरलाबाई ने अपनी बहन और पद्माबाई को चाय और बिस्कुट दिए और पद्माबाई से कहा, "चलो ऊपर चलते हैं। सरकार छत पर है।"
पद्माबाई की उम्र अट्ठाईस या उनतीस वर्ष थी, उनका रंग गोरा था, नाक सीधी थी, माथा भव्य था और आँखें भूरी थीं। जैसे ही झुंझरराव ने उन्हें देखा, वे ऐसे खड़े हो गए मानो वे कोई स्त्री हों। पद्माबाई ने झुककर झुंझरराव को प्रणाम किया। उन्होंने अपने सिर पर घूंघट ठीक करते हुए कहा,
"यह बात आपको थोड़ी परेशान कर रही है! आपसे मिलने से पहले मैंने तीन-चार वकीलों से सलाह ली थी। लेकिन उनमें से किसी ने भी मुझे व्यावहारिक सलाह नहीं दी। वे सब व्यापारी हैं! फिर मैंने सुशीला से पूछा, तो उसने कहा, 'सरलक्का के श्री झुंजाराव भले ही वकील न हों, लेकिन वे बहुत ज्ञानी और व्यावहारिक व्यक्ति हैं। गांवों से लोग उनसे सलाह लेने आते हैं। वे उन्हें सही मार्गदर्शन देते हैं।'"
झुंजाराव तारीफ सुनकर अभिभूत होने वाले व्यक्ति नहीं थे; उन्होंने तुरंत कहा, "अरे, गांव के लोगों को किस तरह की समस्याएं हैं? किसी की बहू नहाने नहीं आती, तो किसी का पड़ोसी किसी के खेत की मेड़ पर अतिक्रमण कर लेता है। जब भी संभव होता है, मैं उनके गांव जाता हूं, गांव के चार सम्मानित लोगों को इकट्ठा करता हूं और बातचीत के जरिए वहां के लोगों की समस्याओं का समाधान करता हूं! आपके काम का असली स्वरूप क्या है?"
"सरकार, काम की प्रकृति बताने से पहले, मुझे अपने अतीत के बारे में थोड़ा बताना होगा!"
"अच्छी तरह बोलो!"
"मैं मूल रूप से फलटन की रहने वाली हूँ। वहाँ के राजपरिवार से मेरे दूर के संबंध थे। मेरे पिता पूर्व में सेना में थे। उन्होंने सांगली जिले के कवठे गाँव के एक जागीर शिवराम सावंत से मेरा विवाह निर्धारित किया था। शिवराम बहुत सुंदर और बहादुर थे। मुझसे विवाह करने से पहले ही वे सेना में भर्ती हो गए थे।"

"अगर आपको पहले सेना में भर्ती होना ही था, तो आपने शादी क्यों की?"
"लेकिन उन्हें कमीशन तो मिल गया, है ना? कमीशन प्राप्त अधिकारी अपने परिवार को अपने साथ कहीं भी ले जा सकते हैं जहाँ उनके रहने की जगह हो।"
"मैं समझ गया, आगे क्या हुआ?"
मैं उनके साथ दो या तीन साल तक रहा।
"हम अंबाला, देहरादून और पुणे छावनी में रहते थे!"
"और अधिक जानकारी प्राप्त करने से पहले, क्या मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?" झुंजाराव ने कहा।
"पूछना न भूलें।"
"क्या इन दो-तीन वर्षों में कोई बच्चे हैं?"
पद्माबाई ने हल्की मुस्कान के साथ कहा,
"सवाना को बच्चों से बहुत लगाव था। लेकिन बार-बार तबादलों के कारण, हम दोनों ने कहीं स्थायी रूप से बसने तक बच्चे पैदा न करने का फैसला किया!"
आप अपना जीवन कैसे व्यवस्थित करेंगे? आप सेना में क्या कर रहे थे?
"पहले मैंने सेकंड लेफ्टिनेंट के रूप में भर्ती किया। बाद में मुझे कैप्टन के पद पर पदोन्नत किया गया।"
"ठीक है, अगला?"
"इसी बीच कश्मीर का मुद्दा उठा। सावंतना की पोस्टिंग फूलबामा जिले में हुई थी। उन्होंने वहां कार्यभार संभाला। लेकिन वहां से श्रीनगर लौटते समय उनकी जीप दुर्घटनाग्रस्त हो गई। जीप 200 फुट गहरी खाई में गिर गई। उनकी मौके पर ही मृत्यु हो गई।"
पद्माबाई की कहानी ध्यान से सुन रहे झुंझरराव थोड़े भावुक हो गए और बोले,
"अरे, ये तो बुरी बात है! तब तुम कहाँ थे?"
"मैं कावथ्या में था। जब सैन्य अधिकारियों का टेलीग्राम आया, तो हम सब चौंक गए। मेरे ससुर तो खबर सुनकर स्तब्ध रह गए।"
"शिवराम के दो भाई हैं, एक विजय और दूसरा उदय! विजय की शादी हमारी शादी से पहले हो गई थी। उदय की शादी बाद में हुई। उसकी रस्में पूरी होते ही सावंत परिवार का माहौल

बदल गया! उसके भाइयों ने उसका सारा बचा हुआ पैसा हड़प लिया। ज़मीन के सिर्फ़ दो हिस्से ही बनाए गए। मैंने कहा था कि तीन हिस्से होने चाहिए।"
"बिल्कुल!"
"वे अब भी मुझे शिवराम की जमीन देने को तैयार नहीं हैं। मेरे देवर और भाभी ने मेरे साथ एक कंगाल जैसा व्यवहार किया क्योंकि मैंने उनसे जमीन में हिस्सा मांगा था।"
"लेकिन आपको आवंटित भूमि का आप क्या करेंगे? आपको खेती का कितना अनुभव है?"
"जब मुझे ज़मीन में मेरा हिस्सा मिल जाएगा, तो मैं उसे बेच दूंगा या कबीले बनाकर उस पर कब्ज़ा कर लूंगा। लेकिन असल में, वे लोग मुझे कुछ भी देने को तैयार नहीं हैं, है ना?"
"सावंत को किसी न किसी तरह की पेंशन तो मिल ही रही होगी, है ना?"
"हाँ। कम से कम अभी तो मैं इसी से अपना गुजारा कर रहा हूँ! वे लोग मुझे महल में हिस्सा देने को तैयार नहीं हैं!"
आपकी शिक्षा का स्तर कितना है?
मैं स्नातक हूँ, बी.एड. पूरा करने के बाद नौकरी पाना चाहता हूँ। लेकिन शिक्षा विशेषज्ञ बी.एड. के लिए भारी दान राशि मांग रहे हैं। मेरे पास तो उतने पैसे भी नहीं हैं!
"अच्छा, चलिए मैं आपसे एक और नाजुक सवाल पूछता हूँ। आपकी उम्र इतनी भी नहीं है। क्या आपने कभी पुनर्विवाह के बारे में सोचा है?"
पद्माबाई ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "हमारा परिवार इसके खिलाफ है। इसके अलावा, मुझे यह भी लगता है कि एक शादी के इस अनुभव के बाद, मैं दूसरी शादी से कैसे खुश हो सकती हूँ?"
झुंझरराव ने कहा, "लेकिन पद्मबाई, चाहे कोई महिला कितनी भी निपुण क्यों न हो, वह इस दुनिया में किसी पुरुष के समर्थन के बिना जीवित नहीं रह सकती!"
"माफ़ कीजिए सरकार, फिलहाल मैंने उस जाल में न फंसने का फैसला किया है। क्या मुझे पहले ज़मीन में अपना हिस्सा नहीं मिलना चाहिए? अब मुझे एक अजीब सा डर लगने लगा है!"
"कैसे?"

"वे लोग मेरी जान के साथ कुछ भी अच्छा या बुरा करने से नहीं हिचकिचाएंगे! मेरे बड़े भाई विजय कहते हैं कि मेरे दो बेटे हैं, उनमें से एक को गोद ले लो, फिर मैं तुम्हें जमीन में तुम्हारा हिस्सा दे दूंगा!"
तो? समस्या क्या है?
"मैं सावंत परिवार से बच्चा गोद नहीं लेना चाहती! क्या मुझे कोई व्यक्तिगत स्वतंत्रता है या नहीं?"
"ज़रूर। लेकिन पद्माबाई, आपका मामला सौहार्दपूर्ण ढंग से हल नहीं हो सकता। आपको अपने देवर के खिलाफ दीवानी मुकदमा दायर करना होगा!"
"इसका मतलब है कि यह मुकदमा मेरे जीवनकाल में हल नहीं होगा! सरकार, कोई दूसरा रास्ता सुझाओ!"
कुछ क्षण सोचने के बाद झुंजाराव ने कहा,
"देखते हैं। हम सांगली जिले के कुछ प्रतिष्ठित लोगों के माध्यम से आपकी भाभी से संपर्क करेंगे! लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए, आप दोनों फिर कभी अकेले वहां मत जाना!"
"जी हां, बिल्कुल सही। परसों ही मैंने सतारा कलेक्टर से आत्मरक्षा के लिए रिवॉल्वर का लाइसेंस बनवाया था। रिवॉल्वर बहुत महंगी हो गई है! कहते हैं डेढ़ से दो लाख रुपये लगेंगे। ऊपर से रिवॉल्वर बैग में ही पड़ी रहती है और लाइसेंस धारक की जान चली जाती है! ऐसे कई उदाहरण देखने को मिले हैं।"
"सच है। यह कुंभोज के पाताल का ताजा उदाहरण है। उनकी कमर पर छह बैरल वाली रिवाल्वर थी और आगे-पीछे भाले लिए दो 'अंगरक्षक' थे। ऐसी हालत में, हमलावर अचानक पनांडी से आए और उनका सिर काट दिया! बाद में, कहते हैं, हमलावरों को ढूंढ लिया गया, लेकिन संदेह का लाभ देते हुए उन्हें अदालत में बरी कर दिया गया।"
"इसीलिए मैं आज आपके पास आया हूँ। आप मुझे क्या सलाह देंगे? मैं अभी तुरंत नहीं देना चाहता। सोच-समझकर फैसला कीजिए। मैं आपसे बाद में मिलूंगा।"
पद्माबाई ने झुंझरराव को विदाई देने के बाद उठ खड़ी हुईं। उन्होंने एक बार फिर गरिमापूर्ण ढंग से झुंझरराव को प्रणाम किया और सीढ़ियों से नीचे उतर गईं।

उसके जाने के बाद, झुंजाराव ने एक लंबी आह भरी और मन ही मन कहा, "अब इन बारह लोगों को क्या सलाह दूं? यह बहुत मुश्किल है!"
सूर्यास्त के बाद धीरे-धीरे अंधेरा छाने लगा। पहले आकाश में कुछ तारे दिखाई दिए। फिर, पूरा आकाश चांदनी से भर गया।
झुंजाराव दोपहर के भोजन के लिए नीचे आए। सरलाबाई ने उनसे पूछा, "क्या पद्माबाई का काम करने लायक है?"
"देखते हैं। मुझे थोड़ा मुश्किल लग रहा है। कावथ्या के लोग मनमानी करते दिखते हैं। मुझे नहीं लगता कि कोई महिला बहुत सारी बातें करके जमीन का हिस्सा हासिल कर पाएगी।"
"कम से कम कोशिश तो करो। वह बड़ी उम्मीदों के साथ हमारे पास आई है। विधवापन की गाज उस बेचारी पर जवानी में ही गिर पड़ी है!"
झुंजाराव बिना कुछ कहे खाने की मेज पर बैठ गया और खाना शुरू कर दिया।
"क्या युद्ध हुआ है?"
नहीं। आज उसके दोस्त का जन्मदिन है। वह बाहर खाना खाने जा रहा है।
"उसने मुझे बताया ही नहीं! वो आजकल मुझसे बच रहा है!"
"आपको ऐसा लगता है, जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो वे अपने पिता के साथ खुलकर बात नहीं कर पाते। लेकिन अगर आप अब से बाहर जाना चाहते हैं, तो मैं आपको यही सलाह दूंगी कि अपने पिता से पूछें।"

अध्याय 5

झुंजार मोटर ट्रांसपोर्ट बंद हो गया था। इसके बंद होने के बाद से झुंजारराव कुछ 'शांत' रहने लगे थे। अंबवाड़ा फार्म पर उनका एक साधारण दो कमरों का घर था। वे कभी-कभार वहाँ जाते थे, लेकिन वहाँ रहते नहीं थे। उनके शुभचिंतकों ने उन्हें सलाह दी थी कि वे कभी-कभी फार्म पर आकर रहें।

मंगू धनगर कभी-कभी खेत में आया करता था। मंगू के आने पर झुंझरराव को थोड़ा सुकून मिलता था! उस दिन वह अमवदा आया था।

सरकार, आपने वह नई कार इसलिए बनाई है ताकि उससे उदगीर के आमों तक पहुंचा जा सके!

"हाँ। आपकी बात सही है। कभी-कभी मुझे इस शहरी जीवन से बहुत ऊब हो जाती है! अगर मैं किसी से दिल से दोस्ती करना चाहूँ, तो मुझे आस-पास कोई नज़र नहीं आता। हमारे कई सरकारी अधिकारियों ने अपनी ज़मीनें बेच दी हैं और देश छोड़कर जाने लगे हैं। उनका रूढ़िवादी रवैया अभी तक नहीं बदला है।"

“लेकिन सरकार, आप जो भी कहें, आपने वन विभाग की आवाज बदल दी है! फैरिस्टर तो महीनों पहले ही आ गए थे। आपने मुझ पर इसका गहरा असर डाला है।”

"क्यों? आपको फोन करने का क्या कारण है?"

"मैंने अभी-अभी बंदूक खरीदी थी, इसलिए मुझे उसे खरीदकर आत्मसमर्पण करना पड़ा।" मेरा लाइसेंस पढ़ने के बाद उसने कहा, "आपको आत्मरक्षा के लिए बंदूक की क्या ज़रूरत थी? क्या आप बारह महीने तक अपनी कमर पर तेज़ दरांती नहीं रखते? आप तो दरांती से तेंदुओं को भी मारते हैं।"

मैंने कहा, 'सायेब, एक तेंदुए ने सरकार पर हमला किया,' इसलिए मैंने उसे नष्ट कर दिया, और मैंने यही कहा था!'

उन्होंने कहा, "तुम बहुत बुद्धिमान हो!"

"उन्होंने मेरी बंदूक अंदर देखी और कहा कि यह अच्छी है। आपने इसे कितने में खरीदा? मैंने कहा कि सरकार ने मुझे यह दी है। मुझे नहीं पता कि मैंने कितने पैसे दिए!"

"क्या आपको पता है कि आपको इस बंदूक का लाइसेंस क्यों दिया गया था? यह केवल आत्मरक्षा के लिए दिया गया था। आपको इस बंदूक से शिकार नहीं करना चाहिए। अगर आप इस तरह शिकार करते हुए पकड़े गए, तो आपके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी और आपका लाइसेंस जब्त कर लिया जाएगा।"
"तो तुमने क्या कहा?"
“क्या तुम्हें मेरी पुरानी बंदूक दिख रही है? सदियों से बंदूकें गांवों में फैलती आ रही हैं। सप्ताह में एक दिन हम कोंकण में आवाज लगाते हैं। क्या माता-पिता का दिन व्यर्थ नहीं जाएगा? चाहे तुम कुछ भी कर लो, वे रुकने वाले नहीं हैं! तुम्हारे कानून सिर्फ कागजों पर हैं।”
झुंजाराव ने कहा, "आपने अच्छा किया। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि तेंदुए का मुद्दा अभी तक उन लोगों के दिमाग में क्यों नहीं आया?"
"सरकार ने पूरे जंगल को इस फ़रिश्ते जैसे विभाग के साथ बाँट दिया है। वे किसी को दो एकड़ पेड़ काटने का लाइसेंस देते हैं। वे दो सौ एकड़ काट देते हैं, देखने में भी नहीं लगता। और जब हमारी औरतें और बच्चे चार एकड़ के मलकापुर बाज़ार में खाना खरीदने जाते हैं, तो वे केस दर्ज कर देते हैं! क्या आपने कभी उस फ़रिश्ते जैसे विभाग का बंगला देखा है?"
नहीं, मैंने सुना है कि लावला सड़क के पास ही है!
"रानोजी धनगर जंगल के ठेके लेता है, पहाड़ों में कोयला भट्टे लगाता है। उसने खूब पैसा कमाया है, दो लकड़हारे!"
"क्या उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है?"
“ये सब कैसे हुआ? महीने में दो बार, देवदूत जंगल के बंगले में ठहरता है, और रानू धनगर मुर्गियों को शराब पिलाता है! लाइ गब्बर झले म्हनन्नासा!”
"इस प्रकार के अवैध साधनों से प्राप्त धन किसी व्यक्ति को खुशी नहीं दे सकता।"
“हमें ऐसा ही होना चाहिए था, लेकिन ऐसे लोगों में कुछ भी गलत नहीं है। अरे सरकार, रानू धंगरा ने सोटा से दो लेलैंड ट्रक खरीदे हैं। मैंने दुमजाली में एक घर बनाया है। घर में फोन क्या है, बर्फ का टुकड़ा क्या है, मेज और कुर्सियों की सागौन की लकड़ी क्या है और शिक्षक की टोपी क्या है?”
"तो वे इन बातों को किसी वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के ध्यान में क्यों नहीं लाते?"

"अरे सरकार, पिछले महीने एक बड़ा पुलिस अधिकारी जंगल वाले बंगले में रुका था। उसे दो हजार रुपये की शराब की बोतल दी गई थी! उसने कुछ मुर्गियां मारीं, एक दर्जन अंडे उबाले। उसने दोपहर में पार्टी की!"
"आप क्या जानते हैं?"
"उस दिन मैं रानू धनगरा के घर में रही। मुझे नदी के उस पार की बहुत याद आ रही थी, इसलिए मैं वहीं रुक गई! रानू बहुत अच्छी इंसान हैं, वह सबके साथ अच्छा व्यवहार करती हैं, आने-जाने वालों को खाना खिलाती हैं। भला उनकी बुराई कौन कर सकता है?"
झुंजाराव मंगू, रानोजी धनगारा की सच्ची कहानी सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, "मैं रानोजी से पहले कभी क्यों नहीं मिला?"
“आप लोग कैसे मिलेंगे? वे बारह घंटे के लिए अकेले आ रहे हैं! वे कभी स्थिर नहीं रहते! लेकिन जो भी हो, दोस्ती के लिए अच्छा है!”
"क्या आप उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानते हैं?"
"मैं वापस सोने जा रही हूँ! मुझे आश्चर्य हो रहा है कि क्या हमारा तेंदुआ मारा गया है या नहीं, और इसी बात ने मुझे हिम्मत दी है। मैं आपको यह नहीं बताने वाली कि क्या करना है।"
"अब तो मैं उस फॉरेस्ट बंगले को, रानोजी के उस दो मंजिला महल को, सब कुछ देखने के लिए बेताब हूँ!"
"सरकार तुम्हारे फायदे के लिए आम के खेत में स्थित बंगले को बंद कर देगी और लकड़ी के सारे टुकड़े तुम्हें ही पहुंचाएगी, रानू धनगर! तुम उनसे झूठ बोल रही हो!"
उस सुबह झुंजाराव अंबवाड फार्म पहुंचे। निचले हिस्से में गन्ने की बुवाई चल रही थी। ऊपरी हिस्से में उगाई गई पत्तागोभी, फूलगोभी और टमाटर की फसल की कटाई शुरू हो चुकी थी। उन्हें आज पूरा दिन खेत में ही बिताना था।
खेत से एक फर्लांग पश्चिम में रत्नागिरी जाने वाली पक्की सड़क थी। वहाँ से झुंजाराव ने अपने फार्म हाउस तक मोटर वाहनों के पहुँचने के लिए दस-बारह फुट चौड़ी सड़क बनवाई थी। आज वह अपनी मोटर वैन से फार्म पर आया था। मंगू ने गाड़ी को अंदर-बाहर से देखा और कहा,

"सरकार ने ये सब हमारे लिए किया है! जीने, खाने, सोने के सारे नियम! इसमें किसकी गलती है!"
"अरे बेचारे इंग्लैंड, ये तो अमेरिकी जनता के मुखिया हैं। क्या आप हमारे बहनोई, बाजीराव भोसले को जानते हैं?"
"वाह, वाह! क्या उन्होंने मुझे जूते बनाने के लिए सांभर काटने को नहीं कहा था? लेकिन अब तो कोई सांभर काटता ही नहीं। मैंने माहवारी के खून के पास से एक टुकड़ा काटा, उसे बाजीरावसनी को दे दो!"
"यह ऐसा कहने जैसा है कि बाजीराव चार-पांच महीने पहले यहां आए थे और उन्होंने ही हमें इस कार का विचार दिया था!"
“अब ये कार सीधे मेरे घर पर आकर रुकी है!”
"ऐसा होगा। वह समय अवश्य आएगा।"
तभी रत्नागिरी रोड से एक रिक्शा मुड़ा और झुंझरराव के फार्म हाउस के ठीक सामने आकर रुक गया। कौन आया है? यह कहते हुए झुंझरराव बरामदे से आगे बढ़े। वे चौंक गए। रिक्शा चालक का बिल चुकाकर पद्मबाई सावंत आगे आईं।
उन्होंने अपने सिर से घूंघट हटाया और झुंझरराव को प्रणाम करते हुए सिर झुकाया।
"आप यहां पर क्या कर रहे हैं?"
"मैं रंकाला में अपने घर गया था। वैनीसाहेब ने कहा कि आज सारा दिन खेत में ही रहना होगा। फिर हम गंगावेशी से सीधे एक रिक्शा लेकर गए। वैनीसाहेब ने मुझे आपके खेत का सही पता बताया।"
"आप कमाल हैं! आपने तो बहुत सारी जगहों पर अपना रास्ता खोज लिया है।"
"सरकार, मैं भी तुमसे मिलना चाहती थी। बाद में मेरी चाची ने मुझे तुम्हारे बारे में सारी जानकारी दी। मैंने तुम्हें और मंगू धनगरा द्वारा मारे गए तेंदुए-बाघ को, और उससे पहले तुम्हारे द्वारा मारे गए आदमखोर बाघ को, तुम्हारे पुराने किले के शिकारगाह में देखा था। मैं तुम्हारे साहसी जीवन से बहुत प्रभावित हूँ। जब मैं छोटी थी, तो फलटन में अपने चाचा के साथ हिरण का शिकार करने जाया करती थी! मेरे चाचा ने मुझे टी22 राइफल चलाना सिखाया था। मैं बहादुर लोगों का सम्मान करती हूँ! इसीलिए शिवराम को देखते ही मैं उसे पसंद करने

लगी। जब मैं उसके साथ सेना में थी, तो मैंने भरतपुर महाराज के वार्षिक बत्तख शिकार में भी भाग लिया था। लेकिन अचानक, जीवन का पासा पलट गया। शिवराम का एक्सीडेंट हो गया और मैं बेसहारा हो गई। मैं यह भी सह सकती थी। लेकिन मेरे ससुराल वाले मुझे घर से निकालने पर तुले हुए हैं। घर के लोग भी शिवराम की असमय मृत्यु के लिए मुझे ही जिम्मेदार ठहराने लगे हैं। इसलिए मैं भी अड़ियल हो गई हूँ। शिवराम को आवंटित जमीन दिलवाने के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ।"

मंगू थाली से चाय और बिस्कुट लेकर आया। पद्माबाई ने उसकी ओर देखा और कहा,

"उन्होंने उसे अच्छी ट्रेनिंग दी।"

"वह मेरा बहुत ख्याल रखते हैं। कौन जाने उनका मुझसे कैसा रिश्ता है! अच्छा, पद्माबाई, क्या आप हमारे खेत में थोड़ी सैर करना चाहेंगी?"

"चलो, चलते हैं। मैं अपने ही खेत में कभी घूम नहीं पाया! लेकिन यहाँ मुझे मौका मिल गया है। सरकार, इस खेत पर एक बढ़िया आधुनिक घर बनाइए! यह पहाड़ी आपके अधिकार क्षेत्र में ही लगती है, है ना? यह फार्म हाउस के लिए एकदम सही जगह है।"

"लेकिन, पद्माबाई, मेरे जीवन में कुछ ऐसी घटनाएं घटी हैं जिन्होंने मुझे किसी भी चीज के लिए कोई उत्साह नहीं छोड़ा है।"

"मैं आपको उपदेश देने के योग्य नहीं हूँ। फिर भी मैं कह रहा हूँ। आपकी परिवहन कंपनी बंद हो गई है। लेकिन यह कोल्हापुर से तेरह-चौदह किलोमीटर दूर एक बहुत ही सुंदर इलाका है। रांकल्या नदी के किनारे एक घर है जो आपको मोहित कर देगा। उसका एक सुंदर बेटा है। उसकी पत्नी सरलावनी जैसी सुंदर है। समाज में उसका सम्मान है, और आपको क्या चाहिए?"

झुंजाराव ने इस बारे में कुछ नहीं कहा। "चलो नीचे चलते हैं।"

गन्ने के खेत देखने के बाद वे टमाटर के सूप वाले सेक्शन में आए। पद्माबाई ने एक रसीला टमाटर उठाया। उसे देखकर उन्होंने कहा, "ये टमाटर कितने सुंदर हैं! ये तो मेरा पसंदीदा फल है! क्या आपको टमाटर का सूप पसंद है?"

मुझे बहुत खुशी होगी। लेकिन हमारी भाभी आजकल नए पकवान बनाने के मूड में नहीं हैं! हालांकि, वो हर तरह के मांसाहारी व्यंजन बनाती हैं!

मैं उन्हें वह प्रशिक्षण दूंगा!
फिर मैंने फूल और पत्तागोभी को भाप छोड़ते देखा। पद्माबाई उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुईं। उन्होंने तुरंत घर के बाईं ओर खड़ी मोटर होम की ओर ध्यान दिया। एक नन्ही बच्ची जैसी आवाज निकालते हुए, पद्माबाई ने बाहर से कार की ओर हाथ हिलाया और कहा,
"क्या यह गहरा नीला है?"
"अब इसे मत देखो?"
झुंजाराव ने दरवाजा खोला। चार लोगों के रहने और खाने की सुविधा वाली उस मोटर वैन को देखकर पद्माबाई ने कहा, "मैंने ऐसी गाड़ियाँ अंग्रेज़ी फिल्मों में देखी हैं। लेकिन कोई विश्वास नहीं करेगा कि तुमने इसे कोल्हापुर में बनाया है। इसमें गैस स्टोव है, शॉवर है, वॉशबेसिन है, शौचालय और स्नानघर है। सच बताओ, सरकार, गाड़ी देखकर तुम्हारे मन में क्या विचार आए?"
"क्या?"
"मैं चाहता हूं कि आप अपने साथ खड़े हिंदुस्तान पालथा को इस कार से बाहर निकालें।"
झुंजाराव ने अपनी मूंछों पर मुट्ठी घुमाई और कहा,
"सभी विचार सच नहीं होते। तो आज यहां आने का आपका उद्देश्य क्या है?"
"कई लोगों ने सुझाव दिया है कि मैं अपने सालों को यह सूचना दे दूं कि मैं उनके खिलाफ बंटवारे का दावा दायर करने जा रहा हूं।"
"आप इसे मुझे कभी भी दे सकते हैं।"
"मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप वह नोटिस तैयार करें, भले ही आप उसे किसी भी समय दे सकें।"
"मुझे?"
"हाँ। क्योंकि आपके जैसी आत्मीयता के साथ इसे कोई और नहीं लिख सकता।"
झुंजाराव ने एक पल सोचा और कहा, "चार दिन बाद मुझसे मिलो। मैं नोटिस तैयार कर लूंगा।"
मैं आपकी फीस चुका दूंगा!

"शुल्क? तो मैं नोटिस तैयार नहीं करूँगा। मैं पेशेवर वकील नहीं हूँ, पद्माबाई। मैंने नोटिस तैयार करने के लिए इसलिए सहमति दी क्योंकि आप सरला की चाची को लेकर आई थीं।"
"लेकिन मुझे लगता है कि इसके लिए अपना समय और बुद्धि लगाने के बदले में आपको कुछ स्वीकार करना चाहिए।"
"आज इस बारे में चर्चा न करें।"
जब वह जाने ही वाली थी, तब झुंजाराव ने कहा, "अपने दस्तावेज़ ले आओ। मैं नोटिस का मसौदा तैयार कर दूंगी।"
पद्माबाई के जाने के बाद, मंगुन ने झुंजारावना से पूछा, "इस आकाश में किसकी सरकार है? मैं कभी कोल्हापुर नहीं गया।"
"वे हाल ही में कभी-कभी आते हैं। आप उस समय वहां नहीं थे। उस महिला को कैसा लगा?"
‘‘लाई को अच्छा लगा। मैं पूछ रहा था कि मैंने किसे हराया, और तुम्हें कैसे पहचानूं।
"यह मेरी गलती थी, आप आज यहाँ बिना किसी कारण के आए थे। मुझे आपको उनसे मिलवा देना चाहिए था।"
लेकिन उस महिला को तराजू कौन दे रहा है?
"ओह, उनकी शादी शिवराम सावंत नाम के एक सैन्य अधिकारी से हुई थी। दुर्भाग्य से, शिवराम सावंत का एक दुर्घटना में निधन हो गया। यह महिला बेसहारा हो गई। उनके ससुराल वालों ने उन्हें उनके पति की ज़मीन का एक गुंठा भी नहीं दिया। वह कहती हैं कि उन्हें उन्हें ज़मीन दे देनी चाहिए। लेकिन वे लोग जिद्दी लगते हैं। वे आसानी से नहीं देंगे। इसलिए अगर बात यहाँ तक पहुँचती है, तो उन्हें अदालत में मुकदमा दायर करना होगा। आपको नहीं पता कि उनके देवर के खिलाफ दीवानी मुकदमा क्या होता है। अगर दादाजी मुकदमा दायर करते हैं, तो फैसला पोते के जीवनकाल में ही आ जाएगा! इसलिए, मैं पहले सूचना देना चाहता हूँ।"
"करो, करो, अगर तुम्हारे जैसा ताकतवर आदमी उस महिला का साथ देगा तो सरकार को कम से कम कुछ न्याय तो मिलेगा।"
"न्याय मिले या न मिले, फिलहाल हमें सिर्फ उसके ससुराल वालों को नोटिस देना होगा।"
मुझे पूरा विश्वास है कि आप सफल होंगे, सरकार।

झुंजाराव ने मंगू से काफी देर तक बातें कीं। सूर्यास्त के बाद, वह मंगू को अपने साथ लेकर कोल्हापुर के लिए रवाना हो गए।
वहाँ पहुँचकर उन्होंने सरलाबाई से कहा, "मंगू आज हमारे साथ भोजन करने आ रहा है।"
“ऐसी शाम के बाद वह और कहाँ जाएगा?” सरलाबाई ने कहा।
"मुझे संग्राम कहीं नहीं दिख रहा!" झुंझरराव ने अपनी घड़ी देखते हुए पूछा।
वह आज अपने दोस्त के खेत में खाने-पीने और रहने गया था!
"खेत पर? मैंने उसे अपने खेत पर कितनी बार आमंत्रित किया, लेकिन वह नहीं आया, और अब वह किसी और के खेत पर जा रहा है? और उसका करीबी दोस्त कौन है?"
"आज सुबह जाते समय उसने मुझे कुछ नहीं बताया।"
"आपसे मिलकर खुशी हुई! आपको पता ही नहीं कि आपके दोस्त कौन हैं और आप उन पर सिर्फ इसलिए भरोसा करते हैं क्योंकि वे हमेशा आपके साथ रहते हैं? आपने अभी-अभी मैट्रिक परीक्षा पास की है और अब कॉलेज में हैं, और आप ऐसे व्यवहार करने लगे हैं जैसे आपने आसमान छू लिया हो!"
"प्रवीण नाम का एक दोस्त उसके साथ था। वह अक्सर कहता था कि शिरोल उसके साथ आगरा जाएगी।"
"ये तो पूर्ण जनहानि के संकेत हैं!" अगले दिन, सुबह करीब दस बजे संग्राम आया। वह कभी झुंझरराव के सामने खड़ा नहीं होता था। वह सरलाबैरी से बात करता था!
जब झुंझरराव अपनी परिवहन कंपनी चला रहे थे, तब उन्होंने एक छोटी खुली छत वाली मॉरिस कार खरीदी थी। वह पुरानी हवेली के गैराज में धूल फांकती पड़ी थी। पहिए ज़मीन से चिपक गए थे, इंजन में जंग लग गई थी। संग्राम, जो रसोई में गया था, बाहर आया और झुंझरराव से बोला, “पापा, मुझे अपनी मॉरिस कार ठीक करवानी है। मैंने गंगाराम मेस्त्री से बात की है। उन्होंने कहा है कि वे आपकी कार जल्दी ठीक करवा देंगे!”
"गंग्या मेस्त्री नंबर एक झूठा है। वो तुमसे चार-पाँच हज़ार रुपये लेगा और गाड़ी को किसी तरह चालू करने का जुगाड़ कर देगा! उसके झांसे में मत आना। पहले तुम स्नातक हो जाओ। मैं तुम्हें एक नई, एकदम साफ-सुथरी बेबी फोर्ड खरीद कर दूंगा। समझे?"

"लेकिन पापा, गंगाराम का कहना है कि हमारी मॉरिस कार का इंजन ज्यादा 'क्षतिग्रस्त' नहीं है।"

मुझे उस आदमी पर भरोसा नहीं है। वो मीठी-मीठी बातें करके और पुरानी गाड़ियाँ ग्राहकों के गले में फँसाकर उनका शोषण करता है! मैंने कभी गलती से भी अपनी सर्विस वाली गाड़ियाँ उसके पास मरम्मत के लिए नहीं भेजीं। वो बड़ी मीठी बातें करता है, खरीददारी पर भी कमीशन लेता है।

"लेकिन गंगा अंकल ने मुझसे कहा, 'गाड़ी ठीक होने पर ही मुझे पैसे देना। मैं मजदूरी भी नहीं लूंगा।'"

"अरे चिरंजीव, तुम अभी भी बच्चे हो। गंग्या मेस्त्री इतना पागल नहीं है कि वह इस कार को ठीक करवाए जो 10-12 साल से दूसरे गैराज में धूल खा रही है और इसके लिए पैसे भी न दे।"

"लेकिन पापा, मुझे कार चाहिए।"

आज पहली बार संग्राम ने ज़िद की। सरलाबाई अंदर से बाहर आईं और बोलीं, "तुमने बाजीराव के सुझाव के बजाय मोटरहोम बनवा लिया है। कोई बात नहीं, संग्राम के कहे अनुसार मॉरिस कार ठीक करवा लो! मेरी बात सुनो!"

कुछ हां-ना वाले सवालों के बाद आखिरकार झुंजाराव ने अनुमति दे दी। उन्होंने कहा, "गाड़ी पूरी तरह ठीक हो जाने के बाद मैं इसे ट्रायल रन पर ले जाऊंगा। अगर मुझे लगेगा कि गाड़ी ठीक है, तभी मैं स्टीयरिंग आपको सौंपूंगा।"

झुंझरराव ने आखिरकार सोचा। अब चाहे कुछ भी हो जाए, संग्राम बालिग हो चुका है। अगर वह मुझ पर ज़ोर नहीं देगा, तो और किस पर देगा? अंत में, जब हम थक जाएंगे, तो सारी शक्ति एक ही लड़के के हाथों में आ जाएगी। उसे जाने दो। ये तो आठ हज़ार का सवाल है या दस हज़ार का!

गंगाराम मेस्त्री का गैराज हाईवे पर था। इसलिए बेलगाम, सोलापुर और यहां तक कि रत्नागिरी से भी गाड़ियां मरम्मत के लिए उनके गैराज में आती थीं। वह थोड़ा बदमाश किस्म का आदमी था। वैसे तो वह बदमाश था, लेकिन उसे पता था कि किसे सबक सिखाना है। वह

गंगाराम को तब से जानता था जब वह झुंझरराव की गाड़ियों की सर्विस करता था। उसने उस बंद पड़ी मॉरिस कार के बारे में गंगाराम से सीधे बात करने का फैसला किया।

संग्राम गंगाराम को आगे ले आया। झुंझरराव तीसरी मंजिल पर झील की ओर मुख करके कुर्सी पर बैठे थे। गंगाराम ने झुंझरराव के यौवन काल को देखा था। झुंझरराव के शिकार का हिस्सा अक्सर उनके घर में पकाया जाता था।

वह झुककर एक तरफ खड़ा हो गया।

"गंगाराम, क्या हालचाल है? क्या वो मॉरिस काम करेगा?"

"सरकार आपको शोरूम से भी घटिया गाड़ियाँ ही देती है, लेकिन हमारी मॉरिस तो पुरानी है। हम गाड़ी की मरम्मत करवा लेते हैं। हमें 5-10 साल तक इसे देखने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। बस नए टायर लगवाने पड़ेंगे!"

"अंदाज़ा लगाइए, अगर आप उस मॉरिस को ठीक करने के बाद बेचना चाहें, तो उसे कौन खरीदेगा?"

"सरकार, इसे मुझ पर छोड़ दीजिए, लेकिन संग्राम के बच्चों को वह कार 5-10 साल तक इस्तेमाल करने दीजिए!"

झुंजाराव ने अपनी पसंद की एक कार बनवाई थी। उन्होंने उस पर चालीस से पचास हजार रुपये खर्च किए थे। अब उन्होंने संग्राम के लिए आठ से दस हजार रुपये भी खर्च करने का फैसला किया।

गाड़ी गंगाराम के गैरेज में पहुंची। उसने गाड़ी खोली। पिस्टन से लेकर रेडिएटर और साइलेंसर बॉक्स तक, उसने सारे नए पुर्जे लगा दिए।

नए ट्यूब टायर लगाए गए। पास के ही एक ढोले पेंटर ने गाड़ी को पेंट किया। जब गाड़ी पूरी तरह तैयार हो गई, तो संग्राम को बाईं ओर बैठाकर ट्रायल के लिए गाड़ी निकाली गई। गाड़ी रांकाला से राधानगरी रोड पर चलने लगी।

बीच में संग्राम ने पूछा, "आप कितनी दूर जाना चाहते हैं?"

"चलिए, गाड़ी को अपनी इच्छानुसार घुमाइए। भोगवती जाने के बाद आप आराम से बैठकर गाड़ी चला सकते हैं।"

झुंजाराव ने संग्राम को कभी बड़ी गाड़ी चलाने नहीं दी थी। लेकिन उसे गाड़ी चलाना अच्छी तरह आता था। जब से झुंजाराव ने मोटरहोम बनवाया था, संग्राम गैराज में रखी मॉरिस गाड़ी को ठीक करवाने के बारे में सोच रहा था। यह काम आसान नहीं होने वाला था।
वह झुंझरराव की सहमति चाहता था। आखिरकार, उसे पहली बार यह सहमति मिल ही गई। भोगवती जाने के बाद संग्राम गाड़ी चलाने बैठा। गंगाराम ने गाड़ी को बिलकुल नई जैसी बना दिया था। स्टीयरिंग व्हील अपने हाथ में लेते हुए संग्राम ने कहा,
"गंगा मामा, पापा को एक बार ये कार चलानी ही चाहिए। अब हमें कितनी दूर जाना चाहिए?"
भोगवती का इलाका बेहतरीन फसलों से भरा हुआ है! चारों ओर गन्ने के खेत हरे-भरे थे। बीच में धान की फसल कटाई के लिए तैयार थी। दूर सह्याद्री पर्वतमाला नीले रंग की दिख रही थी। संग्राम जब भी रास्ते में किसी गांव को देखता, गाड़ी की रफ्तार धीमी कर देता। गंगाराम ने कहा, "छोटी सरकार, समय नहीं बचा है। लाइसेंस जल्द से जल्द छीन लो!"
संग्राम, जो बिना लाइसेंस के अपने दोस्तों की गाड़ियां चलाता था, उसके पास अब तक ड्राइविंग लाइसेंस नहीं था। लेकिन अब जब उसके पास अपनी गाड़ी है, तो उसके लिए लाइसेंस बनवाना अनिवार्य हो गया था।
कुछ ही देर में गाड़ी वेरवाड़ा घाट पार करके गैबी के पास आ गई। गंगाराम एक श्रद्धालु थे। उन्होंने गाड़ी रोकी और गैबी के मंदिर के पास गए। उन्होंने अगरबत्ती जलाई और एक नारियल फोड़ा।
संग्राम ने पूछा, "राधानगरी अब कितनी दूर है?"
"बस इतना कह दो, एक बार जब तुम चारों मोड़ों में से एक को पार कर लोगे, तो तुम राधानगरी पहुँच जाओगे!"
घाट की चोटी पर ठंडी हवा। दूर-दूर तक फैले खेत और पहाड़ों के बीच से बहती भोगवती नदी! सब कुछ मनमोहक था। गंगाराम ने कहा, “सरकार को एक बार गाड़ी चलाकर देखना चाहिए! मैंने कोई कसर नहीं छोड़ी है। अब चलो 8-10 दिनों में सारी कोचिंग पूरी कर लेते हैं!”
“हां, अब मैं कार लेकर मांगू के चाचा के पास जा रहा हूँ!”
गंगाराम के लिए यह अनुमान लगाना असंभव था कि संग्राम के उदगीर तक कार ले जाने के पीछे उसका क्या मकसद था।

मंगू मामा की बेटी शेवंता अब बड़ी हो गई थी। थोड़ी बेफिक्र शेवंता कभी-कभी कोल्हापुर में मोरे सरकार के घर जाया करती थी। सरलाबाई उससे बहुत ईर्ष्या करती थी। सरलाबाई अक्सर सोचती थी कि शेवंता को और शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। उसने एक बार मंगू से यह भी कहा,

"मंगू, तुम्हें शेवंता को आगे पढ़ाना होगा।"

"वैनीसाब, तुम क्या सिखा रही हो? अब तो जाटभाई मुझसे कपड़े उतरवाने लगे हैं।"

"क्यों?"

मैंने कहा, 'लड़की की शादी करवा दो!'

"लेकिन कानून के अनुसार लड़कियों की शादी अठारह साल की उम्र तक नहीं हो सकती! मैंने तुम्हें कितनी बार बताया है?"

लेकिन हमारी धनगर जनजाति इसे स्वीकार नहीं करेगी!

"अगर सरकारों को विचारों की ज़रूरत है!"

झुंजाराव शेवंता को एक-दो साल के लिए कोल्हापुर में रखना चाहते थे और उसका नाम श्थुला रखना चाहते थे। लेकिन फिर सवाल यह उठता कि वह रहेगी कहाँ?

वह समस्या महज चार महीने बाद अपने आप हल हो गई।

0-0

पद्माबाई को झुंझरराव द्वारा लिखा गया नोटिस पद्माबाई द्वारा हस्ताक्षरित किया गया और विजय और उदय को भेजा गया। झुंझरराव ने इसे बड़ी सावधानी से तैयार किया था। नोटिस में ज़रा भी धमकी का भाव नहीं था। सावंत परिवार मूल रूप से सावंतवाड़ी रियासत से था और वहाँ के राजपरिवार से उनके दूर के संबंध थे। इसका लाभ उठाते हुए झुंझरराव ने नोटिस में लिखा, 'आप दोनों को मुझे बताने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन आप खेमराज भोसले सावंत परिवार से सीधे संबंधित हैं, जो छत्रपति शिवाजी से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। महिलाओं के प्रति छत्रपति की दयालुता सर्वविदित है। उन्होंने कल्याण के सूबेदार की बहू का सम्मान किया, और जब किले के द्वार बंद थे, तब हिरकानी जैसी गौला कन्या की पुत्री ने अपने पुत्र के लिए एक अत्यंत कठिन दर्रे को पार करने का साहस दिखाया। शिवाजी महाराज ने उस क्षेत्र का नाम हिरकानी बुरुज रखकर उन्हें अमर कर दिया।' यह बहुत दुखद घटना है कि आप दोनों, जो इस प्रतिष्ठित परिवार से दूर के रिश्तेदार हैं, अपने असहाय बहनोई को ज़मीन में हिस्सा देने से इनकार कर रहे हैं। मैं इस मामले में अदालत नहीं जाना चाहता। इससे हमारे परिवार की प्रतिष्ठा दांव पर लग जाएगी। हालांकि, हम दोनों को इस पर विचार करना चाहिए और मुझे न्याय दिलाना चाहिए। शिवराम के हिस्से की ज़मीन मेरे नाम कर दी जाए। यही मेरा निवेदन है।

आपका विनम्र जीजाजी

श्रीमती पद्मा शिवराम सावंत भोसले,

नोटिस का अपेक्षित प्रभाव पड़ा। विजय और उदय, जिन्होंने कहा था कि वे तुम्हें अपनी एक गुंठा ज़मीन भी नहीं देंगे, साथ बैठकर सोचने लगे। अगर पद्माबाई कल अदालत जातीं, तो उन्हें शिवराम के हिस्से की लगभग साठ एकड़ ज़मीन विजय को देनी पड़ती। थोड़ी देर का इंतज़ार ही काफ़ी होता!

"तो फिर मुझे क्या करना चाहिए, दादा?" उदय ने पूछा।

मुझे लगता है कि पद्माबाई यहां आकर उस जमीन पर खेती नहीं कर पाएंगी। इसलिए बेहतर होगा कि हम जमीन में उनके हिस्से का मूल्यांकन आज के बाजार मूल्य के अनुसार करें और उन्हें दे दें।

"बिल्कुल सही। भले ही वे कबीले के माध्यम से उस भूमि पर कब्ज़ा करके उसे अपना बना लें, फिर भी यह मुश्किल होगा! इस बात की संभावना है कि विवाद खड़ा हो जाए कि यह तुम्हारी सीमा है, यह मेरी सीमा है।"
दोनों भाइयों ने सहमति बनाकर पद्मबाई को नोटिस का जवाब भेजा।
पद्माबाई जवाब लेकर झुंझरराव के पास आईं और बोलीं, "सरकार, देखिए, जवाब आ गया है, इसे पढ़िए।"
झुंजाराव ने इसे पढ़ा और मुस्कुराते हुए कहा, "यह सच है कि कभी-कभी कानून की भाषा का इस्तेमाल किए बिना भी काम हो जाता है!"
"तो अब क्या करना है?"
"हम देखेंगे कि उनके साथ क्या होता है, और हम उस क्षेत्र में जमीन की कीमतों का भी अनुमान लगाएंगे। मैं उस क्षेत्र में कुछ भरोसेमंद लोगों को जानता हूं। मैं उनसे पूछूंगा।"
उस 60 एकड़ ज़मीन में से आठ एकड़ में खेती हो रही थी। शेष 52 एकड़ में भी खेती हो रही थी। ज़मीन अच्छी गुणवत्ता की होने के बावजूद, इलाका सूखे की चपेट में था। खेती के तहत प्रति एकड़ ज़मीन की कीमत 15-20 हज़ार से ज़्यादा होने की कोई संभावना नहीं थी। शेष आठ एकड़ में केले का बागान था। वहाँ अंगूर उगाए जा सकते थे। हालाँकि, उन आठ एकड़ की अच्छी कीमत मिलने की संभावना थी। लेकिन बेहतर यही था कि कीमत का फैसला विजय और उदय पर छोड़ दिया जाए।
पद्माबाई ने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा कुछ होगा। पद्माबाई कवठेगांव के उस पुराने महल में रहने वाली नहीं थीं। पद्माबाई सोचती थीं कि महल में अपने हिस्से के लिए उन्हें थोड़ा और पैसा मिल जाए तो बेहतर होगा। लेकिन झुंझरराव ने कहा, “तुम उस महल में जाकर नहीं रह सकतीं। इससे तो तनाव ही बढ़ेगा। इसके बजाय, कोल्हापुर में एक प्लॉट खरीदो और उसमें 3-4 कमरे बनवा लो!”
झुंझरराव के निर्णय व्यावहारिक थे। पद्माबाई ने उनके निर्णयों को बिना शर्त स्वीकार किया।
उस काम के चलते पद्माबाई का मौर्य परिवार के घर आना-जाना बढ़ गया। दरअसल, जब एक युवा विधवा ने बताया कि वह अक्सर उनके पति से मिलती है, तो सरलाबाई को इस पर

प्रतिक्रिया देनी चाहिए थी। लेकिन पद्माबाई को आश्चर्य हुआ कि उसने ऐसा नहीं किया। उन्होंने इस बारे में सरलाबाई की बहन सुशीलाबाई से बात करने का फैसला किया।

सुशीलाबाई एक विलक्षण व्यक्तित्व थीं। बेटी होने के बाद, पति-पत्नी के बीच छोटी-छोटी बातों पर मतभेद होने लगे। दफला पुलिस विभाग में थे। पुलिस का नाम सुनते ही थोड़ा गुस्सा आ जाता है। लेकिन सुशीलाबाई के फलटन के राजपरिवार से भी घनिष्ठ संबंध थे। इसलिए उन्होंने दफला को अपनी परेशानियाँ जारी रखने नहीं दीं। अपनी इकलौती बेटी, बेबी चंदा, का पालन-पोषण और विवाह हो जाने के बाद ही वह मुक्त होना चाहती थीं। वह एक कुशल कलाकार थीं। वह साड़ियों पर कर्नाटक कढ़ाई करके और ऊनी स्वेटर बुनकर अपना जीवन यापन करती थीं।

उस दिन दोपहर में पद्माबाई सुशीलाबाई के घर आईं। दोनों ही समान रूप से दुखी थीं, बस थोड़ा सा अंतर था। पद्माबाई के पति की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी, जबकि दफला जीवित थे, और सुशीलाबाई वहाँ नहीं थीं, और वह उनके बिना ही धन इकट्ठा कर रही थीं!

पद्माबाई को देखकर सुशीलाबाई ने कहा, "बधाई हो!"

"किस बारे मेँ?"

"आपको अदालत में जाए बिना ही जमीन का अपना हिस्सा मिल गया, है ना?"

"यह सब आपके जीजाजी की वजह से है! उन्होंने मुझ पर बहुत एहसान किए हैं।"

सुशीलाबाई ने कहा, "यह मत सोचो कि उन्होंने सिर्फ तुम्हारी मदद की। जहाँ कहीं भी वे अन्याय होते देखते हैं, वे पीड़ित का साथ देते हैं! फिर उन्हें इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं होती कि कोई क्या सोचता है। मुझे उनके स्वभाव की पूरी जानकारी है।"

यह सुनकर पद्माबाई थोड़ी गंभीर हो गईं और बोलीं, "लेकिन, ताई, मैं एक पहेली भी हल नहीं कर सकती!"

"कोड? कौन सा कोड?"

"मैं दुविधा में था कि आपके सामने बोलूं या नहीं। लेकिन अब मेरे पास बोलने के अलावा कोई चारा नहीं है, इसलिए मैं बोल रहा हूं। कृपया गलत न समझें।"

"गलतफहमी? मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करूंगा। बिल्कुल, खुलकर बोलिए!"

पद्माबाई ने थोड़ा गला साफ करते हुए कहा, "आपके बहनोई और मेरी मुलाकात को ढाई साल हो गए हैं।"
मुझे पता है, आगे बढ़ो!
"उन्होंने मेरे काम में मेरी बहुत मदद की, इसलिए मुझे ज़मीन के लिए सात से आठ लाख रुपये मिले। उनकी सलाह पर मैं फिलहाल राजारामपुरी की 14 वीं गली में घर बनवा रही हूँ। लेकिन इन सब के बावजूद सरलाभाई को मुझसे कोई जलन क्यों नहीं होती? कोई भी पत्नी अपने पति के इस युवा विधवा से बार-बार मिलने पर आपत्ति क्यों करेगी? आपका क्या विचार है?"
"मुझे नहीं लगता कि इसमें कुछ गलत है। आप सरला के जीवन में घटी घटनाओं की गहराई को नहीं देख पा रहे हैं।"
"घटना? किस तरह की?"
मैं आपको बता दूं, सरला मुझसे दो साल बड़ी हैं। जब मेरी शादी जीजाजी से हुई, तब जीजाजी पुणे में कानून की पढ़ाई कर रहे थे। लेकिन परीक्षा देने से पहले ही उनके पिता हैबतराव मोरे का देहांत हो गया। जीजाजी अकेले रह गए। घर की सारी ज़िम्मेदारी उन्हीं पर आ गई। इसके अलावा, रिवाज़ है कि पिता की मृत्यु के एक साल के भीतर बेटे की शादी हो जाती है। इसी रिवाज़ के मुताबिक, सरला से उनकी शादी भी तय हुई थी। संग्राम का जन्म एक साल के भीतर ही हो गया। लेकिन उसके बाद सरलताई को बेटी चाहिए थी। सरलताई ढाई साल बाद देहांत हो गईं। लेकिन अचानक, पता नहीं क्या हुआ, सरलताई के पेट में तेज़ दर्द होने लगा। उस समय कोल्हापुर के जाने-माने स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. डनिंग वहाँ मौजूद थे। उन्हें तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया। उन्हें बहुत ज़्यादा खून बह रहा था। उन पर 'इमरजेंसी हिस्टेरोटॉमी' नामक आपातकालीन सर्जरी करने का फैसला किया गया। सरला उस जानलेवा संकट से बच गईं। लेकिन इसका एक अप्रिय परिणाम हुआ।
"वह कौन सा है?" पद्माबाई ने ध्यान से सुनते हुए पूछा।
"ऑपरेशन के बाद, सरला दूसरा बच्चा नहीं चाहती थी। और दूसरी बात, उसकी 'यौन इच्छा' खत्म हो चुकी थी। वह अपने देवर का सम्मान तो करती थी, लेकिन अब उसके मन में पहले

जैसा स्नेह नहीं रहा था। उसके व्यवहार से देवर भी समझ गया था कि अब हमें 'यौन' को लेकर ज्यादा नखरे नहीं करने चाहिए!"
"तो क्या हुआ?" पद्माबाई ने अपनी हथेली ठुड्डी के नीचे उठाते हुए पूछा।
“क्या होगा? वे पति-पत्नी की तरह साथ रहते हैं। लेकिन वे एक नहीं हो पाते। जीजाजी कुछ अलग-थलग और एकांतप्रिय हो गए हैं। सरलताई ने यह बात समझ ली और जब वह घर पर अकेली थीं, तो उन्होंने जीजाजी से कहा,
"सरकार, क्या मैं आपसे कुछ सुझाव दे सकता हूँ?"
"बताइए, आप क्या सुझाव दे रहे हैं?"
"तुम्हें दोबारा शादी कर लेनी चाहिए।"
"यह संभव नहीं है। मुझे अपने दिल पर शर्म आती है, भले ही अपने शरीर पर नहीं! हमें अपने बेटे को मना करना है। आप ही तो बेटी चाहते थे। दुर्भाग्य से, यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। दूसरी शादी का ख्याल भी मेरे मन में नहीं आता।"
उस समय जीजाजी बयालीस वर्ष के थे। उस समय द्विविवाह पर कोई रोक नहीं थी। इसके विपरीत, जमींदार, इनामदार और जागीरदार दो या तीन विवाह करना विलासिता समझते थे। उस समय कम से कम एक विवाह करना प्रथा थी, भले ही एक विवाह न हो। लेकिन जीजाजी ने कभी ऐसा सोचा भी नहीं। संग्राम धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था। उनका सपना था कि वे उसे खूब पढ़ाएं और कानून की डिग्री हासिल करें। लेकिन संग्राम सबसे अलग था। उसे बचपन से ही शिकार का शौक था। जीजाजी उसे अक्सर कहते थे, "पहले सीखो और बड़े हो जाओ, फिर अपने शौक को अपनाओ। जो व्यक्ति अपने पिता के जीवन की कीमत पर शौक पूरा करता है, वह जीवन में असफल जरूर होगा।"
लेकिन उस उम्र में उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। उनमें से एक थी सरला का लाड़-प्यार। इकलौती होने के नाते, वही उसकी सारी इच्छाएँ पूरी करती थी।
बाद में, जीजाजी के जीवन में एक-दो छोटी-बड़ी घटनाएं घटीं जिनसे उन्हें पीड़ा हुई। पहली बार उनका झुंझर परिवहन रुक गया। महाराष्ट्र में एसटी (सामुदायिक परिवहन) शुरू हो गया। निजी ट्रांसपोर्टरों को भुखमरी का सामना करना पड़ा। लेकिन जीजाजी के पास भुखमरी का कोई खतरा नहीं था। उनके पास पुश्तैनी 200 एकड़ जमीन थी। लेकिन उस जमीन में एक

गोत्र था। उसी समय गोत्र कानून लागू हुआ। चूंकि प्रत्येक गोत्र की जमीन उन्हें मिल जाती थी, इसलिए पिछले गोत्रों को खेतों से होने वाली आय का हिस्सा देना पड़ता था। तब जीजाजी ने उन सभी गोत्रों को एक साथ बुलाया और उनसे कहा, "अगर मैं तुम्हारे खिलाफ अदालत में मुकदमा करता हूं तो मैं कुछ नहीं करूंगा। तुम्हारे पास जो 250 एकड़ जमीन है, उसमें से केवल 50 एकड़ जमीन मेरी आजीविका के लिए छोड़ दो। बाकी 200 एकड़ जमीन तुम सब आपस में बांट लो। अगर तुम मेरी बात मान भी लेते हो, तो भी तुम्हारे साथ मेरा रिश्ता पहले जैसा ही रहेगा। मुझे अपनी 50 एकड़ जमीन पर खेती करने के लिए समय-समय पर तुम्हारी मदद लेनी पड़ेगी। मैं समय का ज्ञाता हूं। अदालत में जाकर मुकदमा करने में तुम्हारा और मेरा समय और पैसा दोनों खर्च होगा।" तो आप सही फैसला लें और मुझे बता दें।"

अंबवाड़ा में झुंझरराव का बहुत सम्मान था। अंबवाड़ा के लोग उनके कुलीन व्यवहार से परिचित थे। अगर कोई गरीब ग्रामीण सलाह लेने आता, तो वे उसे सही राह दिखाते। गाँव में फूट न डालने में उनकी अहम भूमिका थी। इसलिए, जीजाजी के ज़मीन संबंधी प्रस्ताव को उनके पूर्व परिवार ने बिना शर्त स्वीकार कर लिया। इसी के अनुसार सरकारी दफ्तर में रिकॉर्ड दर्ज किए गए। सरकार ने नकदी फसलों को छोड़कर पचास एकड़ ज़मीन पर विभिन्न प्रकार के अनाज उगाने का फैसला किया। मोर्या परिवार को ही यह ज़मीन मिली। पति, पत्नी और इकलौता बेटा। घर के लिए ज़रूरी अनाज अंबवाड़ा के खेतों में उगाया जाता था। हर साल थोड़ी-बहुत आमदनी भी होती थी। इस सब के बावजूद जीजाजी के जीवन स्तर में कोई खास फर्क नहीं पड़ा। वे कभी-कभार शिकार भी करते थे। मोटरहोम बनवाने के बाद जीजाजी थोड़ा खुश थे। वे उस गाड़ी में अंबवाड़ा, विशालगढ़ और उदगीर कुछ दिनों के लिए जाया करते थे। "मेरे साथ मंगू जैसे निस्वार्थ और निस्वार्थ साथी थे।"

पद्माबाई ने ध्यान से झुंझरराव के पिछले जीवन के बारे में सुना और कहा।

"फिर भी!"

"और क्या?"

"हालांकि मैं सरकार से कई बार मिलने गया, लेकिन सरलाभाई ने मुझ पर कभी संदेह नहीं किया।"

"उसे ले जाना नामुमकिन है। वह सरकार के कल्याण के लिए कोई भी बलिदान देने को तैयार है। परसों उसने मुझसे कहा था,"
"शाबाश, बाई पद्मबाई! आपने मुझे सरकार परिवार से मिलवाया। जब से मैंने उनसे मिलवाया है, मैंने सरकार परिवार के स्वभाव में बहुत बड़ा बदलाव देखा है। पहले अगर मैं कुछ कहती भी थी, तो वे उस पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते थे!"
"हे भगवान! सरला के मेरे प्रति अच्छे व्यवहार का राज मुझे समझ आ गया है। लेकिन मैं उनके वैवाहिक जीवन में किसी भी तरह की दरार नहीं आने दूंगी।"
"आप दोनों सामाजिक प्राणी हैं। आप आम महिलाओं से थोड़ी अलग हैं और जीवन के अर्थ की तटस्थ समझ के साथ जीवन जीती हैं। यह दुर्लभ है!"
पद्माबाई एक पल के लिए स्तब्ध रह गईं और बोलीं, "राजरामपुरी में मेरा बंगला तैयार हो रहा है। मैं वहां जाकर रहना चाहती हूं।"
"क्या बात क्या बात?"
मुझे हर समय किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो मेरे साथ रहे! नहीं तो, अकेली महिला होने के कारण लोग हमेशा मुझे परेशान करते रहेंगे!
"आप निश्चिंत रह सकते हैं। जब तक हमारे जीजाजी आपके साथ हैं, आपको परेशान करने वालों को दो बार सोचना पड़ेगा।"
पद्माबाई भी समझदार थीं। उन्हें मोरे सरकार की पत्नी के प्रति सहानुभूति होने लगी। पद्माबाई, जो इतने लंबे समय से झुंझरराव से दूरी बनाए हुए थीं, उन्हें उससे खुलकर निपटने की हरी झंडी मिल गई।
जब झुंजाराव अंबावाड़ के खेतों में रहने चला गया, तो उसे भी उसके साथ जाने का मन हुआ। अब से वह बिना किसी रोक-टोक के झुंजाराव के साथ रह सकेगी।
सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा था, तभी संग्राम ने झुंझरराव को मानसिक रूप से परेशान करना शुरू कर दिया। कोल्हापुर के आसपास कई चीनी कारखाने खुल चुके थे। उन कारखानों के प्रबंध निदेशकों और अन्य निदेशकों की एक समृद्ध पीढ़ी उभर कर सामने आई। झुंझरराव को उनकी कोई चिंता नहीं थी। लेकिन उन्हें अपने दोनों बेटों की चिंता सता रही थी। संग्राम के अधिकतर मित्र वही बच्चे थे। कारखाने की गाड़ियाँ जिनमें वे घूमते थे, चीनी

कारखाने के आलीशान विश्राम गृह, बच्चों को हर महीने मिलने वाला असीमित भत्ता - इस माहौल में पले-बढ़े युवा संग्राम से दोस्ती करने में रुचि रखते थे। क्योंकि मौर्य परिवार के पास टी22 से लेकर 30 टी स्प्रिंगफील्ड तक हर तरह की तोपें थीं। संग्राम को बचपन से ही उन्हें चलाने का ज्ञान था। उसके आग्रह पर बूढ़े मौरिस झुंझरराव ने उसकी तोप ठीक करवाई थी। जब वह 22 और 23 साल का हुआ। उस समय की कहानी।

उस समय मंगू धनगारा की बेटी शेवंता सत्रह वर्ष की थी। झुंझरराव की सलाह पर वह पद्माबाई के साथ कोल्हापुर में सहेली के रूप में रह रही थी। कभी-कभी सुशीलाबाई की बेटी बेबी चंदा भी दो दिनों के लिए पद्माबाई के पास रहने आती थी। दोनों की उम्र लगभग एक जैसी थी, लेकिन शेवंता थोड़ी शर्मीली और संकोची थी। यहाँ आने के कई दिनों बाद तक उसे बेबी चंदा की तरह पंजाबी पोशाक पहनने में शर्म आती रही। तब पद्माबाई ने उससे कहा, "शेवंता, अब अगर तुम बेबी के साथ पारकर, पोल्का या साड़ी पहनकर बाहर जाओगी, तो लोग तुरंत समझ जाएंगे कि तुम किसान हो! इसलिए, बेबी की बात मानो, तुम्हें भी उसकी तरह पंजाबी पोशाक पहननी चाहिए! आजकल तो एक ही जाति के स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने वाली लड़कियाँ भी एक जैसे कपड़े पहनती हैं।"

लेकिन मुझे किस स्कूल या कॉलेज में जाना चाहिए?

"आज तुम नहीं जा रहे हो। लेकिन मैं तुम्हें दसवीं कक्षा में बाहर से बिठाऊँगा। परसों सरकार ने मुझे जाने को कहा है। क्योंकि तारा रानी से एक सेवानिवृत्त शिक्षक शेवंता को पढ़ाने आएँगे!"

उदगीर जैसे ग्रामीण विद्यालय में सातवीं कक्षा तक मुश्किल से मराठी पढ़ने के बाद, जब उसे दसवीं कक्षा की परीक्षा देने के लिए कहा गया, तो शेवंत असमंजस में पड़ गई। सरकार और पद्माबाई ने जोर दिया था कि शेवंत अपनी पढ़ाई जारी रखे। पद्माबाई ने उसकी जरूरत की सभी किताबें और नोटबुक लाकर दीं। धीरे-धीरे शेवंत के बोलने और व्यवहार में बदलाव आने लगा।

असाधारण सुंदरता से जन्मी शेवंता को धीरे-धीरे फैशनेबल बनने और रेडियो पर अक्सर बजने वाले हिंदी फिल्मों के गाने गुनगुनाने की ज़रूरत महसूस होने लगी। यहाँ तक कि

निःसंतान पद्माबाई भी, यह भूलकर कि वह धनगरा की पुत्री है, उस पर अत्यधिक मोहित होने लगीं।
शेवंता के कोल्हापुर पहुंचने से पहले ही, पद्मबाई से हर 2-4 महीने में सलाह लेने आने वाले संग्रामों की संख्या बढ़ने लगी थी।
लेकिन मंगू धनगर अपनी बेटी में आए इस बदलाव से कुछ परेशान थे। वे झुंजाराव के पास आकर कहते, “सरकार कहती है कि आप शेवंता को सबक सिखाएंगे, लेकिन क्या उसकी शादी कल ही हो जाएगी? मेरे सारे भाई मेरी ही रोटी खा रहे हैं। वे कहते हैं कि आप बच्ची को बर्बाद कर देंगे!”
"अपने ही जाति के लोगों की बातों पर ध्यान मत दो। पद्माबाई के साथ रहने से उनके बोलने और व्यवहार में इतना फर्क आ गया है। क्या तुम्हें यह समझ नहीं आ रहा?"
"मुझे सरकार बिल्कुल पसंद नहीं है। मैं जाकर शेवंता को गले लगाकर खाना खाऊंगा!"
झुंझरराव ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, "तुम तो जीवन भर बहादुर रहे हो। उस बेचारी बच्ची को सीखने दो, उसे तो पद्माबाई का साथ आसानी से मिल गया है!"
"अरे, सच में, मुझे कुछ मत बताओ!"
"तो क्या तुम मेरी बात सुनोगे?"
"सरकार, मैं क्या चाहता हूँ? गरीबों को गरीबी में ही जीने दो!"
"अरे मूर्ख, यह जानने से तुझे किस तरह की मुसीबत का सामना करना पड़ेगा?"
"हमारे पिता कुना धनगरा की बेटी इतनी पढ़ी-लिखी नहीं थी।"
"तो क्या उसे अब भी पढ़ाई नहीं करनी चाहिए? अब वह बाहर से दसवीं कक्षा की परीक्षा देने जा रही है। उसे परीक्षा खत्म होने तक वहीं रहने दो। फिर देखते हैं आगे क्या होता है!"
मंगू झुंझरराव की बातों से संतुष्ट नहीं हुआ। वह उठा और सरलाबाई के पास दौड़कर गया और जोर-जोर से रोने लगा।
"अरे, मुझे बताओ कि क्या हुआ?"
"वैनीसाब। सरकार मेरे बेटे को बांटने जा रही है! मैं शेवंता की देखभाल नहीं करना चाहती, बागा! कल मेरे बेटे को कौन दुखी करेगा?"
सरलाबैरी ने सब कुछ पहले से ही योजना बना रखा था। उसने कहा,

"चिंता मत करो। सोलापुर और बीजापुर में कुछ पढ़े-लिखे धनगर परिवार हैं। उनका रहन-सहन और व्यवहार भी कुलीन है। सिर्फ इसलिए कि वह पढ़ी-लिखी है, इसका मतलब यह नहीं कि उसकी शादी नहीं होगी! पद्माबाई ने मुझे कुछ दिन पहले बताया था कि उसकी बुद्धि बहुत तेज है। एक बार उसे कुछ समझा दो, तो वह उसे हमेशा याद रखती है। अरे, ऐसी पढ़ी-लिखी बेटी का गर्भ में होना तुम्हारे भाग्य को उज्ज्वल बना देगा!"

"मुझे मत बताओ कि मुझे क्या करना है, बागा। उसे अपनी परीक्षा लेने दो, जैसा कि सरकार कहती है। मैं उसके पीछे जाऊंगा, बागा।"

सरलाबाई के मध्यस्थता करने और शेवंता को यहाँ से ले जाने की उम्मीद से आई मंगू फिर से निराश होकर लौट गई।

0-0

शेवंता की परीक्षा के बाद, मंगू ने उसे उदगीर ले जाने का फैसला किया। पद्माबाई उसके इस फैसले से खुश नहीं थीं। उन्होंने उससे कहा,

"मंगू, शेवंता होशियार है। मैं उसे आगे की शिक्षा देने के लिए तैयार हूँ। कृपया उसकी बात पर विचार करें।"

"वो क्या सोचती है? मेरी शादी की उम्र निकल चुकी है। गांव के लोग, मेरे जाति भाई, मेरे मुंह में गोबर डालने लगे हैं! हमारी जाति में अक्कासब, गरीबों की जाति को बीज नहीं सिखाते।"

"हो सकता है कि वे सिखा नहीं रहे हों, लेकिन उसे यह सब अपनी किस्मत से मिल रहा है, तुम इसमें दखल क्यों दे रहे हो?"

"मुझे तुम्हारी बात समझ नहीं आ रही, बागा!"

"खैर, कम से कम सरकार और जनता की राय पर तो विचार करें!"

नहीं, नहीं! सरकार ने कहा, 'उसके भले के लिए उसका नाम भी मत हटाओ,' उसे काम सीखने दो!

"देखो, इतने सारे लोगों के दिलों को चोट पहुंचाने के बाद क्या तुम उसे वापस ले लोगे?"

"ओह! मैं इससे बच नहीं सकता!"

मंगू शेवंत की परीक्षा के बाद, वह उसे यहाँ से वापस ले जाने के लिए बैठ गया। अंदर के कमरे से पद्माबाई और मंगू की बातचीत सुनकर शेवंत की आँखों में आँसू भर आए। पद्माबाई ने उसे अपनी बेटी जैसा प्यार दिया था। पिछले दो-तीन सालों में शेवंत में एक बड़ा बदलाव आ गया था। कोल्हापुर में रहने के दौरान, उसकी वाणी और व्यवहार अधिक संभ्रांत हो गया था। वह अपने घर आने वालों से बहुत विनम्रता से बात करती थी। वह 'हाँ' कहे बिना नहीं बोलती थी। वह सुशीला की चंदा बेबी से भी मित्र बन गई थी। चंदा बेबी अपनी सहेलियों को पद्माबाई के पास लाती थी। उस समय शेवंत उनके चुटकुलों और मज़ाकों को सुनकर उनके साथ घुलमिल जाती थी। वे सहेलियाँ भी अच्छे परिवार से थीं। जब वे पद्माबाई के घर आती थीं, तो शेवंत की प्रशंसा करती थीं। उसका रंग सांवला, बादामी आँखें, मुस्कुराने पर बाएँ गाल पर पड़ने वाला डिंपल, लंबे घुंघराले बाल और एक सुंदर लट थी। वह बिना किसी मेकअप के भी बहुत आकर्षक लगती थी। पहले थोड़ी शर्मीली शेवंता हाल ही में थोड़ी बातूनी हो गई थी।

पद्माबाई की अनुमति से वह चंदाबेबी के साथ अपनी सहेलियों के घर जाया करती थी। वहाँ भी वह लोगों के बात करने का तरीका देखती थी। बचपन से उदगीर के धनगरवाड़ा में पली-बढ़ी शेवंता को अब बाहरी दुनिया की समझ आने लगी थी। उस दिन भी शेवंता मंगू के साथ नहीं गई। मंगू के आने-जाने के बाद संग्राम उस शाम अपनी मॉरिस कार में आया। वह पद्माबाई को 'मावशी' कहकर बुलाता था। उसने कहा, "मावशी आज आपको मेरी मॉरिस कार में घुमाने ले जा रही हैं।"

"कहाँ? मैं यहाँ किसी के पास अक्सर नहीं जाती! आओ और अपनी माँ सरलताई या चाची सुशीला से मिलो!"

"लेकिन मैं आज तुम्हें किसी के घर नहीं ले जाऊँगा।"

"तो फिर आप मुझे कहाँ ले जा रहे हैं?"

"समुद्र तट पर"

"वहाँ कौन है?"

"ऐसा किसी और के पास नहीं है। पन्हाला मेरी पसंदीदा जगह है। दरअसल, हमारे पिताजी पन्हाला में घर बनाने के लिए ज़मीन ले रहे थे। लेकिन उन्होंने वह ज़मीन नहीं ली। उन्होंने कहा कि वे घर बनाना चाहते हैं, लेकिन आम के खेत में!"

"हां, उन्होंने मुझसे एक-दो बार ऐसा कहा था। उनका मानना है कि हमें शहर की भागदौड़ से दूर, किसी शांत जगह पर एक छोटा, ऊंचे खंभों पर बना बंगला बनाना चाहिए!"

"उनके पास कई योजनाएँ हैं, लेकिन वे कभी पूरी नहीं होतीं। अब इस मॉरिस कार को देखिए। यह कई सालों से उस पुराने बंगले के गैरेज में धूल फांक रही थी। मैंने उनका पीछा किया और इसे ठीक करवाया। आज मैं आपको पन्हाला ले चलूँगा। देखिए यह कार कैसी चलती है।"

पद्माबाई मुस्कुराते हुए बोलीं, "मैं आ जाती, लेकिन शेवंत की परीक्षा आ रही है, होने दो, फिर मैं उसे भी अपने साथ ले जाऊंगी! वह यहाँ अकेले कैसे रह सकती है?" थाली से चाय लेकर आई शेवंत को देखकर संग्राम ने पूछा, "तुम्हारी परीक्षा कितने दिन चलेगी?"

"एक सप्ताह। यह इस सोमवार से शुरू होकर अगले सोमवार को समाप्त होगा।"

चाय की एक घूंट लेते हुए संग्राम ने कहा,

"कोई बात नहीं, चलो अगले मंगलवार या बुधवार को चलते हैं! लेकिन आंटी, अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम उस दिन अपने साथ खाना लेकर जाएंगे!"
"तो क्या हम सरलतारी को अपने साथ ले चलें?"
"माँ? कौन जाने वो आएगी या नहीं?"
उन्हें इतनी समस्या क्यों है?
"यह कोई समस्या नहीं है। लेकिन वे आमतौर पर घर से बाहर नहीं निकलते। अगर पापा उन्हें मोटरहोम में गगन बावड़ा या अंबाला जाने के लिए कहते हैं, तो वे कहते हैं कि वे वहां कई बार जा चुके हैं, इसमें नया क्या है?"
"लेकिन जब आपके पास पुराना वाहन था, तो आप अपने पिताजी के साथ वहां कई बार जरूर गए होंगे?"
"यह सब सच है, चाची, लेकिन वह मेरे साथ एक बार भी नहीं आई है।"
"ठीक है, शेवंत की इस तरह परीक्षा ली जाए। मैं उसे तैयार करता हूँ।"
"ठीक है, मैं चलता हूँ?"
शेवंता संग्राम को चाय पिलाकर अंदर के कमरे में चली गई। संग्राम को शेवंता नाम कुछ देहाती सा लगता था। इसलिए वह आजकल उसे 'सावी' कहकर पुकारने लगा था।
मैं आंटी सैवी को बाहर आने के लिए कह दूंगी, मुझे बस उन्हें 'शुभकामनाएं' देनी होंगी।
"वह इन दिनों बहुत तनाव में है!"
“कितना तनाव! मैं इतने सालों से पढ़ाई कर रही हूँ, लेकिन मुझे कभी किसी परीक्षा को लेकर तनाव नहीं हुआ।” पद्माबाई ने असहजता से कहा, “इसीलिए तुम हर बार फेल हो जाती हो। अगर उसे तनाव हो तो बात अलग है!”
"कैसे?"
"मंगू का कहना है कि परीक्षा खत्म होते ही वह उसे उदगीर ले जाएगा।"
"तुम क्या कह रहे हो? मुझे तो पता ही नहीं था!"
"हां, वह किसी की भी बात सुनने के मूड में नहीं है।"
"तुम उसे वहाँ क्या करने वाले हो? क्या तुम उसे बकरियों और मवेशियों की देखभाल के लिए भेजने वाले हो?"

नहीं! क्या तुम उससे शादी करके आज़ाद हो जाओगे?
"शादी?"
जैसे ही संग्राम ने सुना कि सावी की शादी हो रही है, उसका चेहरा एकदम उतर गया। काफी देर तक उसे कुछ समझ नहीं आया कि क्या कहे। थोड़ी देर बाद उसने कहा, "आंटी, मुझे नहीं लगता कि सावी को अभी शादी करनी चाहिए। मुझे लगता है कि उसे चंदाबेबी के साथ कॉलेज में 2-3 साल बिताने चाहिए!"
"ओह, पिताजी, मैंने उसके पिता से बहुत विनती की। लेकिन उनका सुनने का बिल्कुल भी मन नहीं है।"
संग्राम भी कुछ उदास होकर चला गया। जाते समय उसने औपचारिक रूप से शेवंत को 'शुभकामनाएं' दीं। उसकी शुभकामनाएँ सुनकर शेवंत की आँखों में आँसू भर आए! उसका गला भर आया। फिर उसने कहा, 'धन्यवाद।'
संग्राम को शेवंता के कोल्हापुर जाने की घटना याद आने लगी। सात-आठ साल पहले, हरे रंग की छोटी स्कर्ट पहने, बिखरे बालों वाली वह लड़की, जो मंगू धांगरा के साथ आई थी, मुश्किल से आठ-नौ साल की थी। शर्मीली और असहाय! तेंदुए के झुंझरराव पर हुए हमले को मंगू के साहस ने नाकाम कर दिया था। तब से मंगू का मोरे परिवार के साथ दोस्ताना रिश्ता बन गया था। मंगू कभी-कभी कोल्हापुर आता था, लेकिन खाली हाथ नहीं। कभी वह जंगल से आंवला लाता था, कभी रीठे, कभी अचार के लिए कच्ची भैया। सरलाबाई बेबी चंदा के कपड़े शेवंता के लिए भेजा करती थीं। झुंझरराव ने मंगू के लिए खाकी रंग की पोशाक सिली थी। उन्होंने आत्मरक्षा के लिए उसे एक सिंगल बैरल 12 बोर की बंदूक भी खरीदकर दी थी।
बाद में, पद्माबाई के बंगले का निर्माण पूरा होने के बाद, सरलाबाई की सलाह पर शेवंता पद्माबाई के साथ कोल्हापुर में रहने आ गईं। पद्माबाई ने न केवल उन्हें खाना बनाना सिखाया, बल्कि आगे की शिक्षा दिलाने के लिए भी तत्परता दिखाई। झुंझरराव भी महिलाओं की शिक्षा में रुचि रखते थे। उन्होंने शेवंता को बाहर से दसवीं कक्षा की परीक्षा देने के लिए तैयार किया। शेवंता को वह बात याद थी जो उन्होंने एक बार झुंझरराव से कही थी। कभी-कभी पद्माबाई शेवंता को मौर्यों के घर भी ले जाती थीं। उस समय सरलाबाई उनका हाथ पकड़कर कहती

थीं, "अगर पद्माबाई उदगीर में ही रहतीं, तो मंगू अब तक उनकी शादी कर चुका होता। तब तो उन्हें शहर की जिंदगी का पता भी नहीं चलता!"
उस दिन शेवंता रंकाला स्थित बंगले में आई थी। झुंझरराव अंबवाडिया गए हुए थे। संग्राम तीसरी मंजिल के पीछे वाले कमरे में लेटा कोई किताब पढ़ रहा था। सीढ़ियों से ऊपर आती कदमों की आहट सुनकर वह बाहर आया। उसने देखा कि शेवंता रेलिंग पकड़े हुए रंकाला की ओर देख रही थी।
"सावी? तुम कब आए? और आंटी कहाँ हैं?"
तुम नीचे बैठकर अपनी माँ से बातें कर रहे हो!
संग्राम ने सैवी के हाथ पर हाथ रखा और कहा,
"आपको हमारा रंकाला कैसा लगा?"
"यह पानी कितना बड़ा है? और 'दूर' जो बंगला दिख रहा है, वह किसका है?" शेवंता ने हाथ हिलाते हुए कहा।
"शालिनी महल! इसे छत्रपति ने यहाँ बनवाया था! लेकिन शाही परिवार का कोई भी सदस्य कभी वहाँ नहीं रहा! अब मुझे सुनने में आया है कि वहाँ एक होटल बन रहा है! चलो, उन्हें जाने दो, बताओ तुम्हें यह झील कैसी लगी?"
"मैं क्या कहूँ? मुझे लगता है कि मैं इसे जीवन भर देखती रहूँगी!" शेवांता ने लापरवाही से कहा।
उसके बाद से संग्राम जब भी मौका मिलता, पद्माबाई के बंगले पर जाने लगा। शेवंता वहाँ होती, वह किसी बहाने से उससे बात करने की कोशिश करता। लेकिन वह एक शब्द भी नहीं बोलती। "आंटी, क्या सैवी कभी बोलती नहीं?"
"चंदा की सहेलियाँ भी यही कहती हैं! लेकिन वो खाना बनाने में बहुत अच्छी हो गई है! पिछले दिन उसने सफेद ग्रेवी बनाई थी। तुम्हारे पापा को वो बिल्कुल पसंद नहीं आई!"
शेवंता की परीक्षा के बाद, मंगू उसे योजना के अनुसार उदगीर ले गया। मंगू ने झुंझरराव और सरलाबाई के विरोध के आगे घुटने नहीं टेके। लाव्हाले का भीवा धनगर पूरे धनगर कबीले का मुखिया था। वह वनों की कटाई के ठेके लेता था। उसके पास बहुत धन था। वह यह भी नहीं चाहता था कि मंगू उसकी अविवाहित बेटी को कोल्हापुर में रखे। उसके बहनोई का एक बेटा

सांगली में था। भीवा चाहता था कि शेवंता की शादी उसके बहनोई के बेटे से हो। उसने और मंगू ने इस बारे में एक-दो बार बात भी की थी।
जब भीवा धनगारा को पता चला कि शेवंता दसवीं कक्षा की परीक्षा देने जा रहा है, तो उसने मंगू से कहा, "मंगश्या, क्या तुम अपने बेटे को शिक्षक बनने की शिक्षा देने जा रहे हो?"
“आप कहाँ हैं, गुरुजी? सरकार, उनके वनिसाब, पद्माक्का समाधि कहते हैं कि लड़की होशियार है, उसे कुछ साल सीखने दीजिए!”
“दो साल? आप खुलकर क्यों बता रहे हैं?”
"अगर तुम्हारी शादी येलांट में हुई होती, तो तुम एक या दो बच्चों की माँ बन जाती। क्या हुआ, मंगश्या, उस बड़े आदमी के बहकावे में मत आओ। बस बच्चे को इधर-उधर ले जाओ! मुझे माज्या कहना शर्म की बात है, कल वह ममलदार कामयाब हो जाएगा! तुम कहाँ हो?"
मंगू के आग्रह पर पद्माबाई अनिच्छा से शेवंता को छोड़ने के लिए राजी हो गईं। शेवंता के जाने के बाद, वह बंगले में अकेली रहने लगीं। झुंझरराव कभी-कभार आते थे, लेकिन रुकते नहीं थे। शेवंता के जाने के बाद, पद्माबाई को एक ऐसी लड़की की ज़रूरत थी जो बारह घंटे तक उनके साथ रह सके। उन्होंने झुंझरराव से कहा, "हमें शेवंता जैसी ही कोई दूसरी लड़की ढूंढनी चाहिए।"
"यह सच है कि आपको देखना चाहिए, लेकिन क्या आपको ऐसी लड़की नहीं मिलनी चाहिए जो इतनी वफादार और ईमानदार हो?"
"तुम्हारा गांव इतना मशहूर है, तुम्हें कहीं न कहीं वैसी लड़की जरूर मिल जाएगी?"
"पद्माबाई, आजकल पुराने दिन बीत गए! गांवों की लड़कियां भी वेश्या बन गई हैं! इसके अलावा, हम क्या गारंटी दे सकते हैं कि लड़की ईमानदार ही निकलेगी!"
"सरकार, मुझे पिछले दो साल से घर का कोई काम नहीं करना पड़ा। अनाज लाने से लेकर पीसने तक, शेवंता ही सारा काम करती थी। कभी-कभी तो वो सब्जी मंडी भी जाती थी। और इन सब कामों के साथ-साथ वो पढ़ाई भी करती थी। खाना भी वही बनाती थी! वही सफेद ग्रेवी मैंने तुम्हें परसों दी थी। मैंने उसे सिर्फ एक बार ही उस ग्रेवी की रेसिपी बताई थी।"
"हाँ, मुझे सब समझ आ गया है। लेकिन अब मुझे इससे निकलने का सिर्फ एक ही रास्ता नज़र आ रहा है!"

"कौन सा?"
"मैं अखबार के पहले पन्ने पर विज्ञापन देना चाहता हूँ। मुझे एक ऐसी असहाय लड़की चाहिए जो 12 घंटे घर पर रह सके। जाति का कोई बंधन नहीं है, यहाँ तक कि बिना किसी समस्या वाली विधवा भी चलेगी!"
"यह सच है। हम सेना के लोग किस जाति व्यवस्था का पालन करते थे?"
"अपनी सेना छोड़ दो, पद्माबाई। क्या हमारे शाहू महाराज ने जाति का ध्यान रखा? उन्होंने गंगाराम कांबले को टाउन हॉल के पास एक होटल दिया, वे स्वयं वहाँ गए और चाय पी। उन्होंने राज्य में हरिजनों के लिए 50 प्रतिशत नौकरियाँ आरक्षित करने की पेशकश की। वे हमारी आँखों के सामने राजर्षि का आदर्श हैं। चलिए देखते हैं, अखबार में विज्ञापन देते हैं!"
"ठीक है! लेकिन जब तक मुझे वैसी लड़की नहीं मिल जाती, मैं क्या करूँगा? मेरे बंगले के आसपास अभी कोई नहीं रहता। शाम को सब कुछ शांत हो जाता है!"
"इसके लिए हम एक काम कर सकते हैं। आपको सुशीलताई और चंदाबेबी को अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित करना चाहिए!"
मैंने उनसे भी यही पूछा था। उनका कहना है कि इतना ज्यादा नहीं होना चाहिए। अत्यधिक घनिष्ठता के कारण अवज्ञा नहीं होनी चाहिए। हम दोनों के बीच जो आत्मीयता है, वह बरकरार रहनी चाहिए! उनका ऐसा कहना भी अनुचित नहीं है।
सरलताई क्या कहती है?
"अब तो उसे मुझ पर क्रश हो गया है!"
"किस प्रकार?"
"चूंकि संग्राम के कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के कोई संकेत नहीं हैं, इसलिए हमें उसकी शादी जल्द से जल्द करवा देनी चाहिए!"
"इतना ही?"
तो क्या हुआ? वो अब 24 साल का हो चुका है। सरला कहती है कि इसमें कुछ सच्चाई भी है। इस जिले में स्थापित सहकारी कारखानों के निदेशकों के बच्चे उसके दोस्त हैं! कभी-कभी वो उनकी जीप में रात को घूमने निकल जाता है। यहां तक कि रात के 2-3 बजे भी ये 'नव-धनी' बच्चे शिकार के नाम पर इधर-उधर घूमते रहते हैं।

"हमें आगे बढ़ना होगा, शिकार करना मोरियास के खून में है, है ना?"
"हाँ, लेकिन पद्मताई, हमारे पिता ने हमें बंदूक चलाने की पूरी जानकारी होने के बाद ही बंदूक चलाने की इजाज़त दी थी। आज कल के चीनी कारखाने के निदेशक के बेटे अधमरे पड़े हैं। परसों, गगनबावड़ा रोड जाते समय, रात में सर्चलाइट में जंगली सूअरों का झुंड दिखाई दिया। तो चार-पाँच लोगों ने लाइट जलाकर गोलियाँ चलाईं और फिर पास जाकर देखा कि क्या है। एक नौकर के घर साइकिल से आए एक मज़दूर की साइकिल की पिछली खिड़की लाल रंग की दिख रही थी, तो गाँव के इन शिकारियों ने सोचा कि जंगली सूअरों का झुंड है! बेचारे मज़दूर की साइकिल चकनाचूर हो गई। पुलिस में शिकायत भी दर्ज कराई गई। जैसे-तैसे मामला सुलझा। मज़दूरों को नई साइकिलें खरीदनी पड़ीं।"
"क्या संग्रामबाला उस शिकार के दौरान उनके साथ था?"
"हाँ, लेकिन वो गाड़ी चला रहा था, और जब वो उन बेवकूफों को मना कर रहा था, तभी अचानक उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी। संग्राम ऐसी गलती नहीं करेगा। एक और शिकार में, उन लड़कों ने भैंस के बच्चे को सांभर समझकर मार डाला था। तब से संग्राम थोड़ा शर्मीला हो गया है! इसलिए सरला कहती है कि उसे संग्राम की शादी करवा देनी चाहिए और आम के खेत में दोनों के लिए एक नया घर बनवाकर वहीं बस जाना चाहिए। उसने ये भी कहा कि वो खेत देखना चाहती है!"
"यह तो बहुत अच्छा होगा! लेकिन ये किसकी बेटियां हैं जो हमें बताने आई हैं?"
"हां, दस या बारह लड़कियां आई हैं, लेकिन मैं उन लड़कियों की पूरी तरह से जांच किए बिना उनसे मिलने के खिलाफ हूं।"
क्या आप अखबार पर विश्वास करते हैं?
"बिल्कुल नहीं! जब उनका जन्म हुआ था, तब यहाँ के पाठकशास्त्र में उनकी जन्म और विवाह कुंडली का विश्लेषण किया गया था। उसमें लिखा था कि आपका पुत्र राजपरिवार से संबंधित है। लेकिन पद्माबाई कहाँ हैं, जो आज राजपरिवार में बची हैं?"
"परिवार कहाँ जाएगा? वे तो यहीं हैं। बस उनकी पुरानी शान-शौकत और वैभव ही गायब हो गया है!"

"वह कैसे जीवित रहेगा? उसने अपनी सारी जमीनें बेच दीं, सारा पैसा औरतों और शराब पर बर्बाद कर दिया, और कुछ लोग तो दौड़ में डूब भी गए!"
जब झुंझरराव बोलने लगे, तो पद्माबाई ध्यान से सुनने लगीं। उन्होंने कहा, "लेकिन संग्राम, क्या मैं आपके साथ आपकी बेटी से मिलने जा सकती हूँ?"
"चल न पाने की समस्या का क्या हुआ? तुम क्यों नहीं आ सकते?"
"सरला, सुशीला, क्या आप सब जा रही हैं? लेकिन आपने मुझसे इस तरह क्यों पूछा? क्या मैं आ सकती हूँ?"
मैंने इसलिए पूछा क्योंकि मुझे लगा कि यह हमारा है! क्या विधवाओं को अपने साथ ले जाना प्रथा नहीं है?
"विधवा और साध्वा? आखिर आप भी तो इंसान ही हैं, है ना?"
"सरकार, तुम मेरे लिए इतने लालची हो कि मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मुझे रोका जा रहा है! पता नहीं दुनिया क्या कहेगी!"
तो अब सब खत्म! हे पद्माबाई, अगर तुम अचानक इस दुनिया के बारे में सोचने लगोगी, तो तुम्हें दो निवाले भी चैन से नहीं मिलेंगे! दुनिया एक काल्पनिक संस्था है। तुम चाहे जैसा भी बर्ताव करो, लोग कभी तुम्हारे बारे में अच्छी बातें नहीं कहेंगे। जब मैंने कार का कारोबार शुरू किया, तो सरकारी दरबार में लोगों ने मुझसे कहा, "झुंजरराव, तुम ये कैसा गंदा धंधा कर रहे हो? क्या तुम्हारा कोई और धंधा नहीं था?" अगर कोई होटल खोलता है, तो लोग तुरंत कहेंगे, तुम दुनिया के ऊंटों को धोने का कैसा धंधा कर रहे हो? मैं कभी इस बारे में नहीं सोचता कि लोग क्या कहेंगे। क्योंकि मैंने तुम्हारी थोड़ी सी मदद की, तुम्हें तुम्हारी थोड़ी सी संपत्ति मिली, और तुमने कोल्हापुर में घर बनाया, लोग कहेंगे कि झुंजरराव ने एक अमीर युवा विधवा को देखकर तुम्हारी मदद की! ये गंदी बातें करने वाले कायर हैं, उनमें तुम्हारे सामने बोलने की हिम्मत नहीं है!"
झुंजाराव पद्माबाई से काफी देर तक बातें कर रहे थे। करीब चार बजे रंकाला से एक फोन आया। सरलाबाई ने बात की।

"अरे, मुझे खानपुर के भोंसाली परिवार की बेटी की तस्वीर अच्छी लगी। आपने कहा था ना कि वे भी अच्छे लोग हैं? उन्होंने कहा कि वे कल दोपहर बेटी से मिलने आएंगे। मैं उनसे क्या कहूँ?"
"मेरे पास उनका फोन नंबर है। मैं उन्हें बता दूंगा।"
सरलाबाई झुंझरराव से खुलकर बात नहीं करती थीं।
रिसीवर नीचे रखते हुए उन्होंने पद्माबाई से कहा, "मैं कल अपनी बेटी से मिलने जा रहा हूँ। आप लोग तैयार रहना। मैं सरला और सुशीला को यहाँ ला रहा हूँ। हमें सूरज डूबने से पहले पहुँचना होगा, ताकि हम शाम को वापस आ सकें!"
क्या युद्ध हमारे साथ आएगा?
"तो फिर! वो दामाद हैं! उनकी पसंद को भी पहले ध्यान में रखा जाना चाहिए!"
"लेकिन तुमने एक बार मुझसे कहा था कि किसी लड़की से मिलने जाने से पहले, तुम्हें उसके बारे में सब कुछ जानना चाहिए, तुम्हें उसके व्यक्तित्व का अंदाजा होना चाहिए। तुम्हें उसकी पसंद-नापसंद पता होनी चाहिए!"
"जी हां, वह लड़की मेरी प्रारंभिक जांच में पास हो गई!"
"लेकिन उस लड़की के बारे में आपको किसने बताया?"
कोल्हापुर पुलिस विभाग में मेरे कई दोस्त हैं। श्री वी.बी. भोसले, जिन्होंने कुछ साल एलसीबी में काम किया, अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं और बेलगाम में होटल रामदेव के पीछे रहते हैं। मुझे उस लड़की के बारे में उनसे विस्तृत जानकारी मिली। उस लड़की का नाम जयश्री है, सब उसे 'जयू' कहते हैं। जयू रानी पार्वती देवी कॉलेज से स्नातक है और फिलहाल एलएलबी की पढ़ाई कर रही है। वह पाक कला में निपुण है। वह जलरंग से लैंडस्केप पेंटिंग भी करती है। मेरा अनुभव है कि पद्माबाई, जो एक कलाकार हैं, बहुत ही पवित्र हृदय की हैं। लड़की से मिलने का यह कार्यक्रम सिर्फ औपचारिक है! चिमासाहेब भी मानते हैं कि हमें अपने परिवार के साथ अच्छा समय बिताना चाहिए। फिर कल सुबह 9 बजे हम यहां से निकलेंगे। तैयार रहना!
योजना के अनुसार, अगली सुबह, झुंझरराव सरलाबाई, सुशीलाबाई, चंदाबाबी और संग्राम को साथ लेकर मोटर होम से राजारामपुरी स्थित पद्माबाई के बंगले पर पहुंचे।

पद्माबाई सफेद साड़ी और सफेद ब्लाउज में तैयार थीं। शिवराम के जाने के बाद से उन्होंने रंगीन साड़ियाँ पहनना छोड़ दिया था। उन्होंने इतने लंबे समय से माथे पर गंधा की एक टिकली भी नहीं लगाई थी। झुंझरराव ने उन्हें जबरदस्ती गंधा लगाने को कहा। उन्होंने कहा, “आजकल सभी विधवाएँ माथे पर गंधा लगाती हैं, इसलिए इसमें कोई हर्ज नहीं है। चलो अब से हम भी लगा लें!”

पद्माबाई इसके लिए राज़ी हो गईं। उस समय सरलाबाई और सुशीलाबाई को भी लगा कि उन्हें खुले मन से निर्णय नहीं लेना चाहिए। इन सब के बावजूद, झुंझरराव ने उन्हें आश्रय दिया और चार पैसे दिए। लाखों की सहायता देने के बावजूद, पद्माबाई के चेहरे पर निराशा की एक हल्की सी झलक दिखाई देती थी। वह सार्वजनिक रूप से कभी खुलकर नहीं हँसती थीं। वह लंबे समय तक एकांत में रहना पसंद करती थीं। बस इतना था कि उन्हें अंबवाड़ा फार्म हाउस में झुंझरराव की संगति अच्छी लगती थी। झुंझरराव द्वारा अपने युवावस्था के साहसिक शिकार के किस्से सुनकर, वह अपने आसपास की सारी दुनिया को भूल जाती थीं।

कार कोल्हापुर शहर की सीमा से बाहर निकलकर राजमार्ग पर आ गई। झुंझरराव गाड़ी चला रहे थे। संग्राम उनके बगल में बैठे थे। पीछे तीन महिलाएं और बच्ची चंदा बैठी थीं।

कागल से निकलने के बाद झुंझरराव ने कहा, "पहले जब हम बेलगाम जाते थे, तो हमें ऐसा नहीं लगता था कि हम किसी दूसरे प्रांत में जा रहे हैं। लेकिन इस महाजन आयोग ने हमारे बीच दरार पैदा कर दी। उस मूर्ख ने कर्नाटक को 100 प्रतिशत मराठी भाषी क्षेत्र घोषित कर दिया और उसे मुक्त कर दिया! उस समय हमारे महाराष्ट्र के नेता अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठे थे। देखा जा रहा है कि मराठी लोगों के साथ अन्याय हो रहा है और ये नेता चुप हैं। अब यह मामला बहुत पेचीदा होने वाला है!"

सरलाबाई और सुशीलाबाई को राजनीतिक चर्चाओं में कोई रुचि नहीं थी। वहीं पद्माबाई एक बड़ी पाठक थीं। वे भी कुछ नहीं बोलती थीं।

“चलिए, राजनीति हमारा विषय नहीं है! लेकिन इतिहास महाराष्ट्र के इन शासकों को समय-समय पर दोषी ठहराए बिना नहीं रहेगा।” निपानी और संकेश्वर पार करने के बाद, गाड़ी काकाती घाट पर चढ़ने लगी। तब झुंझरराव ने कहा, “पद्माबाई, पहले इन पहाड़ों में बेराड समुदाय के लोग बड़ी संख्या में रहते थे। वे लोग रात में गुजरने वाली गाड़ियों को रोककर लूट

लेते थे! मेरी गाड़ियाँ कभी यहाँ नहीं आईं। लेकिन एक बार विशालगढ़ मलकापुर जा रही मेरी गाड़ियों को लूटने की कोशिश हुई थी। लेकिन उस समय गाड़ी में मैं अकेला था। मेरे पास दो बोर की बंदूक थी। मैंने हवा में दो-तीन गोलियां चलाईं और गाड़ियाँ भाग गईं!"

बेलगाम नजर आने लगा। इसकी लाल मिट्टी की सड़कें, घने हरे जंगल और मंगलूरियाई कुलों के घर दिखने लगे।

0-0

अध्याय 8

चिमासाहेब भोसले कोडोलिकर के पास 150-200 एकड़ का खेत था। लेकिन उन्होंने अपनी अधिकांश जमीन बेच दी थी, क्योंकि उन्हें अनुमान था कि समय के साथ खेती से गुजारा करना मुश्किल हो जाएगा। उन्होंने गांव से अपना संबंध बनाए रखने के लिए गांव के पास एक छोटा सा बगीचा रखा और बाकी जमीन बेच दी। उन्होंने बेलगाम के थलकवाड़ी में एक बंगला बनवाया। उनके केवल दो बच्चे थे। जया, सबसे बड़ी, और जयश्री, उनकी दूसरी। सब उन्हें 'जयु' कहकर बुलाते थे। जया एक ऑटोमोबाइल इंजीनियर बनीं। उन्हें बैंगलोर में एक अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी भी मिल गई। उन्होंने बैंगलोर में केरल की एक लड़की से प्रेम विवाह किया। चिमासाहेब थोड़ा नाराज थे, लेकिन उन्होंने अपने बेटे के विवाह को मंजूरी दे दी, जिसे वे जानते थे और जो सफल था। वे एक-दो बार उनसे मिलने त्रिवेंद्रम भी गए थे।

लेकिन छोटी जायू अपने माता-पिता की इच्छा के अनुसार अपना जीवनसाथी चुनने वाली थी। बी.ए. की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह कानून की पढ़ाई कर रही थी।

चिमासाहेब थालकवाड़ी स्थित अपने बंगले के बरामदे में खड़े होकर मेहमानों का इंतजार कर रहे थे।

झुंझरराव की आलीशान मोटरहोम 'सह्याद्री' बरामदे के पास आकर रुकी। संग्राम सबसे पहले उतरे। फिर सरलाबाई, सुशीलाबाई, बेबीचंदा और पद्माबाई उतरीं। रिवाज के अनुसार, सभी ने सलामी दी। चेकदार कोट और फर की टोपी पहने चिमासाहेब ने सभी का स्वागत किया और कहा,

"क्या हालचाल है महाराज, इतने सालों बाद मिले हैं! क्या आपको याद है जब हम थंजावुर में वेंकोजी के पोते की शादी में मिले थे?"

"हां, हां, मुझे अच्छी तरह याद है, लेकिन सच्चाई यह है कि हमारे बढ़ते कारोबार के कारण हम अक्सर मिल नहीं पाते!"

चिमासाहेब और झुंजाराव बीच वाले बैठक कक्ष में बैठे थे। महिलाएं अंदर आईं।

झुंजाराव ने कहा, "चिमासाहेब, एक बात ऐसी थी जिस पर हमें यहां आने से पहले चर्चा कर लेनी चाहिए थी!"

"कौन सा?"

"हमारे संग्राम ने अभी तक अपनी बी.ए. की डिग्री पूरी नहीं की है। हालांकि, आपकी बेटी ने स्नातक की डिग्री प्राप्त कर ली है और कानून की पढ़ाई कर रही है। तो...?"
"अरे, वो पढ़ाई कर रही है क्योंकि वो घर पर नहीं बैठना चाहती। कल, अपनी अंग्रेजी की पढ़ाई पूरी करने के बाद, क्या वो वकील बनने जा रही है?"
"हां, मुझे लगता है कि हमें इसी बारे में चर्चा करने की जरूरत थी!"
"क्या आप कानून की स्नातक बहू को संभाल पाएंगे?"
"यह सब पूछने का क्या फायदा? अरे, मैं तो लॉ की डिग्री पूरी नहीं कर पाया, इसलिए मैं चाहता था कि संग्राम कम से कम इसे पूरा कर ले। लेकिन उसने मुझे निराश किया। वह इंटरमीडिएट में तीन बार फेल हो गया। अब पता नहीं कैसे वो जूनियर में चला गया!"
"जब उनके साथ आप जैसा मजबूत पिता है तो वे क्यों चिंता करेंगे?"
"नहीं, चिमासाहेब, समय बदल रहा है। पिता की संपत्ति या परिवार की प्रतिष्ठा पर जीने के दिन बीत चुके हैं। व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।"
वे दोनों काफी देर तक बातें करते रहे। फिर भी, चिमासाहेब ने गलती से जया का जिक्र नहीं किया, इसलिए झुंजाराव ने पूछा।
"इंजीनियर क्या कहता है? क्या वह कभी यहाँ आता है या नहीं?"
"वे आ रहे हैं। उनके जुड़वां बच्चे हुए हैं, एक लड़का और एक लड़की। पत्नी सेंट जेवियर में पढ़ाती हैं!"
"वाह! तो दोनों कमा रहे हैं?"
"हम दोनों को आज और कल पैसे कमाने हैं। तो संग्राम, अब तुम आगे क्या करने वाले हो?"
"हम क्या करेंगे? खेती के अलावा कोई और विकल्प नहीं है। हम अंबा के लिए एक छोटा सा फार्महाउस बनवाने की मांग कर रहे हैं, जहां पति-पत्नी रहेंगे।"
"तो, हमारी जयू को भी खेती में दिलचस्पी है। वह पिछले दो साल से कोडोली में हमारे बगीचे में काम कर रही है।"
"लेकिन क्या स्नातक होने के बाद उसे खेती करने में आनंद आएगा?"
"अरे, पन्हाला आपके अंबवाड़ा से कितनी दूर है? क्या वहाँ अब पूरी अदालत लग गई है? वह अपने खाली समय में वकालत भी कर सकती है! अगर आपको मेरी अनुमति हो तो!"

"मैं अमवादा में रहना और पन्हाला में वकालत करना चाहता था, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। संग्राम के लिए वकील बनना संभव नहीं है। इसके विपरीत, मुझे इस बात से संतोष होगा कि जयू ने मेरा अधूरा सपना पूरा कर दिया है।"
शादी का तो सवाल ही नहीं था। सरलाभाई की बस यही इच्छा थी कि शादी कोल्हापुर में हो। उनकी यह इच्छा पूरी करने में कोई दिक्कत नहीं थी।
संग्राम और जयू का विवाह पहले से ही तय था। सरलाबाई भी जयू को पसंद करती थीं। सुशीलाबाई और पद्माबाई भी उसे पसंद करती थीं। अंत में, संग्राम की ही पसंद अंतिम थी। उसने इस बारे में कुछ नहीं कहा। सभी ने उसकी मौन सहमति को स्वाभाविक मान लिया।
शादी की तारीख पंद्रह दिन बाद तय की गई। चिमासाहेब और उनकी पत्नी रत्नामलाबाई भी इस बात से खुश थे कि उनकी बेटी बेलगाम से ज्यादा दूर नहीं जाएगी।
दोपहर में लंच का कार्यक्रम था। उसके बाद समूह कोल्हापुर के लिए रवाना हो गया। जाते समय, सुशीलाबाई ने कार में जयू की प्रशंसा करते हुए कहा, "उसने बहुत कुछ सीखा है। लेकिन उसके चेहरे पर जरा भी घमंड नहीं है।"
मैं कहा करती थी, 'मां, मैं विश्व स्तरीय महिला बन गई हूँ! लेकिन शादी के बाद मैं तुलजापुर में गोंडल पूजा जरूर करूंगी!'
गाड़ी चलाते हुए झुंजाराव ने थोड़ा सिर झुकाते हुए कहा, "हमारे सामने कोई बाधा नहीं है।"
झुंजाराव पद्माबाई को राजारामपुरी में घर पर छोड़कर चले गए, और सुशीलाबाई उनके कहने पर शिशु चंदा के साथ राजारामपुरी में ही रुक गईं। पूरी रात दोनों चिमासाहेब की बेटी की प्रशंसा करती रहीं। सुशीलाबाई ने कहा, "देखो, क्या तुम संग्राम को होश में ला सकते हो, जयू!"
"लेकिन वो दुनिया में है कहाँ? उसकी एकमात्र गलती यही है कि उसने कुछ सीखा नहीं!"
"चीनी कारखाने के मालिकों के बेटों के साथ उसका मेलजोल हाल ही में बढ़ गया था। वह हर रोज अपने बहनोई के लिए मुसीबत खड़ी कर रहा था।"
"लेकिन माँ!" इसी बीच नन्ही चंदा ने कहा, "क्या आपने जयू की 'लैंडस्केप्स' देखी हैं? मैं ऊपर गई और उन्हें देखा। वे सभी एक से बढ़कर एक हैं।"
"शाबाश मैडम, सरलेला अभी भी संग्राम को लेकर चिंतित थी।"

लेकिन अब तो सब खत्म हो गया! शादी के बाद उसे जिम्मेदारी से काम लेना होगा!
आधी रात के बाद बातचीत बंद हो गई। नन्ही चंदा जहाँ बैठी थी वहीं झपकी लेने लगी। फिर उनकी बातचीत भी रुक गई।
अगले दिन बेलगाम स्थित चिमासाहेब के महल में जयू की शादी के अलावा और कोई चर्चा नहीं थी। पर्चा छपने से पहले करीबी रिश्तेदारों को हाथ से पत्र लिखे गए। चिमासाहेब का परिवार भी ऐतिहासिक था। धार, देवास, इंदौर और ग्वालियर के सरदार परिवारों से उनके संबंध थे। उन लोगों को भी पत्र भेजे गए। चूंकि शादी कोल्हापुर में होनी थी, इसलिए दूल्हा-दुल्हन को तंबू लगाने या बैंड का इंतजाम करने जैसी कोई भी व्यवस्था नहीं करनी पड़ी। मराठा लाइट इन्फैंट्री के कई सेवानिवृत्त अधिकारी चिमासाहेब के परिचित थे। चिमासाहेब उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलते और उन्हें आमंत्रित करते।
एक सेवानिवृत्त कर्नल ने चिमासाहेब से कहा,
"आपके दामाद की शिक्षा कैसी है? जयू स्नातक हैं और वकालत कर रही हैं, तो आप ऐसा दामाद चाहती हैं जो उनकी शिक्षा के योग्य हो!" चिमासाहेब ने कहा, "लेकिन इसके बारे में मत पूछिए।"
‘‘ऐसा क्यों है? क्या हुआ?’’
"संग्राम को शिक्षा में ज्यादा रुचि नहीं है। शादी के बाद वह अंबावाड़ में खेती करने जाएगा।"
"खेती? तो जयू को भी अपने पति की खेती में मदद करनी चाहिए, हाथ में फावड़ा लेकर!"
"कहिए, 'आपको ऐसा नहीं करना पड़ेगा!' उनका गांव, अंबवाडे, पन्हाला के बहुत करीब है। जयू वहां वकालत कर सकती है। इसके अलावा, झुंजाराव कह रहे थे कि वहां अभी तक कोई महिला वकील नहीं है।"
"जी हां, ठीक है। लेकिन इस शुभ अवसर पर मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूं?"
"शुक्रिया, चूंकि झुंजाराव ने शादी की सारी जिम्मेदारी उठा ली है, इसलिए हमें कुछ नहीं करना पड़ेगा। अगर हम मराठा लाइट इन्फैंट्री की एक टुकड़ी ही बुला लेते तो बेहतर होता।"
"कोई बात नहीं। बस मुझे अपनी तारीख बता दीजिए और मैं बैंड का इंतजाम कर दूंगा।"

बेलगाम के मराठा लाइट इन्फैंट्री बैंड की अपनी एक अलग ही शान थी। हरे और लाल रंग की वर्दी पहने बैंड के सदस्य न केवल अच्छे व्यवहार वाले थे, बल्कि उनकी पोशाक भी आकर्षक थी।

चिमासाहेब तीन-चार दिन तक इधर-उधर भटकता रहा। चार दिन बाद डाकिया आया और उसे एक पत्र दिया। उसने उसे खोला, पढ़ा और उसे लगा मानो पूरी दुनिया उसके चारों ओर घूम रही हो!

यह टेलीग्राम झुंझरराव की ओर से था। दो पंक्तियों का यह टेलीग्राम पढ़ते ही चिमासाहेब का मुंह सूख गया। थोड़ा संभलकर उन्होंने रत्नमालाबाई को बुलाया और कहा, "झुंझरराव का टेलीग्राम आ गया है। यह विवाह नहीं हो सकता। स्पष्टीकरण पत्र बाद में भेजा जा रहा है।"

रत्नमालाबाई ने क्रोधित होकर कहा, "तुम्हारा क्या मतलब है कि तुम शादी नहीं कर सकते? क्या शादी बच्चों का खेल है?"

"खैर, हमने अभी तक पत्रिका छापी ही नहीं है!"

"हां, लेकिन आपने गांवों को जो पत्र भेजे थे उनका क्या हुआ?"

"कुछ अपरिहार्य कारणों से शादी नहीं हो पाएगी, इसलिए हमें फिर से पत्र लिखने पड़ेंगे," चिमासाहेब ने निराशा में कहा।

"लेकिन अब्रू का क्या होगा? क्या वह वापस आ रही है?"

ऊपर से नीचे आई जयू सब कुछ समझ गई। वह बहुत समझदार थी। उसने कहा, "पिताजी, इतनी पक्की शादी तोड़ने का कोई ठोस कारण जरूर रहा होगा! जब तक उनका विस्तृत पत्र नहीं आ जाता, तब तक कुछ पता नहीं चलेगा। माँ, बेवजह चिंता मत कीजिए! वैवाहिक समस्याएं कोई नई बात नहीं हैं। इसमें किसी का हाथ नहीं है!"

चिमासाहेब ने एक लंबी आह भरी और कहा,

"भले ही मेरा बेटा पढ़ाई में अच्छा नहीं है, वह दो-तीन साल से एक ही विषय में फेल हो रहा है, और मैं थोड़ी चिंतित थी।"

जायु अभी छोटा था और उसके माता-पिता को समझना ही था। लेकिन अब वे भी इस तयशुदा शादी को तोड़ने का सही कारण जानने के लिए उत्सुक थे।

चिमासाहेब का एक बहुत ही विश्वसनीय दीवानजी था। वह उनके वित्तीय मामलों और कृषि व्यवसाय की देखरेख करता था। चिमासाहेब ने उसे बुलवाया। उन्हें लगा कि शायद उसे कुछ निमंत्रण पत्र लिखने हों। इसलिए चश्मा पहने हुए फडनिस ने चिमासाहेब को प्रणाम किया और विनम्रतापूर्वक एक तरफ हट गए।

"दादोबा, झुंझरराव का अभी-अभी टेलीग्राम आया है, जिसमें लिखा है कि शादी नहीं हो सकती! टेलीग्राम में यह भी लिखा है कि उनका स्पष्टीकरण पत्र बाद में आएगा। लेकिन मुझे लगता है कि आपको अभी कोल्हापुर जाना चाहिए और पता लगाना चाहिए कि झुंझरराव को यह अचानक फैसला क्यों लेना पड़ा। आपको यह सारी जानकारी झुंझरराव से व्यक्तिगत रूप से मिले बिना ही प्राप्त करनी होगी। कोल्हापुर में आपके कई दोस्त हैं। आप उनसे यह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अगर आपको तीन-चार दिन रुकना भी पड़े तो कोई बात नहीं। लेकिन कम से कम हमें शादी टूटने का पक्का कारण तो पता चल जाएगा!"

"जी हां, सरकार, हम अभी 11 वीं स्ट्रीट के साथ निकल रहे हैं।"

"लेकिन क्या आप समझते हैं? झुंझरराव को पता नहीं चलना चाहिए कि मैंने आपको यहाँ से भेजा है!" दादोबा फडनीस नाना फडनवीस के वंशज के रूप में तो जाने नहीं जाते थे, लेकिन वे बहुत चतुर और कूटनीतिक थे! "उनकी बिल्कुल भी चिंता मत करो," फडनीस ने कहा और चले गए।

दादोबा की मुलाकात कोल्हापुर के गंगावेश तलमी के अनुभवी पहलवान साम्भा नागराले से हुई। साम्भा और दादोबा की पुरानी मित्रता थी। दादोबा एक बुद्धिमान व्यक्ति थे। वे दिमाग से रणनीति बनाते थे, लेकिन साम्भा उतने बुद्धिमान नहीं थे; वे कुश्ती के दौरान सामने वाले पहलवान को हराने की कला सिखाने में माहिर थे।

दादोब को देखकर साम्भा खड़ा हो गया, उसकी लुंगी पीछे की ओर खिंची हुई थी। उसके दोनों कान भजिया की तरह सूजे हुए थे। उसके शरीर पर लाल मिट्टी की एक परत जमी हुई थी।

"बेलगामकर, तुम आज यहाँ क्या कर रहे हो!"

मैं तुमसे कहता हूँ, बैठ जाओ!

वे दोनों मेज पर बैठ गए। दादोबा ने कहा, ‘‘क्या आपकी गली में स्थित मोर ट्रांसपोर्ट कंपनी बंद नहीं हो गई थी?’’
"हां, एसटी के आने से निजी कार मालिकों का तो काम ही खत्म हो जाएगा!"
‘‘मालिक इस समय क्या कर रहे हैं?’’
"तुम क्या करोगे? अमवादा में पचास एकड़ जमीन है। लोग आते-जाते रहते हैं और जो मन करता है वो करते रहते हैं!"
उनके कितने बेटे और बेटियां हैं?
"उनकी कोई बेटी नहीं है। उनके पास सिर्फ एक ही दीपक है, संग्राम।"
आप इसे लैंप क्यों कहते हैं?
"तो फिर हम क्या कह सकते हैं? अरे, बोंबा, स्कूल के नाम पर पिता ने शादी तय कर दी थी, लेकिन मोरयानी ने तुरंत ही इसे तोड़ दिया!"
"क्यों?"
‘‘वह तो इतिहास की हस्ती हैं, है ना दादोबा! अरे, क्या आपने उदगीर के मंगू धनगर के बारे में कभी सुना है?’’
नहीं। इससे क्या लेना-देना है?
"उसने पीछे रह गए मोरिया लोगों की जान बचाई, कोयता ने तेंदुए का सिर कुचल दिया, नहीं तो मोरिया लोगों के चले जाने के बाद उसी दिन सरकार इकट्ठा हो जाती!"
"तो फिर आगे क्या हुआ?"
"मंगू धनगारा का आना-जाना बढ़ गया। मंगू में केवल एक ही झील है, उसका नाम शेवंता है!"
"तो ठीक है?"
"वह धनगर परिवार की बेटी है। लेकिन अगर आप उसकी शक्ल-सूरत देखें तो वह किसी राजकुमारी जैसी लगती है! जैसे-जैसे वह धनगर परिवार के साथ ज़्यादा आने-जाने लगी, वह कभी-कभी अपने पिता के साथ कोल्हापुर भी आ जाती थी!"
"अच्छा तब!"
दादोबा के कान के पास अपना मुंह ले जाकर साम्भा ने धीमी आवाज़ में कहा, “मोर सरकार की बेटी पद्माबाई ने राजारामपुरी में एक बंगला बनवाया है! एक ‘अनाम’ महिला, लेकिन एक

खूबसूरत महिला, जिसके न तो संतान है और न ही नाती-पोते। उसकी 'जागीर' वहीं महांगल कवथला में स्थित है। मोर सरकार ने बड़ी बुद्धिमत्ता से उसके भाई से उसका हिस्सा हासिल कर लिया है।"
"लेकिन वह विधवा कैसे हुई?"
"मेरे पति सेना में थे। कश्मीर में उनकी जीप एक खाई में गिर गई और उनकी मौत हो गई।"
मुझे लगा कि मैं युद्ध में मारा गया!
"हो सकता है कि ऐसा न हुआ हो, लेकिन मोरे सरकार ने उसकी ज़मीन उसके बहनोई के चंगुल से छुड़ा ली। तब से, उस महिला ने अपने बहनोई को कभी अलविदा नहीं कहा!"
"लेकिन मोर की पत्नी इस बात से कैसे सहमत हैं?"
"पता नहीं क्यों। लेकिन वे मोर बाई के घर शाही अंदाज में जाते हैं। ये बड़े लोग कौन हैं? इन्हें कौन नापेगा? ये तो बस ऐसी ही खबर हमारे कानों तक पहुंची है!"
"मोर्या परिवार के बेटे की शादी हमारे कर्नाटक के एक जमींदार की बेटी से होनी थी। उनका क्या हुआ?"
"सरकार ने इसे जितना ज्यादा तोड़ा!"
"क्यों?"
"मोरिया के घर के उस युवक ने मंगू धनगारा की बेटी को यह जानते हुए भी शादी का प्रस्ताव दिया कि उनकी शादी तय होने वाली है, और उसने धनगारा की बेटी को 'धोखा' दिया?"
"आप क्या कहते हैं?"
"हे भगवान!" साम्भा ने अपना गला पकड़ते हुए कहा। "मोरे सरकार की पत्नी ने कहा, 'मंगया को पाँच हज़ार रुपये दो और उसकी पत्नी को रिहा कर दो।'"
"मुझे रिहा करने का क्या मतलब है?"
"'मेरा पेट खाली है! लेकिन मेरी सरकार ने कहा कि यह कोई अभिशाप नहीं है। मंगू के धनगर बनने पर क्या हुआ, उसका क्या मतलब था? उसने मेरी जान बचाई, मैं उसे इस तरह धोखा नहीं दूंगा! मैं युद्ध का वादा तोड़ दूंगा!'"
"सच में? अब याद आया! अच्छा, तुम्हें ये सब बातें कैसे पता हैं?"

"मैं सुबह अपने लड़कों को कुश्ती का प्रशिक्षण देता था, दो-तीन दांव सीखता था, और फिर मैं पूरे दिन खाली रहता था। जब मैं नाई की दुकान के सामने बेंच पर बैठता था, तो सारे खाली हाथ वाले लोग अखबार पढ़ने के लिए वहाँ जमा हो जाते थे, और वे सब वहाँ बैठकर गाँव के बारह गुर सीख जाते थे!"

साम्भा ने बताया कि जब दादोबा फडनिस ने अपनी जेब से पैसों से भरा बटुआ निकाला और साम्भा को सौ रुपये का नोट दिया।

‘‘हे आनि कशाला वो?’’

"जाने भी दो!"

संभा वस्तादा ने बिना हां या ना कहे इसे स्वीकार कर लिया। दादोबा सीधे अनुसूचित जनजाति के पक्ष में चले गए।

विवाह टूटने की खबर सुनकर चिमासाहेब बेचैन हो गए थे। दादोबा को कोल्हापुर भेजे जाने के बाद से ही उन्हें लग रहा था कि दादोबा कभी-कभार कोई सूचना लेकर आएंगे। दादोबा बेलगाम स्टैंड से रिक्शा में चिमासाहेब के बंगले पर आए। चिमासाहेब उनका इंतजार कर रहे थे। चिमासाहेब ने उन्हें देखते ही पूछा,

"क्या खुलासा हुआ?"

"हाँ। पाप का टिकट मिलने की संभावना वास्ताद तक पहुँच गई है। उसे इस मामले की परेशान करने वाली खबर मिली है!"

"क्या आपको वाकई कारण समझ में आया?"

"जी हां! जी हां, अंदर आइए। मैं आपको सब कुछ विस्तार से समझा दूंगा।"

दादोबा फडनिस ने संग्राम की शादी को इतनी जल्दबाजी में तोड़ने का कारण बताते हुए कहा,

"लेकिन क्या मोर सरकार सचमुच में एक सच्चा आदमी है?" जब उसे इस बात का पता चला, तो उसने संग्राम से कहा, "क्या तुम्हें उस शेवंता से रिश्ता होने पर शर्म नहीं आती? पिछले छह महीनों से घर में तुम्हारी शादी की बातचीत चल रही थी और तुमने उस बेचारी बच्ची का गला काट दिया? कुछ नहीं। चिमासाहेब की बेटी से तुम्हारी जो शादी तय हुई थी, वह अब नहीं हो सकती। तुम्हें शेवंता से ही शादी करनी होगी!"

फडनिस से सच्चाई जानने के बाद चिमासाहेब के घर का माहौल शांत हो गया। उससे तीन दिन पहले, मोर्या परिवार के घर में माहौल तनावपूर्ण हो गया था। मंगू शेवंता को लेकर आई थी। वह बस रो रही थी। झुंजाराव ने उससे कहा, "बच्ची, रो मत। तुम इस घर की बहू बनोगी! संग्राम को तुमसे शादी करनी ही होगी।"
"क्या? क्या वह इस घर में बहू की तरह व्यवहार करेगी?" सरलाबाई ने कहा।
"जी हां, अब से वो बहू की तरह बर्ताव करेगी। समझ गए!"
"लेकिन हमारे प्रतिष्ठित रिश्तेदार क्या कहेंगे, दुनिया क्या कहेगी?"
"सरला, हमारी शादी को इतने साल हो गए, पर तुम मुझे जानती तक नहीं! क्या तुम्हें पता है कि शाहू छत्रपति, जिनके यहाँ हमने खाना खाया, उन्होंने अपनी भतीजी को होल्कर परिवार को दे दिया? छत्रपति जाति में विश्वास नहीं करते थे। रिश्तेदार क्या कहेंगे? दुनिया क्या कहेगी? मैं इसके लिए कभी भीख नहीं माँगूँगा। आज मैं चिमासाहेब को टेलीग्राम से सूचित करूँगा। संग्राम की तुम्हारी बेटी से तय शादी नहीं होगी!"
यह सुनकर सरलाबाई को चक्कर आने लगा। संग्राम आगे आया और उसने सरलाबाई के सिर पर पानी छिड़का।
संग्राम के विवाह में कुछ गड़बड़ होने की खबर सुनकर सरलाबाई की बहन सुशीलाबाई तुरंत वहां पहुंचीं।
पहुँचकर उठते हुए उसने झुंझरराव से पूछा, "आखिर हुआ क्या?" सतर्क सरलाबाई को देखकर झुंझरराव ने कहा, "अपनी बहन से पूछो। मैं खेत जा रहा हूँ! मेरा सिर दर्द कर रहा है!"
मंगू सुबह आया था। उसे मोरे सरकार ने रोक लिया था। उसने घर में हुई सारी बातचीत सुन ली थी। अंबवाडिया जाते समय उसने मोरे सरकार से कहा, “सरकार, आप क्या कर सकते हैं? मैं मूर्ख हूँ, और आपका परिवार भी मूर्ख है!”
"मांग्या, इस मामले में एक शब्द भी मत कहना, मैंने एक बार जो फैसला कर लिया है उसे मैं बदल नहीं सकती, रिश्तेदार और दुनिया दोनों ही अपने मुंह से बोलते हैं। मैं तुमसे कह रही हूँ, मांगू, संग्राम की शादी शेवंता से ही होगी, संग्राम मना नहीं कर पाएगा!"

मंगू और शेवंता को ले जा रही मोटर वैन को अंबवाड़ा रोड से जाने के बजाय राजारामपुरी की ओर जाते देख, मंगू ने सरकार से पूछा, "यहां सरकार कहां है?"
"पद्माबाई को बुलाओ! चलो उन्हें अपने साथ खेतों में ले चलते हैं! जब तक वह महिला मेरे साथ नहीं आएगी, मुझे चैन नहीं मिलेगा।"
उस समय पद्मबाई को किसी बात की जानकारी नहीं थी। मोरे सरकार के मुंह से पूरी सच्चाई सुनने के बाद उन्होंने कहा,
"ऐसा नहीं होना चाहिए था, बल्कि इसके विपरीत होना चाहिए था।"
"यह सच है कि ऐसा होना नहीं था। लेकिन जो हो गया उसे ठीक करना होगा!"
"लेकिन क्या आपने इस बारे में सोचा है कि आम लोग क्या सोचेंगे?"
"मैं ऐसा क्यों करूँगी? मुझे बताओ, तुमने शेवंता को यह बताते समय क्या सोचा था कि संग्राम की शादी तय हो गई है? तुम उस लड़की के साथ दो साल तक रही थी!"
पद्माबाई को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। कार की खिड़की से बाघ के बच्चे के टेढ़े-मेढ़े रास्तों को देखते हुए उन्होंने कहा, "लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि संग्रामबल ऐसा कुछ करेगा!"
"पद्माबाई, क्या वह आपको बताकर इतना हंगामा करने वाला था?"
"लेकिन मंगू तो धनगर है। क्या आप किसी कुलीन परिवार से हैं?"
"पद्माबाई, आपने मुझे पहले बताया था। हम सेना के लोग जाति की परवाह नहीं करते और आपको मंगू की जाति अभी याद आने लगी?"
"क्या यह सही नहीं है, सरकार?"
"तो फिर कैसे?"
"वह शेवंता से शादी किए बिना संग्राम की शरण में रह सकती थी!"
"उसकी रखैल बनकर? यह असंभव है! वह हमारे घर में मोर्या की बहू बनकर रहेगी!"
मोरे परिवार में घटी घटना से पद्माबाई भी थोड़ी परेशान थीं। इस पर झुंझरराव ने कहा,
"जब शेवंता आपके घर पर थी, तब संग्राम का आपके घर आना-जाना बढ़ गया था। आपको उस समय थोड़ा संदेह होना चाहिए था।"

"आने के बाद वो हमेशा मुझसे मेरा हालचाल पूछते थे, शेवंता की पढ़ाई के बारे में पूछते थे। लेकिन एक-दो बार जब वो मॉरिस कार में आए, तो उन्होंने पूछा, 'आंटी, क्या मैं शेवंता को यूनिवर्सिटी गार्डन दिखाने ले जाऊं?'" मैंने हां कह दी, लेकिन उस समय मुझे उनका व्यवहार बिलकुल सामान्य लगा। हमेशा की तरह मुस्कुराते और मजाक करते हुए!"

"पद्माबाई, बीस साल के लड़के बिल्कुल ऐसे ही व्यवहार करते हैं। वे किसी को भी अपने बारे में ज़रा सा भी संदेह नहीं होने देते! लेकिन छोड़ो, अब इन बातों को उठाने का कोई फायदा नहीं है!"

उनके पीछे वाली कार में बैठे शेवंता अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहे थे।

गाड़ी से उतरते हुए झुंजाराव ने मंगू से कहा, "ओह मंगू, क्या तुम खुश रहोगी कि तुम मेरी पत्नी हो? क्या तुम वहीं बैठकर आंसू बहाती रहोगी?"

"मैं सरकार के दंपत्ति के बगल में बैठने के लायक नहीं हूँ। यह बहुत बुरा मजाक है!"

"देखो, पद्माबाई, उसे समझाने की कोशिश करो। इसीलिए तो मैं तुम्हें यहाँ लाया हूँ।"

पद्माबाई ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

रात 8:30 बजे, झुंझरराव मंगुला और शेवंता को खेत में छोड़कर पद्मबा को अपने साथ कोल्हापुर वापस ले गए।

0-0

पूर्णिमा की रात थी। चाँद बाहर खूब चमक रहा था। जब वाघबिल नीचे आया, तो उसे नलवाडे बस्ती के पास पज़ार झील दिखाई दी। झील का पानी चाँदनी में चमक रहा था। सुदूर पूर्व में, जोतिबा पर्वत पर रोशनी जगमगा रही थी। वे टिमटिमा रही थीं।

"सरकार, हम यहीं क्यों रुक रहे हैं?" पद्माबाई ने पूछा।

"हम इंतज़ार क्यों कर रहे हैं? कुछ सवालों के जवाब नहीं दिए जा सकते। मैं एक बड़े संकट से बाहर आया हूँ। उस समय मुझे थोड़ा 'आराम' करने का मन हुआ।" मेरे बगल में बैठी पद्माबाई को अपनी ओर खींचते हुए और उन्हें चूमते हुए झुंझरराव ने कहा,

"संग्राम के बारे में मेरे फैसले के बारे में आपका क्या विचार है? मुझे सच-सच बताओ, ठीक है?"

"सरकार, आपके कार्यों ने साबित कर दिया है कि आप कितने प्रगतिशील हैं! मैं शेवांता के साथ डेढ़ साल तक रही। वह बहुत ही गुणी बच्ची है। उसकी एकमात्र गलती यह है कि वह एक पुरुष की संतान है।"

क्या आप इसे दोष कहते हैं? क्या किसी व्यक्ति के लिए यह मायने रखता है कि वह किन माता-पिता की संतान है?

"नहीं, आप कहते हैं, लेकिन समाज में आपकी छवि, आपके परिवार और इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, शेवंता के आपकी बहू बनने का विचार ऐसी बात नहीं है जिसे आप आसानी से स्वीकार कर सकें!"

"मुझे उस समाज की परवाह नहीं! मैं शेवंता को आगे पढ़ाऊंगा!" उसे पढ़ाने आए देशपांडे मास्टर ने एक बार मुझसे कहा था, "यह लड़की बहुत बुद्धिमान है। अगर उसे आगे की शिक्षा का अवसर मिले, तो वह भविष्य में नाम कमा सकती है!"

"भविष्य में? पद्माबाई, मैं भविष्य में बिल्कुल विश्वास नहीं करता। हमें जन्म देने वाला ही जन्म के समय हमारी कुंडली बना देता है। उसमें सब कुछ तय होता है कि व्यक्ति को कितने समय तक जीना चाहिए, कहाँ रहना चाहिए, क्या पेशा करना चाहिए। हम इसके बारे में अनजान हैं। किसी को भी भविष्य जानने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। यह कभी सफल नहीं होगा। क्या आपको पता था कि शिवराम आपसे शादी करने के एक-दो साल के भीतर ही दुर्घटना में मर

जाएगा? अगर किसी को किसी के भविष्य का ज्ञान होता, तो कई अनहोनी से बचा जा सकता था! खैर, पद्माबाई, इतनी सुंदर जगह पर ऐसी निरर्थक बातें करने का कोई मतलब नहीं है। इधर आइए!"

पद्माबाई ने अपना सिर झुंझरराव की छाती पर टिकाया और कहा, "एक घटना ऐसी है जो मैंने अभी तक आपको नहीं बताई है।"

"कौन सा?"

"मैं शिवराम के साथ शिमला गई थी। मुझे एकांत में ले जाकर उन्होंने मुझसे कहा, 'पद्मा, तुमने जानबूझकर मुझसे शादी करने के लिए सहमति दी, लेकिन तुमने एक बात नहीं सोची।'"

मैंने पूछा, "कौन से?"

मैं सेना में हूँ और किसी भी क्षण मेरी मृत्यु हो सकती है! इसके अलावा, कश्मीर का मुद्दा इतनी जल्दी हल नहीं होने वाला। शासकों की अज्ञानता ने इसे और जटिल बना दिया है। अनुच्छेद 370 लागू करके खुद को दार्शनिक समझने वाले शासक अनुच्छेद 370 की जटिलता को नहीं समझ पाए हैं। कश्मीर की दुर्दशा दिखाए बिना पाकिस्तानी शासकों का सत्ता में बने रहना असंभव है। इसके लिए उन्हें घुसपैठ और हत्या की घिनौनी नीति अपनानी पड़ रही है। इसमें कोई वीरता नहीं है। लेकिन कहने का तात्पर्य यह है कि मेरा जीवन किसी भी क्षण अच्छा या बुरा हो सकता है। मेरे बाद आप असहाय न रह जाएँ!

एक पल के लिए तो मुझे उसकी बातों पर गुस्सा भी आ गया। मैंने कुछ गुस्से में कहा, 'तो आप मुझसे क्या उम्मीद करते हैं?'

अगर ऐसा हुआ तो तुम्हें दोबारा शादी कर लेनी चाहिए। अब, हमारे परिवार में किसी को भी तुम्हारी दोबारा शादी में दिलचस्पी नहीं होगी!

शिवराम के मुंह से वो शब्द सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। मैंने कहा, 'तुम्हारे बाद तो मैं जीना भी नहीं चाहती।'

इस पर शिवराम ने कहा, ‘पद्मा, तुम्हें एक ही जीवन मिलता है। मैं पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता। लेकिन जो जीवन तुम्हें एक बार मिलता है, उसे सुखपूर्वक जीना चाहिए। पाप, पुण्य और संसार क्या कहेगा जैसी व्यर्थ बातों के बारे में सोचना भी मत!’

"शिवराम को भविष्य में अपने साथ क्या होने वाला है, इसका कुछ अस्पष्ट आभास था, लेकिन उन्होंने तुरंत कहा, 'यदि कोई नेक इरादे वाला व्यक्ति बिना शादी के भी तुम्हारा साथ देने की तत्परता दिखाए, तो तुम्हें निश्चित रूप से उसका सहारा लेना चाहिए!'"

कुछ दिनों बाद, उनकी जीप का एक्सीडेंट हो गया। मैं बेसहारा हो गई। उनका शव कावथ्या लाया गया। उस समय, मेरे ससुराल वालों ने मुझे सांत्वना देने के बजाय, मुझे तिरस्कार भरी नजरों से देखना शुरू कर दिया। बाद में, मेरे ससुराल वाले मुझे डरपोक कहकर नीचा दिखाने लगे। मेरे देवरों ने तो संपत्ति में मेरा हिस्सा भी लेने से इनकार कर दिया।

"तभी मुझे शिवराम की बातें याद आ गईं। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था, 'पद्मा, स्त्री चाहे कितनी भी काबिल क्यों न हो, वह पुरुष के सहारे के बिना नहीं रह सकती। इसीलिए उत्तर की कुछ जनजातियों में भाई की मृत्यु के बाद उसके अविवाहित भाई उसकी विधवा भाभी से विवाह कर लेते हैं। परसों जब हमारे लांस नायक तिवारी युद्ध में शहीद हुए, तो उनके भाई ने एक महीने के भीतर तिवारी की विधवा से विवाह कर लिया। लोग इस प्रथा को अपने-अपने नाम दे देंगे!"

"शिवराम एक सैनिक थे, लेकिन वे बहुत बुद्धिमान थे। मेरी सुशीला ने आपको मुझसे मिलवाया था। आपने मेरी मदद की। जब आपने मुझे वह ज़मीन दिलवाई जो शिवराम के हिस्से की थी, तब मुझे शिवराम के शब्द याद आए। 'पद्मा, एक स्त्री चाहे कितनी भी प्रतिभाशाली क्यों न हो, वह पुरुष के सहारे के बिना नहीं रह सकती।'"

"शिवराम एक महान व्यक्ति थे! पद्मा, क्या तुम्हें नहीं लगता कि मैंने तुम्हें इसलिए शरण दी क्योंकि तुम सुंदर, युवा और धनी थे?"

"मैं ही थी जो तुम्हारी ओर आकर्षित हुई थी। यहां तक कि सरलाबाई, जो कि बड़े दिल वाली थीं, उन्होंने भी तुम्हारे साथ मेरी दोस्ती पर कोई खास आपत्ति नहीं जताई।"

"ओह, जब से उसकी आपातकालीन गर्भाशय सर्जरी हुई है, तब से वह मेरी दोबारा शादी करवाने की कोशिश कर रही है।"

चांद काफी ऊपर चढ़ चुका था। लगभग दस बज चुके थे। झुंझरराव ने पद्माबाई से कहा, "चलो, बहुत देर हो चुकी है।"

उनमें से किसी को भी यह नहीं लगा कि वे कुछ अनैतिक कर रहे हैं। इससे पहले भी वे राजारामपुरी स्थित बंगले में शारीरिक संबंध बना चुके थे। लेकिन उस समय उन्होंने इस बारे में कोई चर्चा नहीं की थी। आज हुई इस चर्चा से दोनों को राहत मिली।
शेवंता मामले को लेकर झुंझरराव के मन में जो चिंता थी, वह पद्माबाई से मुलाकात के बाद कुछ हद तक कम हो गई थी।
कोल्हापुर शहर में यातायात धीमा था। कार राजारामपुरी में पद्माबाई के बंगले के सामने रुकी। तब झुंझरराव ने कहा,
मैं रंकाला जा रहा हूँ।
"इतनी देर हो गई? आज रात यहीं रुक जाओ, ठीक है? मैं रात के खाने में कुछ हल्का बना दूंगी!"
प्रकाश क्या है?
"फ्रिज में अंडे रखे हैं, अगर आप चाहें तो मैं आमलेट बना सकती हूँ, नहीं तो अंडे का सूप भी झटपट बन जाता है!"
"ठीक है। कुछ बना लो, कौन जाने आज जब मैं घर पहुँचूँगी तो सरला मुझसे ठीक से बात करेगी या नहीं?"
"क्यों? उन्हें क्या हुआ!"
"शेवात परिवार के बारे में मैंने जो फैसला लिया, उसे वह बिल्कुल पसंद नहीं आया!"
"सुशीला, तुम्हारा क्या विचार है?"
"उन बहनों के मन में अभी भी अपने परिवार, गोत्र और लोगों के कहने-सुनने को लेकर चिंता बनी हुई है। देखते हैं, वे धीरे-धीरे इस बात को स्वीकार कर लेंगी। मेरे प्रति यह नफरत कब तक चलेगी?"
"क्या मैं इसके बारे में कुछ कर सकता हूँ?"
"ऐसा कुछ भी करने की कोशिश मत करो। मुझे नहीं लगता कि वे दोनों तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे।"
मैंने पूछा, "क्यों?"
"मैंने उस विषय पर सरला के भाषण में थोड़ा अलग लहजा देखा!"

"तो उसने वास्तव में क्या कहा?"
"वह कहती है कि वह शेवंता से दो साल तक आपके बंगले में रही। संग्राम अक्सर वहां आता-जाता रहता था, इसलिए पद्मबाई को थोड़ा संदेह होना ही चाहिए था।"
"क्या उसने यह बात स्पष्ट रूप से कही थी?"
"स्पष्ट और अस्पष्ट। पद्मा, मैं महिलाओं के चेहरों से कुछ बातें समझ सकता हूँ! मुझे आज आपसे थोड़ी अनुमति चाहिए!"
"किस बारे मेँ?"
मुझे व्हिस्की चाहिए! मेरा सिर दो दिनों से दर्द कर रहा है!
"अरे, मुझे आपत्ति क्यों करनी चाहिए?"
"ऐसा नहीं है। कुछ महिलाओं को यह पसंद नहीं होता कि पुरुष उनके लिए ड्रिंक खरीदें, इसलिए मैं पूछता हूं।"
"हम सेना की पत्नियां हैं। जब हम अक्सर पार्टियां करते थे, तो मुझे इसमें कुछ भी गलत नहीं लगता था! बस इसकी लत मत लगाओ!"
"मुझे कभी लत नहीं लगेगी। मैं शिकार पर जाता था, और जब मुझे अच्छा शिकार मिलता था, तो मैं 'जश्न मनाने' के लिए एक और पेग लेता था! आज मुझे आपकी संगति में सचमुच 'आराम' महसूस होता है।"
झुंजाराव के मोटरहोम में एक छोटा सा बार था, लेकिन उसके अलावा किसी को इसके बारे में पता नहीं था। उसने कभी यह ज़िक्र नहीं किया कि वह कभी शराब पीता था।
पद्माबाई अंदर से पानी की बोतल और गिलास लाकर उनके सामने मेज पर रख दिया।
झुंझरराव ने एक गिलास भरा। उन्होंने उसमें थोड़ा पानी मिलाया, गिलास उठाया और पद्माबाई से कहा,
“चिअर्स पद्मा!”
पद्माबाई ने बस अपना हाथ उठाया।
एक घूंट लेते हुए झुंजाराव ने कहा, "मैं तुमसे कुछ पूछने के लिए कह रहा था। लेकिन वह सवाल कभी आया ही नहीं। क्या तुमने कभी शिवराम के साथ 'ड्रिंक' की है?"

"मैं जिन पीता था, लेकिन शिवराम के जाने के बाद से मैंने उसे छुआ तक नहीं है। शिवराम की याद में, मैंने शराब को हाथ न लगाने का फैसला किया है!"
मैं अभी ज़िद नहीं करूँगा। लेकिन मान लीजिए कि मैं ज़िद करता हूँ, तो आप क्या करेंगे?
मैं इसे नहीं लूंगा और मुझे मजबूर करने की हिम्मत मत करना!
"ठीक है, ठीक है," झुंजाराव ने गिलास को दोबारा अपने होठों से लगाते हुए कहा।
दो दिन पहले हुई उस दर्दनाक घटना के बाद से झुंझरराव बेचैन थे। अब खेत से लौटकर पद्माबाई के साथ रहने से उन्हें थोड़ा बेहतर महसूस हुआ। अब दो पेग व्हिस्की पीने के बाद उन्हें बहुत हल्कापन महसूस होने लगा।
खाना खाते हुए झुंझरराव ने कहा,
"पद्मा, तुम एक महिला हो। अगर किसी निर्दोष लड़की के साथ अन्याय हो रहा है, तो मुझे बताओ कि मुझे क्या निर्णय लेना चाहिए?"
"मैं यह नहीं कहूंगी कि आपने गलत फैसला लिया है! लेकिन मुझे नहीं लगता कि शेवंता मोर्या राजवंश में बहू के रूप में बहुत आजादी से घूम-फिर पाएगी!"
मुझे इस बात का पूरा एहसास है! लेकिन सरले मेरा स्वभाव जानती है। वह मेरे फैसले के खिलाफ कुछ नहीं कर पाएगी। उसे शेवंता को अपनी बहू के रूप में स्वीकार करना ही होगा!
रात के ग्यारह बज रहे थे। झुंझरराव पद्माबाई के शयनकक्ष में लेट गए। पद्माबाई उनके चरणों में बैठ गईं और उनके पैर मलने लगीं। उसी समय उन्होंने कहा,
"किसने कहा कि मुझे अपने पैरों की मालिश करवाना पसंद है?"
"मुझे किसी ने नहीं बताया। शिवराम को पैर पटकने की आदत थी। मैं उसकी जगह आपकी बात समझ सकता हूँ!"
बोलते-बोलते पद्माबाई भावुक हो गईं। उनकी आँखों में आँसू भर आए। उन्होंने इतनी धीमी आवाज़ में कहा कि सरकार को पता भी न चले।
उसे अपनी बाहों में लेते हुए झुंजाराव ने कहा, "क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हारे जीवन में एक पागल और जिद्दी व्यक्ति आ गया है?"
"ऐसा नहीं है। इसके विपरीत, तुम मुझसे मेरी नियति के रूप में मिले।"

अगली सुबह चाय पीने के बाद झुंझरराव ने कहा, "पद्मा, मैं जा रहा हूँ। मैं उन दोनों को मनाने की कोशिश करूँगा। तुम एक काम करो!"
"कौन सा?"
"मैं इसे संग्राम को भेज दूंगी। उसे मेरी भूमिका के बारे में थोड़ा समझा दूंगी! शेवंता से शादी करने में शर्म की कोई बात नहीं है! वो बहनें उसके कान भरने से नहीं रुकेंगी। सुशीलाबाई ने पहले ही मुझसे कहा था, 'संग्राम के शेवंता से शादी न करके उसे दोस्त बनाकर रखने में क्या दिक्कत थी?' मैं उस मासूम लड़की के साथ कुछ भी अन्याय नहीं करना चाहती थी। मैं आ रही हूँ।"
झुंजाराव ने बाहर खड़ी मोटर होम का स्विच ऑन किया और चला गया।
झुंझरराव के जाने के बाद पद्माबाई उन्हें विदाई देने आईं। उनके शयनकक्ष में चाय की मेज पर शिवराम की सिपाही वर्दी में एक तस्वीर रखी थी। उन्होंने उसे हाथ में लिया और पलंग पर लेट गईं। जब भी झुंझरराव पद्माबाई के पास आते, उन्हें शिवराम के शब्द याद आ जाते! 'पद्मा, स्त्री चाहे कितनी भी सिद्ध हो जाए, वह पुरुष के सहारे के बिना नहीं रह सकती। केवल पुरुष का स्वभाव ही नेक होना चाहिए!'
पद्माबाई काफी देर तक पलंग पर लेटी रहीं, उनके हाथ में शिवराम की तस्वीर थी। तभी दरवाजे की घंटी बजी। पद्माबाई उठीं और दरवाजा खोला। संग्राम दरवाजे पर खड़े थे।
"अरे बाप रे! तुम इतनी जल्दी यहाँ कैसे आ गए? तुम्हारे पापा तो अभी-अभी गए थे।"
"हाँ, इसीलिए तो माँ ने मुझे उससे मिलने भेजा है! कल शाम घर से निकलने के बाद से उसने फोन नहीं किया। एक मैसेज भी नहीं आया। माँ पूरी रात उसके बारे में चिंता करती रही!"
हम खेत पर गए थे। रात को वापस आए। तुम्हारे पापा ने यहीं खाना खाया। रात बहुत लंबी थी। इसलिए मैंने उनसे कहा, आज रात यहीं रुकना, सुबह उठकर चले जाना। जाते समय उन्होंने मुझसे कहा था। मैं संग्राम को तुम्हारे पास भेज दूँगा, उसे थोड़ा मनाने की कोशिश करना!
"आंटी, मुझे कुछ भी समझाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। पापा के फैसले से आंटी और सुशीला थोड़ी हैरान रह गईं!"
"तो तुम्हें शेवांता के बारे में पापा का फैसला पसंद आया?"

मुझे उसे पसंद करना ही होगा! मैं पापा के स्वभाव को बहुत अच्छी तरह जानती हूँ, मैं उनके खिलाफ कुछ नहीं कर सकती!
"तो फिर कोई बात नहीं, वे बस इस बात को लेकर चिंतित थे कि आप क्या सोचते हैं।"
"लेकिन चाची, शेवांता के बारे में मेरा आपसे एक अनुरोध है।"
"कौन सा?"
"शादी के बाद उसे कुछ दिनों तक आपके साथ रहना चाहिए!"
"घर पर क्यों नहीं?"
जब तक मामला ताजा रहता है, तब तक उसमें सनसनी बनी रहती है। एक बार पर्दा गिर जाए, तो कोई भी उसके बारे में कुछ महसूस नहीं करना चाहता!
"तुम तो समझदार हो! बिल्कुल, उसे मेरे साथ रहने दो! उसके जाने के बाद से मुझे अकेलापन महसूस हो रहा है।"
"लेकिन तब वह मंगू की बेटी थी। अब वह यहां मोर्या की बहू बनकर रहेगी!"
"कोई दिक्कत नहीं। लेकिन सरलतारी को ऐसा करने की अनुमति है, है ना?"
"कल रात सुशीला और मां सारी बातें कर रही थीं। दोनों चाहती हैं कि शादी के बाद वह कुछ दिनों के लिए आपके साथ रहे।"
"ठीक है। पहले देखते हैं तुम्हारे पापा क्या कहते हैं!"
वे मना नहीं करेंगे।
‘‘का?’’
"शेवंता को मोरिया परिवार की बहू के रूप में घर पर ही रहना चाहिए। उसे मोरिया परिवार के रीति-रिवाजों, परंपराओं और भाषा से परिचित होना चाहिए। एक तरह से वे सही हैं। शेवंता पहले भी यहाँ रह चुकी है, तब ठीक था। लेकिन मुझे नहीं लगता कि शादी के बाद उसका यहाँ रहना उचित है।"
"जैसा आपको उचित लगे वैसा करो। लेकिन शादी के बाद उसका नाम शेवंता नहीं रहना चाहिए!"
"इस नाम में क्या खराबी है!"
मैंने इस बारे में सोच-विचार कर लिया है और यशोमती नाम तय कर लिया है।

"यशोमती? यह बहुत ही प्यारा नाम है। मैं भी उसे यशोमती कहकर बुलाना चाहूंगी।"
पंद्रह दिन बाद विवाह संपन्न हुआ। झुंझरराव ने वैदिक विद्यालय के पुजारी को बुलाया। छत्रपति ने सुझाव दिया कि यह विवाह पुराने महल के भवानी मंडप में संपन्न किया जाए। छत्रपति शाहू महाराज अपने आश्रितों के अंतरजातीय विवाह वहीं संपन्न कराते थे। उस स्थान की एक बहुत ही समृद्ध परंपरा थी।
झुंजाराव ने फिर से रिश्तेदारों को पत्र भेजे। पर्चे छपवाए। पुलिस का दस्ता तैनात किया गया। उस दिन उदगीर के उभा धनगरवाड़ा शादी में आए थे। मंगू के लिए पैंट और गैबर्डिन का कोट बनवाया गया। उनके सिर पर शिवशाही दुपट्टा बांधा गया।
झुंझरराव शाही पोशाक में सिर पर पगड़ी बांधे आगंतुकों का स्वागत कर रहे थे। करवीर संस्थान के सभी पूर्व जागीरदार, मानकरी और सरदार उपस्थित थे। मेहमानों के रथ एक-एक करके आने लगे। चोपदार भालदार उनके खिताबों का जिक्र करने लगे। देवास और धार ग्वालियर के पूर्व राजकुमारों के साथ-साथ केसरिया रंग का मेबा रथ भी आया। स्वयं छत्रपति दूल्हा-दुल्हन को आशीर्वाद देने आए। ऐसा लग रहा था कि अब कोई खास मेहमान नहीं आएगा। तभी एक सफेद ओपल रंग का रथ आया और रुका। इंदौर के पूर्व शासक कल्याण सिंह होलकर उससे उतरे। चोपदार ने जोर से कहा, 'महामहिम, इंदौर के शासक, महाराज कल्याण सिंह होलकर!' तुरही बज उठी।
सबकी निगाहें कल्याण सिंह पर टिकी थीं। उपस्थित लोगों का अभिवादन स्वीकार करते हुए कल्याण सिंह अपने बगल में बैठे करवीर के छत्रपति के पास गए। उन्होंने छत्रपति को विनम्रतापूर्वक प्रणाम किया। छत्रपति ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें अपनी दाहिनी ओर बैठाया।
उस माहौल को देखकर किसी ने सोचा भी नहीं था कि मोरे वंश का पुत्र धनगर वंश की पुत्री से विवाह कर रहा है। छत्रपति का विवाह में उपस्थित होना अपरिहार्य था, क्योंकि मोरे वंश छत्रपति के सरदार थे। लेकिन इंदौर के महाराजा की इतनी दूर से उपस्थिति ने इस समारोह को विशेष महत्व प्रदान किया।
जैसे ही शादी का समय आया, पुजारी ने दुल्हन को बुलाया। मंगू के बहनोई, शेवंता के मामा ने दुल्हन का हाथ पकड़ा और उसे शादी के स्थान पर ले आए।

भवानी मंडपम में लंबे समय बाद ऐसा समारोह आयोजित किया जा रहा था। इसी दौरान दुल्हन शेवंता उर्फ यशोमती वहां पहुंची। विवाह समारोह में कई लड़कियां भी मौजूद थीं। झुंझरराव के निर्देशानुसार बारात में कोई महिला शामिल नहीं थी।

यशोमती के सिर पर मोतियों की बालियां बंधी थीं। उनकी स्वाभाविक सुंदरता उनमें से चमक रही थी। बेबी चंदा, यशोमती के बाल संवारे जा चुके थे। उसकी सहेलियां भी बड़ी संख्या में आई थीं। लेकिन यशोमती की सुंदरता देखकर उन लड़कियों को लगा कि मेकअप करने में उन्होंने अपना समय व्यर्थ ही बर्बाद किया। अक्षता का कार्यक्रम समाप्त हो गया। पुलिस बैंड बजने लगा। उसी क्षण, पुराने राजवाड़ा चौक में एक के बाद एक पांच तोपों की गोलियां चलीं। छत्रपति और इंदौर के महाराजा ने दूल्हा-दुल्हन को आशीर्वाद दिया। पत्रकार और फोटोग्राफर बड़ी संख्या में वहां जमा हो गए। लोगों की आंखों में आंसू आ गए। यहां तक कि सरलताई और सुशीलताई, जिन्होंने कुछ समय तक इस विवाह का विरोध किया था, भी अपना विरोध भूल गईं।

यशोमती ने अपने पैर से अनाज मापने के बर्तन को पार करते हुए मौर्यों के पुराने महल में प्रवेश किया।

0-0

अगले दिन, महाराष्ट्र के सभी प्रमुख समाचार पत्रों में संग्राम यशोमती के विवाह की तस्वीरें छपीं। एक प्रमुख समाचार पत्र के संपादक ने विवाह पर मुखपृष्ठ लिखकर झुंझरराव को बधाई दी। मुखपृष्ठ पर लिखा था, 'छत्रपति शाहू की विरासत को आगे बढ़ाने वाले सरदार झुंझरराव मोर्या को हार्दिक बधाई!' जो परिचित विवाह में शामिल नहीं हो सके, उन्होंने समाचार पत्र में खबर पढ़कर सितारों और पत्रों के माध्यम से झुंझरराव को बधाई दी।

सरलाबाई और सुशीलाबाई को इस अंतरजातीय विवाह के बारे में दुनिया की प्रतिक्रिया को लेकर जो आशंकाएं थीं, वे निराधार साबित हुईं। इसी बीच, चिमासाहेब भोसला का बेलगाम से झुंझरराव को बधाई संदेश आया। बाद में, उनका विस्तृत पत्र भी प्राप्त हुआ। झुंझरराव ने उसे ध्यान से पढ़ा। उसमें उन्होंने लिखा:

श्रीमान झुंजाराव मोरे को बेलगाम से चिमासाहेब भोसले का नमस्कार प्राप्त हुआ। मुझे अपने बेटे के विवाह का समाचार मिला। मुझे यह भी समझ में आ गया कि आपने हमारी बेटी से इतनी जल्दी विवाह क्यों तोड़ दिया। अगर मैं आपकी जगह होता, तो मैं भी यही निर्णय लेता। दूल्हा-दुल्हन को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। चिमासाहेब जया ने यशोमती को भी नमस्कार किया है। चिमासाहेब जया श्रीमती यशोमती से मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं। अगर मेरी करवीरी किसी काम से आती है, तो मैं चिमासाहेब जया को अपने साथ लाऊंगा।

एक बार फिर, दूल्हा और दुल्हन को हार्दिक बधाई।

आपका स्नेहपूर्वक

चिमासाहेब भोसले।

झुंजाराव को बधाई के कई पत्र मिले, लेकिन जब चिमासाहेब का पत्र आया तो वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने वह पत्र सरलाबाई और सुशीलाबाई को दिखाया। सुशीलाबाई ने कहा, "मुझे चिंता थी कि जया को शादी की खबर सुनकर क्या लगेगा। अब मुझे अच्छा लग रहा है।"

"लेकिन ऐसा लगता है कि किसी को पहले से ही पता है कि मैं यह अरेंज्ड मैरिज क्यों तोड़ रही हूँ। खैर! ज़रूरी बात यह है कि इस शादी से किसी को दुख न पहुँचे!"

शादी के बाद शुक्रवार को विवाह समारोह हुआ। कोल्हापुर से कई परिचित शादी के भोज में आए थे। लेकिन मंगू के परिवार के पचास-साठ लोग उदगीर से भी आए थे। मंगू अभी भी

भावुक था। उसे भवानी मंडप में हुआ शाही विवाह समारोह याद आ रहा था। वह उन राजाओं और महाराजाओं, चोपदारों के ताने, छत्रपतियों और इंदौर के महाराजाओं के आगमन की कल्पना करता रहा। शादी के बाद से ही झुंझरराव मंगू को मंगेश राव कहकर बुलाते थे। उन्होंने उसका नाम मंगेश राव उदगीरकर रखा था।

यशोमती ने पद्माबाई के साथ दो वर्ष बिताए थे, इसलिए वह उस कुलीन परिवार के रीति-रिवाजों से भली-भांति परिचित हो गई थी। वह स्वभाव से ही सुंदर थी। इसके अलावा, विवाह के बाद वह बहुत ही विनम्र और शालीन हो गई थी। सरलाबाई दूल्हा-दुल्हन को वावर जात्रा के लिए ज्योतिबा ले गईं। वहां, यशोमती को देखने के लिए पूरा गुरुवाड़ा एकत्रित हो गया।

शादी को दो हफ्ते बीत चुके थे और घर का माहौल शांत हो गया था। झुंझरराव ने संग्राम से पूछा, "मोरे सरकार, तुमने आगे क्या करने का फैसला किया है?"

"खेती-बाड़ी, और क्या करोगे?"

"क्या मोटर व्यवसाय का यह चलन आपके दिमाग में नहीं आया?"

"तुमने मना कर दिया, इसलिए मैंने तुम्हें नौकरी से निकाल दिया। वरना, मैंने दो-तीन टाटा सूमो कारें लेकर एक ड्राइवर को काम पर रखकर टैक्सी का कारोबार शुरू करने का फैसला किया था।"

"यह बात अपने दिमाग से निकाल दो। मेरे लिए अच्छी बात यह है कि तुम्हें झुंजार ट्रांसपोर्ट जैसे ड्राइवर और सफाईकर्मी नहीं मिलेंगे। एक बार गाड़ी ड्राइवर को दे दी तो समझो काम खत्म! वो पैसे देने और लेने से लेकर गाड़ी से 'ईंधन' निकालने तक सब कुछ करेगा।"

"तो फिर खेती के अलावा आप और क्या कर सकते हैं?"

अपनी पत्नी से पूछो।

वह क्या कहेगी?

मैं क्या कहूँ? उसे इतना अच्छे से जानने में तो आधी ज़िंदगी लग जाएगी! देखो, उसने शादी के बाद कॉलेज का नाम अपने नाम पर रखने का फैसला किया है। मुझे उस लड़की पर बहुत गर्व है। क्या तुमने कभी देखा है कि उसने 10 वीं कक्षा में कितने प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे?

"ठीक है। अगर आपकी ऐसी इच्छा है, तो उसे आगे पढ़ने दीजिए। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन पढ़ाई पूरी करने के बाद वह क्या करेगी?"

"आपने मुझे निराश किया, मैं खुद कानून की पढ़ाई करना चाहती थी। वो भी मुमकिन नहीं हो पाया। मैं यशोमती कॉलेज से कानून की पढ़ाई पूरी करने जा रही हूँ। पन्हाळा शाहूवाड़ी इलाके में अभी तक एक भी महिला वकील नहीं है!"
संग्राम का चेहरा भावों से भर गया था, "वह किस तरह की वकील बनेगी?" लेकिन झुंझरराव के सामने कुछ भी कहने की हिम्मत उसमें नहीं थी।
यशोमती बेबी चंदा के साथ गई और आधा दर्जन साड़ियाँ खरीदीं। उसने एक मैचिंग ब्लाउज भी सिलवाया। बेबी चंदा उसे पंजाबी पोशाक लाने के लिए कह रही थी। लेकिन यशोमती ने कहा,
"बेबी, मैं अपना जीवन मौर्य वंश में, और वो भी कोल्हापुर में बिताना चाहती हूँ! शादी से पहले, तुम्हारे कहने पर, मैंने राजारामपुरी में एक पंजाबी पोशाक पहनकर देखी। अब, अगर मुझे कभी उनके साथ पुणे या मुंबई जाने का मौका मिला, तो देखते हैं!"
पंद्रह दिन बाद यशोमती को सूखी उल्टी होने लगी। सरलाबाई तुरंत मौके पर पहुंचीं। उन्होंने कोल्हापुर से एक महिला डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर ने यशोमती की जांच की और कहा,
"चिंता मत करो! सब ठीक है। यह गर्भावस्था का रिकॉर्ड रखने का समय है। उससे पूछो कि वह क्या खाना चाहती है!"
उस रात सरलाभाई ने उससे पूछा, "तुम क्या करना चाहती हो?"
एक-दो मिनट इंतजार करने के बाद यशोमती ने कहा,
"तप्पोरी, कारवंद और जम्भाला!"
"बिल्कुल सही। तुम एक पर्वतीय व्यक्ति हो, है ना?"
यह सुनकर यशोमती ने दिल खोलकर मुस्कुरा दिया।
"ओह, लेकिन क्या अब गाजर और बैंगनी आलू का मौसम है? मुझे बताओ, तुम और क्या खाना चाहोगे?"
"अनानास!"
"जी हां। ये मिल सकते हैं! हाल ही में ट्रकों से कोल्हापुर में अनानास आ रहे हैं। लेकिन क्या आपने पहले कभी अनानास खाया है?"

"जी हां, जी हां! भिक्कू पाताल ने वसंत ऋतु में कुछ अनानास के पेड़ लगाए थे। लेकिन उनके बढ़ने से पहले ही जंगली सूअरों ने उन्हें नष्ट कर दिया। हालांकि, उनमें से दस-पांच पेड़ बच गए थे। बाबा उन्हें लेकर आए थे।"
"ठीक है। मैं इसे कल ले आऊंगा!"
सरलाबाई यशोमती को बड़े दिल से दुलार रही थीं। झुंझरराव यह सब देख रहे थे।
उसी शाम, झुंझरराव को पद्माबाई का फोन आया। उन्होंने कहा, "महोदय, आपको कुछ ज़रूरी काम है। आप कब आएंगे?"
मैं कल सुबह नाश्ते के लिए आऊंगा। क्या यह ठीक रहेगा?
“जरूर या!”
झुंझरराव पूरी रात सोचते रहे। पद्मा को ऐसा कौन सा जरूरी काम हो सकता है जिसके लिए उन्होंने मुझे बुलाया? लेकिन उन्हें कुछ समझ नहीं आया। अगले दिन, सुबह करीब नौ बजे, वे पद्माबाई के बंगले पर पहुँचे।
वहाँ से गुजरते हुए, उन्होंने पद्मबाई से पूछा, जैसे ही वे दरवाजे की सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे,
"आपने मुझे किस प्रकार का अत्यावश्यक कार्य करने को कहा है?"
"कम से कम पहले नाश्ता तो कर लो। फिर हम शांति से बात कर सकते हैं।"
नाश्ते में तले हुए अंडे और टोस्ट तैयार थे। केतली में चाय थी। ट्रे में बिस्कुट रखे थे। उन्हें देखकर झुंझरराव ने कहा,
पद्मा, मैं आजकल अपने खान-पान में कटौती कर रहा हूँ!
“का?”
"अब मैं लगभग चौवन साल का हो गया हूँ। उम्र बस पहुँचने ही वाली है। विशेषज्ञ कहते हैं कि इस उम्र में खान-पान थोड़ा कम रखना चाहिए! इसके अलावा, शरीर को पहले जैसी कसरत भी नहीं मिलती। पहले तो मुझे शिकार के लिए दस मील पैदल चलना पड़ता था! कभी-कभी सुबह-सुबह रक्कल (एक तरह का छोटा सा खेल) भी होता था! मेरे पिताजी मेरे साथ आते थे!"
चाय पीने के बाद, सोफे पर आराम से बैठे हुए, झुंजाराव ने कहा,
अब अपने काम के बारे में बात करो!

"असल बात यह है कि परसों अचानक मेरी मुलाकात मेरी दूर की रिश्तेदार विमल से हुई। वह गरगोटी में बी.एड. कर रही है! उसने मुझसे कहा कि बैठो और देखो कि तुम्हें भी दाखिला मिल पाता है या नहीं!"

तो आप मास्टर बनने जा रहे हैं?

"ऐसा नहीं है। मैं भी अच्छा समय बिताऊंगी। मैं सिर्फ नौकरी के लिए बी.एड. नहीं करना चाहती। शादी के बाद मैं कुछ नहीं कर पाई। मुझे स्थिरता नहीं मिली। अब, आपकी कृपा से, मैंने इसे हासिल कर लिया है!"

झुंजाराव कुछ गंभीर हो गए और बोले, "मैंने सुना है कि पद्मा और बी.एड. के छात्र भारी चंदा लेते हैं!"

हमें भी थोड़ा भुगतान करना चाहिए!

"लेकिन उससे पहले, आइए देखें कि अंदर जाने का कोई और तरीका है या नहीं!"

"कौन सा?"

"तुम एक मृत सैनिक की पत्नी हो! अगर मुझे जिला सैनिक बोर्ड के अध्यक्ष से एक पत्र मिल जाए, तो संक्षिप्त पत्र भी चलेगा!"

"लेकिन इन सबका खर्च कौन उठाएगा?"

"जी हां। कर्नल पांडे यहां के जिला सैनिक बोर्ड के अध्यक्ष हैं, मैं उनसे एक बार मिली थी। वे बहुत दयालु लगे। मैं कल आपके बायोडाटा के साथ उनके पास जाऊंगी! वे बी.एड. कॉलेज चलाने वाली संस्था के अध्यक्ष हैं, रूप सिंह पवार! मैं उन्हें भी जानती हूं। लेकिन पद्मा, आजकल शिक्षण संस्थानों के नेता सिर्फ जाने-माने नहीं हैं। शिक्षण संस्थान ऐसे राजनीतिक नेता बन गए हैं जिन्होंने स्थानीय लोगों के लिए पैसा कमाया है। ये लोग सार्वजनिक रूप से कहते हैं कि हमारा लक्ष्य समाज के निचले तबके के लोगों, खासकर महिलाओं को शिक्षा की सुविधा प्रदान करना है। लेकिन यह सब दिखावा है! लेकिन पवार राजपूत हैं। चौधरी शाहू महाराज ने राजस्थान के कुछ परिवारों के लोगों को यहां नौकरी दी थी। उन्होंने उन्हें यहां की मिट्टी से प्रेम जगाने के लिए सोंताली कैंप के आसपास दो सौ एकड़ जमीन भी दी थी। ये राजपूत लोग आज भी वहीं रहते हैं। इसे राजपूतवाड़ी के नाम से जाना जाता है।"

"यह अच्छी बात है कि आपने कोल्हापुर राज्य का इतिहास पचपन वर्षों तक याद रखा है!"

"लेकिन आजकल तो मुझे सिर्फ बूढ़े लोग ही जानते हैं! खैर छोड़ो। लेकिन पद्मा, बी.एड. करने के बाद तुम सच में क्या करने वाली हो?"
"बहुत आगे की नहीं सोचना चाहिए! मेरा पहला लक्ष्य बी.एड. बनना है!"
"आप एक बात भूल रहे हैं, बी.एड में दाखिला लेने वाले लड़के-लड़कियां बाईस साल के होते हैं, कभी-कभी पच्चीस साल के भी। आप अभी अड़तीस साल के हैं। क्या आपको उस कक्षा में बैठने में असहजता महसूस नहीं होगी?"
"शुरू में थोड़ा समय लग सकता है। लेकिन एक बार जब आपको इसकी आदत हो जाएगी, तो आपको कुछ भी महसूस नहीं होगा! वैसे भी, शिक्षा प्राप्त करने में शर्म क्यों? अगर आप इस नज़रिए से देखें, तो ज्ञान के मार्ग पर चलने का क्या मतलब है? शादी के बाद, क्या आपने यशोमती को पढ़ाना जारी रखने का फैसला नहीं किया था?"
"तुम सही कह रही हो, पद्मा, लेकिन अगर तुम्हें दाखिला मिल गया, तो तुम्हें गरगोटी में जाकर रहना होगा!"
"मैं वहां रहने की बजाय यहां रहना पसंद करूंगी! इसके विपरीत, मैं एक नए वातावरण में रहूंगी, नई लड़कियों से मिलूंगी। मुझे तो यह भी नहीं पता कि डेढ़ साल की पढ़ाई कैसे गुजरेगी!"
कुछ देर सोचने के बाद झुंजाराव ने कहा, “पर मुझे तुम्हारी संगति की कमी खलेगी। अंबा के खेत में जाने के बाद मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी। मेरे जान-पहचान वाले लोग कहते हैं कि तुमसे मिलने के बाद मुझमें बहुत बदलाव आ गया है!”
पद्माबाई ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "हाँ, मैं भी यही देखती हूँ। आपका खेत, आपका साधारण दो कमरों वाला फार्महाउस, चारों ओर लगाए गए आपके बाग-बगीचे। मुझे भी ये सब बहुत अच्छा लगता था। मैं आपके मोटरहोम में की गई यात्राओं को कभी नहीं भूल पाऊँगी। आपके साथ समय बिताने के सुख से ही मैं शिवराम की असमय और आकस्मिक मृत्यु के दुख को कुछ हद तक भूल गई हूँ।"
"इस उम्र में विदेश जाकर रहने की इच्छा रखने का और कोई कारण नहीं हो सकता, है ना?"
"इसके अलावा और क्या कारण हो सकता है?"

"सरला और सुशीले ने संग्राम की शादी के लिए आपको दोषी ठहराया था। आपको इससे कोई दुख तो नहीं हुआ था, है ना?"
आपने बिल्कुल सही बात कही। मुझे सच में ऐसा लगता है कि शादी के इस मुद्दे पर वे दोनों मुझसे थोड़ा दूर हो गए हैं!
"लेकिन आपको यह देखकर आश्चर्य होगा कि वे दोनों अब यशोमती की कितनी प्रशंसा कर रहे हैं!"
"संग्राम ने मुझसे बात की! लेकिन मुझे लगता है कि मुझे कुछ समय के लिए आप सभी से दूर रहना चाहिए।"
"अरे, मैंने क्या कर दिया?"
"आपने कुछ नहीं किया। इसके विपरीत, मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि अगर मैं आपसे न मिला होता तो मेरा क्या हाल होता! मैं आपकी कृतज्ञता के बोझ तले दबा हुआ हूँ, जैसे कोई पहाड़!"
"पद्मा, कृतज्ञता की ये भाषा अब बस करो! मुझे तुम्हारे गरगोटी में रहकर बी.एड. करने में कोई आपत्ति नहीं है। बल्कि, मैं तुम्हें वहाँ के किसी शिक्षण संस्थान में दाखिला दिलाने की पूरी कोशिश करूँगा।"
जैसे-जैसे वह बोलती गईं, पद्माबाई की आँखों में आँसू भर आए। वह थोड़ी भावुक हो गईं और बोलीं, "इस तरह से देखा जाए तो मैं सरलाबाई और सुशीलाबाई को भी दोष नहीं दूंगी। मैंने यशोमती को डेढ़ साल तक अपने घर में साथी बनाकर रखा था। संग्राम मेरे घर आता था और यशोमती से बातें करता था। लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि उन दोनों के बीच ऐसा रिश्ता बन जाएगा। मुझे लगता था कि जिस तरह संग्राम नन्ही चंदा से बातें करता था, उसी तरह वह यशोमती से भी खुलकर मजाक करता था।"
"पद्मा, उनकी उम्र कितनी थी? आप देख रही थीं कि यशोमती आपके साथ रहने आने के बाद कितनी जल्दी बदल गई थी, है ना?"
"लेकिन मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि वे दोनों इतने करीब आ जाएंगे। शायद सेना का माहौल ही इसका कारण था!"

"अच्छा, अब इस विषय को अपने दिमाग से निकाल दो! संग्राम और यशोमती विवाह बंधन से एक-दूसरे से बंध चुके हैं। अब मुझे बस एक ही चिंता है। संग्राम को कुछ काम करना चाहिए। वह कहता है कि वह खेती करेगा, लेकिन खेती में भी लगन की जरूरत होती है। उसे अंबावाड़ा जाकर रहना होगा। यशोमती ने भी वहां जाकर रहने की इच्छा जताई थी। लेकिन उसकी शिक्षा अभी पूरी नहीं हुई है। वह स्नातक जरूर हो जाएगी, लेकिन मैं उसे बाद में किसी लॉ कॉलेज में दाखिला दिलाना चाहती हूँ!"

मुझे पूरा यकीन है कि आप उसकी जिंदगी खूबसूरत बना देंगे!

मैं भला उसकी जिंदगी बिगाड़ने वाली कौन होती हूँ? मैं तो बस उसे रास्ता दिखा रही हूँ! अगर वो मन लगाकर पढ़ाई करेगी, तो कल अपने पैरों पर खड़ी हो जाएगी! लेकिन आज मेरी असली चिंता संग्राम है! शादी के बाद से एक अच्छी बात हुई है। चीनी मिल मालिकों के बदमाश घर आना बंद कर चुके हैं। जो काम मैं नहीं कर पाई, वो उसने बखूबी कर दिया!

उसने क्या किया?

"उसने संग्राम को समझाया कि इन लड़कों के शोर में तुम अपना रास्ता खुद बना लोगे! उदगीर जैसे दूरदराज के गांव में पली-बढ़ी यशोमती की व्यावहारिक समझ वाकई अद्भुत है! आजकल सरला और सुशीला भी उसी के तरीके से काम करती हैं! अगले दिन, पत्नियों के बीच बेबी चंदा का मुद्दा उठा। सुशीला ने कहा कि बेबी को मेरी और सरला की संगति उतनी पसंद नहीं आती जितनी उसे अपनी सहेलियों की संगति पसंद आती है!"

इस पर मैंने कहा, "अरे, उसे तो सिर्फ अपनी उम्र की लड़कियों के साथ ही अच्छा लगेगा, भला वह तुम्हारे जैसी बूढ़ी औरतों के साथ कैसे अच्छा महसूस कर सकती है?"

सुशीला ने कहा, "क्या हम बूढ़े हो गए हैं?"

मैंने खुद को संभाला और कहा, "सुशीला, मेरा इरादा आप दोनों का अपमान करने का नहीं था। लेकिन बेबी जैसी छोटी लड़की को अपनी उम्र के लोगों के साथ ही रहना चाहिए, है ना? क्या आप दोनों उससे बड़ी नहीं हैं?"

"ठीक है। लेकिन अगर हम उन्हें वयस्क कहना ही चाहते हैं, तो सिर्फ बूढ़े लोग क्यों नहीं कह देते?"

मैंने कहा, ‘‘माफ़ करना, सुशीला! मैंने तुमसे कहा था, लेकिन तुम बूढ़ी हो गई हो!’’

बहस रोकने की कोशिश में मैंने कहा, "चलो यशोमती की राय लेते हैं!" मैंने यशोमती को नीचे बुलाया। उसने मुझसे कहा।
"क्या, पापा? आपने मुझे क्यों बुलाया?"
"अब आप ही फैसला कीजिए। उन दोनों को बेबी चंद से आपत्ति है, उनका कहना है कि वह अपने दोस्तों के साथ ज्यादा खुल कर बात करती है और हमारे साथ कुछ 'संकोच' व्यवहार करती है!"
यशोमती ने कुछ गंभीरता से कहा, "बेबी चंदा की सहेलियाँ उसकी उम्र की हैं। उसे उनकी संगति बहुत पसंद आएगी। लेकिन मुझे उसकी एक सहेली पसंद नहीं है!"
"कौन सा?" सुशीलाबाई ने पूछा।
‘‘वह तो सोने की खान है!’’
"वह ऐसा क्यों कर रही है? क्या वह नखरे कर रही है?"
"आंटी, उसकी उम्र तो यही है, लेकिन उसने एक बार मुझसे कहा था, 'हम उस उम्र में हैं जहाँ हम मौज-मस्ती करना चाहते हैं! एक बार शादी हो जाए और हम अपनी जिंदगी जीना शुरू कर दें, तो मरने तक इससे कोई छुटकारा नहीं मिलेगा!'"
बेबी की दूसरी दोस्त सुवर्णा भी वहीं थी और उसने कहा, "मज़ा क्या है?" उसी क्षण सोनाली ने अपने पर्स से गोलियां निकालीं और उसे दिखाईं।
सरले को नहीं पता था कि वे गोलियां किस काम की थीं। मैं ठीक उसके सामने खड़ा था। मैंने कहा,
"ओह, सरला, ये तो गर्भनिरोधक गोलियां हैं।"
"हे भगवान!" सुशीले ने अपना हाथ अपने चेहरे पर रखते हुए कहा।
"बेबी को उस लड़की से रिश्ता तोड़ देना चाहिए! मुझे लगता है जीजाजी, बेबी को भी एक मध्यमवर्गीय लड़के से शादी कर लेनी चाहिए। उसके पिता तो कुछ करते ही नहीं! सात साल हो गए हैं, और उन्होंने मेरी बेटी के हालचाल तक नहीं पूछे!"
मैंने कहा, "सुशीला, जब मैं उससे एक-दो बार मिली, तो उसने मुझसे मुंह मोड़ लिया। शायद इसलिए कि तुम्हें उससे हर महीने गुजारा भत्ता मिलता है!"

सुशीला ने कहा, "जीजाजी, क्या वो मुझे गुजारा भत्ता एहसान के तौर पर दे रहे हैं? मुझे तो इसके लिए हाई कोर्ट तक लड़ना पड़ा!"
खैर, चलिए बेबी चंदा की शादी की तैयारियों में जुट जाते हैं!
इस पर सरला ने कहा, "बेबी चंदा भोली है। उसके लिए सही उम्र में शादी करना ही सबसे अच्छा होगा।"
हालांकि, उस दिन से बेबी ने सोनाली से मिलना-जुलना बंद कर दिया।

0-0

जब मंगू को पता चला कि यशोमती को सर्दी लग गई है, तो उसने उससे मिलने जाने का फैसला किया। उसे यह भी याद आया कि यशोमती करवंदा और जंभला खाना चाहती है। लेकिन जब वह मिलने जा रहा था, तो उसे यशोमती के मनपसंद करवंदा और जंभला कहाँ से मिलते? करवंदा और जंभला का मौसम नहीं था। पर उसके कुछ बड़े भाई काफी अनुभवी थे। उन्हें करवंदा के जालों के बारे में एक सुराग मिला, जिन पर बेमौसम भी फल लगते हैं। मंगू गगनबावड़ा के पास करुल घाट गया। बड़ी मुश्किल से उसे करवंदा के जाल दिखे। लेकिन उन जालों पर उसे जंभला नहीं मिला। कम से कम करवंदा तो ले जाने के लिए, वह करवंदा से भरा एक थैला कोल्हापुर ले आया।

सरलाभाई अपने लाए जालों को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, "करुल घाट पर जाल तो हैं, लेकिन वैनीसब ने बैंगनी मटोर मछली नहीं पकड़ी है।"

"अरे, आपको आश्चर्य होगा। कल, उनका एक पुराना शिकारी दोस्त सावंतवाड़ी से आया। उसने कहा, 'मेरे बगीचे में बैंगनी फूल साल में दो बार खिलते हैं। अगर मुझे पता होता, तो मैं उन्हें ले आता। चलो, कम से कम तुम्हें एक आरी तो मिल गई।'"

‘‘लेकिन आखिरी 'हाय' कहाँ है?’’

"उसे अब दोहालानजेवन से निमंत्रण मिल रहे हैं। आज वह सुशीले के घर डिनर पर जाना चाहती है। उसने मुझसे एक कार भेजने के लिए कहा है। कार जल्द ही आ जाएगी। हम सब साथ चलेंगे!"

मंगू को एक बार अपनी बेटी से मिलने की इच्छा हुई थी। शादी के बाद वह कोल्हापुर कम ही आने लगा था।

मंगू ने अपने पुराने कपड़े उतार दिए थे। उसने खाकी गैबर्डिन कोट, साफ धोती और कोल्हापुरी चप्पलें पहनी हुई थीं। पहले वह मंजरपट्टा कमीज और उसके नीचे पुरानी खाकी पैंट पहना करता था। लेकिन मोरे सरकार ने उसे कड़ी चेतावनी दी थी। अगर उसे कोल्हापुर आना है, तो उसे वही कोट, धोती और चप्पलें चाहिए होंगी जो मैंने उसे दी थीं!

एक बार झुंझरराव ने कहा, "अरे, तुम पहले मंजरपत्त बादाम, कमर पर लंगोटी और कंधों पर कंबल ओढ़कर चलते थे। लेकिन याद रखो, अब तुम झुंझरराव मौर्य के परिवार के सदस्य हो। तुम्हें मेरे इभ्रता के अनुरूप वस्त्र पहनने चाहिए!"
इस पर मंगू ने कहा, "लेकिन सरकार ने ही तो तुम्हें ये कपड़े दिए हैं जो तुमने पहन रखे हैं, और तुम इन्हें अपने शरीर से बांधकर मार रहे हो!"
इस पर झुंझरराव ने मुस्कुराते हुए कहा, "जब आप उदगीर जाएं, तो अपनी मोटी बादाम बनियान और लंगोट पहनकर खुश रहें। वहां आपसे कौन पूछेगा? लेकिन जब आप यहां आएंगे, तो मुझे आने-जाने वाले लोगों से आपका परिचय करवाना पड़ेगा। इसीलिए मैं उनके सामने आपको मंगेश राव कहकर बुलाता हूं!"
मंगू ने कहा, "मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरे पिता के जीवनकाल में ऐसा होगा।"
"अरे, ये तो भाग्य का जादू है। कोई इसकी भविष्यवाणी नहीं कर सकता। मैं आपको एक चुटकुला सुनाता हूँ। संग्राम के जन्म के समय, यहाँ के पथक्षत्रिय ने उसकी जन्म और विवाह कुंडली बनाई थी। उसमें लिखा है कि संग्राम का विवाह राजपरिवार की लड़की से होना तय है! लेकिन सच में हुआ क्या?"
"सरकार उस विद्वान, युवा पीढ़ी के अधिकारियों और समाज के साथ क्यों जुड़ गई?"
"ओह, मैंने खुद संग्राम-यशोमती का कैलेंडर घर ले जाकर कहा, 'शास्त्रुवा, अब अपना कैलेंडर लपेटो और बालकनी में फेंक दो!'"
"तो तुमने क्या कहा?"
"तुम्हारा क्या मतलब है? मुझे तो बताया गया है कि मंगू धनगर पिछले जन्म में राजपरिवार से संबंधित रहे होंगे!"
“हमारी सरकार कब बनेगी?”
"तुम इतने पागल क्यों हो? मंगू, क्या किसी को पता है कि वो अपने पिछले जन्म में कौन थे? सब झूठ है! देवताओं को भी न तो भाग्य समझ आया है और न ही कभी समझ आएगा। अब, अगर हम पिछले जन्मों में विश्वास करना चाहते हैं, तो क्या इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण है? मैं पिछले जन्मों, आत्माओं आदि जैसी बकवास बातों पर कभी विश्वास नहीं करूँगा। हमारा

यह मानव जन्म वास्तविक है। हमारे माता-पिता वास्तविक हैं। बाकी सत्रह सौ साठ देवी-देवता सब झूठ हैं!"
मंगू आश्चर्य से सुनता रहा जब झुंजाराव ने बोलना शुरू किया। उसने फिर कभी इस विषय को नहीं उठाया।
आज सरलाबाई उन्हें सुशीले के घर रात के खाने पर ले गईं। रास्ते में सरलाबाई ने गाड़ी में ही उन्हें चेतावनी दी, "उसे शेवंता शेवंता मत बुलाओ। हमने उसका नाम यशोमती रखा है। उसे इसी नाम से बुलाते रहो! शेवंता नाम गाँव में तो ठीक है, लेकिन यहाँ उसे शोभा नहीं देता!"
सुशीलाबाई के घर से खाने की खुशबू आ रही थी। नन्ही चंदा जल्दी में थी। उसने सोनाली के अलावा अपनी सहेलियों को भी खाने पर बुलाया था। सुबह वह यशोमती के लिए महाद्वार रोड से जायजूई का एक बड़ा थैला लाई थी। हरे रेशमी साड़ी और चोली में यशोमती गर्भावस्था के कारण बेहद खूबसूरत लग रही थी। उसने अपने सिर पर घूंघट नहीं गिरने दिया। उसकी राजकुमारी जैसी सूरत देखकर कोई भी यकीन नहीं कर सकता था कि वह कभी उदगीर जैसे दूरदराज के गांव में एक चरवाहे की बेटी थी!
जब वे कार में बैठकर जा रहे थे, तब सरलाबाई ने उससे कहा, "तुम्हारे पिता ने कोंकण के सभी पहाड़ों की यात्रा की ताकि तुम्हारे लिए वह भोजन ला सकें जो तुम खाना चाहती हो!"
यशोमती ने कहा, "माँ, मुझे तो बेमौसम ही आम मिल गया। अगर मुझे भी आम मिल जाता तो और भी अच्छा होता!"
"इसे प्राप्त करने के अगले दिन, उनका एक पुराना शिकारी मित्र सावंतवाड़ी से आया। उसने कहा, 'मैं अगले सप्ताह आपके लिए बैंगनी वाले लाऊंगा!'"
लेकिन मैं आपको चेतावनी देता हूँ, इन दोनों फलों को संयम से खाएँ! करवंदा अधिक खाने से आपका पेट खराब हो जाएगा, जबकि जाम्भल अधिक खाने से पित्त बढ़ जाएगा! मैं उतना ही खाऊँगा जितना मैं आपको अपने हाथों से दे सकूँ!
सरलाबाई और सुशीलाबाई के बीच हाल ही में बहुत मजबूत रिश्ता बन गया था। वे अक्सर महसूस करती थीं कि यशोमती मामले में उन्होंने पद्माबाई को बेवजह गलत समझा था।
सुशीलाबाई ने कहा, "हम आज एक गाड़ी भेजेंगे और पद्मा को यहाँ रात के खाने पर आमंत्रित करेंगे!"

ड्राइवर गाड़ी लेकर चला गया। लेकिन पद्माबाई नहीं आईं। उसने कहा, “घर में ताला लगा है!”
मैंने झुंझरराव को फोन किया। लेकिन वे गंगावेशी स्थित पुराने महल में भी नहीं थे। वे सुबह पद्माबाई के साथ मोटर होम से गरगोटी के लिए रवाना हो गए थे।
घर में ताला लगाने के बाद पद्मा कहाँ चली गई, यह बात उन दोनों को समझ नहीं आई। जब उन्हें बताया गया कि सरकार भी गरगोटी गई है, तो वे दोनों हैरान रह गए। हमें बिना बताए वे दोनों गरगोटी क्यों चले गए?
उस दिन उन्होंने इस मामले में और पूछताछ नहीं की। यशोमती, बेबी चंदा और उसकी सहेलियों की उम्र की थी। लेकिन शादी के बाद वह समय से पहले ही वयस्क हो गई थी। वह मंगू के पास आई, जो बाहर बरामदे में बैठा था। उसने पूछा, "क्या गाँव में सब ठीक है?"
"कोई बात नहीं, समद, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, बूढ़े आदमी!"
"तो क्या मैं सर्वोच्च लोक में हूँ? अगर कभी मेरी याद आए तो मुझसे मिलने आना! गायें और मवेशी कैसे हैं?"
इस कहानी में कहने को बहुत कुछ है! वे अपने साथ अपनी शराब और खाना लेकर वाग्रू आते हैं, और वे गांव के बंधनों को तोड़ देते हैं!
"क्या वन विभाग कुछ नहीं कर रहा है?"
वे क्या करेंगे? वे तो बस पैसे खाते हैं! वे मेरे साथ दुश्मन जैसा व्यवहार करते हैं!
"चिंता मत करो। पापा आज यहां नहीं हैं। उनके आने पर मैं उन्हें बता दूंगी।"
अभयारण्य के नाम पर तेंदुए प्रतिदिन इलाके में आकर उत्पात मचाते थे। ग्रामीणों द्वारा शिकायत दर्ज कराने पर भी कोई ध्यान नहीं दिया जाता था।
इससे उस इलाके के लोगों का जीवन भी मुश्किल हो गया था। तब ग्रामीणों ने एक अनोखी तरकीब अपनाई। जब कोई बाघ किसी गाय या बछड़े को मारता, तो वह सारे जानवरों को नहीं खाता था। वह उन्हें उस जगह से घसीटकर जंगल में ले जाता, जहां उन्हें मारा गया था, और घनी झाड़ियों में छिपा देता। अगले दिन, वह सावधानी से वहां आता और जानवर को खा जाता। ग्रामीण जानवरों के निशान देखकर जान जाते थे कि मरे हुए जानवर को किस दिशा में ले जाया गया है। अगले दिन, जानवर को खाने से पहले, बाघ उस पर 'एंड्रिन' या इसी तरह का

कोई जहर छिड़क देता था। जब बाघ मांस खाता, तो वह उछलकर मर जाता। लेकिन वन विभाग को इस स्थिति की जानकारी मिलते ही वे तुरंत पता लगाते कि गाय या भेड़ का मालिक कौन है और उसके मालिक के खिलाफ मामला दर्ज करते। मंगू के खिलाफ ऐसा कोई मामला कभी दर्ज नहीं हुआ था। फिर भी, उन्हें शक था कि यही मंगू दूसरे धनगरों को भड़का रहा है। इसलिए वे मंगू के साथ चुपचाप व्यवहार करते थे।

मंगू की बेटी की शादी झुंझरराव के बेटे से होने की खबर पूरे महाराष्ट्र में फैल गई थी। इसीलिए किसी भी वनपाल ने खुलेआम मंगू को परेशान करने की हिम्मत नहीं की!

उस दिन सुशीलाबाई और उनके परिवार ने खाने का इंतज़ाम किया था। मैंगो की थाली बरामदे में बाहर रखी थी। अंदर बेबी के दोस्त बातें कर रहे थे। सुशीलाबाई और सरलाबाई बच्चों को खाने के लिए कह रही थीं। यशोमती चुपचाप सब सुन रही थी।

दो बज रहे थे। लड़कियों और यशोमती को खाना परोसा जा चुका था। यशोमती को चांदी की थाली में खाना दिया गया था। बाकी लड़कियों को साधारण स्टेनलेस स्टील की थालियों में खाना दिया गया था। मंगू, जो बाहर खाना खाकर लौटा था, हाथ धोकर वापस आया। उसने यूं ही दरवाजे से अंदर झांका। यशोमती फर्श पर बैठी चांदी की थाली में खाना खा रही थी। मंगू को समझ नहीं आया कि क्या कहे। उसने धीरे से दरवाजा बंद किया और बरामदे में बाहर बैठ गया।

तीन बज गए थे जब सबने खाना खत्म किया। बेबी के दोस्तों के जाने के बाद सरलाबाई ने कहा,

"यशोमती, क्या तुम अब जाना चाहती हो?"

"क्या आपके ड्राइवर ने खाना खाया?" यशोमती ने पूछा।

"हां, वह मंगू के साथ पला-बढ़ा था।"

यशोमती ने विवाह से पहले डेढ़ से दो वर्ष तक पद्माबाई के साथ समय बिताया था। उन्होंने पद्माबाई के शिष्टाचार, उनकी वाणी और बड़ों का आदर करने का तरीका आत्मसात कर लिया था। उन्हें इस बात का भी अफसोस था कि पद्माबाई उस भोज में उपस्थित नहीं थीं।

सरलाबाई उस दिन संग्राम को जानबूझकर अपने साथ नहीं लाई थीं। वह बेवजह परेशान कर रहा था। लेकिन सरलाबाई ने उससे कहा, “यह महिलाओं का कार्यक्रम है। बच्ची की

सहेलियाँ भी वहाँ होंगी। तुम वहाँ क्यों परेशान कर रहे हो? अगर चाहो तो खेत पर चले जाओ! हमें एक मॉरिस कार की ज़रूरत पड़ेगी।”

संग्राम एस.टी. अम्बावाड़ा गये।

गरगोटी पहुँचने पर झुंझरराव ने संगठन के अध्यक्ष से मुलाकात की। उन्होंने पद्माबाई के संबंध में पहले भी अध्यक्ष से पत्राचार किया था। झुंझरराव के कार्यालय में प्रवेश करते ही अध्यक्ष अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए। पद्माबाई उनके बगल वाली कुर्सी पर बैठ गईं। कार्यालय में महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर, चौधरी शाहू महाराज की तस्वीरों के बगल में एक दाढ़ी वाले सज्जन की तस्वीर थी। झुंझरराव उन्हें पहचान नहीं पाए। उन्होंने अध्यक्ष से पूछा,

"यह किसकी फोटो है?"

"क्या आप नहीं जानते? ये धोंडो केशव कारव्या हैं। इन्होंने ही पुणे में महिलाओं की शिक्षा के लिए हिंगना संस्थान की स्थापना की थी। उस समय पुणे में उन्हें प्रतिक्रियावादियों के भारी विरोध का सामना करना पड़ा था!"

"मैं सावित्रीबाई फुले के बारे में सच्चाई जानता हूँ। जब वे लड़कियों को पढ़ाने गईं, तो पुराने विचारों वाले लोगों ने उन पर गोबर और पत्थर फेंकने में कोई संकोच नहीं किया। सही मायने में, महात्मा फुले ने हमारे देश में महिला शिक्षा की नींव रखी। हमारे शाहू महाराज भी मानते थे कि महिलाओं को शिक्षित होना चाहिए।"

"इसलिए, सरकार ने इस संस्थान की शुरुआत मुख्य रूप से महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देने के उद्देश्य से की है। अब तो कुछ गरीब लोगों के बच्चे भी मेरे शिक्षण संस्थान में पढ़ते हैं।"

सरकार ने कहा, "ये पद्मबाई सावंत हैं! ये विधवा हैं। शिवराम सावंत सेना में थे। लेकिन दुर्भाग्यवश, जम्मू-श्रीनगर मार्ग पर एक जीप दुर्घटना में उनका असमय निधन हो गया। सावंत परिवार को कुछ जमीन मिली थी, लेकिन वे उस पर खेती नहीं कर पाए। इसलिए उन्होंने उसे अपने भाइयों को बेच दिया।"

झुंजारराव ने उस खेत को हासिल करने के लिए किए गए प्रयासों का जिक्र तक नहीं किया।

"अब उन्होंने राजारामपुरी में एक छोटा सा चार कमरों का मकान बना लिया है, और उन्हें शिवराम से थोड़ी-बहुत पेंशन भी मिलती है। वे उससे अपना गुजारा कर लेते हैं। लेकिन उनके मन में बी.एड. करने की इच्छा जाग उठी है। इसीलिए मैं उन्हें आपके पास लाया हूँ।"
"सरकार ने अच्छा काम किया है, लेकिन इस संस्थान में ज़रूरत से ज़्यादा दान स्वीकार करने की परंपरा रही है। सरकार से मिलने वाला अनुदान बहुत कम है। इसके अलावा, सरकार ने प्रोफेसरों के वेतन में भारी वृद्धि कर दी है! परिणामस्वरूप, हमें दान स्वीकार करना पड़ रहा है!"
"आपकी समस्या जायज़ है। लेकिन एक सैनिक की विधवा होने के नाते, आइए देखें कि क्या आप कुछ रियायतें दे सकती हैं!"
अध्यक्ष ने एक पल सोचा और कहा, "लेकिन अगर हमें इस बात का कोई सबूत मिल जाए कि इस सैनिक की पत्नी है तो यह अच्छा होगा।"
झुंजाराव ने उन्हें जिला सैनिक बोर्ड के अध्यक्ष से प्राप्त प्रमाण पत्र दिया। अध्यक्ष ने कुछ देर सोचा और फिर कहा, “महोदय, आप आज हमारे संगठन में आए हैं, जैसा आप पहले कभी नहीं आए। आपकी प्रगतिशील सोच से हम अभिभूत हैं। आपके बच्चों के विवाह के बारे में सच्चाई जानने के बाद, हमें आपके वचन का सम्मान करना चाहिए। मैं आज निदेशक मंडल की बैठक बुलाऊंगा। मैं सभी की सहमति के बिना अंतिम निर्णय नहीं ले सकता।”
"ठीक है। हम एक दिन गरगोटी में रुकेंगे! यह गाँव मेरे लिए अनजान नहीं है। मैं यहाँ के पूर्व विधायक आनंदराव देसाई को जानता हूँ!"
"महाराष्ट्र सरकार आपको जानती है। हमारे जिले में कुल 100 लोग आपको पहले से जानते हैं। हम जानते हैं कि आपने उस वाहन को मार गिराया जिसके पीछे आप गाड़ी चला रहे थे, और फिर उन आदमखोर तेंदुओं को भी मार डाला जो जिले के कुछ कोंकण क्षेत्रों में तबाही मचा रहे थे।"
हल्की मुस्कान के साथ झुंझरराव ने कहा, "लेकिन सरकार ने फतवा जारी कर दिया है कि अब से किसी भी जानवर का शिकार नहीं किया जाएगा। इस वजह से गरीब किसान बुरी तरह परेशान हैं। जंगली सूअर, गाय, रैकून और नरवाल धान और गन्ने जैसी फसलों को बर्बाद कर रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे वन विभाग का कोई अस्तित्व ही नहीं है। कल कर्नाटक और

कारवार से हाथियों के झुंड भी हमारे इलाके में आ जाएंगे। सरकार दाजीपुर के जंगल में अभयारण्य बनाने की योजना लागू कर रही है, जो देश के लिए खतरनाक साबित होगी। ये लोग लोगों को मरने देते हैं, लेकिन कहते हैं कि जंगली जानवरों की रक्षा करनी चाहिए। आजकल शासकों ने व्यावहारिकता खो दी है। यह ज्यादा दिन नहीं चलेगा। लोग इन जंगली जानवरों के बढ़ते उत्पात से तंग आ जाएंगे और एक दिन वे कानून अपने हाथ में ले लेंगे!"
"लेकिन वे कहते हैं कि हमें एक अभयारण्य की जरूरत है।"
"मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ, लेकिन इसे एक निश्चित बाड़े में रखना चाहिए, जिसके चारों ओर गड्ढे खोदे गए हों। क्या हमें उन जानवरों को अंदर रहने देना चाहिए?"
सरकार पद्माबाई के बी.एड. में दाखिले के लिए आई थी, लेकिन जब जंगली जानवरों और शिकार का विषय आया, तो वह उसमें मग्न हो गए।
उस दिन झुंजाराव गरगोटी स्थित सरकारी विश्राम गृह में ठहरे। जैसे ही यह खबर फैली कि वे वहां ठहरेंगे, भुदरगढ़ तालुका से उनके कई परिचित उनसे मिलने आए। उनमें से एक-दो ने तो बहुत अच्छा काम किया। उन्होंने सरकार को बताया,
‘‘दरअसल, अब तो आपको राजनीति में ही लौट जाना चाहिए!’’
मैं और राजनीति? नामुमकिन। मुझे इससे नफरत है! इस देश की राजनीतिक स्थिति तब तक नहीं सुधरेगी जब तक इस देश के 100 प्रतिशत लोग शिक्षित नहीं हो जाते। आज जो भी उठता है, वो चीनी या कपास की फैक्ट्री लगाता है और सरकार से सब्सिडी लेता है। वो उसमें अपना मुनाफा खुद तय करता है। उन्हें इस बात की परवाह नहीं कि फैक्ट्री में गन्ना लगता है या नहीं। राजनीति में कुछ लोग तो शातिर अपराधी हैं। अगर मैं राजनीति में आया, तो सबसे पहले इन बदमाशों पर शिकंजा कसूंगा। इसीलिए तो वे मुझे राजनीति में आने ही नहीं देना चाहते। चलो इस विषय को छोड़ देते हैं। आप कैसे हैं? मैंने सुना है कि आनंदराव का बेटा भी विधायक बन गया है!
"जी हां, नई पीढ़ी के कुछ लोग आदर्शवादी और निस्वार्थ कार्यकर्ता हैं!"
उस दिन, झुंजाराव ने सरकारी विश्राम गृह के रसोइए को शाम को मुर्गे पकाने का आदेश दिया।

पद्माबाई को झुंझरराव के राजनीतिक विचारों की जानकारी नहीं थी। उन्हें पद्माबाई के सामने अपने विचार व्यक्त करने का कोई अवसर ही नहीं मिला था।

उस शाम झुंजाराव ने सरलाबाई को घर पर फोन किया।

"हेलो सरला, मैं गरगोटी आया हूँ। मुझे पद्मा के बी.एड. के सिलसिले में आना पड़ा। लेकिन चेयरमैन ने कहा, 'मैं कल फैसला सुनाऊंगा।' तब मैंने सोचा, दोबारा आने के बजाय आज यहीं रुक जाऊं! सौभाग्य से, आज इस रेस्टोरेंट में किसी खदीधार की पार्टी नहीं थी। खैर, हम कल दोपहर तक आ जाएंगे, लेकिन एक सवाल पूछना भूल गया। यशोमती के दोहलजेवन में आपकी पार्टी कैसी रही?"

"वो ठीक है। सुशीले ने श्रीखंड, पूरी, मसाला भात और पकोड़ा का मेन्यू तैयार किया था। मैं बताना भूल गई थी। मंगू कोंकण से वो करवंद आम लाया था जो यशोमती खाना चाहती थी, लेकिन उसे जाम्भाला नहीं मिला!"

"वो कल, परसों, हमारे दोस्त सारंग को सावंतवाड़ी से लेकर आएगी! संग्राम क्या कर रहा है? क्या वो खेत में है? ठीक है, ठीक है, लेकिन जब तक मैं वहाँ पहुँचूँ, मंगू को संभाल कर रखना। मैंने उसे बहुत दिनों से नहीं देखा है। सुशीला और बेबी चंदा को बता देना कि मैंने कहा है!"

‘‘जी SSS’’

फोन कॉल खत्म होने के बाद, झुंजाराव ने पद्मा से कहा, "पद्मा, यह चाबी ले लो। मोटर होम के बार वाले कमरे में स्कॉच की एक बोतल रखी है, उसे ले आओ! बहुत दिनों बाद संभाजी कुक के हाथ का बना चिकन खाने का मौका मिल रहा है।"

पद्माबाई ने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या आजकल आपके साथ ऐसा अक्सर हो रहा है, पिताजी?"

इस पर झुंजाराव ने कहा, "लेकिन मैं 'शराबी' नहीं हूँ! यह सच है कि कभी-कभी, जब मैं ऐसे नए माहौल में आता हूँ, तो मुझे शराब पीने का मन करता है।"

अगली सुबह पद्माबाई सुबह 5:30 बजे उठीं। वे उठीं और बाहर आईं। पूरब की ओर धूप खिली हुई थी। हल्की-हल्की हवा चल रही थी। उनकी नज़र पूरब की ओर चमकती हुई दिखाई दे रही थी। चारों ओर पहाड़ों से घिरा गरगोटी गाँव बेहद शांत था। इस तरह देखकर पद्माबाई को शिवराम सेना में रहते हुए भारत का बहुत कुछ देखने का अनुभव याद आया। इसीलिए उन्हें गरगोटी का इलाका बहुत सुंदर लगा। गाँव के आसपास घना जंगल था। तरह-तरह के पक्षी चहचहाते हुए इधर-उधर उड़ रहे थे। रात भर ऊँचे पेड़ों की चोटियों पर आराम कर रहे बगुले भोजन की तलाश में कतार बनाकर निकल आए थे।

पद्माबाई इस बात से खुश थीं कि उन्हें एक साल तक इस वातावरण में रहने का अवसर मिलेगा।

"महोदया, चाय तैयार है। क्या मैं ले आऊं?"

बंगले का रसोइया पास आकर बोला, "सरकार अभी तक जाग नहीं पाई है, है ना? आपने मेरे लिए पहले चाय क्यों बनाई? चाय लाओ, मैं यहीं बगीचे में पी लूँगा।"

वे बगीचे के तालाब के किनारे बैठ गए। रसोइया केतली से चाय और थाली से बिस्कुट लेकर आया।

आप यहां कितने वर्षों से हैं?

पद्माबाई किसी भी कर्मचारी का अभिवादन 'अहोया' कहकर करती थीं।

"ये मेरा बीसवाँ वर्ष है, बैसाहेब!"

"क्या इसका कोई विकल्प नहीं है?"

"ऐसा तीन-चार बार हुआ। लेकिन यहाँ आए बड़े अधिकारियों ने इसे रद्द कर दिया!"

‘‘का?’’

"लोग कहते हैं कि मेरे जैसा खाना कोई नहीं बना सकता!"

"बिल्कुल सही। तुमने कल रात जो चिकन बनाया था, वो लाजवाब था!"

"सिर्फ चिकन ही नहीं, बैसाहेब, मुझे बिरयानी बताइए, कटलेट बताइए। मैं तरह-तरह के सूप और पुडिंग भी बना सकती हूँ।"

"आपने ये सब चीजें कहाँ से सीखीं?"

"मैंने यह सब सावंतवाड़ी में राजेशाहेब के घर पर सीखा।"
"तो क्या आप कभी-कभार सावंतवाड़ी जाते हैं या नहीं?"
"मैं पिछले आठ-दस सालों से वहां नहीं गया हूं। अब वहां कोई सरकार नहीं है। उनका निधन हो गया। शिवरामराजे!"
रसोइए द्वारा शिवराम का नाम लेते ही पद्माबाई को अपने दिवंगत पति की याद आ गई।
सूरज उग रहा था। धुंधले से दिख रहे माघा के पहाड़ और आसपास के पेड़ अब साफ दिखाई देने लगे। पद्माबाई उठीं और अपनी साड़ी के किनारे से अपनी हल्की नम आँखों को पोंछा। उन्हें पता था कि किसी के आने-जाने से दुनिया रुक नहीं जाती। वह अंदर आईं। उन्होंने पलंग पर लगी मच्छरदानी को हटाया और देखा। सरकार पलंग पर उठ बैठी थी।
"आप कहा चले गए थे?"
"बगीचे में रसोइए ने वहां चाय परोसी।"
मुझे चाय के बारे में भी बताओ। मैं अभी-अभी बाथरूम से आया हूँ!
झुंझरराव चेहरा धोते और तौलिए से पोंछते हुए बाहर आए। पद्माबाई कुर्सी पर बैठी थीं।
आपको गांव कैसा लगा?
"बहुत बढ़िया, वाहनों का कोई शोर नहीं। वायु प्रदूषण भी नहीं। मुझे लगता है मैं जीवन भर ऐसे ही किसी गाँव में रहना चाहूँगा!"
झुंजाराव हँसते हुए बोले, "जब मैं शिकार पर जाता हूँ, और अगली सुबह उठता हूँ, तो मेरा भी मन वहीं रुकने का करता है! पर ऐसा कैसे हो सकता है? जन्म के समय ही भाग्य तय कर देता है कि इंसान को कहाँ रहना है, कितने समय तक रहना है, क्या खाना-पीना है। क्या आपको अंदाज़ा था कि परसों हम गरगोटी में इस साम्भा के हाथ से मुर्गा खा रहे होंगे?"
"बिल्कुल नहीं!"
"यही तो जीवन का असली मज़ा है। मंगू की बेटी धनगरवाड़ा में पैदा हुई और वहीं पली-बढ़ी। क्या कोई यह अनुमान लगा सकता था कि वह मोर्या की बहू बनेगी? तो पद्मा को अतीत और भविष्य के बारे में ज़्यादा सोचे बिना, आज और वर्तमान क्षण को अपना मानकर अपना जीवन जीना चाहिए!"

झुंझरराव आमतौर पर इस तरह की गंभीर चर्चाओं में शामिल नहीं होते थे। लेकिन अगर कभी ऐसा कोई विषय सामने आ भी जाता, तो वे उस पर संक्षेप में ही टिप्पणी करते। जब पद्माबाई ने उन्हें अपने पति की आकस्मिक मृत्यु के बारे में पूरी सच्चाई बताई, तो उन्होंने केवल इतना ही कहा,

"जन्म लेने वाले व्यक्ति को अंततः मृत्यु का सामना करना पड़ेगा! इस बात पर दुख और शोक होगा, लेकिन भविष्य के बारे में सोचकर धीरे-धीरे इस दुख को भुला देना चाहिए।"

झुंझरराव ने स्नान किया और बैठ गए। पद्माबाई पहले ही स्नान कर चुकी थीं। तभी शिक्षण संस्थान से एक सिपाही आया। उसने झुंझरराव का अभिवादन किया और उन्हें वह पत्र सौंप दिया जो वह लाया था। उन्होंने पत्र खोला और पढ़ा।

‘‘माननीय,

श्री झुंझरराव मोरे सरकार को

स. नमस्कार.

कल रात आपके हमारे संस्थान में आने के बाद, मैंने निदेशक मंडल के सदस्यों को बुलाया। मैंने श्रीमती पद्माबाई के बी.एड. में प्रवेश के बारे में उनसे सलाह ली। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि सभी निदेशकों ने सर्वसम्मति से श्रीमती पद्माबाई को प्रवेश देने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा, 'जब झुंझरराव मोरे जैसे प्रगतिशील विचारों वाले सज्जन कोई अनुरोध करते हैं, तो हमें उसे स्वीकार करना ही पड़ता है।' सभी ने अखबार में आपके बच्चों के विवाह के बारे में पढ़ा था, जो आपने डेढ़-दो महीने पहले संपन्न कराए थे। आज करवीर क्षेत्र में शाहू महाराज की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले लोग दुर्लभ हैं! उनमें से, स्वर्गीय मेजर सावंत की पत्नी श्रीमती पद्माबाई सावंत को प्राथमिकता के आधार पर प्रवेश दिया गया है। नव वर्ष का पाठ्यक्रम एक महीने में शुरू होगा। चूंकि उन्हें यहां महिला छात्रावास में आकर रहना होगा, इसलिए उन्हें दो-तीन दिन पहले आना होगा।

इसके अलावा, निदेशक मंडल ने बिना दान के पद्मावत में प्रवेश की अनुमति दे दी है।

जानने के,

ए. भरोसेमंद

अध्यक्ष आचार्य जावडेकर

टीचर्स कॉलेज, गरगोटी
सरकार ने पत्र पद्माबाई को पढ़ने के लिए दिया। उन्होंने खड़े होकर पत्र पढ़ा। पत्र पढ़ने के बाद पद्माबाई थोड़ी भावुक हो गईं और उन्होंने सरकार के पैर छुए।
"यह सब सिर्फ इसलिए संभव हो पाया क्योंकि तुम मेरे साथ खड़े रहे। मुझे नहीं पता कि तुम मेरे लिए और कितने उपकार करोगे।"
सरकार ने पद्माबाई को उनके पैरों से हटाकर उनके बगल में सोफे पर बैठाते हुए कहा,
"पद्मा, अब मुझसे कृतज्ञता की बातें मत करो! मैं तुम्हारे लिए कोई भी बलिदान देने को तैयार हूँ।"
"लेकिन सरकार, मैं अब से यहीं हॉस्टल में रहूंगी। आप दोनों कैसे मिले?"
हल्की मुस्कान के साथ और अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए झुंझरराव ने कहा, "गरगोटी अंडमान नहीं है! यह कोल्हापुर से मुश्किल से आधे घंटे की दूरी पर है! मैं महीने में कम से कम एक बार आपसे मिलने आऊंगा! कौन जाने आप अपनी रूममेट से कैसे मिले। लेकिन वह जरूर अच्छे स्वभाव की होगी!"
"वह जैसी भी हो, मैं उसके साथ अच्छे से रह लूंगी!"
"तो कोई बात नहीं। अगर इस बीच आपको किसी चीज की जरूरत हो तो बस फोन कर देना। मैं यहां के पूर्व विधायक सोनालिकर आनंदराव देसाई को बहुत अच्छी तरह जानता हूं।"
जब वे बात कर रहे थे, तभी बंगले का चौकीदार आया और बोला,
"सरकार, विधायक देसाई हमसे मिलने आए हैं! क्या हमें उन्हें वापस भेज देना चाहिए?"
"ओह, मेरी प्यारी, उसके पास जीने के लिए सौ साल हैं। मुझे अभी-अभी उसकी याद आई।"
झुंजाराव खड़े हुए और देसाई का स्वागत करने के लिए आगे आए। झुंजाराव का दाहिना हाथ अपने हाथ में लेते हुए देसाई ने कहा,
"ये कैसी सरकार है? मुझे तो आज सुबह ही पता चला कि आप यहाँ ठहरे हुए हैं! क्या आप अपने आलीशान घर के समय भी इसी रेस्टोरेंट में रुके थे?"
मुस्कुराते हुए झुंजाराव ने कहा,
"आप एक राजनेता हैं! आप बारह महीनों से कार्यकर्ताओं से घिरे हुए हैं! आपको सूचित नहीं किया गया क्योंकि आप 'परेशान' नहीं होना चाहते थे! अच्छा, तो शिकार का क्या मतलब है?"

"क्या तुम आज रात जाना चाहते हो? जंगली सूअर बहुत परेशानी पैदा करने लगे हैं!"
"लेकिन शिकार करना प्रतिबंधित है।"
"प्रतिबंध सिर्फ कागजों पर ही रह गया है। हमारे इलाके के किसान इससे परेशान हैं। यहां तक कि वनवासी भी सूअर मारने में कोई संकोच नहीं करते!"
"इस बैच के लिए नहीं। देखते हैं अगला बैच! अरे हाँ, ये रही पद्मबाई सावंत! वो बी.एड. में दाखिला लेने आई थीं। उन्हें दाखिला मिल गया। इस साल से वो यहाँ के महिला छात्रावास में रहेंगी। आप लोग उनसे बीच-बीच में बात करके पता कर लीजिए कि उन्हें यहाँ अच्छा लग रहा है या नहीं!"
"बिल्कुल, मैं आज अधीक्षक को बता दूँगा। बाकी सरकार ने तो चिरंजीवा की शादी बड़े धूमधाम से मनाई! हमने अखबार में तस्वीरें और खबरें पढ़ीं! हाल के दिनों में इतने सारे शाही और प्रतिष्ठित लोग किसी शादी के लिए कोल्हापुर में इकट्ठा नहीं हुए हैं!"
"क्या बात है आनंदराव, तुम्हें उस शादी की पूरी कहानी नहीं पता! मुझे भी वैसी ही शादी करनी थी!"
"यह एक ऐसा समारोह था जिसका सभी को अनुकरण करना चाहिए! मैं बहुत खुश थी। हमारा समाज अभी भी शाहन्नव वंश से बाहर नहीं निकल पा रहा है! हमारे राजनीतिक कार्यकर्ता सार्वजनिक भाषणों में कहते हैं कि ऐसा होना चाहिए और वैसा होना चाहिए, लेकिन उनमें वास्तविक कार्रवाई करने का साहस नहीं है!"
"खैर, आनंदराव, अब हम राष्ट्रपति से मिलेंगे, उन्हें धन्यवाद देंगे और कोल्हापुर के लिए रवाना होंगे!"
जब झुंझरराव कोल्हापुर पहुँचे, तो उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि पद्माबाई के दाखिले की प्रक्रिया बिना किसी बाधा के पूरी हो गई थी। गाड़ी राजारामपुरी स्थित पद्माबाई के बंगले के सामने आकर रुकी। गाड़ी से उतरते हुए पद्माबाई ने सरकार से कहा, "क्या आप अंदर नहीं आ रहे हैं?"
"नहीं, मैं अभी चारागाह जा रहा हूँ! इसके अलावा, मैं आज खेत जाना चाहता हूँ! मैं देखना चाहता हूँ कि छोटे किसानों ने क्या कमाल किया है!"

पद्माबाई ने कार के दरवाजे पर हाथ रखते हुए कहा, "आपको संग्राम पर शक है। दरअसल, वह बहुत ईमानदार लड़का है। शादी के बाद से ही वह बहुत ईमानदार लगता है!"
"वह देखने में तो ताकतवर लगता है, लेकिन उसका स्वभाव बदला हुआ नहीं लगता। खैर, अब आपको अपना सामान पैक करना शुरू कर देना चाहिए। आपको आठ से पंद्रह दिनों में गरगोटी के हॉस्टल जाना है।"
"लेकिन सरकार, हम इस बंगले का क्या करें? यहाँ साल भर कौन रहेगा?"
"मैं संग्राम और यशोमती को कुछ दिनों के लिए यहीं रखना चाहता हूँ! उन्हें भी कुछ दिन की छुट्टी मिलनी चाहिए! शादी के बाद से वे कहीं नहीं गए हैं!"
"क्या आपको इस बारे में सरलाबाई से नहीं पूछना चाहिए?"
उन्हें क्या पूछने की जरूरत है?
झुंजाराव पद्माबाई को विदाई देने रंकाला आए थे। तभी सरलाबाई ने उन्हें यह खबर सुनाई। यह खबर सुनकर झुंजाराव थोड़े दुखी हुए।
सुशीलाबाई के पति ने बच्ची चंदा की हिरासत की मांग करते हुए एक दीवानी मुकदमा दायर किया था।
सरलाबाई ने कहा, "सुशीला बुलावा आने के बाद से ही तुम्हारा इंतजार कर रही है।"
"उन्हें बुलाओ और तुरंत यहाँ बुलाओ। चलो आमने-सामने बात करते हैं! मैं बेबी चंदा के लिए एक उपयुक्त जगह ढूंढ रही थी। सुशीलाबाई अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जातीं! लेकिन अचानक सायजीराव दफला का ख्याल कैसे आया और उन्होंने बेबी की कस्टडी क्यों मांगी?"
"कौन जाने! पहले तो वो हर बार भरण-पोषण की रकम देने से बचता था। अब तो उसने बच्ची चंदा की कस्टडी मांग ली है!"
"बच्ची के रोने के दो दिन हो गए हैं! वो कह रही है, 'माँ, चाहे कुछ भी हो जाए, मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगी!'" सुशीला भी समझ नहीं पा रही है कि उसे क्या करना चाहिए? लेकिन इतने सालों बाद, क्या कोई पिता कानूनी तौर पर बालिग बच्चे की कस्टडी की मांग कर सकता है?
"एक कानून है जिसके अनुसार पति-पत्नी के अलग होने पर बच्चे को पांच साल की उम्र तक मां के साथ रहना चाहिए! हमें यह देखना होगा कि उस कानून में और क्या बदलाव किए गए हैं!"

दोपहर में सुशीलाबाई और बेबी चंदा रांकाला आईं। उनके आते ही बेबी रोने लगी।
"पापा, मैं आपको किसी भी कीमत पर छोड़कर नहीं जाऊंगी!"
"बेबी, हम तुम्हें जाने के लिए कैसे कह सकते हैं? रोना मत। चाहे कुछ भी हो जाए, हम सायजी को तुम्हें ले जाने नहीं देंगे!"
सुशीलाबाई ने कहा, “डफल की बहन का बेटा उसके साथ रहता है! वह नंबर एक भगोड़ा है। वे बेबी को उसके गले में बांधने की योजना बना रहे हैं! लेकिन साहब, बेबी लगभग ग्यारह साल से मेरे साथ है। इन ग्यारह सालों में सायजी अपनी बेटी से मिलने तक नहीं आए और अब अचानक उन्हें बेबी की याद आ गई, देखिए उन्हें उसकी कितनी याद आ रही है?”
झुंजाराव ने कहा, "मुझे कुछ मत बताओ। मैं सब जानता हूँ। शादी वाले दिन वो इसे घर के कामों के लिए लाया था। अब ये उसके पास है। सुशीलाबाई, मैं उसके बारे में सब जानता हूँ। उसने फलटन इलाके की सारी ज़मीनें अपने ऐशो-आराम के लिए बाँट दीं। इसी बीच वो राजनीति में लग गया। उसने पिछले विधानसभा चुनाव भी लड़ा। उसे इतने कम वोट मिले कि उसकी ज़मानत भी ज़ब्त हो गई! तालुका में उसकी कोई कीमत नहीं है। कौन जाने अब वो किसकी चालें चल रहा है? लेकिन वो बेबी पर आसानी से कब्ज़ा नहीं माँग सकता! मान लो हमने बेबी की शादी यहीं तय कर ली है, तो इसके उलट हम सायजी से शादी का खर्चा भी माँग सकते हैं!"
"लेकिन वो भुगतान कैसे करेगा? वो मुझे मासिक गुजारा भत्ता कभी समय पर नहीं दे पाता। और उसे बच्चे की कस्टडी चाहिए।"
"उन्होंने एक बार तो मुझे फोन पर धमकी भी दी थी," बेबी ने नाक सिकोड़ते हुए कहा। "उन्होंने कहा था कि तुम सीधे आ जाओ वरना उन्हें तुम्हारा अपहरण करना पड़ेगा।"
क्या वो इतनी हद तक चला गया? क्या किसी को उसकी मर्जी के खिलाफ मजबूर करना वाकई इतना क्रूर है? चिंता मत करो जान! जब तक मैं यहाँ हूँ, कोई तुम्हें छू नहीं सकता!
यशोमती चाय और बिस्कुट की ट्रे लेकर अंदर से आई। गर्भावस्था की चमक उसके चेहरे और शरीर से झलक रही थी। उसके कोमल केले के पत्तों जैसे हाथों, रसदार उंगलियों और बिना किसी मेकअप के उसकी सुंदरता को देखकर झुंझरराव ने कहा,
"यशोमती, क्या तुम और संग्राम पद्माबाई के बंगले में एक साल तक रह पाओगे?"

यशोमती ने विनम्रता से कहा, "हां।"
"देखो, सुशीलाबाई, यशोमती ने मुझसे यह सवाल क्यों नहीं पूछा? तुमने मुझसे यह सवाल क्यों नहीं पूछा? तुमने मुझसे यह सवाल क्यों नहीं पूछा?"
"चूंकि पद्मा आत्या ने कहा था कि वह एक साल तक गरगोटी में रहेंगी, इसलिए हममें से किसी न किसी को उस घर में रहना ही पड़ेगा!"
अरे वाह! इसे कहते हैं समझदारी! सुशीलाबाई, बताइए, क्या मैं वाकई भाग्यशाली हूँ? किस कुलीन परिवार में मुझे इतनी व्यावहारिक बहू मिलती? लेकिन एक बात तो बहुत अच्छी हुई। इस शादी से मुझे जिले में बहुत प्रसिद्धि मिली! यशोमती की शादी की वजह से पद्मा का भी गरगोटी में आसानी से दाखिला हो गया!
"शुरुआत में, सारले और मैं आपके फैसले से सहमत नहीं थे। लेकिन अब मुझे लगता है कि आपका फैसला सही था।"
झुंजाराव एक गंभीर विषय को भी पल भर में एक नया मोड़ दे देते हैं।
"तो, बहू, क्या तुमने अपने पिता द्वारा लाया गया करावांडा खाया या नहीं?" यशोमती थोड़ी शर्मिंदा हुई और बोली, "तुम मुझे पहाड़ी मैना कहते हो, है ना?"
‘‘हाँ, लेकिन वही महीना अब मोर सरदारों का ‘जमींदार’ बन गया है! अच्छा, आपके अध्ययन में क्या कहा गया है?’’
"माँ ने कहा कि मैं प्रसव से पहले कॉलेज नहीं जाना चाहता! फिर कक्षा की कुछ लड़कियाँ घर आती हैं, उससे नोट्स लेती हैं और घर पर पढ़ाई करती हैं!"
"शाबाश! सरला कहाँ है?"
"हां, मैं यहीं हूं, अंदर से तुम्हारी बातचीत सुन रही हूं। तुमने बेबी के साथ आगे क्या करने का फैसला किया है? सुशीला बहुत चिंतित है!"
"चिंता करने से कोई समस्या हल नहीं होती। उसका सामना साहस से करना पड़ता है! मैं फिलहाल कुछ विशेषज्ञ सिविल वकीलों से सलाह ले रहा हूँ, और अगर समय मिला तो मैं बेबी की शादी का आयोजन करूँगा!"
"शादी का ड्रामा? ये क्या बकवास है?"

"अरे, ये तो बिल्कुल ऐसा है जैसे इंसान को कभी-कभी झूठ बोलना ही पड़ता है! मैंने आमतौर पर अपनी जिंदगी में ऐसा नहीं किया है। लेकिन अब, अगर सायजी इतने जिद्दी हैं, तो मुझे ये करना ही पड़ेगा, भले ही ये जरूरी न हो!"

नन्ही चंदा बहुत भावुक थी। यशोमती की शादी में उसे भवानी मंडप में दुल्हन की सहेली के रूप में पेश किया गया था। उस समय झुंझरराव के कई साथियों ने उससे पूछा, 'सरकार, यह दुल्हन की सहेली कौन है?' सरदार परिवार की जिन महिलाओं को शादी में आमंत्रित किया गया था, उन्होंने भी नन्ही चंदा से सवाल किए।

लेकिन उस समय झुंझरराव को बेबी चंदा की शादी करने की कोई जल्दी नहीं थी। इसके अलावा, उस समय उसके बारे में गंभीरता से सोचने का समय भी नहीं था। लेकिन अब झुंझरराव को सब कुछ याद आने लगा था।

बेबीचंदा बी.ए. के अंतिम वर्ष में थी। कम से कम स्नातक होने तक, किसी ने भी उसकी शादी के बारे में नहीं सोचा था।

झुंजाराव ऊपर गए और एक आरामकुर्सी पर बैठ गए। उनके सामने रंकाला की नीली झील थी। प्रवासी जलपक्षियों के झुंड उस पर आकर बैठे थे। एक समय था जब झुंजाराव बत्तख के शिकार में माहिर थे। उन्होंने कई जगहों पर जंगली बत्तखों का शिकार किया था, जो 250 से 300 मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ सकती थीं। लेकिन उम्र बढ़ने के साथ-साथ शिकार के प्रति उनका जुनून कम होता गया।

लेकिन इस बार उन्हें याद आया, 'पंद्रह-सोलह साल पहले हम सतारा जिले में बत्तख का शिकार करने गए थे। हमने छत्रपति प्रताप सिंह के साथ कस के जंगल में भी शिकार किया था। उस समय हमारी मुलाकात पाटन के जहांगीरदार मानसिंहराव देसाई से हुई थी, जो अगले दिन संग्राम की शादी में भी आए थे। उन्होंने उस समय बेबी को देखा था और उसके बारे में पूछा था। पाटनकर परिवार अच्छे खानदान का है। उनके बच्चे भी पढ़े-लिखे हैं। अगर बेबी की शादी उनमें से किसी एक से हो जाए तो अच्छा होगा!'

झुंजाराव शादी जैसे विषय पर जल्दबाजी नहीं करना चाहते थे। कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने कहा, “सुशीला, अगर तुम इस नज़रिए से देखो तो कई लोग बेबी को अपनी बहू के

रूप में स्वीकार करने को तैयार होंगे। लेकिन मुझे लगता है कि हमें जल्दबाजी में कोई फैसला नहीं लेना चाहिए!”

सुशीलाबाई के पति ने उनके साथ अन्याय किया था। पति-पत्नी के बीच मामूली मतभेद होने पर भी सायजीराव बिल्कुल नहीं समझते थे। इसी वजह से वे सुशीलाबाई को 'आगे बढ़ो' कहते रहते थे। बच्चे के जन्म के बाद भी उनका ताना-बाना जारी रहा। सुशीलाबाई का सब्र टूट गया। तभी सरलाबाई ने उन्हें कोल्हापुर बुलाया और कहा, "आंटी, आप कोल्हापुर में अलग घर बनाकर रहिए। सरकार कह रही है कि आप सायजी से 'पोटगी' मांग सकती हैं।" उसी समय झुंझरराव ने एक वकील नियुक्त किया और सायजी के खिलाफ गुजारा भत्ता का मुकदमा दायर किया। उस समय सायजी के पास काफी जमीन थी। फैसला यह हुआ कि सायजी को सुशीला को हर महीने दो हजार रुपये गुजारा भत्ता देना होगा। "जब मामला चल रहा था, सायजीराव ने अपनी पत्नी को धमकी देते हुए कहा, 'अपने बाल काट लो, वरना तुम बच नहीं पाओगी।' उसी समय, झुंजाराव ने उसे संदेश भेजा, 'अगर सुशीला के बाल क्षतिग्रस्त हुए, तो मैं तुम्हें दस साल के लिए जेल भेज दूंगा।'"

यह देखकर कि झुंझरराव सुशीलाबाई का इतनी दृढ़ता से समर्थन कर रहे थे, सायजी ने सुशीलाबाई और झुंझरराव पर अनैतिक संबंध रखने का आरोप भी लगाया था। इससे सरलाबाई और सुशीलाबाई के बीच कुछ हद तक मतभेद पैदा हो गया था।

सुशीलाबाई यह बर्दाश्त नहीं कर सकीं। वह बेबी को सीधे मोरे के पुराने महल में ले गईं। महल में सरलाबाई अकेली रह गईं।

सुशीलाबाई ने सरलाबाई का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "मौसी, मैं इसलिए आई हूँ क्योंकि आपने मुझे कोल्हापुर आकर रहने के लिए कहा था। मेरे देवर ने भी मेरा साथ दिया। उन्होंने मेरी तरफ से वकील नियुक्त किया और मुझे गुजारा भत्ता दिलवाया। आप दोनों ने, पति-पत्नी, मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मैं इस बात से भलीभांति अवगत हूँ। हालाँकि सयाजी खुद को अच्छे खानदान का समझते हैं, लेकिन उनका व्यवहार बेहद गंदा है। शादी के बाद ही मुझे समझ आया कि शादी से पहले सतारा में पढ़ाई के दौरान उन्होंने क्या किया था। अगर मुझे पहले ही समझ आ जाता, तो मैं उनसे शादी नहीं करती। मैंने उनका घर इसलिए छोड़ दिया ताकि मेरे परिवार पर बेवजह कलंक न लगे। मेरे जाने के बाद उन्होंने अपने ऐशो-

आराम के लिए 1200 एकड़ जमीन आवंटित कर दी। अब उन्होंने एक नौकरानी को खाना बनाने के लिए रख लिया है। उनका व्यवहार उसी के इशारों पर चलता है। ऐसे गंदे इंसान का चेहरा तो सुबह उठते ही देखना भी नहीं चाहिए। मेरे भाई मुझे साल भर का अनाज भेजते हैं, और जैसे-तैसे गुजारा भत्ते से मैंने बेबी का पालन-पोषण किया। सोचिए अगर ऐसा न होता तो मेरा क्या हाल होता। तुम दोनों ने मेरा साथ नहीं दिया। सरलाक्का, मैं बेबी की कसम खाकर कहती हूँ कि मैंने अपने देवर के विरुद्ध कभी कोई अनैतिक कार्य नहीं किया है। और न ही कभी करूँगी। मैं घर में सिलाई मशीन रखकर, लड़कियों के स्कर्ट और महिलाओं के ब्लाउज़ सिलकर, साड़ियों पर कढ़ाई करके और स्वेटर बुनकर चार पैसे कमाती थी। मेरे देवर सात साल पहले शिमला से मेरे लिए ऊनी स्वेटर बुनने की मशीन लाए थे। जब मैंने उनसे पूछा कि इसकी कीमत कितनी है, तो उन्होंने कहा, "अगर मेरी बहन पर तुम्हारी जैसी विपत्ति आई होती, तो क्या मैं उससे पैसे लेता?"

सुशीलाबाई की आँखों में आँसू भर आए। उन्होंने अपने आँसू पोंछे और कहा, "प्रिय, जब पद्माबाई मेरे पास आई थीं, मेरी ही तरह असहाय, तो मैं उन्हें जीजाजी के पास ले आई थी, याद है? उस समय मैंने सोचा था, पद्मा तो जवान है, असहाय है। जीजाजी और उसके बीच कोई समस्या नहीं होगी, है ना? मैंने इस बारे में तुमसे बात भी की थी। उस समय तुमने खुद कहा था कि मेरे ऑपरेशन के बाद से सरकार का स्वभाव बदल गया है, वह किसी से ज्यादा घुलता-मिलता नहीं है, खुलकर बोलता नहीं है। लेकिन पद्मा की संगति ने उसके व्यवहार में बदलाव ला दिया है। मुझे ये सारी घटनाएँ याद हैं। लेकिन मुझे भी थोड़ा अच्छा लगा था जब मैंने देखा कि सरकार जैसा सक्षम व्यक्ति पद्मा की संगति का आनंद ले रहा है। इस विषय पर हम दोनों के बीच विस्तार से चर्चा भी हुई थी।"

इसके बाद हम बेलगाम गए और संग्राम की शादी तय की। फिर मंगू अपने दूल्हे के साथ कोल्हापुर आया। उसने सरकार को सब कुछ बता दिया। सरकार ने साहसिक फैसला लेते हुए बेलगाम की लड़की से संग्राम की शादी तोड़ दी और मंगू की दिवंगत बेटी से संग्राम की शादी करवा दी। उस समय मुझे भी उसका व्यवहार पसंद नहीं आया।

मोर परिवार की छोटी-मोटी समस्याओं के दौरान मैं आपसे सहमत हुआ करता था। मैं इस जीवन में यह सब कभी नहीं भूलूंगा!

“ताई, अगर आपके मन में मेरे बारे में कोई गलतफहमी है तो उसे दूर कर दीजिए। मैं आपके चरणों में गिरती हूँ,” सुशीलाबाई ने सरलाबाई के पैर पकड़ते हुए कहा। उस समय दोनों बहनें एक-दूसरे के आलिंगन में गिर पड़ीं और खूब रोईं। उनके बीच की गलतफहमी दूर हो गई। अब, चूंकि सायजीराव ने बच्ची चंदा की अभिरक्षा की मांग की थी, इसलिए सुशीलाबाई के पीछे एक नई दरार पैदा हो गई थी।

0-0

सरकार पद्माबाई को गरगोटी में छोड़कर गए थे। पद्माबाई के दाखिले के लिए खुद झुंझरराव आए थे। बाद में जब वह छात्रावास में रहने आईं, तो झुंझरराव की उपस्थिति देखकर संस्था के कर्मचारियों ने सोचा कि बाई मोरे सरकार की कोई करीबी रिश्तेदार होंगी! पद्माबाई को सिर्फ एक साल के लिए छात्रावास में रहना था, लेकिन जब सरकार उन्हें विदा करने गए, तो पद्माबाई की आँखों में आँसू भर आए।

झुंजरराव ने कहा, "यह क्या है पद्मा, क्या तुम हमेशा यहीं नहीं रहोगी? वैसे भी, मैं समय-समय पर तुमसे मिलने आता रहूंगा, है ना?"

"हां, मुझे पता है, लेकिन पापा, शिवराम के जाने के बाद से मेरा दिल बहुत टूटा हुआ है, है ना?"

"यह तो ज़ाहिर है। एक तेज़-तर्रार मेजर की आकस्मिक मृत्यु मुझ जैसे व्यक्ति को भी चौंका देगी जिसने दुनिया को इतना देखा है! लेकिन कुछ चीज़ें हमारे बस में नहीं होतीं। दुखी मत हो, तुम्हारे भविष्य में कुछ सुखद घटनाएँ भी हो सकती हैं!"

पद्माबाई ने अपनी आँखें पोंछते हुए कहा, "मैंने कभी इस बात की चिंता नहीं की कि दुनिया मेरे बारे में क्या कहेगी। इसके विपरीत, मुझे आशा की किरण केवल इसलिए दिखाई दी क्योंकि आप दृढ़ता से मेरे साथ खड़े रहे।"

"ठीक है, मैं जा रहा हूँ, मैं देखना चाहता हूँ कि उस बच्ची चंदा का क्या करना है!"

मुझे यकीन है कि आप कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे। मेरे मामले में, आपने बस मेरे बहनोई को एक नोटिस भेजा और मामला खत्म कर दिया।

लेकिन सायजी डरपोक हैं, वो ऐसे नोटिस या बातचीत की भाषा से नहीं मानेंगे। शायद वो दीवानी मुकदमा करेंगे, अदालत में उन्हें शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी! ठीक है, मैं चलता हूँ, उस मामले में क्या प्रगति हुई, मैं आपको बाद में बता दूँगा! मुझे बीच-बीच में मोबाइल पर कॉल करते रहना! वैसे, मैंने यहाँ आपका परिचय आनंदराव सोनालिकर से करा दिया है। छुट्टियों में उनसे मिल लेना। उनका बेटा बजरंग भी राजनीति में है। उनसे भी मिल लेना।

“जीऽऽऽ”

सरकार की गाड़ी के जाने के कुछ समय बाद पद्माबाई छात्रावास पहुँचीं। उन्हें सबसे ऊपरी मंजिल पर एक कमरा दिया गया था। वहाँ से आसपास का इलाका दूर से दिखाई देता था। हाथ जोड़कर खिड़की के पास खड़ी पद्माबाई को उनके पुराने परिचित विमल ने देखा।
"क्या, आंटी, मुझे तो यह भी नहीं पता कि आपने दाखिला कब लिया था। आपको रूममेट के रूप में कौन मिला? यहाँ हमारी सेहत काफी हद तक रूममेट पर निर्भर करती है। मेरे रूममेट ने मुझे बहुत चोट पहुँचाई!"
वह कौन थी?
"वह मराठवाड़ा से थीं। उन्होंने सत्रह सौ साठ साल की स्कूली शिक्षा पूरी की और फिर यहां बी.एड. करने आईं। बहुत ही रोमांचक! जब भी उन्हें कोई सुंदर युवक दिखता, तो वह मूर्खतापूर्ण हरकतें करतीं! उससे जान-पहचान बनाने के लिए वह कुछ न कुछ करती रहतीं! जब वह यहां से गईं, तो न केवल मैंने बल्कि पूरे संस्थान के लोगों ने राहत की सांस ली।"
विमल पद्मबाई को उनके बारे में और भी बहुत कुछ बताना चाहते थे, लेकिन किसी के निजी जीवन में दखल देना उनकी प्रकृति में नहीं था। विषय बदलने की कोशिश में उन्होंने कहा,
"अच्छा विमल, यहाँ मुझे तीन भाषाओं में से एक चुननी होगी: अंग्रेजी, मराठी या हिंदी!"
आपकी पसंदीदा भाषा कौन सी है?
मैं अंग्रेजी पढ़ना चाहता/चाहती हूँ। यहाँ इस विषय को पढ़ाने वाले प्रोफेसर कौन हैं?
"फिलहाल अंग्रेजी पढ़ाने वाला कोई नहीं है! पिछले शिक्षक ने इस्तीफा दे दिया है और दूसरे कॉलेज चले गए हैं। प्रोफेसर देशमुख अगले हफ्ते अमरावती से आ रहे हैं। लेकिन यहाँ आने वाले छात्र अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय के रूप में बहुत कम चुनते हैं!"
"हो सकता है, लेकिन मुझे बचपन से ही अंग्रेजी से प्यार रहा है, और मैंने अपनी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा भी अंग्रेजी माध्यम से ही प्राप्त की है। शिवराम भी अंग्रेजी में धाराप्रवाह थे। सेना के अधिकारी और उनकी पत्नियां भी आपस में अंग्रेजी में बात करते थे!"
"लेकिन वे शायद हिंदी जानते होंगे, है ना?"
"भले ही हिंदी का प्रचलन बढ़ रहा है, लेकिन दक्षिण के लोग इससे नफरत करते हैं। तमिलनाडु के मद्रासी गलती से भी हिंदी नहीं बोलेंगे। इसके अलावा, उत्तर प्रदेश, बिहार और गुजरात के लोग भी अंग्रेजी को ही पसंद करते हैं! खैर, मैं अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय के रूप

में लेना चाहता हूँ। अब बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि नए प्रोफेसर कैसे पढ़ाते हैं। हाल ही में यह शोर मच रहा है कि अंग्रेजी ने मराठी और हिंदी पर कब्जा कर लिया है। लेकिन ये लोग एक बात भूल जाते हैं। अंग्रेजी अंतरराष्ट्रीय व्यापार की भाषा है। दुनिया का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान अंग्रेजी की किताबों में मिलता है। लोगों को अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए, लेकिन अति भी नहीं होनी चाहिए!"

उस शिक्षक महाविद्यालय में 12 वीं कक्षा से प्रवेश उपलब्ध था, लेकिन पाठ्यक्रम तीन वर्ष का था। स्नातकों के लिए एक वर्ष का पाठ्यक्रम था। चूंकि पद्माबाई स्नातक थीं, इसलिए उन्हें केवल एक वर्ष का पाठ्यक्रम पूरा करना था।

विमल ने 12 वीं कक्षा के बाद संस्थान में दाखिला लिया था। इसलिए वह खुद को 'वरिष्ठ' समझती थी। वह स्वभाव से बातूनी थी।

आप किसे अपना रूममेट बनाना चाहते हैं?

"अगर कोई आ भी जाए, तो मैं उसके साथ ही रहूँगा। मुझे उसके साथ कितने दिन रहना पड़ेगा? मुश्किल से एक साल! इस दुनिया में अनगिनत लोग हैं, अलग-अलग स्वभाव के। अगर हम हर किसी में कमी निकालते रहेंगे, तो ज़िंदगी असहनीय हो जाएगी!"

विमल के पास गपशप का भंडार था। वह अपनी कक्षा के बच्चों से लेकर संस्थान के अधिकारियों और प्रोफेसरों तक, सभी के स्वभाव के बारे में कहानियां सुनाती थी। लेकिन पद्माबाई को उनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी।

पद्मबाई संस्थान में शामिल होने के बाद, अंग्रेजी के प्रोफेसर सूर्यभान देशमुख गरगोटी आए। उन्हें पूर्व प्रोफेसर के क्वार्टर में रहना पड़ा। लेकिन क्वार्टर उसी हालत में थे जैसे पूर्व प्रोफेसर ने छोड़े थे। दीवारें रंगी हुई नहीं थीं। जगह-जगह कीलें ठोंकी हुई थीं। नीचे का फर्श फटा हुआ था।

पैंतीस वर्षीय प्रोफेसर देशमुख, जो सुनहरे बालों वाले, बिना दाढ़ी वाले और करीने से संवारी हुई मूंछों वाले व्यक्ति थे, अपने पहनावे को लेकर बहुत सजग थे। वे एक डॉक्टर थे, उनके जूते, मोजे, टाई से लेकर उनके वस्त्र तक, सब कुछ डॉक्टर के अनुरूप था। उन्होंने संस्थान के अध्यक्ष से कहा, “जब तक आप मेरे लिए आवास की व्यवस्था नहीं कर देते, मैं यहीं

सरकारी आवास में रहूंगा। जो भी खर्च होगा, मैं वहन करूंगा, लेकिन मैं चाहता हूं कि मेरा आवास साफ-सुथरा और आधुनिक हो!”
संस्था के निदेशक ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा,
"सर, आपको इस संस्थान में बहुत कम काम करना पड़ेगा। इस क्षेत्र के अधिकांश छात्र वैकल्पिक विषय अंग्रेजी नहीं लेते हैं।"
"यह ठीक है। लेकिन मुझे उन विषयों का अध्ययन करना होगा जिन्हें मुझे पढ़ाना है, है ना? मेरी एकमात्र मामूली अपेक्षा यह है कि मेरा कार्यस्थल सुखद हो।"
"ठीक है। एक-दो दिन में आपकी उम्मीदों के मुताबिक काम हो जाएगा!" प्रो. देशमुख ने अपने सोने के फ्रेम वाले चश्मे को पोंछते और वापस लगाते हुए कहा, "कृपया यह न समझें कि मैं प्रवेश के तुरंत बाद यह सुझाव दे रहा हूँ!"
संगठन के अध्यक्ष ओशात ने मुस्कुराते हुए कहा,
"हमारा संगठन इतना अमीर नहीं है। सरकारी सब्सिडी भी अपर्याप्त है, बस इस जिले के कुछ अमीर किसानों से ही हमें मदद मिलती है। हमारे कर्मचारी भी दान की भावना से यहां आते हैं। लेकिन हम आपका भुगतान कम नहीं करेंगे।"
जैसे ही भुगतान का मुद्दा उठा, प्रोफेसर सूर्यभान देशमुख ने कहा, "मैं भी पैसे के पीछे नहीं भाग रहा हूँ! मैं अमरावती से यहाँ इसलिए आया हूँ ताकि कुछ दिनों के लिए ग्रामीण क्षेत्र में रह सकूँ।"
मैंने सुना है कि वहां संतरे का बाग है।
"जी हां। आठ एकड़ के बाग में चार एकड़ में संतरे और चार एकड़ में खट्टे फल उगाए जाते हैं। हमारे घर में खेती-बाड़ी की देखभाल करने वाला कोई और नहीं है। मुझे ही बाग की देखभाल करनी पड़ती है। मैं बाग में ही रहती हूं। वहीं पास में एक छोटा सा फार्महाउस भी है।"
"ठीक है, आप अपना काम शुरू कीजिए। मैं एक बार आस-पास देख लेता हूँ।"
सरकारी गेस्ट हाउस में उतरे प्रोफेसर सूर्यभान के स्वभाव का अंदाजा लगाना किसी के लिए भी आसान नहीं था।

उस दिन साप्ताहिक बाजार लगा हुआ था। चूंकि वह गांव में नया था, इसलिए उसे कोई नहीं जानता था।

आस-पास के गांवों के लोग बाजार में आ गए थे। लोग चहल-पहल में लगे थे। ताजी पत्तागोभी और फूलगोभी बहुतायत में बिक रही थी। प्रोफेसर देशमुख कुछ भी खरीदना नहीं चाहते थे। वे बस गांव को जानना चाहते थे। यहां की भाषा भी कुछ अलग लग रही थी। यह मराठी थी, लेकिन इसमें नागपुरी वरहाड़ी भाषा की तरह लहजा नहीं था। शाम करीब चार बजे प्रोफेसर देशमुख विश्राम गृह लौट आए।

रसोइया साम्भा आया। उसने पूछा, "महोदय, आज रात के खाने में क्या बनाएँ?"

आपकी विशेषज्ञता क्या है?

"सर, मैं चिकन अच्छे से पका सकती हूँ, यहाँ आने वाले 'मेहमानों' को यही पसंद है।"

"ठीक है, बना लो, लेकिन मैं बहुत कम खाती हूँ, ठीक है? मैं रात को सोने से पहले एक गिलास दूध जरूर पीती हूँ। आज बाजार में ज्यादा फल नहीं थे!"

"नहीं, लेकिन इस इलाके के सुनहरे केले बहुत मशहूर हैं।"

"जी!" प्रोफेसर ने अपने बटुए से 20 रुपये का नोट निकालते हुए कहा।

"ये लीजिए। एक दर्जन सुनहरे केले ले आइए!"

यहां छात्रावास में, ऐसी जानकारी मिली थी कि पद्मभा को प्रोफेसर देशमुख के संस्थान में दाखिला मिल गया था।

विमल करीब चार बजे जल्दी में आया।

"माँ, प्रो. देशमुख आज आए थे! क्या आपने उन्हें नहीं देखा?"

नहीं। अब हम कॉलेज में मिलेंगे!

पद्माबाई ने कहा कि उन्हें उनमें ज्यादा दिलचस्पी नहीं है।

"आप कितने शानदार व्यक्तित्व के धनी हैं! जब तक मैं किसी नए व्यक्ति की पृष्ठभूमि के बारे में नहीं जान लेती, तब तक मुझे उसके यहां आने से सहज महसूस नहीं होता।"

पद्माबाई ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

"तो देशमुख के बारे में आपकी क्या राय है?"

वह अमरावती के प्रसिद्ध देशमुख परिवार से हैं। उन्होंने एम.ए.बी.टी. की उपाधि प्राप्त की है और इंग्लैंड में शिक्षा के क्षेत्र में छह महीने का पाठ्यक्रम पूरा किया है। स्वभाव से वह थोड़े अंतर्मुखी हैं। उनका व्यवहार और वाणी बहुत संयमित है। चूंकि उनका परिवार धनी है, इसलिए धन कमाना उनका उद्देश्य नहीं है। वह दूसरों के साथ आसानी से घुलमिल नहीं पाते हैं।

इस पर पद्माबाई ने कहा, "नहीं तो तुम्हारी सारी जानकारी सुनी-सुनाई बातों पर आधारित है। तुम्हें कोई वास्तविक ज्ञान नहीं है! विमल, ऐसी सुनी-सुनाई बातों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करना चाहिए! हमारे पिताजी को देखो, अगर कोई किसी के बारे में कुछ कहने लगे, तो वे उस पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते। वे मुझे बार-बार कहते हैं कि दुनिया में हज़ार मुँह से हज़ार बातें निकलती हैं। लेकिन सच्चाई कुछ और ही होती है। इसलिए, विमल, मैंने अभी तक देशमुखसार को पूरी तरह से सही या गलत नहीं देखा है। देखते हैं, जब वे स्वयं कक्षा में आएंगे, तब हमें धीरे-धीरे उनके बारे में पता चल जाएगा।"

बिल्कुल यही हुआ। कक्षा का पहला दिन था। गरगोटी जैसे गाँव में, जो न तो बड़ा शहर है और न ही बड़ा गाँव, लोग शायद ही कभी सूट, जूते या टाई पहनते हैं। जब देशमुख सर कक्षा में आए, तो माहौल थोड़ा गंभीर था। जून का महीना होने के कारण बाहर बारिश के बादल छाए हुए थे। बीच-बीच में कोई न कोई सर गिर पड़ता था। सर का निवास स्थान मैदान से तीन-चार फर्लांग दूर था।

महोदय, यह शुरू हो गया है।

“गुड मॉर्निंग लेडीज अँड जंटलमेन, माय नेम इज सूर्यभान डेशमुख, आय एम फ्रॉम अमरावती! आय एम सपोज्ड टु टीच यू इंग्लिश! वुई हॅव टु स्टडी “टू ऑन ए टॉवर’, ए फेमस नॉव्हेल बाय थॉमस हार्डी! बिसाईडस्, द पोएट्री सिलेक्शन्स! आय होप यू वुईल टेक इंटरेस्ट इन नॉव्हेल ॲन्ड पोएट्री!”

अपना संक्षिप्त परिचय देने और अपने द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों के बारे में बताने के बाद, सर ने कक्षा में उपस्थित बच्चों को संबोधित करते हुए कहा,

मैं आपके नाम और आपके जन्मस्थानों के नाम जानना चाहूंगा।

सर ने सबसे पीछे वाली बेंच से शुरुआत की।

''मेरा नाम निवर्ती सखाराम सुतार है!''
"सेवानिवृत्ति या सेवानिवृत्ति?"
"हां, यह सही है, लेकिन सब मुझे निवर्ती कहते हैं।" यह सुनकर कक्षा में थोड़ी हलचल मच गई।
"ठीक है श्रीमान कारपेंटर, आपके जन्मस्थान का नाम क्या है?"
‘‘द नेम ऑफ माय नेटीव्ह प्लेस इज खडकलाट!’’
गाँव का नाम देखकर हँसी तो नहीं आती थी; लेकिन विद्यार्थियों में उत्साह ज़रूर था। लगभग अट्ठाईस बच्चों ने शिक्षक को अपने नाम और गाँव के नाम बता दिए, फिर अगली बेंच पर बैठी लड़कियों की बारी आई। उनमें से एक लड़की, जो बहुत उत्साहित थी, खड़ी हो गई।
"सर, मेरा नाम कंचन भीमराव वडार है।"
सभी को लड़की का नाम और उपनाम पता था। फिर भी बच्चे खुश थे। तभी देशमुख साहब ने थोड़ा गुस्से में कहा,
‘‘जंटलमेन, देअर इज नथिंग ॲबनॉर्मल ऑर ह्यूमरस. व्हाय डू यू लाफ?’’
छात्र ऐसे चुप हो गए मानो उनके चेहरे पर किसी ने थप्पड़ मार दिया हो, और शिक्षक ने उसी लड़की से सवाल किया।
आपने अंग्रेजी को अपने स्वैच्छिक विषय के रूप में क्यों चुना है?
"सर, मेरा भाई खड़की स्थित गोला-बारूद कारखाने के उत्पादन विभाग में काम करता है। वह चाहता था कि मैं अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय के रूप में चुनूं!"
जब आठ-दस ऐसी लड़कियों ने अपने नाम और अपने गांवों के नाम बता दिए, तब जाकर पद्माबाई खड़ी हुईं। अपने सिर से घूंघट हटाकर, 'सुंदर दिखने वाली' पद्माबाई ने बोलना शुरू किया।
‘‘सर माय नेम इज मिसेस पद्मा सावंत. आय एम फ्रॉम सांगली डिस्ट्रिक्ट! बट नाऊ आय रिसाईड इन कोल्हापूर’’
महोदय गंभीर भाव से सुन रहे थे। उन्होंने पूछा, "क्या आपने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से प्राप्त की है?"
"जी सर, वैसे भी मुझे यह भाषा बहुत पसंद है।"

“व्हेरी नाईस मिसेस देशमुख, आय कुड नो दॅट प्र âॉम युवर प्रोनौन्सेस! व्हाइल टीचिंग माय सबजेक्ट इफ देअर आर एनी डिफीकल्टीज आय एम ॲव्हेलेबल ॲट एनी टाईम ऑफ द डे! ओके लेडीज अँड जंटलमेन, फ्रॉम टुमारो वुई वुईल कमेन्स आवर सबजेक्ट!”
सर का उच्चारण बहुत स्पष्ट और समझने योग्य था। पहले घंटे के भीतर ही छात्रों को सर के व्यक्तित्व की थोड़ी झलक मिल गई।
अन्य विद्यार्थियों की तुलना में पद्माबाई वयस्क थीं। उन्होंने थॉमस हार्डी और बायरन की पुस्तकें खरीदी थीं। इसके अलावा, सरकार ने उन्हें अन्य विषयों पर कुछ दुर्लभ पुस्तकें भी भेजी थीं।
दोपहर 3 बजे कॉलेज की छुट्टी होने के बाद पद्माबाई अपने कमरे में आईं। उन्हें अभी तक पता नहीं था कि उनका साथी कौन है। उन्होंने हाथ-पैर धो लिए थे और बिस्तर पर लेट ही रही थीं कि उनका फोन बज उठा। नींद आने के तुरंत बाद उन्होंने फोन कान से लगा लिया।
“हेलो पद्मा, कॉलेज की क्या शानदार शुरुआत है!”
"जी हां, आज अंग्रेजी के प्रोफेसर कक्षा में आए थे। एक-दूसरे को जानने-पहचानने का कार्यक्रम था। प्रोफेसर सूर्यभान देशमुख अमरावती से हैं।"
"जी हां, मुझे अभी-अभी इसका एहसास हुआ। हमारे कृषि विशेषज्ञ पंजाबराव देशमुख के अनुयायी रहे होंगे। आपको इस बारे में कैसा लगा?"
"हाँ, बिलकुल 'आम', वह सूट, बूट और टाई पहनकर क्लास में आया था। वह अब भी अंग्रेज़ी का उच्चारण ऐसे कर रहा था जैसे वह इंग्लैंड में हो!"
"आपने उसका नाम क्या बताया था?"
"प्रोफेसर सूर्यभान देशमुख!"
"क्या आप शादीशुदा हैं या अभी भी अविवाहित हैं?"
"आप यह क्यों पूछ रहे हैं, पापा?"
"इसका कोई खास कारण नहीं है, लेकिन मैंने बस इसलिए पूछा क्योंकि यह जानना अच्छा है।"
"पापा, मुझे किसी के निजी जीवन में दखल देना पसंद नहीं है। आप मुझसे क्या चाहते हैं?"
"तुम कहते हो कि यह सच है, लेकिन क्या तुम्हें कभी इस जगह की याद आती है?"

"काफी समय हो गया, यशोमती कैसी है? क्या उसकी गर्भावस्था की समस्याएँ खत्म हो गईं? क्या संग्रामबल नियमित रूप से खेत पर जाता है? क्या उन दोनों ने राजारामपुरी में आनंद लिया?"
"सरला कहती है कि यशोमती अब काम के तनाव से मुक्त होना चाहती है। सरला कभी-कभी वहां रहने जाती है। और मैं भी कभी-कभी जाती हूँ! यशोमती नए माहौल में बहुत जल्दी ढल गई।"
"मुझे ये सब पता है पापा, लेकिन बताइए क्या आपने शराब पीना कम कर दिया है? मुझे चिंता हो रही है!"
"मेरी चिंता मत करो।"
"हाँ, अन्यथा...!"
"नहीं तो क्या?"
"मैं जब याद आता था तब पीता था, और जब याद आता था तब भूलने के लिए पीता था। शराब पीने वालों के लिए कोई भी बहाना चल जाता है! अब सब कुछ कम कर दो!"
झुंजाराव हँसे और बोले, "हमारी शादी को इतने साल हो गए, लेकिन सरले ने मुझे कभी ऐसी सलाह नहीं दी। पद्मा! मैं तेंदुए के चंगुल से बिना किसी परेशानी के बच निकला था। मैं किसी मामूली वजह से इतनी आसानी से नहीं मरूँगा।"
"तुम मौत की बात क्यों कर रहे हो? अब बताओ तुम मुझसे मिलने कब आओगे?"
"अरे, अभी तो सिर्फ 15 दिन ही हुए हैं। 15 दिन और बीतने दो, खेतों में काम चल रहा है, धान की बुवाई हो रही है! संग्राम भी अभी खेती पर ज्यादा ध्यान नहीं दे रहा है!"
"बेबी चंदा को क्या हुआ? सुशीला दीदी उसके बारे में चिंतित हैं। मैंने सबसे सलाह ली है, तो मुझे बताओ!"
"ठीक है। मैं पंद्रह दिनों में आऊंगा और चला जाऊंगा। अगर आपको और किताबों की ज़रूरत हो तो मुझे बता देना। बाकी सब ठीक है। मैं इंतज़ार करूंगा।"
झुंजाराव ने फोन रख दिया। तभी विमल बड़बड़ाता हुआ अंदर आया।
"क्या, पद्मताई, क्या आज देशमुख सर का समय है?"
"हां, पहली बार परिचय का कार्यक्रम आयोजित किया गया था।"

"आपको क्या लगा?"
"क्या सोचना चाहिए, यह सवाल कहाँ से आता है? विमल, मैंने तुम्हें एक बार बताया था कि मुझे किसी के निजी जीवन में दखल देने की आदत नहीं है!"
"लेकिन उन सज्जनों के बारे में थोड़ा-बहुत जानने का क्या फायदा जिनके साथ हम बाकी का साल बिताने वाले हैं?"
"इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन कुछ तो जरूर हो रहा है! आपके पास जितना है, वह अच्छा है!"
"लेकिन उनके बारे में आपकी पहली 'धारणा' क्या है?"
"वह सज्जन थोड़े संकोची लग रहे थे। उन्हें सलीके से रहना पसंद है। इंग्लैंड में कुछ समय रहने के कारण, उनके चलने-फिरने और बोलने के तरीके में कुछ हद तक ब्रिटिश अंदाज आ गया था। उन्हें अपने सामान्य पहनावे में देखना थोड़ा अजीब लगा, जबकि बाहर बारिश हो रही थी और उन्हें पता था कि उनका निवास स्थान दो-तीन फर्लांग दूर है। आखिर देहाती लोगों की तरह ही तो कपड़े पहनने चाहिए, है ना?"
"महिलाओं के शौचालय में भी यही चर्चा हुई।"
"खैर, क्या बारिश में उसकी ड्रेस भीग गई? अब हम उसका क्या करेंगे?"
"हाँ, लेकिन जिज्ञासा तो होती ही है, है ना? वैसे भी, वह अविवाहित है। दस एकड़ का संतरे का बाग, एक फार्महाउस और शिक्षा में डिग्री होने के कारण, हाई स्कूल की लड़कियों का उसकी खोजों में रुचि लेना स्वाभाविक है!"
"क्या बच्चे हमेशा ऐसे ही व्यवहार करते हैं?"
नहीं। दो तरह की लड़कियाँ होती हैं। एक वो जो अपने घर में रहती हैं और दूसरी वो जो दूसरे हॉस्टलों में रहती हैं! दूसरी तरह की लड़कियों को आपस में बात करने की बहुत आज़ादी होती है। घर पर, उन्हें अपने परिवार में वो आज़ादी नहीं मिलती! अरे, हॉस्टलों में रहने वाली लड़कियाँ तो सेक्स के बारे में बहुत खुलकर बात करती हैं!
"विमल, मैं इस बात से सहमत हूं कि सेक्स किसी व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण है, लेकिन 'सेक्स' ही सब कुछ नहीं है!"

पद्माबाई किसी से भी फालतू बातें करना पसंद नहीं करती थीं। उन्होंने एक-दो बार इशारों-इशारों में विमल को भी यह बात बता दी थी। विमल के जाने के बाद पद्माबाई ने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर दिया। जब मगशी ने दरवाजा खोला तो विमल बेधड़क अंदर आ चुका था।

पद्माबाई प्रोफेसर देशमुख के बारे में कुछ भी जानना नहीं चाहती थीं। लेकिन विमल ने अचानक ही उनका जिक्र शुरू कर दिया।

पद्माबाई कक्षा में बहुत ही अहंकारी व्यवहार करती थीं। वह कम बोलती थीं और अन्य लड़कियों की तरह व्यर्थ की बातों में उनकी कोई रुचि नहीं थी।

जैसे-जैसे महीना बीतता गया, छात्रों और प्रोफेसर के बीच की दूरी धीरे-धीरे कम होती गई।

छात्रावास में भोजन की सुविधा भी थी। इसके लिए प्रति माह छह सौ रुपये देने पड़ते थे। लेकिन पद्माबाई को वह खाना पसंद नहीं था। इसके अलावा, शिवराम को जहाँ भी आवास मिलता, पद्माबाई को वहीं जाना पड़ता था। वहाँ भी पद्माबाई शाकाहारी और मांसाहारी, दोनों तरह के व्यंजन बनाती थीं! यहाँ कैंटीन के खाने में एक अजीब सी गंध आती थी। खाना बनाने वाले रसोइए को वेतन मिलता था, इसलिए वह खाना बनाता था। उसे खाने वालों की कोई परवाह नहीं थी। कुछ लड़कियों ने शिकायत की, लेकिन कोई समाधान नहीं निकला।

पद्माबाई सुबह और शाम को कैंटीन से सिर्फ चपातियाँ और कभी-कभार रोटी मंगवाती थीं। कमरे में ही उन्होंने चूल्हे पर सब्जियाँ और आमटी पकाना शुरू कर दिया। इससे उनका कारोबार थोड़ा बढ़ गया। लेकिन वे सोचती थीं कि एक इंसान को कितना खाना चाहिए? कभी-कभी वे पत्तागोभी, आलू और कभी-कभी आमलेट बनाती थीं। कभी-कभी गलती से उनसे एक थाली खाना मंगवा लिया जाता था।

प्रोफेसर देशमुख को संस्थान का भ्रमण कराते समय राष्ट्रपति अचानक उन्हें महिला छात्रावास में ले गए। पद्माबाई एप्रन पहने हुए आमलेट बना रही थीं। कमरे से उसकी खुशबू आ रही थी। राष्ट्रपति ने बाहर से पूछा,

"श्रीमती सावंत और प्रोफेसर देशमुख आ गए हैं। वे हमें संस्थान दिखाना चाहते हैं! क्या हम अंदर आ सकते हैं?"

"अंदर आइए," पद्माबाई ने दरवाजा खोला। प्रो. देशमुख पतलून और रेशमी कमीज पहने हुए आए थे। पद्माबाई ने मुस्कुराते हुए और झुककर उनका अभिवादन किया। जैसे ही ऑमलेट की खुशबू हवा में फैली, प्रो. देशमुख ने अध्यक्ष से कहा,
"अगर यहां के छात्रों को अपने कमरों में खाना खाने की भी अनुमति मिल जाए तो क्या होगा?"
"अनुमति तो दी गई है, लेकिन केवल चाय, पोहा और उपिट जैसी चीजें बनाने के लिए! अगर वे अपना सारा समय खाना बनाने में बिताएंगे, तो पढ़ाई कब करेंगे?"
"यह सच है!"
"महाराज, क्या आप कॉफी पीना चाहेंगे?" पद्माबाई ने पूछा।
अचानक ही सर ने कहा, "मुझे लगा था कि आप पूछने वाले हैं कि क्या आप ऑमलेट खाना चाहेंगे!"
इस पर पद्माबाई ने कहा,
"अगर आप चाहें तो इसे भी ले लीजिए। तब तक मैं कॉफी बना लेता हूँ।"
नहीं, नहीं, मैंने तो बस मज़ाक में कहा था। तुमने मुझे इंग्लैंड में रहने वाली मेरी रूममेट की याद दिला दी। वो मैनचेस्टर की थी। कभी-कभी वो कमरे में तरह-तरह के सूप, कटलेट और दूसरे पकवान बनाती थी! उसके पुडिंग तो लाजवाब होते थे! लेकिन जब वो कोई पकवान बनाना शुरू करती, तो उसे पूरे कमरे में फैला देती थी। मुझे ये पसंद नहीं। मैं तो एकदम साफ-सुथरी रहती हूँ! एक बार मैंने उससे मज़ाक में कहा, "इरीना, तुम्हारे पकवान मेरे लिए महंगे पड़ते हैं, मुझे सब कुछ चुकाना पड़ता है।" वो बहुत मज़ाकिया थी। उसने तुरंत कहा, "तुम इन्हें नहीं खाना चाहोगी, तुम्हें कैंटीन के बर्गर और हॉटडॉग पसंद आएंगे!" लेकिन फिर भी वो आखिर तक कमरे में खाना बनाती रही।
"लेकिन क्या उस संस्था में इसकी अनुमति थी?"
"इंग्लैंड एक लोकतांत्रिक देश है। हम अपने नागरिकों पर कभी भी अनावश्यक प्रतिबंध नहीं लगाएंगे।"
पद्माबाई ने कॉफी बनाई। उन्होंने डिब्बे से हंटली पामर बिस्कुट निकालकर प्लेट में रखे। देशमुख सर बाहर बात कर रहे थे, तब पद्माबाई ने कॉफी बनाई थी। संस्था के निदेशक ने कहा,

"आपको कभी-कभी हमारे कैंटीन के शेफ को मार्गदर्शन देना चाहिए। रविवार को हम मांसाहारी भोजन बनाते हैं, लेकिन उसका स्वाद भी रोज़ाना के भोजन जैसा ही होता है। रविवार को बच्चों को बाहर जाने की अनुमति होती है। फिर कई बच्चे होटल में खाना खाने जाते हैं।"

प्रो. देशमुख ने कॉफी पीते हुए पद्माबाई के कमरे का निरीक्षण किया। कमरे में कुछ ही आवश्यक वस्तुएँ करीने से रखी हुई थीं। बिस्तर के बगल में रखी चायदानी पर एक रंगीन तस्वीर थी। उस पर फूल रखे हुए थे।

गुरु ने पूछा, "यह कौन है?"

"मेरे स्वर्गीय श्री मेजर शिवराम सावंत!"

प्रोफेसर देशमुख ने तस्वीर को देखते हुए कहा,

"तुम कितने रूपवान लगते हो!"

पद्माबाई ने कहा, "वे बहुत दयालु और प्रगतिशील थे।"

प्रोफेसर देशमुख ने महसूस किया कि शिवराम की यादें सुनाते हुए पद्माबाई की आँखों में पानी आ रहा था। लेकिन विषय बदलते हुए उन्होंने पूछा, "यहाँ से अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद आपने क्या करने का निर्णय लिया है?"

"अभी कुछ तय नहीं हुआ है। देखते हैं पापा क्या कहते हैं।"

"पापा कौन है?"

"सरदार झुंझरराव मोरे, अंबावडेकर! अब वे मेरे माता-पिता हैं!"

"आईसी आपको यहां प्रवेश के लिए लाया है। क्या?"

"आपको यह कैसे समझ आया?"

"घर की पेंटिंग करते समय मैं यहां के सरकारी विश्राम गृह में चार दिन रुका था, और वहां के रसोइए, साम्भा ने मुझसे बात की।"

अपनी घड़ी देखते हुए प्रोफेसर देशमुख ने अध्यक्ष से कहा, "चलिए गुरुजी, अब लड़कों के छात्रावास चलते हैं!"

"आज नहीं, आज रविवार है। सब लोग बाहर निकले होंगे। मैं सोमवार और शनिवार के बीच कभी भी वहाँ अचानक पहुँच जाऊँगा!"

"यह काम करेगा!"

"श्रीमती सावंत, एक अच्छी कप कॉफी के लिए धन्यवाद!"

प्रोफेसर देशमुख से मुलाकात अप्रत्याशित थी। लेकिन उस मुलाकात के दौरान, दोनों एक-दूसरे को थोड़ा बेहतर तरीके से जान पाए।

0-0

उस दिन, सायजीराव दफला अचानक कोल्हापुर आ गए। उन्हें पता था कि उन्हें नन्ही चंदा की कस्टडी आसानी से नहीं मिलेगी। क्योंकि झुंझरराव सुशीलाबाई के पीछे मजबूती से खड़े थे। इसके अलावा, कोल्हापुर आने से पहले सायजीराव ने कई लोगों से सलाह ली थी। उन्होंने कहा था, 'जब आप अदालत में गवाही देंगे, तो सुशीलाबाई के वकील आपसे बदतमीजी से सवाल पूछते रहेंगे। वे आपसे घर में खाना पकाने के लिए रखे चावल के बारे में भी पूछेंगे, पूछेंगे कि आपने कितने लोगों का पैसा गबन किया है, और यह भी पूछेंगे कि आपने पिछले चुनाव में जो 'जमा' राशि दी थी, वह कैसे खो दी। अब तक आपकी बदनामी कुछ ही लोगों के सामने आई है। अब, नन्ही चंदा की कस्टडी के इस मामले में किसी के मध्यस्थता करने के बजाय, आपकी बदनामी अदालत में ही दर्ज की जाएगी!'

इसीलिए वह कोल्हापुर आया था। उसने झुंझरराव को बुलाया था।

झुंजरराव ने कहा, "तुम्हें मेरे पास आना चाहिए, मुझे तुम्हारे पास नहीं आना चाहिए। मैं सुशीलाबाई को बुलाता हूँ।"

सायजीराव अपने साथ खादी पहने एक व्यक्ति को लेकर आए। "चमत्कार के बाद नमस्कार," झुंझरराव ने कहना शुरू किया। "सायजीराव, ग्यारह साल बाद अब आपको नन्ही चंदा की याद क्यों आ रही है?"

"अब वह कुंवारी है। मेरे परिवार की परंपरा के अनुसार, अब उसकी शादी की अनुमति है! क्या मैंने उसे पहले पांच साल उसकी माँ के साथ नहीं रहने दिया था?"

"अगर तुम मुझे यहाँ रहने नहीं देते, तो तुम कानूनी तौर पर बच्चे की अभिरक्षा का दावा नहीं कर सकते!"

"यह सच है, लेकिन अभी बोलो!"

सरकार ने खादी पहनने वाले गृहस्थ से कहा, "आप कौन हैं? यह अच्छा होगा यदि आप समझ लें कि आपका उनसे क्या संबंध है।"

दफला ने कहा, "मेरे उनसे मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। वे फलटन तालुका पंचायत समिति के अध्यक्ष हैं। उनका नाम बुवासाहेब भोसले है!"

झुंजाराव ने सिर हिलाया और कहा, “सयाजीराव, मुझे लगता है कि बच्चे की ‘अभिरक्षा’ आप और सुशीलाबाई का निजी मामला है। दरअसल, मैं भी इसमें दखल नहीं दे सकता। लेकिन चूंकि मेरा और उनका करीबी रिश्ता है, इसलिए मैं इस मामले में थोड़ी-बहुत भूमिका निभा रहा हूं। लेकिन भोसले परिवार का इस मामले पर ध्यान देना उचित नहीं होगा।”

झुंझरराव को उस सज्जन से पहली ही नज़र में नफ़रत हो गई थी। उनके गले में तुलसी के पत्तों की माला थी। पत्ते खाने से उनके दांत पीले पड़ गए थे। उनके माथे पर सरसों के दाने का एक धब्बा और बुक्का (एक प्रकार का मुकुट) था। उन्होंने मोटी खादी की धोती और नेहरू शर्ट पहनी हुई थी। झुंझरराव मुखर स्वभाव के थे। उन्होंने बुवासाहेब का विरोध किया। जब तक बुवासाहेब वहाँ थे, झुंझरराव सायजीराव भोसले को बाहर ले गए और कहा, "बुवासाहेब, आप कुछ देर होटल में रुकिए। यह आदमी बहुत ज़िद्दी है। आपके सामने एक शब्द भी नहीं बोलेगा।"

परिणामस्वरूप, बुसाहेब चला गया।

झुंझरराव ने सुशीलाबाई को पुकारा।

"सुशीला, तुम बेबी को ले आओ। सायजीराव आ गए हैं। अगर हम उनसे आमने-सामने बात कर सकें तो अच्छा रहेगा।"

सायजीराव ने कहा, "मैंने अखबार में आपके बच्चों की शादी की खबर पढ़ी। उन्होंने बताया कि उनकी शादी बड़े धूमधाम से हुई।"

झुंजाराव ने कहा, "हाँ, यही करना पड़ा। जो लोग शादी का फैसला करते समय तीन पीढ़ियों को पीछे छोड़ देते हैं, उन्हें समझना चाहिए था कि दुनिया कितनी आगे बढ़ चुकी है!"

"लेकिन संग्रामबल को अच्छे परिवार की लड़की मिल सकती थी।"

"श्रीमान डफ़ल, बेहतर होगा कि आप उस शादी के बारे में अब और चर्चा न करें!"

आधे घंटे के भीतर सुशीलाबाई और बेबी चंदा आ गईं। बगल वाले कमरे से अंदर आते ही सुशीलाबाई ने सायजीराव की तरफ देखा तक नहीं। लेकिन बेबी ने अपने पिता को देखा। उसे याद नहीं आ रहा था कि उसने उन्हें आखिरी बार बचपन में कब देखा था।

झुंजरराव ने बेबी से कहा, "चंदा बेबी, इधर आओ, तुम्हारे पिता! मुझे अपना परिचय देना है। तुम उसे लेने आए हो।"

बेबी उछलकर बोली, "मैं बिल्कुल नहीं जाऊंगी। उन्हें किसी भी अदालत में जाने दो!"
जैसे ही बेबी ने अचानक अदालत के बारे में बात करना शुरू किया, सायजीराव ने मुस्कुराते हुए कहा, "बेबी, मैं यहाँ इसलिए आया हूँ ताकि मुझे अदालत न जाना पड़े।" चंदा बेबी वहाँ ज्यादा देर नहीं रुकी और घृणा भरे चेहरे के साथ चली गई।
सरलाबाई ने नन्ही चंदा को अपने पास बिठाया और कहा, "अब इतने वर्षों बाद, पिताजी को तुम्हारी याद आई!"
सुशीलाबाई ने कहा, "उसके घर में एक बदमाश है! वह उससे शादी करना चाहता है। वह इतना मशहूर है कि दस गांवों में से कोई भी उसे लड़की नहीं देगा।"
इस पर सरलाबाई ने कहा, "देखते हैं वे क्यों आए हैं? इस समय मैं कुछ नहीं कह सकती।"
बाहर, झुंजाराव ने डफला से कहा, "बच्चे की कस्टडी पाने के लिए तुम्हें दीवानी मुकदमा दायर करना चाहिए। दायर करो। देखते हैं अदालत क्या फैसला करती है!"
"अरे, मैं इतनी दूर इसलिए आया ताकि मुझे अदालत न जाना पड़े!"
"ठीक है, बोलो।"
मैं बच्चे की अभिरक्षा के लिए अर्जी देने जा रहा हूँ।
"किसलिए?"
"किसलिए? वह मेरी बेटी है। अब वह विधवा हो चुकी है। अब एक पिता के रूप में, मैं उसकी शादी के लिए जिम्मेदार हूं।"
"लेकिन बेबी अपनी शादी के बारे में खुद फैसला करेगी। अब चार महीने में उसकी ग्रेजुएशन पूरी हो जाएगी!"
"हमारे परिवार में लड़कियों को अपनी पसंद का विवाह चुनने की स्वतंत्रता देने की प्रथा नहीं है। मेरे प्रिय महोदय, दुर्भाग्यवश, कुछ अपरिहार्य कारणों से मुझे अपनी कुछ संपत्ति बेचनी पड़ी। लेकिन इस वजह से मेरे परिवार ने मुझे नहीं छोड़ा है। लोग आज भी हमारा सम्मान करते हैं।"
इस पर झुंजाराव ने कहा, "यह आपके चुनाव के दौरान स्पष्ट हो गया था।"
"चुनाव को छोड़ दो।"

"देखिए, श्रीमान डफ़ल, चाहे कुछ भी हो जाए, चंदा बेबी पर आपका कब्ज़ा नहीं होगा। बेबी की राय आप सुन चुके हैं। अदालत में भी उसकी बात सुनी जाएगी। हमें आपके घरेलू मामलों को सामने लाना होगा। इसके अलावा, अगर सुशीलाबाई बेबी की शादी यहाँ करवाती हैं, तो उस शादी का खर्च भी आपको ही उठाना पड़ेगा। यह आपके लिए बहुत महंगा पड़ेगा।"
सायजीराव द्वारा बेबी को अपने कब्जे में लेने का अनुरोध पूरी तरह से मजाक प्रतीत होता था। झुंजाराव ने कोल्हापुर के 4-6 मुरब्बी सिविल वकीलों से पहले ही सलाह ले ली थी। इसीलिए वे सायजीराव से इतने आत्मविश्वास से बात कर पाए। यह देखकर सायजीराव ने थोड़ा झुककर कहा,
"जीजा जी, कम से कम सुशीला द्वारा मुझे देय गुजारा भत्ता तो बंद कर दिया जाए।"
"तो हमसे मिलने का आपका यही उद्देश्य था?"
"कुछ भी कहिए। मैं पहले से ही आर्थिक रूप से तनावग्रस्त हूं। कम से कम मुझ पर थोड़ा दबाव तो कम कीजिए।"
"तो आप वास्तव में क्या चाहते हैं?"
"मैं बच्चे पर अपना दावा छोड़ रहा हूँ। अब सुशीला को हर महीने जो दो हजार रुपये देने पड़ते हैं, उसे बंद कर दिया जाए! या कम से कम थोड़ा कम कर दिया जाए!"
"तो फिर सुशीला क्या खाएगी? उसने तो अभी तक कोई कारोबार भी शुरू नहीं किया है। मैं उसे हर साल अनाज मुहैया कराता हूँ। अब तुमने सुशीला और मेरे बीच के खराब रिश्ते में कुछ भी नहीं जोड़ा है। तुम्हें शर्म आनी चाहिए। तुम यहाँ आ रहे हो!"
झुंजाराव ने क्रोधित होकर कहा, "इसीलिए तो आज मेरी तुमसे थोड़ी बहस हुई। अगर कोई और होता तो मैं उसे अंदर नहीं आने देता!"
सायजीराव सिर झुकाए बैठे थे। उनमें झुंझरराव की आंखों में आंखें डालकर देखने की हिम्मत नहीं थी। आधे घंटे बाद वे उठे और हाथ जोड़कर बोले, "मैं जा रहा हूँ, जीजाजी, कम से कम बेबी की शादी का खर्चा मुझ पर मत डालिए।"
"यही अगला सवाल है! मैं अपने खर्चे पर उसकी शादी करवाने में सक्षम हूं।"
सायजीराव ने सिर झुकाया और चले गए। अंदर से सरलाबाई, सुशीलाबाई और नन्ही चंदा ने बातचीत सुन ली थी।

सुशीलाबाई अकेले बाहर आईं और बोलीं,
"जीजाजी, आपने बहुत अच्छा काम किया, अब वे बेबी के रास्ते पर वापस नहीं आएंगे।"
"वह एक गरीब आदमी है, उसने अपने पूर्वजों से विरासत में मिली दो सौ एकड़ जमीन बेच दी और उसमें से सारा पैसा खा लिया! अब उसके पास बस वह रसोइया ही बची है। वह भी एक दिन उसे छोड़कर चली जाएगी।"
‘‘बेबी SSS बाहेर ये!’’
सायजीराव के आने के बाद से नन्ही चंदा डर के मारे बैठी थी। झुंझरराव ने उसका हाथ पकड़कर उसे अपने पास बिठाते हुए कहा, "मुझे तुम्हारी शादी कराने की कोई जल्दी नहीं है। लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें अपना पति खुद चुनना चाहिए। बस वो दयालु और अच्छे स्वभाव का होना चाहिए। उसे नशे का आदी नहीं होना चाहिए! अगर तुम्हें ऐसा कोई मिल जाए तो मुझे बताना, जाति का कोई बंधन नहीं है।"
सरलाबाई ने कहा, "वह यशोमती के बहुत करीब है। उसे बताओ!"
"बेचारी को मैं क्या बताऊँ? उसे एक-दो महीने में मैटिनी शो देखने जाना ही होगा। तुम राजारामपुर जा रही हो या नहीं, बेटा?" झुंझरराव ने पूछा।
मैं हफ्ते में चार बार अपनी भाभी के घर जाती हूँ! मेरे दोस्त भी मेरे साथ आते हैं।
"लेकिन अब मुझे उसे यहाँ लाना ही पड़ेगा। काम के तनाव के कारण इसका कोई फायदा नहीं है।"
झुंझरराव झील के किनारे बैठे थे। जब से उन्होंने यहाँ अपना घर बनाया था, उनका समय बहुत अच्छे से बीत रहा था। चाहे वे घंटों झील को निहारते, उन्हें ऊब नहीं होती थी। झुंझरराव को पक्षी देखने का शौक था। हर मौसम में कई तरह की जंगली बत्तखें झील पर आती थीं, जैसे लाल पोचार्ड, मल्लार्ड, पिंटेल। अब तक पश्चिम में काफी गाद जमा हो गई थी और पानी में जलीय पौधे उग आए थे। अगर उन्हें हटा भी दिया जाता, तो वे फिर से उग आते। इसका कारण कुछ क्षेत्रों से आने वाला नाला पानी था जो रंकाला नदी में मिल जाता था। किसी भी पार्षद को इसकी चिंता नहीं थी। सभी लोग पानी में फव्वारा बनाने या कहीं रंकाला उत्सव आयोजित करने में व्यस्त थे। हालांकि, द्वारकानाथ कपूर नाम के एक आयुक्त ने उनकी जगह ली। उन्होंने रंकाला चौपाटी बनवाई। यहाँ दो सड़कें थीं, पानी की तरफ वाली ऊपरी सड़क

यातायात के लिए बंद थी। इससे करवीरकरों को शाम को टहलने में आसानी होती थी। उस क्षेत्र में भेलपुरी, आइस फ्रूट और छोटे चाय के होटल बन गए थे।
झुंजाराव ने अपना बचपन इसी करवीर नगरी में बिताया। अपने बचपन की यादों में खोकर वे तीसरी मंजिल की छत पर रखी कुर्सी पर बैठ जाते और पुराने कोल्हापुर को याद करते।
उस दिन भी, सैर से लौटने के बाद, वह ऊपर वाले कमरे में गया। तभी फोन की घंटी बजी। उसने रिसीवर उठाया और कान से लगा लिया।
"मैं झुंझरराव मोरे बोल रहा हूँ। कौन बोल रहा है?"
"मैं सरकार से बकवास कर रहा हूँ। पुलिस ने मुझे गिरफ्तार कर शाहूवाड़ी पुलिस स्टेशन ले आई है। उन्होंने मुझ पर तेंदुओं को जहर देकर मारने का आरोप लगाया है!"
"तुम तेंदुओं को क्यों मारोगे?"
"उसका क्या हुआ? उदगीर इलाके में एक तेंदुआ आ गया था। वह हमारे चरने गए बछड़ों और बकरियों को मार रहा था। चार दिन पहले उसने मेरे एक साल के सफेद गाय के बछड़े को मार डाला। मैंने वनपाल को नहीं बताया! बताने से क्या फायदा होता? मैं उसे क्यों बताता? वह तेंदुआ पहाड़ी पर भाग गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। मुझे एक पेड़ पर बंदूक लेकर बैठने और जब वह खाने के लिए वापस आए तो उसे गोली मारने के लिए कहा गया, लेकिन वह डर गया था! वनपाल मुझे पकड़ लेता और कहता कि मैंने एक तेंदुए को मार डाला है। बंदूक जब्त हो जाती! मैंने कहा, "अगर आप मुझे बताना ही चाहते हैं, तो किसी ने उस तेंदुए पर बंदूक क्यों रखी जिसे मैंने मारा?" मैंने कहा, "आपने उस तेंदुए पर बंदूक क्यों रखी जिसे मैंने मारा?" उसने कहा, "आपने उस तेंदुए पर बंदूक क्यों रखी जिसे मैंने मारा?" उस तेंदुए ने उसे खा लिया और इसी तरह वह बड़ा हुआ। इसलिए मैंने उसे पकड़ा। उसने सबका दिल तोड़ दिया।"
आपने अभी कहाँ से फोन किया था?
"पुलिस स्टेशन के सामने वाले फोन बूथ से मैंने पुलिसकर्मी से हाथ जोड़कर कहा, 'मैं सरकार को बता दूंगा कि आपने मुझे गिरफ्तार किया है, वे मुझे जमानत पर रिहा नहीं करेंगे।'"

"जी हां, तुमने अच्छा किया। प्रकाश शिंदे, जिसे अभी-अभी शाहूवाड़ी में तैनात किया गया है, मेरा अच्छा परिचित है। उसे यह भी पता होगा कि तुम मेरे भाई हो। चिंता मत करो। मैं चार बजे तक वहाँ पहुँच जाऊँगा!"

झुंजाराव लगातार एक महीने तक अस्वस्थ रहे। शादी के झंझराहट से मुक्त हुए या नहीं, पद्माबाई के दाखिले का सवाल उठ खड़ा हुआ। मुक्त हुए या नहीं, सायजीराव दफलाया ने बच्चे की अभिरक्षा पाने के लिए सुशीलाबाई को परेशान किया। उस विकट समस्या से मुक्त हुए या नहीं, यह मंगू कांड शुरू हो गया!

शाहूवाड़ी के फौजदार शिंदे झुंजाराव को जानते थे। झुंजाराव के पुलिस स्टेशन पहुंचते ही शिंदे ने उन्हें सलाम किया।

झुंजाराव फौजदार के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गए और पूछा

"ये कैसी बात है? तुमने मंगू को क्यों पकड़ा?"

सरकार, हमें शाहूवाड़ी वन कार्यालय से शिकायत मिली है। उन्होंने आरोप लगाया है कि मंगू ने तेंदुए को जहर देकर मार डाला। उसके खिलाफ मामला दर्ज किया जाना चाहिए और उचित जांच की जानी चाहिए।

"लेकिन इस बात का क्या सबूत है कि मंगू ने उस तेंदुए को जहर दिया था?"

"जब हमने उदगीर में मंगू के घर की तलाशी ली, तो हमें घर के पीछे एंड्राइन की एक खाली बोतल मिली! इसके अलावा, हम कहते हैं कि हमने मंगू को उस जगह जाते देखा जहाँ रावण धनगर ने एक तेंदुए के साथ मंगू के पैरों को घसीटा था।"

"क्या आपने उसे गिरफ्तार करने से पहले उससे पूछताछ की थी?"

‘‘कौन है!’’

तो उसने क्या कहा?

"उसने कहा कि मैंने एंड्रीन की तस्वीर पैड पर नहीं लगाई। मुझे तो यह भी नहीं पता कि किसने लगाई।"

"अच्छा, क्या आपने उसके अटारी में मिली एंड्रीन की बोतल के बारे में पूछा?"

वह कहता है, "मुझे कुछ नहीं पता।"

झुंजाराव ने कहा, "तो क्या हुआ अगर रावण धनगर वह गवाह है जिसने कहा कि मंगू उस जगह गया था जहां तेंदुए द्वारा पदास को घसीटा गया था?"
"क्या आपने पता लगाया है कि यह रावण कौन है और उसका पेशा क्या है?"
"हमने ऐसा नहीं किया। लेकिन हम जानते हैं कि वह उदगीर में रहता है और मंगू को अच्छी तरह जानता है।"
"ठीक है, तो आपने मंगू को गिरफ्तार करने से पहले उसके खिलाफ दस्तावेजी सबूत सुनिश्चित कर लिए थे? ठीक है! क्या वह फिलहाल पुलिस हिरासत में है या मजिस्ट्रेट की हिरासत में?"
"हम उसकी आठ दिन की पुलिस हिरासत की मांग करने जा रहे हैं!"
"किसलिए?"
"हम यह देखना चाहते हैं कि क्या उसके खिलाफ कोई और सबूत हैं।"
"आपको और क्या सबूत चाहिए? जिस गाय को मारा गया वह मंगू की थी, उसे एक तेंदुए ने मारा और पहाड़ों में घसीट कर ले गया, और चश्मदीद गवाह जिसने कहा कि मंगू वहां गया था, वह रावण धनगर है। परिस्थितिजन्य सबूत हैं कि मंगू ने मरी हुई गाय पर एंड्रिन जरूर डाला होगा, और एक पंचनामा भी है जो दर्शाता है कि मंगू की छत पर एंड्रिन की एक खाली बोतल मिली थी। तो अब आपको आठ दिन की पुलिस हिरासत की क्या जरूरत है?"
“खुद डिप्टी साहब ने कहा, ‘देखते हैं कि क्या हमें आठ दिन की और पी.सी. मिल सकती है!’”
झुंजाराव अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए। फौजदार भी खड़े हो गए। विदाई लेते हुए झुंजाराव ने कहा, “मैं आज एमएफसी कोर्ट में मंगू को जमानत पर रिहा करने के लिए अर्जी दूंगा।”
"ठीक है, सरकार!"
"आपको यह बताना होगा कि आप मंगू की पुलिस हिरासत क्यों चाहते हैं! खैर, यह आपका काम है! अभियोजन पक्ष को तय करना है कि क्या करना है!"
झुंजाररावने उसी दिन मंगू की जमानत पर रिहाई के लिए अर्जी दाखिल की। हमेशा की तरह, मजिस्ट्रेट ने इस पर "दूसरी तरफ भी बात है" कहकर जवाब दिया। आखिरकार, जैसा कि झुंजाररावने कहा था, पुलिस को अपनी राय देनी पड़ी। कोई बहाना बनाने के लिए, पुलिस ने अभियोजक के माध्यम से यह राय दी कि "हमें कुछ और सबूत जुटाने के लिए समय चाहिए।"

झुंजारराव ने इस पर आपत्ति जताते हुए कहा, "यह बहाना संदिग्ध है। यह सरकार द्वारा आरोपी को बेवजह हिरासत में रखने की कोशिश है।"

न्यायाधीश ने झुंजाराव की दलील स्वीकार कर ली और मंगू को जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया। झुंजाराव ने मजिस्ट्रेट को दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 4 ए दिखाई और मामले में आरोपी के रूप में कार्य करने का निर्णय लिया। विधि की औपचारिक डिग्री न होने के बावजूद, वह अदालत में मंगू का प्रतिनिधित्व करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने बाद में मंगू से औपचारिक पावर ऑफ अटॉर्नी प्राप्त कर ली।

शाहूवाड़ी वन विभाग पहले से ही मंगू से नाराज़ था। उनकी नाराज़गी का कारण वह तेंदुआ था जिसे उन्होंने झुंझरराव की रक्षा करते हुए मारा था! वन विभाग ने उसे ज़ब्त कर लिया था। झुंझरराव ने कहा कि वह खाल या तो मंगू को दी जाए या मुझे। उन्होंने मुख्यमंत्री, वन मंत्री और मुख्य वन संरक्षक को एक निवेदन भेजा। हमेशा की तरह, मुख्य वन संरक्षक ने उस निवेदन पर कोई ध्यान नहीं दिया। मंगू ने तेंदुओं को शिकार के लिए नहीं, बल्कि झुंझरराव की जान बचाने के लिए मारा था! उस समय, वन विभाग ने बिना परमिट के तेंदुआ मारने के आरोप में उनके खिलाफ मामला भी दर्ज किया था। उस मामले में, मंगू के वकील ने अदालत को बताया कि यह हत्या एक इंसान की जान बचाने के लिए की गई थी। भारतीय दंड संहिता और आपराधिक प्रक्रिया संहिता के अनुसार, किसी की जान बचाने के लिए हमलावर को मारना भी क्षम्य माना जाता है। यहाँ, एक ऐसे जानवर को मार डाला गया जो एक इंसान की जान बचाने आया था। यदि कानून ऐसी परिस्थितियों में किसी अन्य मनुष्य की हत्या को क्षम्य मानता है, तो तेंदुए की हत्या अपराध कैसे हो सकती है?

न्यायाधीश ने उस मामले में मंगू को बरी कर दिया और रिहा कर दिया। इसके अलावा, उन्होंने फैसले में मंगू के साहस की प्रशंसा भी की। इन सबके बावजूद, वन विभाग ने तेंदुए की खाल को मंगू के पास रखने के बजाय खुद जब्त कर लिया। झुंझरराव को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आई। जब उन्होंने मुख्यमंत्री को खाल के इतिहास का विस्तृत विवरण देते हुए पत्र लिखा, तो मुख्यमंत्री ने वन विभाग को आदेश दिया कि खाल को झुंझरराव को 'पहचान चिह्न' के रूप में सौंप दिया जाए।

वन विभाग ने खालें झुंजाराव को लौटा दीं। उसने उन्हें अपने शिकारगाह में रख लिया। हालांकि, अपमानित वन विभाग तब से ही मंगू से बदला लेने का अवसर तलाश रहा था।
अब उनके पास मंगू को इस पदसा मामले में फंसाने का मौका था। चूंकि झुंजाराव को सारी पृष्ठभूमि पता थी, इसलिए मृत पदसा पर एंड्रिन लगाकर तेंदुओं को मारने के मामले में मंगू को फंसाया गया था।
उदगीर की रावन्या धनगर एक विचित्र लड़की थी। घुंघराले बालों, लाल आँखों और जहाज जैसी आकृति वाली रावन्या गाँव में देवी समान मानी जाती थी। वह किसी महिला की तरह घूमती रहती थी। पूरा इलाका अशिक्षित और अंधविश्वासी था। इसके अलावा, मंगू झुंझरराव की शादी के बाद से रावन्या उससे नफरत और द्वेष करने लगी थी। उसने मंगू के पैरों को तेंदुए द्वारा मारे जाने के मामले में वन विभाग में शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस ने भी बिना ज्यादा जांच किए मामला दर्ज कर लिया और बच निकली। लेकिन मामला दर्ज होने के बाद उसे साबित करने की जिम्मेदारी पुलिस पर ही आ गई।
झुंजारराव के पास मंगू का केस लड़ने के लिए वकील का लाइसेंस नहीं था। इसलिए उन्होंने मंगू की ओर से कानूनी पावर ऑफ अटॉर्नी ले ली। इस मामले की पूरे जिले में चर्चा हुई।
'झुंझरराव सरकार मंगू की रक्षा करेगी!'
विशेषकर वन विभाग में उस खबर को लेकर खूब चर्चा हुई। क्योंकि झुंझरराव जब भी मौका मिलता, वन विभाग की आलोचना करते थे। अब जब उन्होंने मंगू के मामले को अपने हाथ में लेने की बात कही, तो वन विभाग में हंगामा मच गया। चूंकि मंगू ने तेंदुए से अपने गायों के झुंड को मरवा दिया था, इसलिए उसे वन विभाग में औपचारिक शिकायत दर्ज कराकर मुआवजे की मांग करनी चाहिए थी। इसके बजाय, विभाग ने कहा कि मंगू के लिए तेंदुए को जहर देकर मारने का कोई कारण नहीं था।
अंततः, मामले की जांच शाहूवाड़ी अदालत में हुई। वन विभाग के अधिकारियों के साथ-साथ रावण मेंडपाल, पुलिस पाटिल, मजिस्ट्रेट और अन्य सभी को समन भेजा गया।
हालांकि झुंजाराव कभी वकील के रूप में अदालतों में पेश नहीं हुए थे, लेकिन आज वे काले कॉलर वाले कोट, सफेद शार्क की चमड़ी की पैंट और चमकदार पॉलिश किए हुए काले बूट

पहनकर उपस्थित हुए। शाहूवाड़ी तालुका में कई लोग उन्हें जानते थे। संग्राम और यशोमती के विवाह के कारण वे सभी पिछड़े वर्गों में भी प्रसिद्ध हो गए थे।
ठीक 11:30 बजे जज बर्वे मंच पर आए। उनके आते ही झुंझरराव समेत कुछ अन्य वकील खड़े हो गए। जस्टिस बर्वे पैंतीस या छत्तीस वर्ष के थे, गोरे रंग के और घुंघराले बालों वाले थे। वे बहुत ऊर्जावान नहीं थे। जब एक वकील गवाहों से जिरह करते हुए अप्रासंगिक प्रश्न पूछने लगा, तो उन्होंने उस वकील से साहसपूर्वक कहा, "महोदय, आप अपना कीमती समय क्यों बर्बाद कर रहे हैं, कृपया प्रासंगिक प्रश्न पूछें!"
चूंकि झुंजाराव न्यायाधीशों के स्वभाव से पूरी तरह अवगत थे, इसलिए उन्होंने गवाहों से केवल उतने ही प्रश्न पूछने का निर्णय लिया जितने बिल्कुल आवश्यक थे।
सरकार की ओर से पहले गवाह के रूप में चरवाहा रावण मेंडपाल पिंजरे में खड़ा था। शपथ लेने और अपना नाम, गांव, पेशा और उम्र बताने के बाद, सरकारी अभियोजकों ने उससे जिरह शुरू कर दी।
"देखो, रावण, क्या तुम इस आरोपी के पिंजरे में बैठे आरोपी मंगू को जानते हो?"
मैं समुद्र की ओर मुड़ता हूँ।
"यह आदमी क्या धंधा करता है?"
उसके पास भेड़ें और बकरियां हैं, दस या बारह बकरियां और कुछ भैंसें भी हैं!
"तुम और यह मंगू एक ही गांव में पले-बढ़े हो!"
‘‘लेकिन अब तो वो मोटा आदमी हो गया है!’’
"आपका क्या मतलब है?"
"मोरिया सरकार हार गई है, है ना?"
‘‘जी हां, आप कह रहे हैं कि आप बड़े हो गए हैं?’’
"अब, हमारी जाति के लोग लंगूटी और बादाम नहीं पहनते! वे खाकी पैंट, ऊपर से बस्टियर, जंगल जाते समय खाकी रंग का शिकार कोट पहनते हैं, उनकी पीठ पर कारतूस वाली बंदूक बंधी होती है और उनकी कमर पर कारतूस की बेल्ट होती है।"
"अच्छा, आजकल उनकी आर्थिक स्थिति कैसी है?"

“हम किसी जाति के भाई से नहीं पूछते क्योंकि हम सरकार के प्रतिनिधि हैं। मैंने लाल सागर के पीछे चार एकड़ जंगल लिया और वहाँ मैंगलोर की छत पर एक कमरा बनाया। सरकारें भी होती हैं। मुर्गी और सरसों को मार डालो!”
"अच्छा, छोड़ो इसे, क्या तुम्हें पता है कि तेंदुए और बाघ ने इस मंगू की गाय को मार डाला था?"
"नासे का क्या हुआ? वह दिशा संचापारा से आगे है। धनगरवाड़ा में अनुसंधान एवं विकास का बम धमाका हुआ!"
“मग मंगूला तू भेटलास का न्हाई?”
क्या तुम मुझसे मिलने नहीं आओगे?
"क्या कहा आपने?"
"हवा चल चुकी है, देवदूत को बता दो।"
तो उसने क्या कहा?
“उसने कहा, मैं फरिश्तों को खा जाऊंगी, मैं किसी को नहीं बताऊंगी, मैं बस उस तेंदुए को काट डालूंगी!”
"आप मोरिया सरकार के लिए खुद को क्यों कुर्बान कर रहे हैं?"
"मैं तुम्हारे खिलाफ संभावनाओं का आकलन क्यों करूं, चाहे तराजू मैं खुद खींचूं या तेंदुए का कांटा!"
"तो क्या हुआ?"
"अगली दोपहर, मैं छत पर बूढ़े लोगों को चरते हुए देख रहा था, तभी मैंने ऊपर झाड़ियों से एक मंग्या को आते देखा। उसके हाथ में किसी तरह की बोतल थी!"
"तो फिर आगे क्या हुआ?"
"गांव वाले आए और कहने लगे कि हाथी के शव के पास तेंदुआ मरकर गिर पड़ा है! फिर मैं गया और वापस आया। तेंदुआ सच में मरकर गिर पड़ा था।"
"तो क्या हुआ?"
"किसी ने फरिश्ता को एक वर्दी दी, उसने उसे तीन-चार बार पहना, और एक पुलिस कांस्टेबल जीप में आया, और उसने तेंदुए और कुत्ते का पंचनामा किया जिसे उसने मारा था।"

सरकारी अभियोजकों ने रावण की मुख्य पूछताछ पूरी कर ली। फिर झुंझरराव उससे जिरह करने के लिए खड़े हुए। उन्होंने पूछताछ शुरू की।
"देखो, रावण, क्या तुम भी उदगीर में रहते हो?"
अरे वाह!
"लेकिन आपने धंगरवस्ती छोड़ दिया और अगली मंजिल पर स्वतंत्र रूप से रहने लगे!"
"यह क्या है?"
क्या आप अपने जातिगत भाइयों के साथ संघर्ष में रह रहे हैं?
"कितनी शर्म की बात है!"
"तुम तो भगवान हो, इसीलिए तुम्हारे जातिगत भाई तुम्हें दूर रखते हैं, वे तुम्हें किसी की शादी में आमंत्रित नहीं करते!"
रावण ने एक क्षण सोचा और फिर कहा,
"यह सच नहीं है, महोदय। मैं यूं ही अपनी नौकरी छोड़कर विदेश नहीं चला जाता।"
"देखो, रावण, पिछले 10-15 वर्षों से तुम्हारे व्यवहार के कारण तुम्हारी जनजाति ने तुम्हें अपने बीच स्वीकार नहीं किया है!"
वे ऐसा नहीं करना चाहते!
"जब मंगू धांगरा की बेटी की शादी हमारे बेटे से हुई, तो पूरा गांव, कबीले के लोग और आसपास के गांवों के लोग शादी के लिए कोल्हापुर आए, लेकिन तुम नहीं आए!"
मुझे यह समझ में नहीं आया!
"खैर, अब बताओ, मंगू धनगारा ने उस तेंदुए को मार डाला जिसने रात में मुझे कुचल दिया था जब हम उसकी बस्ती में थे। पूरा गांव उसे देखने के लिए इकट्ठा हुआ था, लेकिन तुम नहीं गए।"
मैं उस दिन बाथरूम गया था, मैं मलकापुर गया था।
"वन विभाग को बताओ! मंगू को, क्योंकि उसने तेंदुए का शिकार किया?"
"नहीं, फरीसियों के लोगों को पहले ही इसके बारे में पता चल चुका था।"
"देखो, रावण, तुम्हारा शौक गांव में चुगली करना और झगड़े करवाना है। इसीलिए गांववाले तुम्हें पिछले 7-8 सालों से गांव से निकाल रहे हैं।"

"गांव वालों का क्या हुआ? नारियल का पेड़ तो अच्छा है! मंगाया ने लड़की से प्यार होने के बाद अपना व्यवहार बदल लिया। उसने पैंट और कोट पहनना शुरू कर दिया, उसे बारह बैरल वाली लाइसेंसी बंदूक दी गई, आपने रेड नदी के नीचे चार एकड़ जमीन खरीद ली, अब मंगाया का घर आपका है!"

मुस्कुराते हुए झुंजाराव ने कहा,

‘‘वे आपसे ही पूछ रहे हैं, है ना?’’

मैं क्या करूँ? अगर उसने उसे बारह घंटे के लिए अपने कंधे पर बंदूक रखने को कहा होता, तो वे उसे मार डालते!

"क्या आपने कभी उसे अलविदा कहा था?"

मुझे क्या पहनना चाहिए? वो तो बहुत मोटा है!

जज ने झुंजाराव से कहा,

"श्रीमान मोरे, क्या आपको नहीं लगता कि आरोपी मंगू के मामले को संभालना मजेदार है?"

"इसमें बड़ी बात क्या है, साहब? मंगू ने तो मुझे कुछ विस्तृत निर्देश दिए हैं।"

‘‘ऑल राईट, गो अहेड!’

"देखो, रावण, उस दिन तुमने मंगू को उस जंगल के पास झाड़ियों से बाहर आते देखा था जहाँ तेंदुए ने उसे मार डाला था। क्या तुमने उससे पूछा था कि वह कहाँ गया था?"

"क्या वह मुझे चिढ़ाने के लिए मुझसे बात कर रहा है?"

"हां, तो, तो, आपका मतलब है कि मंगू और आपने बिल्कुल बात नहीं की?"

"वाह, वाह! मैं आपको कैसे चेतावनी दे सकता हूँ?"

"आप बिलकुल सही कह रहे हैं, क्या आपने पुलिस को बताया कि आपने मंगू के हाथ में बोतल देखी थी?"

‘‘हां, मैंने तुम्हें यही बताया था!’’

इसी बीच जज ने कहा,

"श्री मोर, आप इस गवाह से इतनी विस्तृत जिरह क्यों कर रहे हैं?"

(आप इस गवाह से इतनी गहन पूछताछ क्यों कर रहे हैं?)

इस पर झुंझरराव ने कहा,

"मैं यह रिकॉर्ड पर दर्ज कराना चाहता हूँ कि यह गवाह कितनी बेशर्मी से झूठ बोल रहा है, महोदय! अगर मंगू सचमुच एंड्रिन से तेंदुए को मारना चाहता, तो वह पादसा के शरीर पर एंड्रिन डालता और खाली बोतल को कहीं दूर फेंक देता। मैंने उसके हाथ में जो रावण देखा, वह कहता है कि यह सरासर झूठ है! मैं आपको इस बात का यकीन दिलाना चाहता हूँ।"
‘‘आय सी ऽऽ, गो अहेड.’’
"देखो, रावण, मैं तुमसे कह रहा हूँ, तुम दिल से मंगू से नफरत करते थे। तुम उसकी सुधरी हुई आर्थिक स्थिति, उसके द्वारा खरीदी गई ज़मीन को नहीं देख सके, इसलिए जब मंगू के पद को तेंदुए ने मार डाला, तो तुमने मौके का फायदा उठाते हुए खुद एंड्रिन को उस पद पर बिठा दिया और मंगू को सज़ा दिलवाने के बुरे इरादे से झूठी गवाही दे रहे हो!"
"ऐसा क्यों करूंगी मैं?"
"'आपके स्वभाव के अनुसार! बस इतना ही, महाराज!'' जब झुंझरराव ने रावण से जिरह पूरी कर ली और कुर्सी पर बैठ गए, तो दरबार में मौजूद जानकार लोग कहने लगे, 'सरकार ने रावण से जातिवादी वकील की तरह जिरह की।'
जजों ने भी शायद यही सोचा होगा, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा!
इसके बाद वनपाल, पंच, पुलिस पाटिल आदि ने गवाही दी। फिर दोनों पक्षों के वकीलों ने बहस की। सरकारी वकीलों ने औपचारिक दलीलें पेश कीं। फिर झुंझरराव खड़े हुए। उन्होंने कहा, "माननीय न्यायाधीश महोदय, मुख्यतः इस मामले में रावण मेंढपाल की गवाही को आधार बनाया गया है। वह शुरू से अंत तक पूरी तरह झूठी थी। अगर मंगू ने सचमुच अपने मृत पैरों पर एंड्रिन लगाया होता, तो वह खाली बोतल दिखाते हुए बस्ती में क्यों आता? वह उसे वहीं जंगल में फेंक देता। रावण घृणा और बदले की भावना से झूठ बोल रहा है। ऐसे व्यक्ति पर कौन भरोसा कर सकता है जिसे 7-8 वर्षों से खड़े धनगर वाडा ने छोड़ दिया हो? हाँ, कर सकता है, और वह है पुलिस विभाग। पुलिस का एकमात्र उद्देश्य कुछ करना, आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट भेजना, बच निकलना और वन विभाग को मनाना था। पूरा मामला मंगू जैसे व्यक्ति से अनुचित बदला लेने का प्रयास था, जिसने एक धर्मपरायण जीवन जिया, जिसने दुर्लभ अवसरों पर अपनी जान की परवाह किए बिना किसी की जान बचाई, और जिसने एक बहादुर मावला की परंपरा को कायम रखा। मंगू निर्दोष है, यह दुख की बात है कि संयोग से

वह मेरा पति भी है, मेरा विनम्र निवेदन है कि उसे बरी कर दिया जाए।" बहस के बाद झुंझरराव बैठ गया।

0-0

फिर तीसरे दिन, मंगू के खिलाफ दायर मामले में फैसला सुनाया गया। न्यायाधीश ने मंगू को बरी कर दिया। लेकिन अपने फैसले में उन्होंने वन विभाग और पुलिस की आलोचना भी की। न्यायाधीश ने फैसले में कहा, "उदगीर क्षेत्र में धनगरों द्वारा शाहूवाड़ी वन विभाग में तेंदुओं की बढ़ती संख्या के संबंध में दायर आवेदन पर वन विभाग ने कोई कार्रवाई नहीं की और यह अकेला उदाहरण नहीं है, वहां के धनगरों की शिकायतों के साथ हमेशा ऐसा ही व्यवहार किया जाता है। वरिष्ठ अधिकारियों को अपने कनिष्ठों को ऐसी शिकायतों का तुरंत संज्ञान लेने का निर्देश देना चाहिए। साथ ही, उन्हें तीन साल से अधिक समय तक एक ही स्थान पर तैनात नहीं किया जाना चाहिए।"

पुलिस विभाग का अनुभव भी कुछ अलग नहीं है। जब मंगू के दांत तेंदुए के हमले में मारे गए, तो पुलिस ने तुरंत यह निष्कर्ष निकाला कि मंगू के अलावा कोई और तेंदुए को जहर देकर नहीं मार सकता, और मंगू को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मामला दर्ज कर लिया।

इस मामले में मेरे सामने अस्थायी वकील के तौर पर पेश हुए झुंझरराव को वास्तव में इन दुर्भावनापूर्ण मामलों, यानी 'दुर्भावनापूर्ण अभियोजन' के लिए वन विभाग से मुआवज़ा मांगना चाहिए था। शायद अगर उन्होंने ऐसा किया होता, तो मैं उनकी विनती मान लेता। खैर, अगर पुलिस ने थोड़ी और मेहनत की होती, तो उन्हें सच्चाई समझ आ जाती। लेकिन चूंकि देश में पुलिस विभाग का स्तर चरमपंथ की हद तक गिर चुका है, तो सिर्फ शाहूवाड़ी पुलिस को दोष देने का क्या मतलब?

आजकल समाज में पशु प्रेम का जबरदस्त उभार देखने को मिल रहा है। कुछ स्वघोषित समाजसेवकों को जानवरों और पक्षियों से प्रेम हो गया है। जिस प्रकार फसलों को बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचाने वाले पक्षियों को भी मारना प्रतिबंधित है, उसी प्रकार ये लोग न केवल बाघों और लाल भेड़ियों के लिए सहानुभूति जताते हैं, बल्कि ये संगठन और संस्थाएं शहर में इन कुत्तों और बिल्लियों की रक्षा को अपना कर्तव्य मानते हैं। पिछले वर्ष झोपड़ियों में रहने वाले गरीबों के कई छोटे बच्चों को कुत्तों ने मार डाला, इसके बावजूद नगर निगम के कर्मचारियों को हर साल सैकड़ों की संख्या में बढ़ रहे आवारा कुत्तों को मारने का आदेश नहीं दिया जा सकता। आखिरकार, सर्वोच्च न्यायालय ने आदेश दिया है कि आवारा कुत्तों को नहीं

मारा जाना चाहिए। अब, मेरे जैसे कनिष्ठ न्यायाधीश के लिए देश की सर्वोच्च न्यायपालिका की आलोचना करना अनुशासन के अनुरूप नहीं होगा। हालांकि, एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में, मैं उनसे अनुरोध करना चाहूंगा कि वे इस तरह के राष्ट्रव्यापी प्रतिबंध लगाने से पहले समाज की राय या मत अवश्य लें। "इस बात की प्रबल संभावना है कि न्यायपालिका की निष्पक्ष छवि को, जो अब तक कायम रही है, नुकसान पहुंचेगा।"

उसी फैसले में, न्यायाधीशों ने यह भी सुझाव दिया कि सरकार को उन जानवरों को मारने की अनुमति देनी चाहिए जो बार-बार मानव जीवन या पशुधन को नुकसान पहुंचाते हैं।

मलकापुर जैसे स्थान पर न्यायिक मजिस्ट्रेट जैसे अत्यंत कनिष्ठ पद पर कार्यरत न्यायाधीश द्वारा दिए गए फैसले का पूरे देश में प्रभाव पड़ा। देश के प्रमुख अंग्रेजी समाचार पत्र 'उप उगसे दफ घाहगा' ने भी मलकापुर के न्यायिक मजिस्ट्रेट के फैसले पर संपादकीय लिखकर इसका जिक्र किया। इसके अलावा, महाराष्ट्र टाइम्स, लोकसत्ता, तरुण भारत और सकल जैसे समाचार पत्रों ने भी इस फैसले की सराहना की।

इन सब का नतीजा यह हुआ कि झुंजाराव मोर्या को अपार प्रसिद्धि मिली। पेशे से वकील न होते हुए भी, झुंजाराव को सैकड़ों बधाई संदेश और पत्र प्राप्त हुए, क्योंकि उन्हें केवल अपने पावर ऑफ अटॉर्नी के आधार पर मंगू का बचाव करने का अवसर दिया गया था।

लेकिन एक पत्र ने झुंझरराव के स्वास्थ्य को थोड़ा बिगाड़ दिया। क्योंकि वह पत्र गरगोटी से आया था और महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसे पद्माबाई ने भेजा था। यह बात उस पत्र में लिखी गई थी।

प्यारे डैडी,

प्रोफेसर देशमुख और मैं मंगू की मलकापुर अदालत में आपके द्वारा लड़े गए मामले को रोज़ पढ़ते और उस पर चर्चा करते थे। प्रोफेसर देशमुख ने मुझे बताया कि अगर झुंझरराव ने पहले ही बार परीक्षा देकर वकालत का पेशा अपना लिया होता, तो महाराष्ट्र में उन्हें एक बहुत ही बुद्धिमान वकील के रूप में जाना जाता। प्रोफेसर देशमुख अभी तक आपसे नहीं मिले हैं, लेकिन अब वे आपसे मिलने के लिए उत्सुक हैं। जब मैंने उन्हें मंगू द्वारा आप पर बाघ के घातक हमले की कहानी सुनाई, तो उन्होंने मुझसे कहा, "पद्मा, यह कहानी रीडर्स डाइजेस्ट में

'खूंखार बाघ से बचाव' शीर्षक से छपने लायक है। महोदय आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं।"
मेरी पढ़ाई अच्छी चल रही है। देशमुखसर हमेशा मेरा मार्गदर्शन करते हैं। वे मुझ पर विशेष ध्यान देते हैं।

आपकी आज्ञाकारिता

पद्मा

उस पत्र ने झुंझरराव को बहुत परेशान कर दिया। अब तक झुंझरराव को लगता था कि वह पूरी तरह से उन्हीं के सहारे जी रही है। लेकिन उस पत्र में बार-बार प्रो. देशमुख का ज़िक्र होने से झुंझरराव के मन में ईर्ष्या जाग उठी।
वह सुबह रंकाला से अंबवाड्या स्थित फार्म में आया था। वहाँ पहुँचते ही उसे पत्र मिला। इसे पढ़ने के बाद, वह बरामदे में इधर-उधर टहलने लगा और सोचने लगा, "पिछले तीन-चार महीनों में पद्मा और देशमुख के बीच काफी मनमुटाव रहा है। लेकिन मुझे इतनी बेचैनी क्यों हो रही है? वह मेरे लिए कौन है? मैं उसके लिए कौन हूँ? बस एक शुभचिंतक! एक तीसरा पक्ष जिसने उसके पति की ज़मीन छोड़ दी, एक तीसरा पक्ष जो उससे सहानुभूति रखता है! हे भगवान! मैं कैसे सिर्फ एक तीसरा पक्ष हो सकता हूँ? वह कई रातों तक मेरे साथ सोई! मैं सरला का पति हूँ, वह मेरी भाग्यशाली पत्नी और वफादार पत्नी है! मेरे संग्राम की माँ, मेरी गृहिणी जो मुझसे बहुत प्यार करती है, यशोमती, जब मैंने संग्राम से शादी करने की बात कही, तो सरला का भी मेरे साथ कुछ दिनों तक संबंध रहा, लेकिन राजवाड़ी राजाओं की उपस्थिति में भवानी मंडपम में हुए विवाह समारोह को देखने के बाद, उसने मेरे फैसले के खिलाफ फिर कभी कोई विरोध नहीं किया। लेकिन युद्ध के बाद, उसकी एक और संतान होने की उम्मीदें धूमिल हो गईं। सरला को आपातकालीन नसबंदी करानी पड़ी, और तब से सरला की यौन इच्छा भी धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। हालाँकि हम एक ही घर में साथ रहते थे, फिर भी हमारा व्यवहार ऐसा था मानो हम अलग हो गए हों। पर उसे यह महसूस हो जाता था। उस समय उसने कहा कि मुझे दोबारा शादी कर लेनी चाहिए। और जब पद्मा मेरे साथ रहने आई, तो सरला ने कभी आपत्ति नहीं जताई। बल्कि, उसने सुझाव दिया कि मैं पद्मा के रहने के लिए अंबवाड़ा में एक बड़ा फार्महाउस बनवाऊँ।

लेकिन अब ये पद्मा मेरी बिल्कुल नहीं रही। लगता है प्रो. देशमुख ने उस पर जादू कर दिया है। जैसे ही पद्मा बी.एड. कर लेगी, देशमुख उसे वर्धा में कहीं नौकरी दिलवा देगा। वो राजारामपुरी वाला अपना बंगला भी बेचकर वहीं रहने चली जाएगी! शायद ये देशमुख उससे शादी भी कर ले! वो मेरी दोस्त बनकर ज़िंदगी गुजारने के बजाय प्रो. देशमुख की पत्नी बनना पसंद करेगी! मैं सोच भी नहीं सकता कि वो क्या करेगी, क्या फैसला लेगी।

पद्मा का विषय लंबे समय तक झुंझरराव के मन में बना रहा। अंततः, आमने-सामने बात किए बिना उन्हें कुछ भी निश्चित रूप से समझ नहीं आ रहा था। थोड़ी देर घूमने के बाद वे बरामदे में पैर फैलाकर बैठ गए। तभी उन्हें अपने पीछे सड़क पर एसटी बस के रुकने की आवाज़ सुनाई दी। जहाँ वे बैठे थे, वहाँ से उन्हें पीछे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। इसलिए उन्होंने भीवा को आवाज़ दी, जो उनके सामने जरी से गमलों में पानी डाल रहा था। भीवा ने अपने हाथ में रखी जरी नीचे रख दी और झुंझरराव के सामने आ गया। दरअसल, झुंझरराव के फार्महाउस की ओर जाने वाले फुटपाथ पर कोई बस स्टॉप नहीं था। जब उन्होंने कहा कि उन्हें झुंझरराव के घर जाना है, तो कंडक्टर घंटी बजाकर बस रोक देता था।

रुकी हुई कार से मैंने मंगू को झुंझरराव के खेत के रास्ते पर आते देखा।

“सरकार, मंगूमामा हैत जी.”

"मांगू आ गया है। उसके मुकदमे के फैसले के बाद से मैंने उसे नहीं देखा था।" जब भी मांगू आना चाहता था, वह कभी खाली हाथ नहीं आता था। वह अपने साथ रतांबे लाया था। इस रतांबे की छाल उतारकर सुखाने पर आम बनता है। मांगू गुलाबी और गहरे लाल रंग के रतांबे से भरा एक थैला लाया था, मानो कोई टप्पोर हो।

''हाँ,''!'

मंगू ने झुंझरराव से पहली बार मिलने पर उनके चरणों में सिर झुकाया था। लेकिन यशोमती का संग्राम से विवाह होने के बाद, उन्होंने मंगू को उनके चरणों को न छूने की चेतावनी दी थी। फिर भी, रीति-रिवाज के अनुसार, उन्होंने विनम्रतापूर्वक सिर झुकाकर उनका अभिवादन किया।

"ओह, उस दिन क्या हुआ था, मंगू? मैंने जानबूझकर फैसले के समय भाग नहीं लिया था। वरना मलकापुर के लोग मुझ पर गुलाल फेंक देते और मुझे रंग देते।"

“हां, हां, सरकार, आज सरकार नहा क्यों नहीं रही है जब लोग 'लाई जन!' चिल्ला रहे हैं? भिंगार्डे अन्ना, गांधी होटली, सावर्या, गांव के सरपंच, चौलग्या, सबने मुझसे पूछा। मैंने कहा कि सरकार ने कहा था कि अगर आपको सजा मिलनी होती तो मैं जमानत के लिए अर्जी दे देता। लाई जनदल की भीड़ जमा हो गई थी और लोग मुझे न सोने के लिए चिल्ला रहे थे!”
"आपके देशवासियों ने क्या कहा?"
मैं क्या कहूँ, सरकार वाले ढोल बजाते हुए रास्ते में मेरे पास आए! यह भीड़, फरीसा के लोग, इस तरह आगे बढ़े। सैनिक मेरे पास आया और मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर बोला,
"मंगबा, सरकार को बताओ, हमसे भी थोड़ी गलती हुई है।"
"तो फिर आपने जनता को कुछ क्यों नहीं दिया?"
"मुझे लगा था कि कोने वाली दुकान के पेड़ कितने बड़े हैं! क्या यह सच नहीं है कि लोग कहने लगे हैं, चार बकरियां काटकर पूरे गांव का पेट भर दो," झुंजाराव ने मुस्कुराते हुए और अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए कहा, "चार बकरियों में क्या बुराई है? उन्हें जाने दो, तुमने मुझे कहां से बुलाया?"
"हमारे जीजाजी! उस रात उन्होंने मुझे खाने पर रोका, मुर्गियाँ काट कर लाए! वे मेरे लिए आम से निकाला हुआ 'अरदा' सीसा लाए!"
"तो फिर कहो कि यह तुम्हारी दिवाली है! तुम्हारी बेटी जब मुश्किल दौर से गुजर रही थी, तब भी उसने मेरे लिए बिरयानी बनाई थी।"
"हर कोई खुश है! धाकलम सरकार, वैनी सरकार, सरलाक्का, पद्माक्का?"
जैसे ही पद्मा का नाम लिया गया, झुंझरराव कुछ गंभीर हो गए और बोले,
"वह यहाँ कहाँ है, क्या उसे गार्गोटी के साथ पढ़ाई करनी है?"
"हां, हां, हां, मुझे कुछ समय के लिए वहां जाना होगा," मंगू ने चालाकी से कहा।
मंगू के अचानक आ जाने से झुंजाराव बहुत खुश हुआ!
“अच्छा, तुम्हारा दोस्त क्या कहता है?”
"वह सरकार कौन सी है?"
"ओह रावन्या? मैं तो उसे मजाक में दोस्त कहता हूँ!"
तुरंत ही, मंगू ने अपनी आवाज का स्तर बदला, झुंजाराव के कान के पास आकर बोला,

"फैसले के बाद सरकार, फरीसियों ने उसकी पिटाई की, ग्रामीण क्रोधित थे। वह रात में कहाँ गया? वह किस जगह गया था?"
"ग्रामीणों ने उसे क्यों मारा?"
"वह गांव में रहता था और देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करता था। वह मंत्रों और तंत्रों का प्रयोग करके लोगों को धोखा देता था। जब उसके कर्मों का फल मिला, तो सबने कहा, 'अब मैं वापस नहीं आऊंगा!'"
"कोई बात नहीं, खांसी बिना दवा के ठीक हो गई।"
तभी फोन की घंटी बजी। सरला का फोन था। सरकार ने रिसीवर कान से लगाया।
"नमस्कार, मैं झुंजाराव बोल रहा हूँ!"
“क्या तुम आज रात के खाने पर आ रहे हो? संग्राम नदी में राइफल से मेरी मौत हो गई।”
"वाह, बहुत समय बाद हमें नदी की मारल मछली खाने को मिलेगी, अच्छा, अब माघा मंगू भी आ गया है, चलो उसे भी साथ ले चलते हैं।"
"जी हाँ! अगर आप मुझे जानबूझकर फोन करें, तो क्या आप गार्गोटी के लिए पद्मा को एक डिब्बा भेजेंगे?"
जैसे ही पद्माबाई का नाम दोबारा लिया गया, झुंझरराव कुछ गंभीर हो गए और बोले, "ठीक है, उसे भेज दो, अब उसके गले में भी बड़ा सा गोला अटक गया है!"
भोले-भाले बच्चों के लिए यह समझना असंभव था कि झुंजाराव का क्या मतलब था।
जब भी मोर्या परिवार कोई मिठाई बनाता था, तो कोई न कोई गार्गोटी और पद्मा के लिए खाने का डिब्बा ले जाता था। इसीलिए सरलाबाई ने झुंझरराव को बुलाया था।
हाल ही में, जब से पद्मा गरगोटी गई थी, झुंझरराव ने मोटर वैन का ज़्यादा इस्तेमाल नहीं किया था; वे संग्राम की छोटी मॉरिस कार का इस्तेमाल कर रहे थे। लेकिन अगर संग्राम को अपने दोस्त के साथ शिकार पर जाना भी होता, तो वे उनकी जीप में ही जाते।
झुंजाराव घर की तीसरी मंजिल की छत पर हाथ में व्हिस्की का गिलास लिए बैठे थे। मंगू उनके बगल में एक बेंत की कुर्सी पर बैठे थे। नीचे अपनी पत्नी को बड़ी-बड़ी आँखों से देखकर वे ऊपर आ गए थे। जब सरलाबाई मारल तलने के लिए ले गईं, तो उन्होंने यशोमती से कहा,

"रसोई में मत रुको, अपने कमरे में जाओ, तुम्हें तेल की गंध नहीं आनी चाहिए।"
यशोमती का शरीर थोड़ा पीला पड़ने लगा था। महिला डॉक्टर समय-समय पर उसकी जांच करती रहती थी। लेकिन जब तक प्रसव सुरक्षित रूप से नहीं हो जाता, सरलाबाई की जान नहीं बच सकती थी।
इसी बीच, सुशीलाबाई अपनी बच्ची चंदा के साथ आईं। वह भी बेफिक्र थीं क्योंकि उनके पति पर आई मुसीबतों का अंत हो चुका था।
अब उनकी एकमात्र चिंता नन्ही चंदा की शादी थी! वह बहुत ही गुणी लड़की थी। लेकिन बचपन में पिता द्वारा उसे सहारा न दिए जाने के कारण उसके चेहरे पर एक उदासी और निराशा छाई रहती थी। नन्ही चंदा यशोमती के कमरे में आती-जाती रहती थी। दोनों की उम्र लगभग एक जैसी थी।
यशोमती ने पूछा, "बेटा, तुम्हारे दोस्त क्या कहते हैं?"
"मैं आजकल ज्यादा बाहर नहीं निकल रही हूँ। माँ कहती हैं कि शादी के बाद मैं आज़ाद हो जाऊँगी; लेकिन वैनी, मैं इतनी जल्दी शादी नहीं करना चाहती!"
"बिल्कुल सही।"
‘‘संग्रामदादा कहाँ हैं?’’
"वे आजकल घर कब आते हैं? कभी विशालगढ़ में तो कभी अंबाला में! पापा हमेशा चिल्लाते रहते हैं, फिर भी उनके दोस्त बच नहीं सकते।"
वे काफी देर तक बातें करते रहे। हाल ही में शुरू हुए मंगू मामले के फैसले का मुद्दा उठा। तभी बेबी ने कहा, "पापा ने बहुत अच्छा काम किया। उन्होंने उस मामले को एक असली वकील की तरह संभाला।"
"शाबाश, महोदया! रावण ने हमारे मंगू बाबा को बहुत परेशान किया था। वह गाँव छोड़कर चला गया!" यशोमती ने कहा।
"आप क्या कर रहे हैं, पापा?"
"इस समय आप छत पर बैठकर क्या करने वाली हैं? आराम कर रही हूँ।" हाल ही में यशोमती के भाषण में अंग्रेजी शब्द दिखाई देने लगे थे।

नन्ही चंदा छत पर आई। आसमान तारों से जगमगा रहा था। पहाड़ी की चोटी से आती ठंडी हवा सबको सुकून दे रही थी। झुंझरराव ने नन्ही चंदा से कहा, “चलो नन्ही, अब हम सब तुम्हारी चिंता कर रहे हैं!” नन्ही चंदा ने हल्की सी मुस्कान के साथ जवाब दिया। थोड़ी देर इंतजार करने के बाद नन्ही चंदा नीचे उतर गई।

0-0

उस शाम झुंझरराव पद्मा के बारे में सोचते रहे। आखिरकार उन्होंने फैसला किया कि वे पद्मा को भूल जाएंगे, मानो उनसे कभी मिले ही न हों। लेकिन यह उनके लिए आसान नहीं था। उनका व्यवहार, उनकी बातें, झुंझरराव के प्रति उनका स्नेह और सम्मान! एक बार जब वे अकेले थे, तो उन्होंने उनसे कहा था, "पापा, जन्म से कोई भी पुरुष या स्त्री पूरी तरह से आदर्श नहीं हो सकता। उनमें हमेशा कुछ न कुछ कमियां होती हैं। लेकिन अब जब मैं डेढ़-दो साल से आपके साथ हूं, तो मुझे आपमें कोई कमी नहीं मिली है।"

अपनी मूंछों पर मुट्ठी फेरते हुए झुंझरराव ने कहा, "कमी कैसे नहीं है? यह तो प्रचुर मात्रा में है। लेकिन मेरे बारे में आपकी राय त्रुटिहीन है।"

"आपने मुझे जाने बिना ही मेरा साथ दिया। आपने मेरी मदद करते समय मुझसे कोई अपेक्षा नहीं रखी। इसके विपरीत, कम उम्र में विधवा होने पर भी आपको हमेशा मुझ पर दया आती थी। मेरी मदद करते समय आपने कभी यह नहीं सोचा कि दुनिया क्या कहेगी। बल्कि, आपने मुझे पुनर्विवाह करने की सलाह दी। लेकिन मुझे दोबारा शादी करने का मन ही नहीं हुआ। अगर मैं सबको बता देती कि मैं पुनर्विवाह के लिए तैयार हूँ, तो पाँच-पच्चीस लोग, जो खुद को कुलीन परिवार का समझते हैं, एक कदम पर खड़े हो जाते। लेकिन मैं ऐसे अजनबी के साथ रहना नहीं चाहती थी। इसके विपरीत, आपके प्रगतिशील विचार, किसी के साथ अन्याय न होने देने का आपका रवैया, मंगू द्वारा आपकी जान बचाने के बाद भी उससे निभाई गई आपकी मित्रता, संग्रामबाला का विवाह तय होने के बाद भी, जब आपको पता चला कि शेवंता संग्राम से गर्भवती है, तो आपने बिना किसी कारण के उनकी तयशुदा शादी तोड़कर संग्रामबाला का विवाह शेवंता से करवा दिया, उस विवाह के लिए शाही व्यवस्थाएँ, समारोह के बाद आपने समाज के लिए जो आदर्श स्थापित किया, इन सब बातों ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि एक इंसान ये सब कैसे कर सकता है। और आपको यह सब बताना..." सच कहूँ तो, पिताजी, मुझे आपसे बिना किसी प्रलोभन के ही प्यार हो गया था। उस उम्र में मेरे लिए प्यार की बात करना उचित नहीं होता। क्योंकि आप भी विवाहित थे, एक वयस्क पुत्र के पिता थे। प्रशासनिक नौकरी छोड़कर खेती से जीविका कमाने का आपका निर्णय, खेती का अधिक अनुभव न होने के बावजूद उस पर आपका ध्यान, अदालत जाए बिना अपने आसपास के

लोगों को दी गई आपकी सलाह, और सभी विवादों को सौहार्दपूर्ण और समझदारी से सुलझाने की आपकी सलाह। आपने सिर्फ एक पत्र लिखकर मेरे देवरों को मुझे जमीन का एक टुकड़ा भी न देने का अपना निर्णय बदलने के लिए मना लिया। मैंने यह सब अनुभव किया है, पिताजी, एक स्त्री कितनी भी प्रतिभाशाली क्यों न हो, वह एक सक्षम पुरुष के सहयोग के बिना नहीं रह सकती। मेरे दिवंगत पति, मेजर शिवराम, हमेशा यही कहते थे।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आप जैसे सक्षम व्यक्तित्व का आशीर्वाद मिला है। पापा, मैं आपको जानबूझकर पापा कहकर बुलाता हूँ, क्योंकि आपने मुझ पर एक उपकार किया है।

मुझे पता था कि तुम और मेरी प्रेमिका सरला अक्का के बीच बहुत बड़ा फासला था! लेकिन सौभाग्य से, उन्होंने हमारी दोस्ती पर कोई आपत्ति नहीं जताई। आपातकालीन नसबंदी ऑपरेशन के बाद उनकी यौन इच्छा भी कम हो गई थी। उस समय, तुम्हें एक 'साथी' की ज़रूरत थी। जब ये बातें मेरे सपनों में भी नहीं थीं, तब किस्मत ने हम दोनों को मिला दिया।

"पिताजी, अब से मैं पूरी तरह से आपकी हो जाऊंगी, मैं आपके लिए जिऊंगी और आपके लिए ही मरूंगी।"

जिस पद्मा ने हमें ये शब्द सुनाए, वो आज देशमुख की ओर इतनी आकर्षित कैसे हो गई? 'सर, आप मुझ पर विशेष ध्यान दीजिए' इस वाक्य का क्या अर्थ है?

चूंकि पद्मा का विषय झुंझरराव के मन से निकलने को तैयार नहीं था, इसलिए उसने मंगू को अपने साथ लेकर चार दिनों के लिए कहीं शिकार पर जाने का फैसला किया।

उन्होंने एक हफ्ते का राशन मोटर वैन में लाद लिया। उन्होंने राइफल, बारह बोर और 0.2 बोर जैसी बंदूकें लीं, पेय पदार्थों का भंडार जमा किया और सरलाबैरी को बताने के लिए चुपके से रसोई में घुस गए।

मैं चार-छह दिनों के लिए कोंकण जा रहा हूँ।

सरलाबाई फूल काट रही थीं। वह रुकीं, झुंझरराव की ओर देखा और बोलीं, "तुम जाना नहीं चाहते, यशोमती मुसीबत में है, जब तक उसे बचा नहीं लिया जाता, मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगी, और अगर तुम फिर भी जाना चाहते हो, तो बेशक जा सकते हो!"

मंगू झुंझरराव के पीछे खड़ा था। उसका भी इस समय कहीं जाने का कोई इरादा नहीं था।

"मैं क्या करूं, मंगू?" उसने पीछे मुड़कर मंगू की ओर देखते हुए कहा।

“वे सही कह रहे हैं, सरकार को नमस्कार! अगर आप चाहें तो चलिए पूछते हैं!”
झुंजाराव ने अपना शिकार का कोट उतारा, कपड़े बदले और मंगू से कहा, "अरे, असल में हमें इस बार जाने का विचार ही नहीं करना चाहिए था। यशोमती पहली है। अगर वह सुरक्षित बाहर आ जाती है, तो बहुत अच्छा। वरना, अगर हमें सिजेरियन या ऑपरेशन करना पड़ा, तो उस समय हमें यहीं रहना होगा!"
झुंजाराव ने अपनी कमीज की आस्तीन मोड़ते हुए सरलाभाई से पूछा, "संग्राम कहाँ है?"
"चार दिन बीत गए हैं, न कोई पता है, न कोई फोन नंबर, उनकी पत्नी की डिलीवरी में चार से आठ दिन की देरी हो गई है। क्या उन्हें किसी बात की चिंता है?"
"हमारे जीवनकाल में, हमारे द्वारा किए गए सभी अच्छे और बुरे कार्यों के बाद, इस तरह का व्यवहार ही सुखदायी होता है।"
फिर चौथी रात को यशोमती के पेट में दर्द होने लगा। सरलाबाई और झुंझरराव उसे प्रसूति वार्ड में ले गए। मंगू घर पर ही रुका रहा। उसने सुशीलाबाई को संदेश भेजा। वह भी आधी रात के आसपास प्रसूति वार्ड में आ गई।
उस महिला ने यशोमती की जांच की और सरलाबाई से कहा, "प्रसव स्वाभाविक होने की संभावना है। यशोमती, आपको कुछ और समय तक दर्द सहन करना होगा!"
"कोई बात नहीं, यदि संभव हो तो सीजेरियन सेक्शन से बचना चाहिए, वह बहुत संवेदनशील है।"
सरलाबाई प्रसव कक्ष में आईं। उन्होंने मेज पर कराह रही यशोमती के माथे पर हाथ फेरा और कहा,
"महिला का कहना है कि अगर मैं आधे घंटे और इस दर्द को सहन कर लूं, तो मेरी प्राकृतिक प्रसव हो जाएगी।"
"नहीं, मम्मी, मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता। वे कहाँ हैं? वे अभी तक क्यों नहीं आए?"
फिर भी यशोमती को संग्राम की याद आ गई। वह पिछले पांच-छह दिनों से लापता था। “क्या तुमने उससे बात की? माँ, माँ! पापा कहाँ हैं?”
वे बरामदे में बाहर हैं।
यशोमती की हालत बेहद गंभीर हो गई थी क्योंकि वह दर्द से पीड़ित थी।

सरलाबैरी भी वहां खड़ी नहीं रहना चाहती थी। उसने अपनी बहन को बताकर बाहर आने का फैसला किया। उसी क्षण यशोमती की तेज चीख सुनाई दी और प्रसव कक्ष में सन्नाटा छा गया। सरलाबैरी की छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगी। उसी क्षण, भीतर की शांति भंग हो गई। यह एक नवजात शिशु का रोना था!

एक बहन दौड़कर बाहर आई और सरलाबारी से बोली, जो अपने हाथों में सिर रखकर बैठी थी,

"सुखद खबर है महोदया, बेटा हुआ है।" प्रसूति अस्पताल में हर रोज कई महिलाएं बच्चे को जन्म देती थीं। लेकिन वहां के कर्मचारियों या महिला डॉक्टरों को इसमें कुछ खास नहीं लगा। लेकिन झुंझरराव मौर्य की यह 'बहू' एक 'वी.आई.पी.' (अवैध अतिथि) थी। यशोमती के शाही विवाह की खबर पूरे महाराष्ट्र में फैल गई थी। प्रसूति अस्पताल चलाने वाली कई महिला डॉक्टरों को लगा कि यशोमती का पहला बच्चा उनके यहां ही होना चाहिए, इसीलिए नर्सें विशेष रूप से खुश थीं।

सरलाबाई के बाद सुशीलाबाई भी प्रसूति वार्ड में आईं। सुशीलाबाई ने कहा,

"शाबाश, महोदया, यशोमती को सुरक्षित बचा लिया गया।"

सरलाबाई काफी देर तक चुपचाप बैठी रहीं। माघा यशोमती की सिसकियाँ और आखिरी चीख सुनकर वे स्तब्ध रह गईं। काफी देर तक बैठी रहीं। अंत में उन्होंने राहत की साँस ली और बोलीं, "वे कहाँ हैं? क्या आपने उन्हें सूचना दे दी है?"

"हाँ, हाँ, वे समझ गए, मंगू भी वहाँ आ गई है।" यशोमती के बारे में सबकी चिंता का एक और कारण था। वह दिखने में बहुत नाज़ुक थी। मंगू धनगारा की पुत्री, अप्सरा जैसी सुंदरता वाली यशोमती सौभाग्यशाली थी कि उसे इतने बड़े और प्रसिद्ध कुलीन परिवार की बहू बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विवाह के समय, केवल उसकी सुंदरता देखकर ही परिवार के आलोचक अवाक रह गए। सुशीलाबाई और सरलाबाई, जिन्होंने पहले तो उसके विवाह का विरोध किया था, थोड़े ही समय में उसके सौम्य स्वभाव को देखकर उससे प्रेम करने लगीं। वह असाधारण बुद्धि से भी संपन्न थी। यशोमती ने मुश्किल से तीन-चार कक्षाएँ ही मराठी पढ़ी थीं, लेकिन पद्माबाई के साथ रहते हुए उसने बाहरी परीक्षा देकर दसवीं कक्षा उत्कृष्ट अंकों से उत्तीर्ण की थी। जब पद्माबाई शिवराम के साथ होती थीं, तो वे उनसे अंग्रेज़ी में बात करती थीं। वे यशोमती

से भी अंग्रेज़ी में ही बात करती थीं। इसलिए जब उसने कॉलेज के पहले वर्ष में प्रवेश लिया, तो किसी को भी यह विश्वास दिलाना मुश्किल था कि यह लड़की गाँव में पली-बढ़ी है।
आठ दिन बाद बच्ची को घर भेज दिया गया। इस बीच झुंझरराव ने अपने परिचितों को कई किलो पेड़ा बाँट दिया था। सब ठीक था। अब बस अपने पोते को देखकर नाचने का मन था। जन्म से नंगे पैर रहने वाले और बकरियों-भेड़ों के पीछे-पीछे झाड़ियों में नंगे पैर चलने वाले पिता ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उनकी बेटी इतनी भाग्यशाली होगी।
एक रहस्य बना हुआ था, यशोमती के जन्म के पंद्रह दिन बाद भी संग्राम लापता था। समझ में नहीं आ रहा था कि इतने दिनों तक वह कहां चला गया। झुंझरराव भी अब उसके बारे में चिंतित थे। जब चीनी कारखाने के निदेशक के बच्चों ने, जिनके साथ वह अक्सर घूमता था, उससे पूछताछ की, तो पता चला कि संग्राम और विक्रम डांगरे सांगोला क्षेत्र में शिकार करने गए थे। सांगोला पुलिस स्टेशन में भी सूचना दी गई, लेकिन पता चला कि वह चार दिन पहले पुणे के लिए रवाना हो गया था।
लेकिन अब झुंजाराव और सरलाबाई दोनों बेचैन हो गए। फिर एक रात, झुंजाराव को लोनावला पुलिस स्टेशन से फोन आया।
"आपके बेटे संग्राम को पुणे फिल्म उद्योग में काम करने वाली एक नर्तकी की हत्या के मामले में गिरफ्तार किया गया है। वह फिलहाल पुलिस हिरासत में लोनावला पुलिस स्टेशन के लॉकअप में है!"
झुंजाराव को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या सुन रहा है। पुलिस इंस्पेक्टर ने आगे कहा, “उसका दोस्त विक्रम डांगरे फरार है, जब तक वह मिल नहीं जाता, इस अपराध की जांच पूरी नहीं होगी।”
विक्रम डांगरे बचपन से ही लाड़-प्यार से पला-बढ़ा था। उसे शराब पीने के साथ-साथ नाच-गाना सुनने का भी शौक था। पता नहीं कब और कैसे संग्राम उसके मन में घर कर गया।
सरलाबाई और सुशीलाबाई दोनों यशोमती की देखभाल में व्यस्त थीं, और झुंझरराव पद्मा गर्गोटी का बी.एड. में दाखिला करवाने में लगे थे। अपने खाली समय में, वह आम के खेत में जाकर रहने लगते थे। उनके पास इस बात पर ध्यान देने का समय नहीं था कि चिरंजीव यहाँ क्या कर रहे हैं, किसके साथ हैं। वह हमेशा कहते थे, पहले दो-तीन दिन के लिए अपने मामा

के घर गए, फिर एक दोस्त के गाँव गए। लेकिन किसी ने उन्हें यह नहीं बताया था कि वह विक्रम डांगरे के साथ घूम रहे हैं। विक्रम कॉलेज से निकला हुआ लड़का था, उसके पिता एक सहकारी चीनी कारखाने में निदेशक थे, और राजनीति में भी उनका प्रभाव था, इसलिए यह दीपक, जो उनके पिता के नाम पर जारी किया गया था, बस यूँ ही घूम रहा था और मजे कर रहा था। उनकी इस विक्रम से दोस्ती हो गई। विक्रम उनके साथ सावंतवाड़ी, मालवन और वेंगुर्ला जैसे तटीय इलाकों के विश्राम गृहों में रुका करता था। लेकिन विक्रम की एक खासियत थी। वह कभी भी दो-तीन दिन से ज्यादा एक जगह नहीं रुकता था। उसके पिता ने उसे घूमने के लिए मर्सिडीज कार दी थी।

उस दिन, विक्रम ने संग्राम से कहा, "संगू, चलो चलें और लोनावाला को नष्ट कर दें!"

क्या आप लोनावला में किसी को जानते हैं?

"अरे! अगर मज़ा करना है तो कभी भी किसी जाने-पहचाने गाँव में मत करो! चलो, पुणे में मेरी एक दोस्त है, चलो उसे भी साथ ले चलते हैं, ताकि वो भी साथ दे!"

"वह कॉन हे?"

"वो डांसर है! वो अच्छा नाचती और गाती है। पहले कुछ फिल्मों में छोटे-मोटे रोल भी करती थी! हीरोइन बनना चाहती थी! लेकिन उस इंडस्ट्री में बहुत प्रतिस्पर्धा है! खैर, उसका क्या काम? अगर वो एक-दो रात के लिए भी हमारा साथ दे दे तो काफी है!"

संग्राम ने पूछा, "वह पहले तुम्हारे साथ कहाँ आई थी?"

"यह बहुत दुख की बात है, लेकिन साली को एक बहुत बुरी आदत है।"

"कौन सा?"

"भाभी हमें शराब नहीं पीने देती! और बताओ, सांगु, अगर तुम लोनावला जैसी जगह पर जाकर शराब नहीं पीना चाहती, तो किस तरह की छाछ पीनी चाहिए?"

संग्राम ने कहा, "मैं वैसे भी बहुत ज़्यादा पीता हूँ। अगर आप ज़िद कर रहे हैं, तो मैं एक गिलास बीयर पी लूँगा। लेकिन मुझे भी ज़्यादा पीना पसंद नहीं है! मैं तो अपने पिताओं जैसा हूँ! मेरे पिताजी तो एक पाइंट से ज़्यादा कभी नहीं पीते!"

"लेकिन बाकी सब तो मजेदार हैं, है ना?" विक्रम ने कहा।

"कितना मजेदार?"

"वे पद्मा को अपने साथ एक मोटरहोम में ले जाते हैं और शिकार के लिए पहाड़ों में रुकते हैं! संग्या, कभी-कभी मुझे लगता है कि काश मैं किसी अमीर युवा विधवा की दोस्त होती!"
संग्राम को विक्रम द्वारा संग्राम के पिता का जिक्र करना भी पसंद नहीं आया। उसने कहा, "विक्रम, हमें अपनी योग्यता के आधार पर बड़ों के कार्यों से अपनी तुलना क्यों करनी चाहिए?"
"आप गुस्से में क्यों हैं?"
मुझे गुस्सा नहीं है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हमें बड़ों को दोष देना चाहिए!
"ठीक है पापा, मैं रुक जाऊंगी। अगर आपके पापा की चार गर्लफ्रेंड हैं, सिवाय एक के, तो मेरे पापा में क्या खराबी है? लेकिन क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूं जो आप पूछना चाहते हैं?"
‘‘विचार की?’’
"तुम्हारी चाची सुशीला ने अपने पति को छोड़कर कोल्हापुर में क्यों बस गईं?"
"वह तो उसका पति ही था जो उसे परेशान कर रहा था!"
"लेकिन लोग कुछ और ही कहते हैं, इसलिए मैंने पूछ लिया।"
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"
"तुम्हारे पिता सुशीलाबाई से शादी करना चाहते थे, लेकिन तुम्हारी मां से शादी हो गई, लेकिन शादी से पहले ही झुंझरराव मोर्या का सुशीलाबाई के साथ 'अफेयर' चल रहा था।"
"लोग जो भी कहें, हमें यह तय करना होगा कि हम उस पर कितना विश्वास करते हैं! विक्रम, क्या यह ठीक नहीं होगा अगर मैं इस यात्रा पर तुम्हारे साथ न आऊं?"
"सांग्या, मुझे माफ़ कर दो। अब से मैं तुम्हारे पापा, सुशीला मौसी या पद्माबाई के बारे में कोई बात नहीं उठाऊँगी, मुझसे वादा करो!"
"देखो! इस समय मेरी माँ मुझे घर से बाहर नहीं निकलने दे रही थी। मेरी पत्नी की डिलीवरी नजदीक है, वह मुझे कह रही थी कि मैं अपने दोस्तों के साथ दूर-दूर तक न जाऊं!"
"ये तो सरासर मजाक है! कमीने, क्या तुम गांव में रुककर पत्नी को जन्म देने वाले थे? तुमने अपना काम कर दिया, अब बाकी सब काम पत्नियों को करना पड़ेगा!"

संग्राम को विक्रम की बातें भी पसंद नहीं आईं। उसे लगने लगा था कि उसे इस बेवकूफ की बात नहीं सुननी चाहिए थी। लेकिन जैसे-जैसे वे बात कर रहे थे, दोनों मुसीबत में फंसने लगे थे। संग्राम के लिए अब चुप रहना मुश्किल हो रहा था।

पुणे में, कार डेक्कन जिमखाना के पास एक चार मंजिला 'कॉम्प्लेक्स' के सामने रुकी। विक्रम ने हॉर्न बजाया। तभी संग्राम ने कहा, "इस भीड़भाड़ में वो तुम्हारे कार के हॉर्न को कैसे पहचान पाएगी?"

"क्या? ओह, यह तो उसकी खासियत है। एक मिनट रुको।"

सचमुच, पांच मिनट के भीतर ही छब्बीस या सत्ताईस साल की वह युवती मुस्कुराते हुए दिखाई दी!

"क्या आप चाय या कॉफी लेना चाहेंगे?" उसने अंदर आते हुए पूछा।

पुष्पे, क्या मैं इतनी दूर चाय-कॉफी के लिए आई हूँ? चलो, अपना सामान पैक करो। मैंने लोनावला के होटल हिलटॉप में एक कमरा बुक किया है, और हाँ, मैं बस तुम्हें मिलवाना चाहती थी। ये मेरे दोस्त संग्राम मोरे हैं। तुमने उनकी शादी की खबर तो पढ़ी ही होगी! उनकी शादी को लेकर खूब चर्चा हो रही है।

"विक्रम, मैं कभी किसी की शादी की खबरें नहीं पढ़ती!" उसने कहा, "मुझे ऐसी खबरों में कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"तो फिर आप किस बारे में पढ़ रहे हैं, तलाक के बारे में?"

विक्रम ने पुष्पा के हाथ पर ताली ऐसे बजाई जैसे उसने कोई बड़ा मजाक किया हो।

"खैर, अभी जल्दी है, लगभग सात बज रहे हैं। हमें होटल जल्दी पहुंचना होगा, हिलटॉप में पहले से कमरे बुक नहीं होते, सीज़न भी चल रहा है। मुंबई से लोग हिलटॉप में रुकने के लिए बेताब हैं। खैर, मेरे पास बुकिंग है।"

पुष्पा सचमुच एक अभिनेत्री जैसी दिखती थी। उसकी चाल, बोलने का तरीका और हाव-भाव बिल्कुल फिल्मी थे। जब वह अंदर आई, संग्राम ने कहा,

आप इस व्यक्ति को कब से जानते हैं?

"लगभग दो-तीन साल पहले की बात है! मुंबई से लोग हमारे राधानगरी वाले फार्महाउस में शूटिंग करने आए थे। यह उनमें से एक 'नमूना' था। पहली मुलाकात में ही उन्होंने मुझसे

कहा, 'आपका फार्महाउस वाकई देखने लायक है। मुंबई और पुणे में रहने वाले हम लोगों के लिए ताजी हवा मिलना मुश्किल हो गया है।'"

विक्रम का फार्महाउस वाकई ऊँची जगह पर बना था। विक्रम के पिता ने खुद लिफ्ट की व्यवस्था की थी और फार्महाउस तक पानी पहुँचाया था। छह एकड़ ज़मीन को समतल करके बगीचा बनाया गया था। पीछे की तरफ, कोंकण कृषि विद्यालय से उन्नत हापुस आम की कलम लाकर लगाई गई थीं। आम तीसरे या चौथे साल में ही फल देने लगे थे। इसके अलावा, चीकू, काजू और नारियल के पेड़ कतारों में लगाए गए थे। फार्महाउस के बरामदे में बैठने पर सामने राधानगरी की विशाल नीली झील दिखाई देती थी। धान की खेती भी उसी तालुका में होती थी। वह फार्महाउस इस बात का उदाहरण था कि महत्वाकांक्षी लोग शक्ति और धन का प्रयोग करके मनचाहा काम कर सकते हैं।

उस शूटिंग के दौरान, उसने सचमुच विक्रम को मोहित कर लिया। उसने कहा,

"जीवन तो पुणे और मुंबई में जीया जाता है, लेकिन मृत्यु तो ऐसे शांतिपूर्ण स्थान पर आनी चाहिए!"

विक्रम ने इस पर कहा था, "आओ और जब तक चाहो यहां रहो।"

विक्रम दिखने में सुंदर था, लेकिन उसका व्यवहार ऐसा था मानो वह अपने पिता की शक्ति से ईर्ष्या करता हो। इसी वजह से उसके ज्यादा दोस्त नहीं बन पाए।

अब संग्राम को भी विक्रम की बातें और व्यवहार बिल्कुल पसंद नहीं आ रहे थे। उसने तो अनजाने में ही यह फैसला कर लिया था कि यहाँ से लौटने के बाद वह विक्रम से संपर्क नहीं बढ़ाएगा।

विक्रम और पुष्पा आगे बैठे थे। विक्रम अपना बायाँ हाथ पुष्पा की गोद में रखकर गाड़ी चला रहा था, जबकि दायाँ हाथ गाड़ी पर टिका हुआ था। संग्राम यह सब बेबसी से देख रहा था। पुणे-मुंबई राजमार्ग पर गाड़ियाँ घात लगाकर आ-जा रही थीं। दूसरी ओर, सड़क चौड़ी होने के कारण लोग लापरवाही से गाड़ी चला रहे थे। संग्राम को भी बचपन से ही झुंझरराव ने गाड़ी चलाना सिखाया था। लेकिन कई बार झुंझरराव उससे कहते थे, "देखो संग्राम, हमें तीन चीजों से कभी खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। पहली है पानी, दूसरी है आग और तीसरी है मशीन! मोटर भी एक मशीन है। इससे भी ज्यादा खिलवाड़ मत करना!"

संग्राम को वह बात ठीक से याद थी और उसने विक्रम से धीमी आवाज में कहा,
"विक्या, इतनी तेज़ गाड़ी मत चलाओ!" विक्रम ने अपना सिर थोड़ा झुकाते हुए कहा।
"मैं आपकी कुंडली देखना चाहता हूँ। तेज़ गाड़ी मत चलाओ, व्हिस्की मत पियो, और हल्के पेय पियो, आप तो मुझे हमेशा एक भले इंसान की तरह सलाह देते रहते हैं!"
पुष्पा ने कहा, "उनमें क्या खराबी है? कोई भी समझदार व्यक्ति यही सलाह देगा!"
"पर मैं तय करूँगा कि सुनूँ या नहीं! संग्राम, तुम्हारा और पुष्पा का ब्लड ग्रुप शायद एक ही है। उसे भी मेरा व्हिस्की पीना पसंद नहीं है। लेकिन पुष्पा, हम बहुत दिनों बाद मिल रहे हैं, मैं आज दोराबजी के यहाँ से 'ब्लैक एंड व्हाइट' लाया हूँ! तुम्हें भी थोड़ी पीनी पड़ेगी!"
पुष्पा मुस्कुराई और बोली, "चलो पहले इसे होटल ले चलते हैं!"
अंततः वह लोनावला पहुँच गया। रास्ते में एक पुलिसकर्मी ने विक्रम को रोक लिया, जिसने सीटी बजाकर कहा,
"हमारे इंस्पेक्टर साहब को निर्देश मिले हैं। हमें यह जांच किए बिना गाड़ी को आगे नहीं जाने देना चाहिए कि ड्राइवर ने शराब का सेवन किया है या नहीं।"
"ट्रैफिक इंस्पेक्टर कौन होते हैं?"
"तालेकर साहब!"
"जी हां, क्या आप बॉडीबिल्डर हैं?"
"हाँ येही बात है!"
"अरे, उनसे मिले हुए तो काफी समय हो गया! संग्राम, वो हमारे राधानगरी में छह महीने तक प्रोबेशनर थे, वही तो तालेकर हैं!"
संग्राम ने कहा, "मैं उन्हें नहीं जानता!"
गाड़ी ट्रैफिक सेंटर के सामने रुक गई। ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर अंदर से बाहर आए। विक्रम को देखते ही उन्होंने कहा, "हेलो डोंगरे साहब!" और विक्रम से हाथ मिलाया।
विक्रम ने कहा, "लगता है तुमने इस प्रतिबंध को बहुत सख्त बनाने का फैसला कर लिया है!"
"नहीं, लोनावला आने का मतलब शराब पीना है, और बहुत से लोगों को यहाँ आते समय थोड़ी शराब पीछे छोड़ने की आदत होती है, इसलिए यह जांच की जा रही है!"
"हमें देखो, चलो जल्दी से होटल चलते हैं! पुष्पा को कल शूटिंग के लिए मुंबई जाना है!"

"मुंबई के लिए हर दस से पंद्रह मिनट में ट्रेनें हैं। हम कल आराम से जा सकते हैं।"
इंस्पेक्टर तालेकर को विदाई देने के बाद, विक्रम होटल हिलटॉप की घुमावदार सड़क पार करके कार को होटल के बरामदे में ले आया। वहाँ मौजूद रिसेप्शनिस्ट ने विक्रम को सलाम किया और कार पार्क करने के लिए विक्रम से कार की चाबियाँ ले लीं।
विक्रम, पुष्पा और संग्राम लिफ्ट से तीसरी मंजिल पर गए। विक्रम ने बैग लिए हुए रूम बॉय से खिड़कियाँ खोलने को कहा। खिड़कियाँ खुलते ही पश्चिम से ठंडी हवा अंदर आ गई। शाम ढलने लगी और आसमान में तारे दिखने लगे। बाथरूम से लौटकर पुष्पा ने कहा, “विक्की, तुम हमेशा कहते हो कि मैं शराब पीने की आलोचना करती हूँ। लेकिन आज मैं यहाँ बार में कॉन्यैक ब्रांडी पीने जा रही हूँ।”
वाह, कमाल है! आपमें इतना बड़ा बदलाव किस वजह से आया?
"ओह, पिछले हफ्ते हमारी यूनिट शूटिंग के लिए माथेरान गई थी। एक फ्रांसीसी जोड़ा वहां हनीमून मनाने आया था। वहीं फ्रांसेस्का से मेरी दोस्ती हो गई। उसने मुझे पहली बार कॉन्यैक पिलाई। मुझे वह बहुत पसंद आई।"
"कोई बात नहीं, हम यहीं बार से ऑर्डर कर लेंगे।"
विक्रम ने ब्लैक एंड व्हाइट की एक बोतल खोली। उसने हिलटॉप बार से पुष्पा के लिए एक 'कॉग्नेक' मंगवाया। और उसने संग्राम से पूछा, जो छत पर खड़ा था।
"तुम्हारा क्या ख्याल है, सांगु?"
मैं एक गिलास बियर लूंगा।
"तुम किस तरह की बीयर पीते हो? पुष्पा को देखो, ये तो ब्रांडी पी रही है!"
"मुझे दे दो। बस मुझे बीयर दे दो।"
संग्राम शराब के लिए अनजान नहीं था। कई सालों तक झुंझरराव घर पर शराब लाते थे, लेकिन उन्होंने कभी डेढ़ पाइंट शराब का एक घूंट भी नहीं पिया था। वे मजाक में कहते थे, “संग्राम, मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। चाहे मैं इस दुनिया में रहूँ या न रहूँ, इस बातलीबाई की बात मत सुनना। पता नहीं कब ये बातलीबाई किसी की जान ले ले।”
घर में हमेशा झुंझरराव की व्हिस्की और रम की बोतलें रहती थीं। लेकिन संग्राम ने अपने पिता की जानकारी के बिना कभी उनमें से एक घूंट भी पीने के बारे में नहीं सोचा। अगर उसके

दोस्त ज़िद करते, तो वह एक गिलास बीयर पी लेता। लेकिन उसे बीयर में कभी कोई दिलचस्पी नहीं थी।

आज लोनावला में भी वह विक्रम के आग्रह के आगे नहीं झुका। हालांकि, विक्रम आधी रात तक शराब पीता रहा, मानो उसे अपने गुस्से पर कोई काबू न हो। पुष्पा ने भी ब्रांडी के कुछ पेग लिए और विक्रम से कहा,

"बस करो। क्या तुम पूरी बोतल खत्म करने वाले हो? मुझे भूख लगी है। संग्राम, खाना मंगवाओ, क्या तुम खाओगे?"

"हां, हां। मैं उसे कल से ही बताना चाह रही थी। लेकिन तुमने मुझे बताकर सही किया!"

विक्रम का मिजाज अचानक बिगड़ गया। उसने कहा, "पुष्पे साले, क्या तुम्हें इस पार्टी से प्यार हो गया है? मैं तुम्हें यहाँ लाया हूँ। वो नहीं। लेकिन साले, तुम एक वेश्या हो! खाना कहाँ खाओगी? पहले नाचो! नग्न नृत्य!"

पुष्पा ने थोड़े गुस्से से कहा, "विक्रम, दादागिरी करना बंद करो। मैं आज नाचूंगी नहीं!"

‘‘तेरा बाप वेश्या की तरह नाचेगा!’’

विक्रम के मुंह से ‘रंदे’ शब्द निकलते ही पुष्पा आगे आई और उसे थप्पड़ मार दिया। दोनों में लड़ाई शुरू हो गई। बेचारा संग्राम समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे। उसने विक्रम और पुष्पा को अलग करना शुरू किया। लेकिन विक्रम के अंदर का शैतान जाग उठा था। उसने संग्राम को धक्का दिया और पुष्पा की साड़ी को छूते हुए कहा, “भाभी, मैं तुम्हें नंगा नाचने पर मजबूर कर दूंगा।”

संग्राम पूरी तरह से स्तब्ध रह गया। एक पल के लिए उसने होटल वालों को बुलाने और चिल्लाने का सोचा। लेकिन तब तक संग्राम पुष्पा की साड़ी उतार चुका था। उसने उसकी बिकिनी को भी छू लिया था। पुष्पा विक्रम पर चिल्लाई, "बेशर्म, मेरे बारे में शिकायत करना बंद करो!"

क्रोधित होकर वृकम ने अपने हाथ में मौजूद आधी टूटी बोतल से पुष्पा को मारना शुरू कर दिया। पुष्पा चीख रही थी।

विक्रम ने टूटी हुई बोतल के नुकीले सिरे से उस पर बीस से तीस बार वार किए। उसने उसके गुप्तांगों, स्तनों और नितंबों पर भी वार किए। जब उसने उसकी गर्दन पर एक वार किया, तो वह धड़ाम से गिर पड़ी। उसी क्षण संग्राम चिल्लाया, "भडव्या, क्या वह मर गई है?"

“उसे मरने दो, उसे मरने दो। वह इसी लायक थी।” यह कहते हुए उसने अपना ओवरकोट खूंटी पर टांगा और नीचे चला गया। बेचारा संग्राम सहम गया। उसने टूटी हुई बोतल हाथ में उठाई और पुष्पा का बेजान शरीर उसके सामने पड़ा था। तभी होटल का वेटर दौड़कर ऊपर आया। उसने कमरे के दरवाजे से अंदर देखा। संग्राम के हाथ में व्हिस्की की टूटी बोतल थी और पुष्पा अधनंगी हालत में उसके सामने अपनी आखिरी सांसें ले रही थी।

होटल मैनेजर ने तुरंत लोनावला पुलिस स्टेशन को फोन किया। इंस्पेक्टर काले, दो हेड कांस्टेबल और तीन कांस्टेबलों के साथ दस मिनट के भीतर पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गए। वेटरों ने पुष्पा को विक्रम द्वारा पीटते हुए नहीं देखा था। उन्होंने संग्राम को हाथ में टूटी बोतल पकड़े हुए और पुष्पा को खून के तालाब में नग्न अवस्था में पड़े हुए देखा था!

पुलिस इंस्पेक्टर काले ने संग्राम को वहीं गिरफ्तार कर लिया। वह चिल्ला रहा था, "मैंने नहीं मारा, विक्रम ने उसे मारा है, वह भाग गया!"

पुलिस को पूरा यकीन था कि उन्होंने आरोपी को रंगे हाथों पकड़ लिया है!

0-0

एक फिल्म अभिनेत्री समेत कई नर्तकियों की हत्या की खबर फैलने में देर नहीं लगी। अगले ही दिन सभी अखबारों में यह खबर छपी। कुछ लोग, भले ही जीवन भर किसी कला से जुड़े रहें, गुमनाम रहते हैं। लेकिन कुछ साधारण कलाकार मर जाते हैं या उनकी मृत्यु दुर्घटना में हो जाती है, और उनके नाम रातोंरात मशहूर हो जाते हैं। 'हिंदी और मराठी फिल्मों की जानी-मानी नर्तकी और अभिनेत्री पुष्पा सरदेसाई की लोनावला के होटल हिल टॉप में हत्या! हत्यारा तुरंत गिरफ्तार!' विस्तृत खबर नीचे दी गई है।

पुलिस इंस्पेक्टर दिलीप काले ने संग्राम को पकड़ा और उसकी चिकित्सकीय जांच करवाई। लोनावला के सरकारी डॉक्टर ने रिपोर्ट दी, 'आरोपी ने शराब का सेवन किया है, लेकिन वह उसके नशे में नहीं है। उसकी चाल स्थिर है, पुतलियां फैली हुई नहीं हैं।'

एम.0. लोनावला

गिरफ्तारी के बाद संग्राम चिल्ला रहा था, "मैंने पुष्पा को नहीं मारा, मैं निर्दोष हूं।"

पुलिस इंस्पेक्टर काले को उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ। पत्रकारों द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने कहा, "रंगे हाथों पकड़ा गया हर आरोपी यही बात कहता है। जब होटल के कर्मचारी मृत महिला की चीखें सुनकर कमरे में पहुंचे, तो वहां आरोपी और पुष्पा सरदेसाई के अलावा कोई नहीं था, जो अपनी अंतिम सांसें ले रही थी। आरोपी के हाथ में व्हिस्की की टूटी हुई बोतल का आधा हिस्सा था। बोतल वाला हिस्सा मृत महिला के खून से सना हुआ था। वह बोलने की हालत में नहीं थी। आरोपी ने शराब पी रखी थी और सभी को लगा कि उसने नशे की हालत में हत्या की है।"

पुणे की हॉटलाइन पर ग्रामीण क्षेत्र के एसपी को सूचित किया गया, इसलिए वे सुबह लगभग 7-7 बजे डीवाईएसपी के साथ लोनावला पहुंचे।

डीएसपी चौधरी ने पूछा, 'आरोपी का मकसद क्या था?' (अपराध करने के पीछे आरोपी का क्या मकसद था?)

"वर्तमान में उपलब्ध साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि उसने मृतक को नशे की हालत में चाकू मारा था।"

मेडिकल सर्टिफिकेट पढ़ने के बाद डीएसपी ने कहा, "लेकिन डॉक्टर का कहना है कि वह शराब के नशे में नहीं है।"
"सर, जब असल हत्या हुई, यानी रात करीब 12:30 बजे, वह निश्चित रूप से शराब के नशे में था। जब हमने उसे गिरफ्तार करके अस्पताल लाया, तब सुबह के 3 बज रहे थे। डॉक्टर को जगाने के बाद उन्होंने कहा, ''हम इस समय उसकी जांच नहीं कर सकते। उजाला होना जरूरी है!'' देखिए आधी रात से सुबह तक कितना समय बीत गया, लगभग साढ़े सात घंटे!''
"क्या आपने आरोपी से रक्त का नमूना लिया?"
"जी हाँ, रक्त को विशेष संदेशवाहक के माध्यम से रासायनिक विश्लेषण के लिए भेज दिया गया है। सी.ए.एस. रिपोर्ट का इंतजार है!"
तब तक यह खबर कोल्हापुर पहुंच चुकी थी। इस बात का पूरा ध्यान रखा गया कि हाल ही में बच्चे को जन्म देने वाली यशोमती को इस खबर की जानकारी न मिले।
लेकिन झुंझरराव बेहद परेशान थे। सरलाबाई की आँखों से आँसू बह रहे थे। फिर भी, वह सिसकते हुए झुंझरराव से बोलीं, "मेरे संग्राम द्वारा ऐसा जघन्य कृत्य करना असंभव है। मेरा मन यही कहता है।"
सरलाभाई को कभी डांटने वाले झुंझरराव ने कहा, "तुम ही तो उसे इतना लाड़-प्यार कर रहे हो। जबकि वह बदमाश जानता है कि उसकी पत्नी घर में ही बच्चे को जन्म देने वाली है, फिर भी पिछले 12-15 दिनों से कहीं नजर नहीं आया है!"
"लेकिन मेरी बात सुनो, हमें, सरकार को, संग्राम के हाथों यह कृत्य नहीं होने देना चाहिए था।"
"अदालत फैसला करेगी कि यह किसने किया। कम से कम आज पुलिस को मिले शुरुआती सबूतों से तो यही लगता है कि वह नशे में था। उसके हाथ में शराब की आधी टूटी बोतल थी और उसके सामने पुष्पा सरदेसाई अधनंगी हालत में गंभीर खड़ी थीं। उस समय कमरे में कोई तीसरा व्यक्ति मौजूद नहीं था। अब मुझे लोनावला, पुणे आदि जाना पड़ेगा!"
ठीक उसी समय, खबर सुनते ही सुशीलाबाई और नन्ही चंदा वहाँ पहुँच गईं। उन्हें देखकर सुशीलाबाई की सांसें थम गईं!
"यशोमती को समझ नहीं आ रहा है, है ना?"

"अभी नहीं; लेकिन हम उससे ये खबर कब तक छुपाए रखेंगे? खैर, अब चुपचाप बैठे रहने का कोई फायदा नहीं। मैं अब चलता हूँ। लेकिन कोई बात नहीं। मंगू मेरे साथ आ रही है! तुम बस वहीं बैठकर जोर-जोर से रोना मत। मैं जाता हूँ। मैं असल हालात देखूंगा और फिर तय करूंगा कि आगे क्या करना है।"

तभी फोन की घंटी बजी।

झुंजाराव ने रिसीवर उठाया और उसे अपने कान से लगा लिया।

"हैलो, मैं झुंजाराव हूँ!"

"हे पापा, मैं पद्मा बोल रही हूँ। मैंने आज सुबह क्षेत्रीय समाचारों में सुना कि संग्राम मोरे ने नृत्यांगना और अभिनेत्री पुष्पा सरदेसाई की हत्या कर दी है। लेकिन पापा, सच्चाई क्या है?"

पद्मा के उस पत्र के बाद से ही झुंझरराव उसके साथ एक गिरोह की सदस्य जैसा व्यवहार कर रहा था। अब जब उसने इस स्थिति में उसे फोन किया, तो उसने रूखेपन से कहा, "मुझे अभी भी सारी बातें समझ नहीं आई हैं। मैं अब लोनावला के लिए निकल रहा हूँ!" इतना कहकर झुंझरराव ने रिसीवर स्टैंड पर रख दिया।

उसके बाद, खबर सुनने वालों के फोन बजने लगे। बेबीचंदा फोन उठा रही थी और सबको बता रही थी, “हमें अभी तक ठीक से पता नहीं चला है कि क्या हुआ है। पापा मंगू मामा के साथ लोनावला के लिए निकल गए हैं।” उसने बिना ज्यादा देर बात किए फोन काट दिया।

जब भी झुंझरराव को किसी काम से पुणे आना होता था, तो वे राव बहादुर थुबे के बंगले में ठहरते थे। राव बहादुर के बाद उनके पुत्र धैरशील और झुंझरराव लगभग एक ही उम्र के थे। धैरशील संग्राम की शादी के लिए कोल्हापुर आया था।

झुंजरराव को देखकर धैर्यशीलराव अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए और बोले, "मुझे भी अभी-अभी इसका एहसास हुआ? यह सब कैसे हुआ?"

"हमें ठीक से पता नहीं है कि क्या हुआ। जब तक हम 'जांच अधिकारी' से व्यक्तिगत रूप से नहीं मिल लेते, तब तक हमें पता नहीं चलेगा।" (जांच अधिकारी का अर्थ है 'इन्वेस्टिगेटिंग ऑफिसर', एक पुलिस अधिकारी जो अपराधों की जांच करता है।)

"लेकिन आप तो खुद ही इतनी दूर गाड़ी चलाकर यहाँ आए?"

आप क्या करेंगे? क्या आपको सही समय पर ड्राइवर मिल जाएगा?

"लेकिन अब मैं तुम्हें अपना ड्राइवर दे देता हूँ, ले जाओ। मेरे पास दो ड्राइवर हैं!"
धैर्यशीलराव की अनिच्छा के बावजूद, उन्होंने झुंझरराव को चाय और बिस्कुट पेश किए। तब झुंझरराव ने कहा, "अब मुझे पुणे में आपसे अक्सर मिलना पड़ेगा। केस की सुनवाई पूरी होने के बाद, पुणे में ही काम चलेगा, है ना?"
"कोई बात नहीं, मैं यहाँ कुछ प्रसिद्ध आपराधिक कानून विशेषज्ञों को भी जानता हूँ। आप एडवोकेट पेशवा और एडवोकेट जाम्भाली को तो जानते ही होंगे!"
"मैं इसी कारण से अदालत जाता हूं। वन विभाग ने इस मंगू के खिलाफ मामला दर्ज किया था, और मैंने उसके अधिकार का इस्तेमाल करते हुए मुकदमा चलाया था। अब मुझे लगता है कि शायद मुझे संग्राम का मामला भी चलाना पड़ेगा।"
"अगर आपने पुणे में रहते हुए अपनी कानून की डिग्री पूरी कर ली होती, तो अब तक आप एक 'पूर्ण वकील' बन चुके होते।"
"यह सब सच है, लेकिन मेरे पिता की असमय मृत्यु के बाद, पारिवारिक खेत की देखभाल करने वाला कोई नहीं था, है ना? खैर, मैं जा रहा हूँ।"
थुबे का ड्राइवर अनुभवी था। झुंजाराव कार की पिछली सीट पर पैर फैलाकर बैठ गया। मंगू ड्राइवर के बगल में बैठा था। झुंजाराव ने अपनी आँखें बंद कर लीं, लेकिन जब तक यह हादसा टल नहीं जाता, उसका मन शांत नहीं होगा!
गाड़ी लोनावला पहुंचते ही झुंजाराव सीधे पुलिस स्टेशन गए। उन्होंने सिपाही की ओर से साहब को संदेश भेजा।
"कृपया मुझे बताएं कि आरोपी संग्राम मोरे के पिता आपसे मिलना चाहते हैं।"
दो मिनट के भीतर ही इंस्पेक्टर काले ने झुंजाराव को अंदर बुलाया।
झुंजाराव का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि काले उनसे मिलने आने वाले किसी भी व्यक्ति को देखकर कभी खड़े नहीं होते थे, लेकिन आज झुंजाराव को देखकर इंस्पेक्टर काले अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए और झुंजाराव का अभिवादन करने के लिए अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाया।
इंस्पेक्टर की कुर्सी के सामने बैठे झुंझरराव ने कहा, "मैं झुंझरराव मोरे हूं। संग्राम मेरा बेटा है, उस पर वास्तव में क्या आरोप है?"

वह हिंदी और मराठी फिल्मों में अभिनय कर चुकीं नर्तकी पुष्पा सरदेसाई के साथ हिलटॉप होटल में ठहरने आया था। अगली रात, नशे की हालत में उसने हाथ में पकड़ी व्हिस्की की बोतल तोड़ दी और उसी बोतल से पुष्पा के शरीर पर छब्बीस बार वार किए। अत्यधिक रक्तस्राव के कारण पुष्पा की मौके पर ही मृत्यु हो गई। ऐसा माना जाता है कि इससे पहले आरोपी और मृतक पुष्पा के बीच कुछ बातचीत हुई होगी। यह अपराध शराब के नशे में किया गया था।

"लेकिन वह हिलटॉप होटल किस वाहन से पहुंचा?"

"रिसेप्शनिस्ट के बयान से पता चलता है कि उनका कोई परिचित ही उन्हें वहां छोड़कर गया था!"

"क्या आपने इस बात की कोई जांच की कि वह सज्जन कौन थे?"

"हमने सोचा भी नहीं था कि हम ऐसा करेंगे। कोई ऐसा व्यक्ति जो उन दोनों को जानता हो, वह तो चला ही जाएगा!"

"मेरा मतलब है दोनों से!"

"संग्राम और पुष्पा सरदेसाई!"

"श्रीमान काले, मैं आपकी जांच में दखल नहीं देना चाहता। लेकिन मुझे लगता है कि आपने एक बहुत महत्वपूर्ण बात को नज़रअंदाज़ कर दिया है। मुझे भी आपराधिक कानून की ज़्यादा जानकारी नहीं है। क्या आपने कम से कम उस कार के बारे में पूछताछ की जिसने इन दोनों को छोड़ा था?"

"हां, यह एक मर्सिडीज थी।"

"कार लेकर आए सज्जन होटल से कब लौटे?"

"वह आधी रात के आसपास गया होगा!"

"उसे नीचे खड़ी कार किसने दी?"

"उसने इसे ले लिया।"

"बस इतना ही, श्रीमान काले, अब मेरी बात सुनिए, मैं अभी तक अपने बेटे संग्राम से यहाँ नहीं मिली हूँ। लेकिन मैं पूरे विश्वास से कह सकती हूँ कि संग्राम ने पुष्पा का कत्ल नहीं किया। जो

भी गाड़ी लेकर आया होगा, उसने ही किया होगा। खैर, अभी इस बारे में बात नहीं करते। लेकिन क्या मैं अभी संग्राम से पुलिस लॉकअप में मिल सकती हूँ?"
"नहीं, वह हमारी पुलिस हिरासत में है!"
"ठीक है। आपकी इस जांच की निगरानी कौन कर रहा है?"
उप-मुखपृष्ठ चौधरी साहब!
"वे कहां हैं?"
"वे खंडाला विश्राम गृह में ठहरे हुए हैं, वे ग्यारह बजे तक यहाँ पहुँच जाएँगे!"
"ठीक है! वे क्या कहते हैं?"
वे पूछते हैं, गाड़ी का मालिक कौन था, उसने गाड़ी कब ली और कब वापस की? हमें जाँच क्यों करनी चाहिए? आरोपी संग्राम उस कमरे में था। उसके हाथ में व्हिस्की की टूटी बोतल थी और वह नशे में था, यही हमारे लिए पर्याप्त सबूत है। (हाथ में आया पक्षी झाड़ी में बैठे दो पक्षियों से बेहतर होता है।)
झुंजाराव मुस्कुराया, मुट्ठी से अपनी मूंछें घुमाते हुए बोला, "ठीक है, अपनी जांच जारी रखो, मैं आज मजिस्ट्रेट की अनुमति से संग्राम से मिलूंगा!"
इसी बीच, ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर, जो झुंझरराव को जानते थे और कुछ साल पहले राधानगरी पुलिस स्टेशन में तैनात थे, वहीं मौजूद थे। उन्होंने झुंझरराव का अभिवादन किया। उन्होंने तुरंत इंस्पेक्टर काले से पूछा, "क्या विक्रम डांगरे भी होटल में थे?"
इंस्पेक्टर कैलेन चौंक गए और बोले, "मुझे उसका नाम नहीं पता!"
"अरे, मैं तुम्हें अभी बताऊँ? मैं विक्रम डांगरे को कई सालों से जानता हूँ। वो एक कुख्यात शराबी है! मैंने उसकी गाड़ी को बैरियर पर रोका। उस समय संग्राम गाड़ी की पिछली सीट पर बैठा था। पुष्पा विक्रम के बगल में आगे की सीट पर बैठी थी। इसके अलावा, उसी रात करीब 1:30 बजे, विक्रम ने हमारा बैरियर तोड़ दिया और गाड़ी लेकर पुणे की तरफ चला गया। वो गाड़ी टेढ़ी-मेढ़ी चला रहा था। कल मैं जुन्नार देखने गया था। जब मैं यहाँ लौटा, तब मुझे इस बारे में पता चला! इसलिए मैं तुरंत यहाँ आ गया।"
झुंजाराव इंस्पेक्टर तालेकर का शुक्रिया अदा करने के लिए शब्द नहीं ढूंढ पा रहे थे। झुंजाराव का अनुमान बिलकुल सही निकला। इंस्पेक्टर तालेकर की बात सुनकर झुंजाराव ने कहा,

"मुझे यही शक था। श्रीमान काले, आपको इस ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर का बयान दर्ज कर लेना चाहिए!"
"हमारे डिप्टी एस. पी. चौधरी साहब के आने के बाद हम तय करेंगे कि क्या करना है!"
इस पर झुंजाराव ने कहा, "यह फैसला आपको करना है।"
इंस्पेक्टर काले का चेहरा नरम पड़ गया। उन्होंने झुंजाराव से कहा, "हमें अभी जाने में कोई आपत्ति नहीं है।"
"ठीक है। मैं बाहर इंतजार करूँगा, लेकिन मुझे इस संग्राम मामले पर आप और आपके वरिष्ठों की राय सुनने में कोई आपत्ति नहीं होगी!"
झुंजाराव पुलिस स्टेशन से निकल गए। उनके चेहरे पर दिख रही चिंता अब कुछ हद तक कम हो गई थी। संग्राम उनका बेटा था, उसे इस आरोप से बरी कराना उनका कर्तव्य था।
वे संग्राम की आदतों और पसंद को बचपन से जानते थे। संग्राम को शराब से कोई खास लगाव नहीं था। कभी-कभार, जब उसके दोस्त ज़ोर देते, तो वह एक गिलास बीयर पी लेता था। और वो भी बस एक गिलास। झुंझरराव कई सालों से शराब पीते आ रहे थे। उनके घर में हर तरह की शराब होती थी। स्कॉच से लेकर कोल्हापुरी रम तक। वो भी खास मौकों पर ही पी जाती थी। वो कभी एक या दो पाइंट से ज़्यादा नहीं पीते थे। वो हमेशा कहते थे, 'शराब संयम से पीने पर दवा है। ज़्यादा पीने पर ज़हर बन जाती है।' उनकी ये सीख संग्राम के मन में बचपन से ही बैठी हुई थी। इसलिए, वो इंस्पेक्टर काले के इस तर्क पर कभी विश्वास नहीं करते कि संग्राम ने नशे में पुष्पा की हत्या की थी।
इसी बीच, पुलिस स्टेशन में हलचल मच गई। कांस्टेबलों ने अपनी टोपियाँ ठीक कीं। डिप्टी एस.पी. चौधरी पुलिस स्टेशन पहुँच गए थे। इंस्पेक्टर काले अपने कार्यालय से आगे आए और साहब का स्वागत किया। उन्होंने साहब की एड़ी छूकर उन्हें सलाम किया।
"जी हां, श्रीमान काले," चौधरी साहब ने इंस्पेक्टर काले से अपने हाथ में डंडा थपथपाते हुए पूछा। "कितना कम या ज्यादा?"
"कुछ खास नहीं। आरोपी संग्राम मोरे के पिता पुलिस स्टेशन आए हैं!"
"मोर? आपका मतलब उस मोर से है जिसकी अखबारों में समाज सुधारक के रूप में प्रशंसा की गई थी, क्या वह मोर नहीं है?"

"हां, वे बाहर इंतजार कर रहे हैं, उन्होंने कहा कि वे आपसे मिलना चाहेंगे!"
"मैं? किसलिए? क्या आपने उन्हें नहीं बताया था कि मैं आमतौर पर आरोपी के रिश्तेदारों से नहीं मिलता?"
"मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा, लेकिन वे दृढ़ता से मानते हैं कि पुष्पा की हत्या संग्राम ने नहीं की थी।"
"हर आरोपी के करीबी दोस्त ऐसा ही महसूस करते हैं। चलो, उन्हें फोन करो, देखते हैं वे क्या कहते हैं।"
झुंझरराव आ गए। चौधरी ने उन्हें फर की टोपी, चौकोर कॉलर वाला कोट, होठों पर धूसर-सफेद मूंछें, गोरा रंग और विनम्र व्यवहार देखकर उनसे पूछा।
"बताइए, आप क्यों आए?"
"बस, संग्राम का मामला! क्या मैं उनसे मिल सकता हूँ?"
"अरे, वह पुलिस हिरासत में है। आप उससे सही समय पर नहीं मिल सकते! लेकिन चूंकि आप इतनी दूर से आए हैं, तो 3-4 मिनट में उससे मिल लीजिए! कांस्टेबल, उसे आरोपी संग्राम के लॉकअप में ले जाइए!"
झुंजाराव ने कहा, "धन्यवाद।"
जब इंस्पेक्टर काले चौधरी साहब के सामने खड़े थे, तब चौधरी साहब ने कहा,
"श्री काले, ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर मुझसे विश्राम गृह में मिलने आए थे। उनका कहना है कि विक्रम डांगरे पाटिल कुख्यात शराबी संग्राम और पुष्पा के साथ था। उस रात, जब हम ड्यूटी पर थे, हिलटॉप से आ रही एक मर्सिडीज कार ने सड़क के बैरियर को टक्कर मारी और पुणे की दिशा में भाग गई। अब हमें ट्रैफिक इंस्पेक्टर और उनके साथ ड्यूटी पर मौजूद ट्रैफिक कांस्टेबलों के बयान दर्ज करने होंगे!"
"जी सर, मैंने भी यही सोचा था, लेकिन आपने कहा था कि हमें बिना सलाह-मशविरा किए कोई फैसला नहीं लेना चाहिए।"
"जी हां, इंस्पेक्टर तालेकर का कहना है कि मर्सिडीज ने बैरियर को टक्कर मारी और पुणे की ओर जा रही थी। हमने कंट्रोल रूम से संपर्क किया और पुणे की ओर आ रही मर्सिडीज को

रोकने के निर्देश दिए। हमने सही काम किया है। लेकिन इसके बाद क्या हुआ, यह हमें समझ नहीं आ रहा है, कृपया कंट्रोल रूम से संपर्क करें!"
इंस्पेक्टर काले ने पूना नियंत्रण कक्ष से संपर्क किया।
जी हां, मैं लोनावला इंस्पेक्टर काले हूं। कल रात ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर ने आपके दफ्तर को बॉम्बे रोड से आ रही एक मर्सिडीज को रोकने का संदेश भेजा था। उसका क्या हुआ? आपने क्या बताया? क्या आपको गाड़ी मिली? उसकी दाहिनी हेडलाइट टूटी है? ओह, तो आपने यह संदेश हमारे पुलिस स्टेशन को क्यों नहीं बताया? आपने ट्रैफिक दफ्तर को बताया था? ठीक है, ठीक है, मैं आपसे संपर्क करूंगा!
विक्रम ने रात में नशे की हालत में पुष्पा की हत्या करने के बाद, होटल हिलटॉप से तुरंत अपनी कार ली और भाग गया। लोनावला से निकलते समय, उसकी कार एक बैरियर से टकरा गई, जिसके परिणामस्वरूप उसकी कार की दाहिनी हेडलाइट टूट गई।
डीवाईएसपी चौधरी ने इंस्पेक्टर काले से पूछा, "क्या आपने उस जगह का पंचनामा कराया जहां कार बैरियर से टकराई थी या नहीं?"
"जी नहीं! इंस्पेक्टर तालेकर ने हमें सच ही बताया!"
"तो तुरंत जाओ, वही पुराने बेवकूफ। अरे, मुझे समझ नहीं आता कि तुम्हारे विभाग में किस तरह के मूर्ख भरे पड़े हैं। ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर ने वहां पंचनामा क्यों नहीं किया? क्या अब हाईवे पर कोई निशान बचेगा भी? जल्दी जाओ, मैं भी यहीं हूँ!"
संग्राम के मामले में अप्रत्याशित मोड़ आ गया। पुणे यातायात पुलिस को उस रात मर्सिडीज नहीं मिली। अगले दिन, विक्रम ने अपनी कार तलेगांव के पश्चिम में एक सरदारजी के ढाबे पर खड़ी की और रात वहीं बिताई। नशा उतरने के बाद जब वह जाने ही वाला था कि राज्य यातायात पुलिस ने उसे पकड़ लिया। उसकी मर्सिडीज की दाहिनी हेडलाइट टूटी हुई थी।
उस दिन झुंजाराव लोनावला में बहराम के होटल में रुके थे। बहराम ईरानी में शिकार करने की प्रवृत्ति थी। वह एक बार डीएसपी ब्रागांजा के साथ कोल्हापुर आए थे। उस समय उनकी मुलाकात झुंजाराव से हुई थी।

मंगू भी झुंझरराव के साथ था। लेकिन बेचारा, पुलिस जांच की पेचीदगियों को नहीं समझता था। उसे बस यही लगा कि अब कायर सरकार इस महिला की हत्या के आरोप से मुक्त हो जाएगी।

इंस्पेक्टर काले तुरंत पुणे पहुंचे। विक्रम खड़की पुलिस स्टेशन के लॉकअप में था। वहां पुलिस ने पंचनामा करने के बाद उसके खून से सने कपड़े जब्त कर लिए थे। हालांकि, होटल हिलटॉप से पकड़े गए संग्राम के कपड़ों पर खून का एक भी धब्बा नहीं मिला।

वहाँ यशोमती को कोल्हापुर से लगातार फोन आते रहते थे। झुंझरराव फोन पर उससे कहते रहते थे, “बेटी, सब ठीक हो जाएगा, डरो मत।” जब झुंझरराव खुश होते थे, तो वे इसी तरह हिंदी में बोलते थे।

मृत पुष्पा के घावों से निकले खून की बूंदें, जिनका ब्लड ग्रुप पुष्पा के ब्लड ग्रुप के समान था, विक्रम के कपड़ों पर भी लगी हुई थीं।

फिर, इसी पृष्ठभूमि में, इंस्पेक्टर काले ने डीवाईएसपी चौधरी के समक्ष संग्राम का विस्तृत बयान दर्ज किया। इसमें उन्होंने चौधरी को उस दिन की घटनाओं का वर्णन किया और यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला,

"सर, मैं पुष्पा को पहले जानती भी नहीं थी। उस रात विक्रम जिस तरह से स्कॉच पी रहा था, मुझे लगा कि वो आज खुद को या किसी और को मार डालेगा। इसलिए, सर, मैं उस कमरे से बाहर आकर छत पर बैठ गई। उसने पुष्पा से कहा, 'अपने सारे कपड़े उतार दो और नग्न होकर नाचो।' पुष्पा मना करती रही। इसके बजाय, उसने उसे बुरी तरह से गालियां दीं। पुष्पा ने उसके चेहरे पर एक थप्पड़ मारा। उसने पुष्पा की साड़ी फाड़ दी, हाथ में पकड़ी बोतल तोड़ दी और अधनंगी पुष्पा को टूटी बोतल से पीटने लगा। पुष्पा खून के तालाब में गिर पड़ी। तभी विक्रम को होश आया। पुष्पा को मारते देख उसने हाथ में पकड़ी बोतल वहीं छोड़ दी, कमरे का दरवाजा खोला और जल्दी से सीढ़ियों से नीचे आ गया। मैंने छत का दरवाजा खोला और अंदर आई। पुष्पा के आखिरी सांस लेते समय मैंने उसके मुंह में पानी डाला। मैंने टूटी बोतल लेकर मैनेजर को सब कुछ बताने का फैसला किया। उसी होटल के 3-4 वेटरों ने मुझे पकड़ लिया क्योंकि मैंने पुष्पा का कत्ल किया था। पुष्पा का कत्ल विक्रम ने किया था, मैंने नहीं!"

संग्राम का जवाब सुनकर डीवाईएसपी चौधरी ने कहा, "देखिए श्री काले, आप जल्दबाजी में संग्राम पर आरोप लगाने वाले थे। अच्छा हुआ कि ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर ने सच्चाई हमारे ध्यान में ला दी।"

विक्रम की चिकित्सा जांच के दौरान उसका रक्त भी लिया गया था। लेकिन देरी के कारण उसके रक्त में अल्कोहल नहीं पाया गया। हालांकि, होटल हिलटॉप में एक गिलास बीयर पीने के बाद संग्राम की सांसों से हल्की गंध आ रही थी। केवल इसी कारण से वह दोषी साबित नहीं होता।

0-0

पुष्पा सरदेसाई हत्याकांड की जांच में नया मोड़! शीर्षक से अखबार में एक विस्तृत समाचार प्रकाशित हुआ। समाचार में आगे बताया गया कि अभिनेत्री पुष्पा सरदेसाई हत्याकांड में एक दिन पहले गिरफ्तार किए गए संग्राम मोरे को सरकार ने चश्मदीद गवाह बनाया है। समाचार में यातायात निरीक्षक द्वारा किए गए त्वरित कार्य का उल्लेख किया गया। यातायात निरीक्षक तालेकर द्वारा वायरलेस पर नियंत्रण कक्ष को दिए गए संदेश के कारण आरोपी विक्रम डांगरे पाटिल की मर्सिडीज कार तलेगांव में पकड़ी गई। उस समय, हालांकि आरोपी विक्रम डांगरे पाटिल नशे में नहीं पाया गया, लेकिन उसकी कार की दाहिनी हेडलाइट टूटी हुई थी, जिसके अवशेष लोनावला में बैरियर के पास मिले। वे कार से हूबहू मेल खाते थे। आरोपी विक्रम के शरीर पर मिले खून के धब्बे मृतक पुष्पा सरदेसाई के रक्त समूह से मेल खाते थे। संग्राम मोरे के बयान के कारण यह परिस्थितिजन्य साक्ष्य पुख्ता सबूत बन गया!

बहराम ईरानी के लॉज में ठहरे झुंजाराव मोर्या ने अखबार में यह खबर पढ़ी और मंगू से कहा, "देखो, सच्चाई अपने आप कैसे सामने आ जाती है!"

"हे मेरी सरकार, यह सब तुम्हारी वजह से हुआ!"

"ये सब मेरी वजह से कैसे हो सकता है? इंस्पेक्टर कलेना को कभी न कभी संग्राम की बेगुनाही का एहसास होना ही था, लेकिन अच्छा हुआ कि उन्हें अदालत में आरोपपत्र दाखिल होने से पहले ही इसका एहसास हो गया। अब उन्हें यशोमती और सरले को फोन करके इस खबर की जानकारी देनी चाहिए।"

हाल ही में कोल्हापुर में जन्म देने वाली यशोमती को पूरा विश्वास था कि संग्राम के हाथों ऐसा घिनौना काम कभी नहीं होगा। सरलाबाई ने पिछले छह-सात दिनों से अपनी मूर्तियों को जल में रखा हुआ था। उन्हें लग रहा था कि ईश्वर के प्रति उनकी भक्ति रंग ला रही है। मोरे परिवार पर अचानक आई विपत्ति अब टल गई थी।

संग्राम ने विस्तृत उत्तर दिया। यह स्थिति के लिए अत्यंत प्रासंगिक था। उनके उत्तर को कार्यपालक मजिस्ट्रेट के समक्ष दर्ज किया गया।

सुबह करीब 10:30 बजे डिप्टी स्पेशल प्रेसिडेंट चौधरी और इंस्पेक्टर काले बहराम के लॉज में झुंझरराव से मिलने आए। उन्हें देखकर झुंझरराव आश्चर्यचकित रह गए।

सभी लोग सामने लॉन में बेंत की कुर्सियों पर बैठ गए। चौधरी ने उपमुखाध्यक्ष झुंझरराव से कहा,
"माफ़ कीजिए, मेरी सरकार, हमने शुरुआत में आपसे जो कहा था उसे भूल जाइए!"
मुस्कुराते हुए झुंजाराव ने कहा, "मैं तो यह भी भूल गया कि आपने क्या कहा था।"
"हमने कहा था कि हर आरोपी का पिता यही महसूस करता है कि उसका बेटा निर्दोष है। हमने आपके साथ कुछ हद तक अनादरपूर्ण व्यवहार भी किया। लेकिन जब सच्चाई सामने आई, तो हमने तुरंत अपनी गलतियों को सुधार लिया। मैं आपसे मिलना चाहता था और आपसे माफी मांगना चाहता था।"
वाई.एस.पी. चौधरी के संयुक्त हाथों को अपने हाथों में लेकर झुंझरराव ने कहा,
"सर, आजकल आप जैसे सुसंस्कृत पुलिस अधिकारी मिलना दुर्लभ है! आप और इंस्पेक्टर दिलीप काले के बारे में क्या कहेंगे? संग्राम को 'प्रत्यक्षदर्शी' बनाने का आप दोनों का फैसला बिलकुल सही था।"
जिले के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी को अपने लॉज में देखकर बहराम वेटर को बुलाकर बगीचे में चाय और बिस्कुट ले आया। बहराम का चेहरा लालिमा लिए हुए था। उसके बाल भी सफ़ेद हो चुके थे। वह कई सालों से मुंबई में टैक्सी चला रहा था। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मुंबई का रूप तेज़ी से बदलने लगा था। बाहर से मुंबई आने वाले लोगों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी। अपराध दर में भी ज़बरदस्त वृद्धि हुई थी। जिस दिन बहराम ने बारह सौ रुपये का कारोबार किया, रात करीब दस बजे जब वह ताड्डेओ स्थित अपनी चॉल लौट रहा था, तभी एक यात्री दीपक की रोशनी में टैक्सी के पास आया। बहराम दिनभर टैक्सी चलाते-चलाते थक गया था। एक पल के लिए उसने सोचा कि किराया दिए बिना ही सीधे घर चला जाए। लेकिन बहराम एक सज्जन व्यक्ति था। उसने ब्रेक दबा दिया। रुके हुए यात्री ने कहा,
‘‘बाम्बे आस्पताल जाना उधर मेरे भाईकी हालत बहोत खतरेमे है! अभी अभी फोन आया था!’’
बहराम ने बाईं ओर का दरवाज़ा खोला। यात्री अंदर बैठ गया। गाड़ी स्टार्ट होते ही उसने अपनी जेब से तेज रामपुरी चाकू निकालकर बहराम की गर्दन पर रख दिया। उसने कहा,
"गाड़ी में बैठो! पैसे निकालो! अगर ज़िंदा रहना है तो चिल्लाना मत!"

बहराम ने उस दिन कमाए हुए बारह सौ रुपये उस गुंडे को दे दिए। जैसे ही टैक्सी अगले ट्रैफिक डिवाइडर के पास रुकी, गुंडे ने दरवाजा खोला और भाग गया।

बहराम पूरी रात सोचता रहा। वह अब मुंबई में नहीं रहना चाहता था। यह शहर अब मेहनती और ईमानदार लोगों के लिए नहीं रहा। उसे लोनावला जाना चाहिए, उसके पिता का एक पुराना घर है, उसे वहाँ एक लॉज खोल लेना चाहिए, उसे गुजारा करने के लिए पर्याप्त पैसे ज़रूर मिल जाएँगे। पहले टैक्सी ड्राइवर के रूप में काम करते हुए उसकी कई पुलिस अधिकारियों से मुलाकात हुई थी। लॉज खोलने के बाद ही उसका पुलिस विभाग से संपर्क टूटा था। आज अचानक, जब उसने डीवाईएसपी चौधरी और इंस्पेक्टर काले को आते देखा, तो उसने उन्हें चाय पिलाने का फैसला किया।

जैसे ही मैंने कहा कि बहराम और मेरा एक पुराना परिचित है, चौधरी ने पूछा,

वह कैसी है?

जब ब्रोगेंज़ा डी.आई.जी. थे, तब वे शिकार के लिए दाजीपुर आते थे। एक बार यह बहराम भी उनके साथ आया था। मेरी उससे जान-पहचान हो गई। बाद में, जब उसने मुंबई छोड़कर लोनावला में एक लॉज खोला, तो वह अक्सर मुझे यहाँ ठहरने के लिए कहता था, लेकिन यह संभव नहीं था, लेकिन अब हमारे संघर्ष ने उसे यहाँ ला खड़ा किया है।

डीवाईएसपी चौधरी ने कहा कि जैसे ही उन्हें पता चला कि झुंझरराव को कानूनी जानकारी है।

"श्री मोर, आपको ऑटोमोबाइल व्यवसाय में आने से पहले कानून की पढ़ाई करनी चाहिए थी।"

"देखो, हाल ही में मुझे कानून की पढ़ाई पूरी करने का मन करने लगा है! मुझे लगता है कि पचास साल की उम्र में वकील बनना हास्यास्पद है!"

इधर-उधर कुछ बातचीत के बाद, डीवाईएसपी ने झुंजाराव को विदाई दी।

लोनावला में काम खत्म हो चुका था। कोल्हापुर जाने की चाहत बढ़ने लगी थी। लेकिन पुणे में उन्हें बहादुर थुबनों के बीच एक शाम बितानी थी। जाने से पहले उन्होंने ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर को धन्यवाद दिया और झुंझरराव मंगू के साथ पुणे के लिए रवाना हो गए।

लोनावला पहुँचकर झुंजाराव को ऐसा लगा मानो उनके सिर पर बहुत बड़ा बोझ हो। लेकिन वहाँ से निकलते ही वह बोझ पूरी तरह से उतर गया।

"तो क्या तुमने दामाद होने के आरोप से बचने के लिए अपनी पहचान छिपाई थी, मंगू?" मंगू के जाते हुए झुंजाराव ने उससे पूछा।
"अगर सरकार आपको बताए तो यह सच नहीं लगेगा, लेकिन मैंने बिरोबा के लिए एक बकरी की बलि देने और उससे सौ लोगों को खिलाने की कसम खाई थी।"
"मुझे भी उस भोजन में आमंत्रित कीजिए!" झुंजाराव ने मुस्कुराते हुए कहा। थुबे द्वारा उपलब्ध कराया गया ड्राइवर पुणे का था। इसलिए, वह अन्य ड्राइवरों की तुलना में अधिक समझदार और जानकार था। वह समझ गया था कि संग्राम के मामले में अचानक मोड़ कैसे आया। उसने कहा,
"सरकार और संग्रामबल अब पूरी तरह बदल जाएंगे! उनका स्वभाव निश्चित रूप से बदल जाएगा!"
"आप बिलकुल सही कह रहे हैं! मैंने उसे कई बार चेतावनी दी थी कि वह इस सहकारी चीनी कारखाने से जुड़े लड़कों के साथ मेलजोल न रखे, लेकिन अब वह बुरी तरह हिल गया है! हमारी पत्नी ने संग्राम को बहुत ज्यादा छूट दे दी थी। हालांकि, शादी के बाद उसमें थोड़ा बदलाव आया था। लेकिन उसे विक्रम डांगरे पाटिल के साथ लोनावला नहीं आना चाहिए था। वह होटल हिलटॉप को जीवन भर याद रखेगा।"
दोनों तरफ से गाड़ियां तेज रफ्तार से आ रही थीं। सड़कें बंद होने के कारण एकतरफा यातायात चल रहा था। फिर भी, थुबे का ड्राइवर बहुत सावधानी से गाड़ी चला रहा था। यह देखकर झुंजाराव ने उससे कहा, "इस सड़क पर साठ की बजाय पचहत्तर की रफ्तार से गाड़ी चलाना बेहतर होता।"
ड्राइवर ने कहा, "सर, मालिकों ने मुझे चेतावनी दी है, इसमें किसी की गलती नहीं है, लेकिन अगर आपकी गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया तो आपको नौकरी से निकाल दिया जाएगा! इन मालिकों ने मेरी जिंदगी बेहतर बना दी है, सरकार ने! इन्होंने मेरे लिए तीन कमरों का घर बनवाया है, और कलमदी साहब को बताकर मेरे बेटे को एक बड़ी कंपनी में नौकरी दिलवाई है। मेरी बेटी की शादी पर पच्चीस हजार रुपये खर्च किए। मैं जिंदगी भर इनके लिए काम करता रहूंगा!"
झुंजरराव ने कहा, “देखो, मंगू, ईमानदारी कैसे सौभाग्य लाती है!”

"सरकार, अगर मैं आपसे कोई सवाल पूछूं तो आप नाराज तो नहीं होंगे ना?" ड्राइवर ने कहा।
‘‘बेशक विचार’’
"जब आपके परिवार में इतने सारे रिश्तेदार और दोस्त हैं, तो आप मंगू धनगर को अपने साथ कैसे ला सकते हैं?"
"मंगू धनगर? ओह, ये तो मेरे व्याही व्याही हैं! इनकी पुत्री यशोमती मेरी बहू हैं।"
"हे भगवान! आपने गलती कर दी, महोदय! आखिर हमारे बॉस ने तो आपके बच्चों की शादी के बारे में पहले ही बता दिया था! तो अब आपकी क्या योजना है?"
"अगर आप ऐसा कहते हैं, तो आप आत्मा के मित्र हैं! मेरे उस समर्पित भक्त ने मेरी जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी!"
जब हम बात कर रहे थे, तभी कार तलेगांव को पार करके पुणे क्षेत्र में प्रवेश कर गई और यातायात और भी बढ़ गया।
धैर्यशीलराव थुबे ने पुष्पा सरदेसाई हत्याकांड में अप्रत्याशित घटनाक्रम की खबर अखबार में पढ़ी। उन्होंने झुंजाराव को बधाई देते हुए कहा, “शाबाश, आप पर से तनाव दूर हो गया। अच्छा हुआ कि आप चले गए!”
"मुझे समझ नहीं आता कि लोग ऐसा क्यों कहते हैं! अगर मैं नहीं भी जाता, तो भी यही होता। मैंने उस अपराध की जांच में कोई दखल नहीं दिया! ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर ने ही मामले की जांच में बाधा डाली!"
"क्या ये सैंडो तालेकर नहीं हैं? मैं इन्हें अच्छी तरह जानता हूँ, ये कई सालों तक छावनी में रहे। इन्हें व्यायाम का बहुत शौक है, इसलिए हम इन्हें 'सैंडो तालेकर' कहते थे!"
सुबह उठकर झुंझरराव ने धैर्यशीलराव को विदाई दी और कोल्हापुर के लिए रवाना हो गए। काले की सलाह पर संग्राम को लोनावला में दो-तीन दिन और रुकना पड़ा।
आरोपी विक्रम को 14 दिनों के लिए पुलिस हिरासत में भेज दिया गया।
जब पद्माबाई को संग्राम की गिरफ्तारी के बारे में पता चला, तो उन्होंने सरकार को फोन किया। लेकिन झुंझरराव ने पद्मा से बात नहीं की, इसलिए पद्माबाई कोल्हापुर आ गईं।
"सरलक्का, ये सब कैसे हुआ?"
"मैं क्या कहूँ, महोदया, यह एक बुरा और अच्छा समय दोनों है।"

"आपका क्या मतलब है?"
पुलिस ने उसे हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया और फिर रिहा कर दिया!
"पापा और संग्रामबल अब कहाँ हैं?"
"तुम्हारे पापा अभी भी लोनावला में थे! मुझे मगशी से फोन आया था।"
पद्माबाई ने ध्यान से सच्चाई सुनी और कहा, "मैंने भी अखबार से समझ लिया था, लेकिन मैंने कहा था कि जब तक मैं आकर आपसे व्यक्तिगत रूप से नहीं मिलूंगी, तब तक मुझे तसल्ली नहीं होगी। यशोमती कहाँ हैं?"
"वो अपने कमरे में है, चलो!"
वह बच्चे को दूध पिलाते हुए साड़ी का किनारा क्षैतिज रूप से पकड़े हुए थी। पद्माबाई दरवाजे पर आईं और बोलीं, "यश, मैं यहाँ हूँ, क्या मैं अंदर आ सकती हूँ?"
“मैं बच्चे को दूध पिला रही थी,” यशोमती ने पद्माबाई का अभिवादन करने के लिए उठते हुए बच्चे को अपनी गोद में रख लिया। तब पद्माबाई ने कहा, “अरे, बच्चे को दूध पिलाते समय आपको नहीं उठना चाहिए।” हालांकि, यशोमती, जो थोड़े ही समय में राजसी रीति-रिवाजों में रम गई थीं, ने अपना सिर ढँक लिया और कहा, “परसों सुशीला मावी आई थीं। लगता है चंदाबेबी की शादी को लेकर कुछ चल रहा है, लेकिन उन्होंने कहा कि पापा के लौटने तक वे कोई फैसला नहीं लेंगी।”
"लेकिन सब ठीक हो जाएगा, अगर बेबी को अच्छी जगह मिल जाती है तो आंटी को किसी बात की चिंता नहीं करनी पड़ेगी।"
पद्माबाई ने बी.एड. की उपाधि प्राप्त की। जब से उन्होंने पढ़ाई शुरू की, तब से उन्हें अपने बोलने और व्यवहार में बदलाव महसूस होने लगा था। पहले वे अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहती थीं। हालांकि झुंझरराव उनका सहारा थे, फिर भी उन्हें लगता था कि भले ही वे सरकार की 'दोस्त' जैसा प्यारा नाम अपना लें, दुनिया उन्हें सरकार की 'प्रेमिका' के रूप में ही जानेगी। शिवराम की असमय और आकस्मिक मृत्यु से उनके चेहरे पर उदासी की एक धुंधली सी झलक दिखाई दी। लेकिन इस बार, उनके चेहरे पर शिवराम के प्रति प्रेम का कोई भाव नहीं था। इसके विपरीत, उनकी आँखों में आत्मविश्वास झलक रहा था।

यशोमती और सरलाबाई से मिलने आई पद्माबाई को जब पता चला कि मोरे सरकार कोल्हापुर जा रहे हैं, तो वह उनसे मिलने के लिए रुक गईं।
सरकार शाम करीब 4 बजे पहुंचे। पहुंचते ही उन्होंने यशोमती से मुलाकात की और बच्चे के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली।
"वे नहीं आए?" यशोमती ने पूछा।
"वह पीछे से आ रहा है। पुलिस को एक छोटी सी जांच के लिए उसकी जरूरत पड़ेगी। लेकिन अभी चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।"
पद्माबाई भी कमरे में आईं। रीति-रिवाज के अनुसार झुंझरराव को प्रणाम करने के बाद उन्होंने कहा, "पिताजी, अच्छा हुआ कि आप लोनावला गए!"
झुंजाराव थोड़ा हँसे और बोले, “सबको यही लगता है, लेकिन पद्मा, मैं तुमसे कहता हूँ, अगर मैं नहीं भी जाता, तो भी यही होता। डीवाईएसपी चौधरी मुझसे लॉज में मिलने आए थे। उन्होंने कहा, ‘सरकार, यह सच है कि तुम्हें थोड़ी मानसिक बीमारी है, लेकिन सच्चाई को सामने लाने का असली कारण ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर थे!’”
फिर, शांत भाव से झुंझरराव ने सबको उस दिन की सारी घटनाएँ बताईं और अंत में कहा, "मैं संग्राम को इन चीनी व्यापारियों की संगति से दूर रहने के लिए कहता रहा हूँ, लेकिन उसे लगा कि मैं सिर्फ़ बदले की भावना से ऐसा कह रहा हूँ। अब विक्रम ने उसे अच्छा सबक सिखा दिया है। अब से वह उन लड़कों की चालों में नहीं फँसेगा। वैसे, पद्मा, कैसी हो?"
"ठीक है पापा, मुझे प्रोफेसर देशमुख से मार्गदर्शन मिलता है, लेकिन उनका कहना है कि वे गरगोटी में ज्यादा दिन नहीं रुकेंगे!"
"क्यों? क्या प्रबंधन के साथ कोई मतभेद है या कुछ और?"
"ऐसा नहीं है, लेकिन उन्हें अपने जिले में शिक्षा क्षेत्र में राजनीतिक नेताओं का बार-बार हस्तक्षेप पसंद नहीं है! वे सिद्धांतों वाले व्यक्ति हैं। वे शायद इस साल के बाद वापस लौटेंगे।"
"क्या तुम अकेले जाओगे?"
पद्माबाई समझदार थीं। उन्होंने कहा, "आपका क्या मतलब है? मुझे समझ नहीं आ रहा कि आपने मुझसे यह क्यों पूछा?"
"आप क्या सोचते हैं? मैं ऐसा क्यों कहूंगा?"

"जब से सर यहां आए हैं, उनके बारे में बहुत सारी अफवाहें उड़ रही हैं। सर एकांतप्रिय और अकेले रहना पसंद करते हैं। वे डेढ़ साल से ज्यादा एक जगह नहीं टिकते! उन्हें नौकरी की जरूरत नहीं है। उनका अपना बड़ा संतरे का बाग उन्हें सालाना चार से पांच लाख रुपये देता है, इत्यादि!"
"लेकिन पद्मा, क्या तुमने उन्हें किसी महत्वपूर्ण मामले के बारे में सूचित किया?"
"कौन से?" पद्माबाई ने पूछा।
‘‘क्या वह शादीशुदा है या नहीं? अगर शादीशुदा है तो उसकी पत्नी कहां है?’’
"सर, आपकी शादी हो चुकी थी। लेकिन आपकी पत्नी थोड़ी 'असामान्य' थीं, इसलिए आपने उन्हें तलाक दे दिया। आपने ही तो मुझे बताया था!"
"लेकिन मैं इसे बिल्कुल अलग तरह से समझता हूँ!"
"आपको किसने बताया? आपने क्या समझा?"
"ओह, वह हमारे बहादुर भाइयों की करीबी चचेरी बहन थी!"
"तो फिर आपने तलाक क्यों लिया?"
"देखो पद्मा, मुझे इतनी गहराई में जाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। वैसे भी, मैं कभी किसी के निजी जीवन में दखल नहीं देता। सज्जाद धैर्यशील से बात करते समय, मेरे दिमाग में बस उनके मामा की बहन का ज़िक्र ही घूम रहा था! क्या देशमुख ने एक बार शादी की थी या दस बार? मेरा उनके प्रति क्या कर्तव्य था?"
"लेकिन मुझे यह बात पता नहीं थी।"
"अगर आप सचमुच समझना चाहते हैं, तो पुणे जाइए और उनसे मिलिए! वह पुणे में रहती हैं!"
"लेकिन मैं अमरावती भी गया था। मैंने वहां का संतरा बाग भी देखा। बाग में बना फार्महाउस 'ऑरेंज विला' बहुत ही सुंदर है। वहां का फर्नीचर देखने में साधारण लेकिन आधुनिक था। रसोई की साफ-सफाई भी बेहतरीन थी।"
"लेकिन जब पत्नी घर पर नहीं होती तो रसोई की देखभाल कौन करता है?"
"वहाँ एक रसोइया है, है ना? वो तो सालों से वहीं काम कर रहा है!"
सब कुछ सुनने के बाद, झुंजाराव ने पद्मबा से कहा, "तो आपने क्या फैसला किया है?"

"मैंने अभी तक कोई फैसला नहीं किया है। लेकिन मुझे लगता है, अगर मुझे आपकी जान-पहचान की वजह से विदर्भ में कहीं पढ़ाने की नौकरी मिल जाए तो...?"
"उनकी शादी करवा दो! क्या यह सही नहीं है?"
"हां, लेकिन उससे पहले मुझे आपकी अनुमति लेनी होगी।"
"'मेरा? वो किसलिए? अरे, अब तुम आज़ाद हो, तुम अपने फैसले खुद ले सकते हो! इसके अलावा, शिवराम ने यह भी लिख रखा है कि अगर उसे दोबारा शादी करने की ज़रूरत महसूस हो तो उसे कर लेना चाहिए, है ना?"
"वह एक अच्छे इंसान थे, पिताजी! लेकिन सभी 'फायदे और नुकसान' पर विचार करने के बाद आप निर्णय कैसे लेते हैं? मुझे आपकी 'सहमति' चाहिए। उसके बिना मैं कोई निर्णय नहीं लेना चाहती।"
"आज इसमें कोई अत्यावश्यक बात नहीं है, है ना?"
"बिल्कुल नहीं! महोदय, गरगोटी छोड़ने से पहले अभी भी चार महीने बाकी हैं।"
"ठीक है, उससे पहले आप एक बार पुणे जाइए, धैर्यशील की मौसी से मिलिए। उनके अनुभव सुनिए और फिर फैसला कीजिए कि क्या करना है।" पद्माबाई के जाने के बाद, शाम को झुंझरराव तीसरी मंजिल की छत पर आए। वे एक कुर्सी पर बैठ गए। पास ही बैठे मंगू ने कहा, सरकार को मुझे उदगीर जाने की अनुमति देनी चाहिए।
"क्यों? क्या तुम ऊब गए हो या क्या? अभी तुम्हारे साथ वहां कौन है?"
‘‘मेरे पास चार गायें और एक भैंस है, वह गांव चली गई है, मैंने पड़ोसी को बताया था।’’
‘‘तो फिर कल जाओ! क्या तुम अभी लेकी से नहीं मिले थे?’’
"अरे!"
शाम का समय था। झुंझरराव ने लोनावला जाने के बाद से शराब नहीं पी थी।
"मंगू, अलमारी से वो लाल लेबल वाली बोतल और गिलास निकालो!"
अब तक मंगू उनकी संगति में काफी 'प्रशिक्षित' हो चुका था। जब खूंटी भर जाती थी-
झुंजाराव ने अपना गिलास उठाया।
‘चिअर्स मंगू’’,
"राम राम सरकार", ये थे मंगू के जयकारे।

अगली सुबह, झुंजाराव ने अंबावाड़ा स्थित खेत जाने की योजना बनाई। कई दिनों से वह जा नहीं पाया था। जब वह कपड़े पहन रहा था, तभी नीचे से एक वर्दीधारी व्यक्ति की आवाज़ आई। "कोई हमसे मिलने आया है!"

"नाम पूछो!"

नौकर उसका नाम पूछने आया।

"नारायणराव डांगरे पाटिल।"

"नारायणराव? आपका मतलब विक्रम के पिता से है? वह अभी क्यों आए हैं? अच्छा, उन्हें ऊपर भेज दीजिए।"

नारायणराव एक राजनीतिक नेता के वेश में! खादी की इस्त्री की हुई नेहरू कमीज, सिर पर गांधी टोपी, खादी की दो जांघों वाली धोती, लगभग पचास वर्ष के!

‘‘या, या SSS बसा.’’

सरकार, तुम्हारे संघर्ष से क्या भला हुआ है!

"क्यों आपने क्या किया?"

"उसने उस नर्तकी की हत्या कर दी और मेरा नाम मेरे रिकॉर्ड में डाल दिया।"

"ऐसा नहीं हुआ था, नारायणराव, आपके विक्रम ने नशे में धुत होकर हत्या की थी। यह सच है कि हमारा संग्राम उसके साथ गया था, लेकिन उसके पास उस महिला को मारने का कोई कारण नहीं था!"

"आप शायद अपने बेटे को बचाने के लिए ऐसा कह रहे हैं, लेकिन मैं यहाँ सिर्फ आपको यह बताने आया हूँ कि उसने क्या गलत किया।"

"चुपचाप बैठ जाओ, मैं अभी-अभी लोनावला से आया हूँ, मैं तुम्हें बताता हूँ कि असल में क्या हुआ था! फिर तुम तय करना कि इसके लिए कौन ज़िम्मेदार है!"

झुंजाराव ने नारायणराव को घटना का पूरा विवरण बताया और कहा,

"आपके विक्रम की हत्या के बाद, वह अपनी मर्सिडीज में भाग गया। रास्ते में उसकी कार एक बैरिकेड से टकरा गई। दाहिनी हेडलाइट टूट गई। ट्रैफिक पुलिस ने तुरंत पुणे को सूचना दी, जिसके बाद तलेगांव पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने तुरंत उसका मेडिकल परीक्षण कराया। वह नशे में नहीं था, लेकिन उसके कपड़ों पर लगे धब्बे मृतक पुष्पा

सरदेसाई के खून से मेल खाते थे। इसके अलावा, हमारे संग्राम का भी लोनावला पुलिस ने मेडिकल परीक्षण कराया, और पता चला कि केवल उसकी सांसों से बीयर की गंध आ रही थी। संग्राम के शरीर पर खून का एक भी धब्बा नहीं था। होटल के वेटर्स ने अब गवाही दी है कि उन्होंने विक्रम को भागते हुए देखा था! अब आप ही बताइए कि इन सबूतों के आधार पर असली हत्यारा कौन है?"

नारायणराव ने सिर हिलाकर मना करते हुए कहा, "तुम कानून को जाने बिना वहाँ गए और वहीं रुके रहे, सच को झूठ और झूठ को सच बना दिया। लेकिन याद रखना, मैं विक्रम को बचाऊंगा। जरूरत पड़ी तो मैं सुप्रीम कोर्ट तक जाऊंगा!"

नारायणराव का चेहरा लाल हो गया था। वह अपनी सीट से उठे और तेजी से सीढ़ियों से नीचे उतर गए।

झुंजरराव ने मंगू से कहा, "देखो, मंगू, यह पैसों का खेल है! यह सज्जन तो सीधे-सादे लोगों की बात सुनने को भी तैयार नहीं हैं! वे तो सुप्रीम कोर्ट की बात कर रहे हैं!"

मंगू ने कहा, "यह बहुत बड़ा झटका है जब थाकाला की सरकार अदालत में उनकी बेटी के खिलाफ गवाही देती है!"

"आपकी बात सही है। लेकिन कौन सा पिता सच बताने से डरता है?"

झुंजाराव को संग्राम के इस मामले में आरोपी के रूप में बरी होने की संतुष्टि भी नहीं मिल सकी।

अगले दिन, वह और मंगू अंबवाडिया स्थित फार्म के लिए रवाना हो गए।

0-0

इस बीच, वे दस-बारह दिनों तक खेत पर वापस नहीं लौटे थे। हालांकि, उनके द्वारा नियुक्त नौकर खेत के सभी कामों की देखरेख कर रहा था।
"क्या विट्ठल? कम या ज्यादा क्या होता है?"
"सब ठीक है, महोदय। क्या पिछले आठ दिनों में कोई जंगली सूअर आपके गन्ने के खेत में घुस आया था?"
"आप क्या कह रहे हैं?"
"ओह, अब से बीज वरमबलस के खेतों में बोए जाएंगे! पत्नी गन्ने के खाली डंठल चबा रही है! वरमबलस के आधे एकड़ में लगे गन्ने की फसल सूख गई है!"
"तुमने फॉरेस्ट को नहीं बताया?"
‘‘इसकी खबर आ चुकी है। चलो इन्हें मार डालते हैं और फेंक देते हैं।’’
उसे मार डालें? और वे उस आदमी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने में भी संकोच नहीं करेंगे। यहाँ के वन विभाग का पूरा प्रशासन ही ढोंग है!
ठीक है, चलो उस सुअर का ध्यान रखते हैं! मंगू, अभी उदगीर जाने की जल्दी मत करो! पहले उस सुअर का ध्यान रखते हैं। फिर जाओ! अगर तुम मेरे खिलाफ केस करना चाहते हो, तो वन अधिकारी को करने दो!
इस पर मंगू ने कहा, "हमारे इलाके में सरकार ने सूअरों को मारना शुरू कर दिया है, कोंकणी लोगों। वनपाल को खाने का एक टुकड़ा क्यों मिला? वे गपशप कर रहे थे!"
झुंजाराव हँसते हुए बोला, "इन्हें चुप करा देना अच्छा विचार है! नहीं तो एक दिन हमें इन उपद्रवी जीवों से निपटना पड़ेगा!"
जब भी वन विभाग का ज़िक्र होता, झुंझरराव को सिरदर्द होने लगता। अतीत में, उदगीर तेंदुए के मामले में, वन विभाग ने झुंझरराव और मंगू को परेशान करने की कोशिश की थी। मंगू से तेंदुए की खाल भी ज़ब्त कर ली गई थी, लेकिन जब मंत्रालय ने उसे झुंझरराव को लौटाने का आदेश दिया, तो खाल को बड़े धूमधाम से झुंझरराव को लौटा दिया गया। तब से, जब भी झुंझरराव का नाम आता, वन विभाग के कर्मचारी उन्हें नापसंद करने लगे। वे उनसे किसी भी

तरह की परेशानी पैदा करने से भी डरते थे। अब तक, झुंझरराव महाराष्ट्र में काफी मशहूर हो चुके थे।

उस दोपहर, लगभग पचास अंबावडेकर लखु व्रम्बाला के धान के खेत से सुअर को निकालने के लिए इकट्ठा हुए। झुंजाराव ने उन्हें सड़क के किनारे चिल्लाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा, “जब सुअर चिल्लाने से उठे, तो उसे सड़क की ओर नहीं, बल्कि पूर्व दिशा की ओर जाना चाहिए।” व्रम्बाला के खेतों में अनादिकाल से छोटे-बड़े पत्थर पड़े हुए थे। इसी प्रकार, उस क्षेत्र के कई हिस्सों में बड़े-बड़े पत्थर इधर-उधर पड़े थे। एक भूविज्ञानी झुंजाराव के पास आया था। उसने कहा, “ये पत्थर उस लावा से बने हैं जो अतीत में पृथ्वी पर हुए एक विशाल ज्वालामुखी के विस्फोट से निकला था।” उन छोटे-बड़े पत्थरों को हिलाना संभव नहीं था। छोटे पत्थरों में एक पत्थर हाथी के आकार का भी था।

झुंजाराव एक बड़ी चट्टान पर बैठकर अपनी 30 स्प्रिंगफील्ड राइफल में कारतूस भर रहा था। मंगू स्वयं ग्रामीणों को उनकी पुकार में मार्गदर्शन करने के लिए शामिल हो गया।

लखू के गन्ने के खेतों से सूअर पूर्व दिशा की ओर आने लगे और 'हाहा' जैसी आवाजें निकालने लगे। आवाज लगाने वाले जहां भी जाते, वहीं जम जाते।

राइफल की गोली गन्ने के खेत से निकले सूअर की गर्दन में जा लगी। सूअर वहीं पलट गया और लात मारने लगा, फिर कुछ ही पलों में शांत हो गया। जैसे ही चरवाहे खेत से बाहर आए, उन्होंने सूअर को खून के तालाब में पड़ा देखा और खुशी से झूम उठे। चरवाहों में शामिल नौजवान नाचने लगे। कुछ ने अपने सिर पर ओढ़ने वाले दुपट्टे उतारकर हवा में लहराए। उन्हें अपनी खुशी का इजहार करने के शब्द नहीं सूझ रहे थे।

झुंजाराव ने राइफल मंगू को सौंप दी और वे चट्टान से नीचे उतर गए। झुंजाराव, जो अब तक सैकड़ों सूअरों, परेशान करने वाली गायों और आदमखोर तेंदुओं को पकड़ चुके थे, उन्हें उस शिकार में कुछ भी नया नहीं लगा।

लोगों ने आसपास पड़ी सूखी घास, भूसा और पिंजरों को सूअर पर ढेर कर दिया और उसमें आग लगा दी। सूअर की खाल उतारते समय उसके शरीर पर मौजूद मोटे बालों को जलाना पड़ता है। लखु व्राम्बले, विथु माने और मंगू ने उस विशाल जानवर को पलट दिया और उस पर भूसा, घास और चावल का एक और पिंजरा बिछाकर उसकी पीठ को भूना। फिर मंगू ने

अपनी हंसिया से जले हुए बालों को खुरच कर साफ किया और उसका पेट फाड़कर उसमें से फालतू हिस्से निकाल कर दफना दिए। अगला कार्यक्रम भोजन परोसने का था। सभी बटाईदार खाने की तरह कतारों में बैठ गए। मंगू ने हर एक को मटन का एक टुकड़ा दिया। उनमें से कुछ भूखे थे। उन्होंने मंगू से कहा,
और यह भी बता दें कि घर में बहुत सारा खाना है, जिसमें दालें भी शामिल हैं।
"बाकी सबको यह क्यों नहीं मिला?"
जब वह यह कह रहा था, तभी उसे राइफल की आवाज सुनाई दी और उसने देखा कि पास की बस्ती से पांच से पचास लोग फूलों की मालाएं लेकर आ रहे हैं, इस उम्मीद में कि उन्हें भी अपना हिस्सा मिलेगा। उन्हें देखकर झुंझरराव मंगुला ने कहा,
"कृपया, पहले इसे भिखारियों को दे दीजिए, लेकिन देखिए, मेला आ रहा है, उन्हें भी थोड़ा हिस्सा दे दीजिए!"
ग्रामीणों के लिए जंगली सूअर का मांस मिलना एक विशेष अवसर होता है।
विथु माने ने कहा, "खाना बेचने वाले के लिए खाना अलग रख दो!"
"वाह! वाह!" मंगू ने थोड़ी दूरी पर बेंत की कुर्सी पर बैठे झुंजाराव की ओर चलते हुए कहा।
सरकार, आप हमसे क्या करवाना चाहते हैं?
"मुझे कुछ नहीं चाहिए, लेकिन आपकी बेटी को सूअर का मांस का अचार पसंद है, है ना? मुझे उसे एक किलो भेज देना चाहिए! लेकिन सरला इसे नहीं खाती।"
"क्या सुशक्का और बेबीताई खाते में नहीं हैं?"
"अच्छा, उन्हें भी थोड़ा सा भेज दो।"
शिकार वितरण कार्यक्रम समाप्त होने के बाद, झुंजाराव आकर फार्महाउस के बरामदे में बैठ गया और मंगू से बोला,
"तुम आज यहाँ नहीं हो! अगर संग्राम आ गया है, तो जाकर उससे मिलो!"
दरअसल, हाल ही में झुंझरराव के लिए मंगू के बिना रहना नामुमकिन हो गया था। मंगू भी झुंझरराव की सारी आदतें समझ चुका था। आज रंकालियार के ऊपर तीसरी मंज़िल की छत पर बैठकर 'व्हिस्की' पीते हुए भी उसे मंगू की ज़रूरत महसूस हो रही थी। उस शिकार में कुछ खास नहीं हुआ था। लेकिन जंगली जानवरों का हर शिकार एक अनुभवी शिकारी के

लिए चुनौती होता है। उस चुनौती को पार करने के लिए हमने जो अनुमान लगाए थे, उन्हें कैसे अंजाम दिया गया और शिकार के बाद लोगों को जो उत्साह मिला, उन सब पर चर्चा करना भी उतना ही सुखद होता है। इन सब बातों को याद करते हुए किसी को समझाना नामुमकिन है कि व्हिस्की का एक घूँट उस घटना की शर्मिंदगी को कैसे बढ़ा देता है। यह तो खुद अनुभव करने पर ही पता चलेगा। इसीलिए सरकार आज शाम मंगू का साथ चाहती थी। मंगू ने भी ज़रा भी संकोच नहीं किया। अगर संग्राम लोनावला से लौट आया था, तो मंगू उससे मिलने के लिए भी बेताब था।

आज लंबे समय बाद झुंझरराव ने अपना मोटरहोम निकाला। लेकिन पता नहीं क्यों, मोटरहोम निकालते ही झुंझरराव को पद्मा की याद जरूर आ गई!

आज भी वही हुआ। जैसे ही कार वाघबिल को पार करके पज़ार झील के पास पहुंची, झुंजाराव ने पास ही एक समतल जगह पर मोटरहोम रोक दिया।

मंगू ने पूछा, "सरकार ने इतनी बड़ी गलती की है, आप इतने गुस्से में क्यों हैं?"

"मंगू, मैं तुम्हें कैसे बताऊँ, समझ नहीं आ रहा! जब भी मैं यहाँ आता हूँ, मुझे पद्मा की याद आती है! अब मेरी उम्र पचास से ज़्यादा हो गई है। घर पर मेरी पत्नी सरला जैसी समर्पित है, मेरा बेटा बड़ा हो गया है, मेरी बहू यशोमती जैसी गुणी बहू है और हाल ही में मेरा एक पोता हुआ है। दुनिया की नज़र में मेरे जैसे आदमी का किसी जवान विधवा से प्यार करना मूर्खता होगी! लेकिन सच कहूँ तो, मैं पद्मा से दिल से प्यार करता हूँ। उसके शब्द, व्यवहार और विनम्रता बेमिसाल हैं।"

"तो चलो आज ही उसे इसे लेने के लिए मजबूर करते हैं!" मंगू ने घमंड से कहा।

"ओह, अब तो ये भी मुमकिन नहीं है। वो अमरावती के अपने कॉलेज प्रोफेसर देशमुख के जाल में फंस गई है! मुझे नहीं पता कि अब भी उसके मन में मेरे लिए वही भावनाएं हैं जो पहले थीं। चलो, जल्दी घर चलते हैं। ये विचारों का सिलसिला तब तक नहीं रुकेगा जब तक हम थोड़ा आराम नहीं करेंगे।"

मोटर वैन फिर से चालू हुई और कोल्हापुर की ओर चल पड़ी। गाड़ी में व्हिस्की की एक बोतल भी थी। लेकिन झुंझरराव ने गाड़ी चलाते समय शराब की एक बूंद भी नहीं पी। शिकार

और गाड़ी चलाते समय शराब का सेवन करने वालों ने दूसरों की जान खतरे में डाल दी थी। कई बार तो ऐसे शराबी शराब के नशे में अपनी जान भी गंवा चुके थे।
मांगू अचानक बिना किसी कारण के गंभीर हो गया और बोला, "सरकार, अपनी जिंदगी को बाजार मत कहो!"
"ओह, यही तो जीवन का असली मज़ा है! अगर जीवन में सब कुछ आपकी इच्छानुसार हो जाए, तो जीने में कोई आनंद नहीं रह जाता!"
पता नहीं मंगू उस वाक्य का अर्थ समझ पाया या नहीं, वह अजीब-अजीब इशारे करता रहा। ऐसा कई बार हुआ। सरकार जितना व्यावहारिक था, उतना ही भावुक भी हो जाता था। कभी-कभार उसे घुटन महसूस होती थी। लेकिन वह जल्दी ही खुद को संभाल लेता था। उसके जीवन में ऐसी कई घटनाएं घटी थीं। जब उसने पद्मा को गरगोटी के शिक्षण संस्थान में छोड़ा था, तो लौटते समय वह थोड़ा भावुक हो गया था। ऐसा लगा जैसे वह पद्मा से हमेशा के लिए बिछड़ गया हो।
अब भी वही हुआ। केरल के उस पज़ार झील के पास पद्मा की याद आते ही वे भावुक हो गए। जब उन्हें पता चला कि पद्मा प्रो. देशमुख के साथ अमरावती चली गई हैं, तो उन्हें एहसास हुआ कि पद्मा उनसे दूर हो गई हैं। उनका किसी सरकार से कोई संबंध नहीं था। लेकिन कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं कि उनसे बिछड़ने पर बहुत दुख होता है। झुंझरराव तो अपने दोस्त की बेटी को ससुराल जाते समय विदाई देने भी नहीं जाते थे।
किसी को भी यह विश्वास नहीं होता कि एक शिकारी-संग्रहकर्ता इतना भावुक हो सकता है। जब झुंजाराव और मंगू ने मोटर वैन को गैराज में पार्क करके जलदर्शन बंगले पर पहुंचे, तो उन्हें पता चला कि संग्राम लोनावला से लौट आया है। उन्होंने हाथ-पैर धोए, कपड़े बदले और संग्राम को आवाज़ दी।
"यहाँ पहुँचने के बाद क्या हुआ? उन्होंने आपको दो-तीन दिन और क्यों रोक रखा था?"
विक्रम को गिरफ्तार करने के बाद, उन्होंने तलेगांव के उस ढाबे के मालिक का बयान लिया। उन्होंने इसके जवाब में क्या कहा?
उन्होंने बताया कि जब वे हमारे ढाबे पर पहुँचे तो सीधे चल भी नहीं पा रहे थे। उनकी कार की दाहिनी हेडलाइट टूटी हुई थी। उन्होंने कहा, 'मैं आज रात यहीं रुकूँगा।' चूंकि लगभग आधी

रात हो चुकी थी, हमने सोचा कि बहुत देर हो चुकी है, वे सुबह उठकर चले जाएँगे। उन्होंने कुछ खाया-पिया नहीं।
"पुलिसवाले ने पूछा, 'क्या आपको उसके कपड़ों पर खून के कोई धब्बे नहीं दिखे?'"
उसने दुकानदार से कहा, "महोदय हो चुका है, हमें उस पर नज़र क्यों रखनी चाहिए? तब तक तो पुलिस सुबह 6:30 बजे ही आ चुकी होगी। वे उसे ले गए।"
"लेकिन संग्राम, तुम्हें यहाँ रोकने का क्या कारण है?"
"मैंने पुलिस को जो बयान दिया था, यह सोचकर कि हो सकता है कि कल जब मामला अदालत में जाएगा तो मैं इसे बदल दूं या मुकर जाऊं, काले और चौधरी ने कार्यकारी मजिस्ट्रेट के समक्ष मेरा बयान दर्ज किया!"
"लेकिन उन्होंने यह भविष्यवाणी कैसे की कि आप मेजबान होंगे?"
"उन्हें लगा कि विक्रम के पिता सहकारी क्षेत्र में काम करने वाले एक असमिया हैं। वे मुझ पर भी दबाव डालेंगे और मुझे पुलिस के सामने अपना बयान बदलने के लिए मजबूर करेंगे!"
"जी हां। इसमें उनकी भी कोई गलती नहीं है! क्या आप समझते हैं कि विक्रम के पिता यहां जल्दबाजी में आए थे। 'मेरा बेटा निर्दोष है। हमने संग्राम को बचाने के लिए उसे फंसाने की साजिश रची।' उन्होंने यह भी कहा था। लेकिन अब कार्यपालक मजिस्ट्रेट के सामने आपका बयान हमारे हित में भी है। एक बार वह बयान रिकॉर्ड में आ जाए, तो नारायणराव डांगरे का मुंह भी अपने आप बंद हो जाएगा! आप किसी भी हालत में उस बयान से इनकार नहीं कर सकते। इससे स्वतः ही साबित हो जाएगा कि हम विक्रम की मदद करने में असमर्थ हैं! जो कुछ भी हुआ, वह हमने अपने भले के लिए कहा!"
"आपके पास आने के बाद, वह लोनावला भी आया। वह पुणे से कुछ राजनीतिक सामग्री अपने साथ लाया था।"
"क्या इन घोटालों के अलावा राजनीतिक हस्तियों के पास कोई और काम होता है? लेकिन वे काम तो बिल्कुल बेकार ही रहे होंगे!"
"चौधरी साहब ने मीठी-मीठी बातें करके उन्हें विदा कर दिया। फिर भी, उन्होंने होटल वैली व्यू में एक आलीशान सुइट बुक कर रखा था और दो दिनों तक वहीं ठहरे रहे। नारायणराव डांगरेनी ने उनके सभी सामान का ख्याल रखा था।"

"इसे मजबूत बनाए रखना होगा। पुणे के नेता स्कॉच के अलावा कुछ और नहीं पीते। ये सारे विचार मुझे बहादुर थुबे ने दिए थे।"
"पापा, जो भी हुआ, मुझे अब बहुत पछतावा हो रहा है! मुझे उस बेवकूफ के साथ लोनावला नहीं जाना चाहिए था। रास्ते में वह बार-बार ऐसी बातें कह रहा था और ऐसे बर्ताव कर रहा था कि मेरा मन कर रहा था कि मैं उसे गाड़ी में ही रोक दूं और बाहर निकल जाऊं।"
"तुम्हें आने वाले खतरे का अस्पष्ट आभास जरूर हुआ होगा! मुझे यकीन है कि तुम ऐसी गलती दोबारा कभी नहीं दोहराओगे! यशोमती क्या कहती हैं!"
"वो बहुत रोई! उसने मुझे बताया कि तुम एक फिल्म अभिनेत्री की हत्या में शामिल थे। तुमने मोरिया परिवार की प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिला दिया! सोचो मुझे कैसा लगा होगा, पापा, मम्मी!"
मैं उसके सामने अपना सिर पटकने ही वाला था। अब तुम उसे समझाओ। तभी उसका गुस्सा शांत होगा!!”
"मैं तुम्हें बताऊँगा, मैं तुम्हें बताऊँगा, चिंता मत करो।" झुंझरराव नारायणराव डांगरे अपने आगमन के बाद से थोड़ा बेचैन था। उसने बिना सच्चाई जाने झुंझरराव पर जो आरोप लगाए थे, वे पूरी तरह निराधार थे। इंस्पेक्टर काले ने डीवाईएसपी चौधरी के मार्गदर्शन में पुष्पा हत्याकांड की गहन जांच की थी। वह पुणे भी गया था और पुष्पा की मां का बयान दर्ज कराया था। उसमें उसकी मां ने कहा था...
"यह विक्रम डांगरे पुष्पा का पुराना परिचित था। वह कभी-कभार पुष्पा के पास आता था। कई बार पुष्पा उससे बचती रही। पुष्पा उसे 'देहाती' कहती थी। लेकिन उसके बाद विक्रम ने पुष्पा का विश्वास जीत लिया।"
उस दिन उसने पुष्पा से कहा, "आज मेरा दोस्त संग्राम मोरे मेरे साथ आ रहा है। मैंने लोनावला के होटल हिलटॉप में एक कमरा बुक कराया है। आज मैं ज्यादा नहीं पीऊंगा। संग्राम भी ज्यादा नहीं पीता, अगर मैं ज़िद करूं तो वो एक गिलास बीयर पी लेगा। देखना तुम्हें पसंद आए या नहीं!"
पुष्पा ने उससे कहा, "क्या तुम मुझे आज लोनावला उसे खुश करने के लिए ले गए हो?"
उन्होंने कहा, "ऐसा कुछ नहीं है, उनकी शादी पिछले साल हुई थी, उनकी पत्नी बहुत खूबसूरत हैं।"

"तो फिर मैं उसे कैसे पसंद कर सकती हूँ? तुम जाओ, मैं आज नहीं आ रही।" इस पर विक्रम ने कहा, "पुष्पा, तुम कुछ गलत समझ रही हो। मैं बस इतना कहना चाहता था कि वह मेरे साथ आया था।"

फिर भी, पुष्पा उस दिन विक्रम के साथ लोनावला जाने को तैयार नहीं थी। उसने कहा, "तुम मीठी-मीठी बातें करके मुझे ले जाते हो और फिर वहाँ पहुँचकर शराब पीते हो और हंगामा करते हो, मैंने यह सब खुद देखा है।"

"ओह, पुष्पा, वो संग्राम है ना? वो मुझे शराब नहीं पीने देता। मुझे भी हाल ही में शराब से नफरत हो गई है, इसलिए पुष्पा, आज मना मत करना।"

तो विक्रम उस शाम पुष्पा को अपनी कार में ले गया। इस पर डीवाईएसपी चौधरी ने शीलाबाई से पूछा, "क्या पुष्पा ने ऐसे युवकों के साथ मुफ्त में यात्रा की...?"

"उसने कभी किसी से पैसे नहीं मांगे। जब उसे वापस लाया जाता था, तो हम उसे दो हजार रुपये देते थे!"

"तो अगर पुष्पा तुम्हारी कॉल गर्ल होती..."

"मुझे नहीं पता, लेकिन हाल ही में वह ज्यादा डांस प्रोग्राम नहीं कर रही हैं, और उन्हें फिल्मों में भी 'रोल' नहीं मिल रहे हैं।"

"शीलाबाई, मैंने सुना है कि आप काफी समय से फिल्म इंडस्ट्री में हैं!"

"हाँ, लेकिन मैं मेकअप आर्टिस्ट थी। फिल्म निर्माता बड़े ही बदमाश होते हैं। जब पुष्पा छोटी थी, तो वह मेरे साथ स्टूडियो आती थी। तब तो वह इतनी छोटी भी नहीं थी। निर्माता उसे गोद में बिठाकर बड़े प्यार से बिठाता था। पहले तो मुझे लगा कि वह अपनी बेटी को प्यार से सहला रहा है, लेकिन बाद में मुझे उसकी बुरी मंशा समझ आने लगी। मैंने पुष्पा को स्टूडियो ले जाना बंद कर दिया। जब वह बालिग हुई, तो मुझे बताया गया कि मैं उसे एक फिल्म में सहायक भूमिका दूंगी, तो मैंने हाँ कर दी। उसे अच्छे परिवारों से शादी के प्रस्ताव तो मिले थे, लेकिन पुष्पा को सिनेमा से भी बहुत प्यार था। यहीं से उसके पतन की शुरुआत हुई।"

"शीलाबाई, आप भी लोक नाटकों में काम करती थीं। मुझे पता है कि आपने दादा के साथ भी काम किया था।"

"दादा कौन हैं?"

"दादा कोंडके। उस समय उनके लोक नाटक बहुत लोकप्रिय थे। दादा कोंडके की वजह से ही इस नाटक को लोक नाटक का नाम मिला...!"
"दादा देव ईश्वर के सच्चे भक्त थे। उनसे बात करना बहुत सहज था। लेकिन उनके साथ व्यवहार करना बहुत अच्छा था।"
चौधरी ने कहा, "शीलाबाई, क्या पुष्पा ने आपकी वजह से नृत्य सीखा?"
"अब मैं आपको क्या बताऊं, महोदय? मैं उसे बता रही थी कि आप इस फिल्म और नृत्य के चक्कर में पड़ गए। बारामती के एक माली का बेटा पुष्पी से शादी करने के चक्कर में पागल हो रहा था। लेकिन लड़की ने मेरी बात नहीं सुनी। अब महोदय, आपको ये सारी कहानियां सुनाने का क्या फायदा? बेचारी मर गई, उस यंत्र ने उसे मार डाला।"
"संगीत वाद्ययंत्र से आपका क्या तात्पर्य है?"
“यही हुआ। मेरी बेटी हर हाल में मेरा सहारा बनने के लिए चार पैसे कमाती थी। अब वह सहारा भी टूट गया!” शीलाबाई रोते हुए बोलीं।

0-0

हालांकि झुंझरराव लोनावला से लौट आए थे, लेकिन पुष्पा हत्याकांड की जांच की प्रगति की जानकारी उन्हें यहीं से मिल रही थी। इसके अलावा, डीवाईएसपी चौधरी से मिलने के बाद से वे उनसे फोन पर लगातार संपर्क में थे। झुंझरराव को यह नहीं पता था कि शीलाबाई सही थी या गलत। लेकिन बाद में संग्राम से उन्हें पुलिस के सामने दिए गए उसके बयान की पूरी जानकारी मिल गई थी। इसलिए, उन्हें गलतफहमी थी कि संग्राम का नाम उस मामले में दोबारा नहीं आएगा।

हालांकि, पद्माबाई के आने-जाने के बाद झुंझरराव कुछ बेचैन थे। पद्माबाई ने स्वयं प्रो. देशमुख के साथ अमरावती जाने की बात सच बताई थी। इसके अलावा, कल बी.एड. की परीक्षा के बाद, पद्माबाई को उम्मीद थी कि प्रो. देशमुख के जान-पहचान के माध्यम से उन्हें विदर्भ के किसी शिक्षण संस्थान में अध्यापन का काम मिल जाएगा।

पद्मबाईन्ना झुंझरराव ने उस कारण का खुलासा नहीं किया जिसके चलते प्रोफेसर देशमुख ने अपनी पहली पत्नी को तलाक दिया था। इस संबंध में झुंझरराव ने स्वयं पद्मबाईन्ना से कहा,

मैंने उस मामले में आगे पूछताछ नहीं की। क्योंकि मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आप प्रो. देशमुख के साथ इतने 'जुड़े' हुए हैं! अगर आप चाहें तो पुणे जाकर धैर्यशील की मौसी से मिल सकते हैं। आपको उनसे ज़रूरी जानकारी मिल जाएगी!

झुंजाराव की बातों से पद्माबाई को उनके तटस्थ व्यवहार के बारे में थोड़ी और जागरूकता मिली।

झुंजाराव कोल्हापुर के विधि महाविद्यालय में यह पता लगाने गए थे कि क्या वे विधि परीक्षा में 'बाहरी रूप से' बैठ सकते हैं। जब उन्हें पता चला कि उन्हें इसकी अनुमति मिल सकती है, तो पढ़ाई का सवाल खड़ा हो गया! पचास वर्ष की आयु पार कर चुके झुंजाराव के लिए 'छात्र' बनना और परीक्षा देना बहुत मुश्किल काम था। इसके लिए उन्होंने परिवार के एक बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति से सलाह लेने का निर्णय लिया। उनकी दृष्टि में, परिवार की बुद्धिमान व्यक्ति उनकी बहू यशोमती थीं! प्रसव के कारण उनकी शिक्षा भी कुछ समय के लिए बाधित हो गई थी। लेकिन जल्द ही वह एस.वाई. बी.ए. की तैयारी शुरू कर देंगी। यशोमती ने झुंजाराव की सफलतापूर्वक स्नातक होने की इच्छा पूरी कर दी।

"यशोमती, तुम्हारा क्या ख्याल है, क्या मुझे इस उम्र में कानून की परीक्षा देनी चाहिए?"
"पापा, क्या आपने ही मुझे एक बार नहीं कहा था कि इंसान को हमेशा कुछ न कुछ सीखते रहना चाहिए? लोगों की बातों की बिल्कुल परवाह नहीं करनी चाहिए!"
"जी हां, बिल्कुल सही। इसीलिए मैंने आज आपकी सलाह मानने का फैसला किया। कल मैं पुणे जाकर कानून की किताबें खरीदूंगा। सुबह एक बार मैं अंबावाड़ फार्म में किसानों को काम बांट देता हूं और फिर पूरा दिन खाली रहता हूं। इसके अलावा, हाल ही में हमारी युवा सरकारों ने भी कृषि पर ध्यान देना शुरू किया है। कौन जाने मेरा मन पहले की तरह एकाग्र हो पाता है या नहीं? लेकिन मैं पूरी लगन से पढ़ाई करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं।"
"मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ, पिताजी! वैसे भी, इसमें मेरे अपने स्वार्थ भी तो हैं, है ना?"
"यह आपके लिए किस प्रकार का स्वार्थ है?"
"मेरी बीए की डिग्री मिलने के बाद आपकी कानून की किताबें मेरे लिए उपयोगी होंगी!"
"तुम्हारा मतलब हां है! ठीक है।"
जब पद्माबाई सरलाबाई से मिलने आईं, तो झुंझरराव को दोनों की बातचीत समझ नहीं आई। इसलिए उस दोपहर झुंझरराव ने सरलाबाई को ऊपर बुलाया।
"पद्मा क्या कह रही थी?"
"वह थोड़ी परेशान लग रही थी! वह कह रही थी कि सरकार अब मेरे साथ पहले जैसा व्यवहार नहीं करती! लेकिन तुम दोनों के बीच क्या हुआ?"
"मैं क्या करूँ? मैं संग्राम के मामले में व्यस्त थी। मुझे उस पर ध्यान देने का समय ही नहीं मिला। और तो और, जब मुझे पता चला कि उसे अमरावती के उस प्रोफेसर से प्यार हो गया है, तब मुझे एहसास हुआ कि मेरी अपरोक्षा ने एक गलत राह चुन ली है!"
"आपने अब तक उसका साथ दिया है, उसे अपने परिवार का हिस्सा माना है, और उससे इतनी अचानक रिश्ता तोड़ना सही नहीं है!"
"देखो, प्रो. देशमुख का विवाह धैर्यशील थुबी की मौसी से हुआ था। शादी के एक साल के भीतर ही देशमुख ने उन्हें तलाक दे दिया। इसलिए मैंने पद्मा से कहा कि तुम अकेले पुणे जाओ और धैर्यशील की मौसी से मिलो, उनके अनुभवों के बारे में सोचो, और फिर तय करो कि प्रो. देशमुख के साथ अपने रिश्ते को आगे बढ़ाना है या नहीं! मुझे उनके निजी मामलों में

दखल क्यों देना चाहिए? मैंने अब तक उनके लिए जो कुछ भी किया है, वह उनके भले के लिए ही किया है, है ना?"
"हां, वह इस बात से पूरी तरह वाकिफ है, इसीलिए मुझे लगता है कि इस बार आपके अचानक किए गए व्यवहार से उसे कुछ हद तक ठेस पहुंची है!"
वैसे भी, अभी इस बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं है। मुझे अब भी लगता है कि उसे पुणे जाकर धैर्यशील की मौसी से मिलने तक कोई फैसला नहीं लेना चाहिए! वैसे, सुशीलाबाई के बच्चे की शादी का क्या हुआ?
"हमने दो-तीन जगहों का दौरा किया, लेकिन बेबी को वे जगहें पसंद नहीं आईं।"
"बच्चे से क्या उम्मीदें हैं?"
"क्या पता, सुशीला भी आजकल चिंतित महसूस कर रही हो।"
"देखो, सरलाबाई, मुझमें अब वो उत्साह नहीं रहा जो पहले हुआ करता था। हमें किसकी और कितनी चिंता करनी चाहिए? अब मैं बस खेत पर जाकर रहूँगा और कानून की परीक्षा दूँगा जिसमें मैं कई सालों से असफल होता आ रहा हूँ! यशोमती ने मुझे प्रोत्साहित किया है।"
"यशोमती? और क्या वह आपको प्रोत्साहित करेगी?"
"जी हां, जी हां। मेरी राय में, वह हमारे परिवार में एकमात्र समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति हैं!"
"आप परीक्षा दे दीजिए, मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन सोचिए कि इतने वर्षों की अनुपस्थिति के बाद आपको इसकी कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी।"
आपने बहुत कुछ किया है! आप जैसे लोग शिक्षा के आनंद को नहीं समझ पाएंगे!
"नहीं, मैं समझती हूँ, हमने अब तक अपना जीवन अच्छे से चलाया है, है ना? मुझे पता है कि सर्विस मोटर खराब होने पर हमें कितनी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था! उन दो सालों में मैं एक भी नई साड़ी नहीं खरीद पाई। बाहर से इतने सारे निमंत्रण मिलने के बावजूद, मैं किसी भी समारोह में नहीं गई!"
यही सच्चाई थी। झुंझरराव ने सरलाभाई की मितव्ययिता देखी थी। इसलिए वह इस बारे में कुछ कह नहीं सका।

उसी समय के आसपास, खेतों में काम करने वाले बटाईदारों ने अपनी जमीन छोड़ने से इनकार कर दिया। परिणामस्वरूप, बटाईदारों को किसानों को लगभग दो सौ एकड़ जमीन सौंपने के लिए मजबूर होना पड़ा।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, स्थिति धीरे-धीरे बदलती गई। पचास एकड़ में अनाज और सब्जियां उपलब्ध थीं। इसीलिए सरकार समाज में अपनी मूंछों पर मुट्ठी बांधकर अकड़कर चल रही थी।

संग्राम का विवाह हो गया और धीरे-धीरे मोरे परिवार का गौरव उसे वापस मिल गया। सरलाबाई को अपनी बहू पर गर्व हुआ!

झुंजाराव ने कभी भी किसी कबीले से संबंध रखने का घमंड नहीं दिखाया, और न ही आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर भी उन्होंने कभी अहंकारपूर्ण व्यवहार किया। परिस्थितियों का सामना ईमानदारी से करना उनका स्वभाव था।

दिन बीतते गए। छह महीने पलक झपकते ही बीत गए। पद्माबाई ने बी.एड. की डिग्री हासिल कर ली। जब प्रो. देशमुख अमरावती लौटने वाले थे, तो उन्होंने पद्माबाई से एक सीधा सा सवाल पूछा, "तो आपका क्या हाल रहा?"

लेकिन प्रो. देशमुख के यह पूछने से पहले ही, पद्माबाई धैर्यशील की मौसी से मिलने पुणे आई थीं। उस समय पद्माबाई मृणाल को नहीं जानती थीं। वह पीडब्ल्यूडी में क्लर्क के रूप में काम करती थीं। मृणाल ने सोचा कि उन्हें किसी पर बोझ नहीं डालना चाहिए। उस दिन रविवार था। मृणाल घर पर थीं। पद्माबाई पुणे स्टेशन पर ट्रेन से उतरीं और रिक्शा से थुबे पार्क आईं। धैर्यशील उस दिन नगर रोड स्थित अपने 'फार्म' गए हुए थे। मृणाल को जरा भी अंदाजा नहीं था कि पद्माबाई नाम की कोई महिला उनसे मिलने आएगी।

रिक्शा का बिल चुकाने के बाद पद्माबाई थुबे के बंगले पर आईं। धैर्यशील के अल्सेशियन कुत्ते ने भौंका। यह आवाज सुनकर मृणाल सब्जियां चुनते हुए उठकर बाहर आ गई।

"तुम्हें कौन चाहिए?" मृणाल ने पूछा। पद्माबाई ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

मुझे लगता है कि तुम ही वो हो जिसे मैं चाहता हूँ!

मृणाल ने भी हल्की सी मुस्कान के साथ कहा,

"आप कहाँ से हैं?"

"कोल्हापुर से! मेरा नाम पद्मा सावंत है। मैं आपसे बिना किसी पूर्व परिचय के आई हूँ। मुझे क्षमा करें!"
"माफ़ कीजिए, मैं आपको टोकने के लिए! अंदर आइए! नहा लीजिए, मैं आपके लिए चाय बना देती हूँ। फिर हम बात करेंगे!"
मृणाल का व्यवहार बहुत ही विनम्र था। पद्माबाई ने बिना किसी झिझक के अपने स्नानघर में जाकर हाथ-पैर धोए और बाहर आ गईं।
"क्या आप चाय के साथ कुछ खाना चाहेंगे?"
"मुझे परेशान मत करो, उगाचा। मुझे चाय के साथ एक-दो बिस्कुट चाहिए।" मृणाल थाली से चाय और बिस्कुट लेकर आई। पद्माबाई ने कमरे का जायजा लेने के बाद कहा।
"तुम यहाँ अकेले हो!"
"जी हाँ! मेरे चाचा नदी के उस पार रहते हैं। मैं यहाँ अकेली हूँ।"
पद्माबाई ने खाली चाय का प्याला ट्रे पर रख दिया। उन्होंने थोड़ा गला साफ किया और बोलीं। मेरा नाम पद्मा सावंत है...
.....''
अपनी सारी निजी जानकारी देते हुए पद्मबाई ने कहा, "दरअसल, मुझे आपसे पहले ही संपर्क करना चाहिए था। लेकिन मैं बी.एड. कर रही थी। परीक्षा हुई और मैं उसमें उत्तीर्ण हो गई।"
अपनी जानकारी साझा करते हुए पद्माबाई ने झुंझरराव से अपनी जान-पहचान का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, “जब मैं असहाय थी, तब मेरी मुलाकात एक धर्मगुरु से हुई। झुंझरराव मोरे अंबावडेकर सरकार!”
मृणाल ने तुरंत कहा, "मैं उन्हें जानती हूं। उनका हमारे परिवार से बहुत पुराना रिश्ता है। मुझे उनके बेटे की शादी, लोनावला अभिनेत्री हत्याकांड में उनकी गिरफ्तारी और बाद में उनकी रिहाई, इन सब के बारे में पता है।"
"तो, पिताजी ने खुद मुझे निर्देश दिया था कि मैं आपके पास आऊं और आपसे व्यक्तिगत रूप से प्रो. देशमुख के साथ आपके मतभेद का कारण पूछूं।" प्रो. देशमुख का नाम लेते ही मृणाल के माथे पर तिरस्कार का एक अस्पष्ट भाव दिखाई दिया।
मृणाल ने पूछा, "आप उनके बारे में क्यों जानना चाहते हैं?"

"उन्होंने मुझे शादी का प्रस्ताव दिया!" "पापा लोनावला जाते समय तुम्हारे मामा के घर रुके थे। उन्होंने बताया कि प्रो. देशमुख ने अपनी पहली शादी के बाद तुम्हें तलाक दे दिया था। उस समय उन्होंने मुझसे कहा, 'अगर तुम चाहो तो पुणे जाकर उनसे मिल सकती हो और उनसे पूछ सकती हो कि असल में क्या हुआ था।' इसीलिए मैंने बिना किसी पूर्व परिचय के यहां आने की हिम्मत की!"

"शाबाश, तुम आ गए, कम से कम एक और व्यक्ति की जान तो बच जाएगी!"

"लेकिन असल में हुआ क्या?"

"पद्माबाई, मैं क्या कहूँ, यह महज़ एक कारण नहीं है, बल्कि कई कारण हैं। क्या आप आज मेरे साथ रहेंगी? हम दोपहर के भोजन के बाद इस विषय पर आराम से बात कर सकते हैं!"

"ठीक है। लेकिन इससे आपको कोई असुविधा तो नहीं होगी, है ना?"

"बिल्कुल नहीं।"

मृणाल बातें करते हुए खाना बना रही थी।

"आप मांसाहारी भोजन खा सकते हैं, है ना?"

"हां, मैं भी उन्हें बनाता हूं, लेकिन हाल ही में, शिवराम के निधन के बाद से, ऐसी कोई घटना नहीं हुई है।"

मुझे पता है तुम्हारे पापा मांसाहारी खाना खा सकते हैं।

"अरे, वो परिवार शिकारी है। पिताजी जवानी में खूब शिकार करते थे। वो आज भी शिकार का कोई मौका नहीं छोड़ते। परसों उन्होंने अपने खेत में घुस आए एक जंगली सूअर का शिकार किया था। मैं उस समय गरगोटी में था, लेकिन सरलाक्का ने मुझे अचार वाले सूअर के मांस का एक डिब्बा भेजा था।"

मृणाल को बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि पद्माबाई इतनी बातूनी होंगी। दोपहर में दोनों ने साथ में खाना खाया। उन्होंने उन पापलेट्स की करी बनाई जो वे एक दिन पहले महल में लाए थे। उन्होंने कुछ टुकड़े तल भी लिए!

"मृणालताई, आप कोंकणी शैली में मछली करी बनाती हैं। मेरे ससुराल वाले सावंतवाड़ी से हैं, और सावंत परिवार ने बाद में जमीन लेकर सांगली जिले के कवथेमहांकल में बसना शुरू कर दिया। लेकिन उनके परिवार में कोंकणी परंपराएं अभी भी कायम हैं। अगर हमारे ससुराल

वालों को शाम को मछली नहीं मिलती थी, तो वे कुछ 'सुक्कट' खा लेते थे। वे सत्तासी साल तक जीवित रहे।"
भोजन के दौरान हमने एक-दूसरे के पारिवारिक इतिहास पर भी चर्चा की।
दोपहर में वे दोनों मृणाल के शयनकक्ष में आए। मृणाल ने बात करना शुरू किया।
"राव बहादुर थुबे मेरी चाची के पति थे! एक समय वे बहुत सम्मानित व्यक्ति थे। वे राजेर जवादे और संस्थानिक जाया करते थे।"
जब मेरी शादी की उम्र हुई, तो मुझे प्रो. देशमुख के घर के बारे में पता चला। राव बहादुर की पत्नी कुछ हद तक पुराने ख्यालों की थीं। शादी से पहले, मैंने देशमुख परिवार की तीन पीढ़ियों के बारे में पता किया। पता चला कि देशमुख हाल ही में इंग्लैंड से लौटे थे, बहुत ही समझदार दिखते थे, परिवार और बेटे को पसंद करते थे, और किसी ने भी उनसे आगे कोई सवाल नहीं किया, इसलिए मैंने उनसे शादी कर ली।
पद्माबाई ने पूछा, "कहाँ, यहाँ पुणे में या अमरावती में?"
"हमारी शादी नागपुर में हुई। प्रो. देशमुख को पुराने जमाने की शादी पसंद नहीं थी, इसलिए उन्होंने पंजीकृत विवाह कराने का फैसला किया। हालांकि मेरी चाची का परिवार धनी था, मेरे पिता की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। उन्होंने भी हमारे 'पंजीकृत' विवाह पर कोई आपत्ति नहीं जताई। शादी के बाद हम पंद्रह दिनों के लिए श्रीनगर चले गए।"
"हनीमून के लिए?"
"चाहे मैं किसी भी तरह से सोचूं, वहां जाने के बाद ही मुझे देशमुख के चरित्र की एक खामी नजर आने लगी। वह एक 'क्रूर' था!"
"आपका क्या मतलब है? मुझे क्या करना चाहिए?"
"जब तक इससे मुझे शारीरिक दर्द नहीं होता था, तब तक यह मुझे उत्तेजित नहीं करता था!"
"शारीरिक पीड़ा पहुँचाने का वास्तव में क्या अर्थ है?"
"वह मेरी उन जगहों पर चुटकी काटता, खरोंचता और बाल खींचता था जहाँ वह नहीं चाहता था। ऐसा पंद्रह से बीस मिनट तक करने के बाद, सब कुछ सामान्य हो जाता था। मैं इस बात से हैरान थी कि यह वही सज्जन क्यों थे जो मुझे शारीरिक रूप से प्रताड़ित कर रहे थे!"
"हे भगवान! क्या हर बार ऐसा ही होना ज़रूरी है?"

"जी हां, सही कहा ना? मेरा दिमाग अजीब तरह से उलझन में पड़ गया। नतीजतन, मैं श्रीनगर शहर के चारों ओर फैली स्वर्गिक सुंदरता का आनंद नहीं ले पाया।"
"लेकिन तुम्हारा वन-नाइट स्टैंड तो ठीक-ठाक चल रहा था, है ना?"
"पद्माबाई, आपको शारीरिक रूप से प्रताड़ित करने वाले व्यक्ति के साथ यौन संबंध बनाने का सुख कैसे मिला? मुझे तो बेहद असहज महसूस होता!"
"लेकिन वे बेडरूम के बाहर कैसा व्यवहार करेंगे?"
"उसका व्यवहार बिल्कुल सामान्य था। वह इंग्लैंड में अपने दोस्तों को उस शिक्षण संस्थान के प्रोफेसरों के व्यक्तित्व के बारे में बताता था जहाँ वह पढ़ता था। उस समय मैंने सोचा, ऐसे नेक स्वभाव वाले व्यक्ति को 'क्रूरता' का श्राप क्यों दिया जाना चाहिए?"
"पंद्रह दिन बाद हम अमरावती लौट आए।"
"लेकिन मृणालताई, जब वह सामान्य था तो क्या आपने उसे सुधारने की कोशिश नहीं की थी?"
"मैंने बहुत कुछ देखा। उस समय वे मुझसे कहा करते थे, 'इसे भूल जाओ, प्यारी!'"
"मैं अमरावती से चार दिन के लिए पुणे आई थी, लेकिन अब यहीं स्थायी रूप से रहूंगी! मैं देशमुख का थप्पड़ नहीं देखना चाहती थी! हर कोई मुझसे पूछता रहता था, 'मृणाल, तुम अमरावती क्यों नहीं जा रही हो?' लेकिन मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया। वे मुझे पागल कर देते। पद्माबाई, मुझे बताओ मेरे मन में क्या चल रहा है।"
"ज़रूर, बताओ!"
"कोई भी महिला ऐसे पुरुष के साथ यौन संबंध नहीं बना पाएगी जो बिना किसी कारण के उसे शारीरिक पीड़ा पहुंचाता है और बिना उकसावे के हिंसा करता है!"
मृणाल का मार्मिक अनुभव सुनकर पद्मबाई ने कहा, "हमारे पिता का व्यवहार तो उनके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है!"
"क्या पापा झुंझरराव हैं?"
"हां, मुझे अभी भी वो पल याद हैं जो हमने साथ बिताए थे! वो एक मजबूत व्यक्तित्व वाले इंसान थे, लेकिन जब भी हम साथ होते थे, मुझे लगता था कि वो पल कभी खत्म नहीं होंगे।"
"मुझे पता है ऐसा नहीं था। लेकिन क्या सरकार की पत्नी नेक और गुणी नहीं है?"

"ऐसा क्यों है, जबकि उनका बेटा भी शादीशुदा है?"
"क्या वे इस उम्र में भी आपसे इतना प्यार से पेश आते हैं?"
"मृणालताई, मैं आपको एक बात बता दूं, मनुष्य स्वभाव से बहुविवाही होता है। उसे अपनी वास्तविक पत्नी के साथ जो सुख नहीं मिलता, वह अपनी प्रेमिका के साथ रहकर प्राप्त करता है। चाहे मनुष्य की उम्र कितनी भी हो।"
"लेकिन आपने कहा था कि आपकी शादी मेजर शिवराम सावंत से हुई है!"
"हां। लेकिन शिवराम ने शादी से पहले ही मुझे यह बात बताई थी, उन्होंने कहा था, 'देखो पद्मा, तुम एक सैनिक, एक सेना अधिकारी से शादी कर रही हो। हम यह अनुमान नहीं लगा सकते कि यह वैवाहिक जीवन कितने समय तक चलेगा।'"
लेकिन अगर मेरी असमय मृत्यु हो जाती है, तो आपको किसी योग्य पुरुष से दोबारा शादी कर लेनी चाहिए। अगर शादी संभव न हो, तो मुझे लगता है कि आपको किसी गुणी और प्रतिष्ठित पुरुष को अपना मित्र बनाना चाहिए और उसके साथ जीवन भर रहना चाहिए। क्योंकि स्त्री चाहे कितनी भी गुणी क्यों न हो, आजकल वह अकेले नहीं रह सकती।
"यह आपके दिवंगत पति की राय है, लेकिन अगर आप झुंजाराव चाचा से दोस्ती कर लें तो उनकी पत्नी और रिश्तेदारों को कैसा लगेगा?"
"ओह, ये तो बहुत ही दिलचस्प वजह है! संग्राम के जन्म के दो साल बाद सरला का देहांत हो गया। वो बेटी चाहती थी। लेकिन गर्भावस्था के दौरान अचानक उसकी 'आपातकालीन' सर्जरी करानी पड़ी। बेटी होने की उसकी उम्मीद हमेशा के लिए टूट गई। इतना ही नहीं, उस सर्जरी के बाद उसकी यौन इच्छा भी खत्म हो गई। उस समय पापा की उम्र सिर्फ 42 साल थी! रोज़ाना व्यायाम, सैर, कभी-कभार शिकार, इन सब की वजह से उन्हें भी अचानक अकेले रहना पड़ा। इसलिए सरला ने उनसे कहा था, 'अगर आप चाहें तो दोबारा शादी कर सकते हैं। मोर्या परिवार में दो बार शादी करने की परंपरा है।' लेकिन पापा को शादी का विचार पसंद नहीं आया। उन्होंने कहा कि 'यौन जीवन' का मतलब जीवन के सारे सुख नहीं होते। पापा के ऐसा कहने के बावजूद, उन पर थोपे गए ब्रह्मचर्य का अनचाहा नकारात्मक असर पड़ने लगा। मैं न खा पाती थी, न सो पाती थी, यहाँ तक कि दोस्तों के साथ भी नहीं रहना चाहती थी। बस यूँ ही, एक-दो साल बाद, मैं विधवा हो गई।" मेरे देवरों ने मुझे शिवराम की संपत्ति में हिस्सा नहीं

दिया। माहेर भी उनमें से एक था। लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि मेरे देवर-भाभी मुझे स्वीकार करेंगे। तब मैंने कानून के अनुसार मिलने वाली संपत्ति के लिए अदालत जाने का फैसला किया। लेकिन उससे पहले, मेरे दोस्तों ने मुझे 'झुंजरराव मोरिया से सलाह लेने' का सुझाव दिया। मैं कोल्हापुर आ गया। वहाँ मेरी मुलाकात मेरी दूर की रिश्तेदार सुशीलाबाई दफला से हुई। उनके पति ने उन्हें छोड़ दिया था। वह और उनकी बेटी अपनी सौतेली माँ के सहारे जी रही थीं।

"सुशीलाबाई या सरलाबाई कौन हैं?"

"प्यारी बहन! लेकिन वह भी मोरे के घर में नहीं रहती थी। वह राजारामपुरी में अपनी बेटी बेबी चंदा के साथ किराए के मकान में रहती थी। जब मैंने उसे अपनी परेशानी बताई, तो उसने कहा, 'हमारे जीजा, झुंझरराव मोरे, वकील तो नहीं हैं, लेकिन उन्हें कुछ कानूनी ज्ञान है। इसके अलावा, वे समय-समय पर इस इलाके के लोगों को मुफ्त सलाह भी देते हैं।' सुशीला बाई की बदौलत ही मैं झुंझरराव तक पहुँच पाया।"

बार-बार मिलने-जुलने से मुझे अनजाने में ही उनसे स्नेह हो गया। उन्होंने निस्वार्थ भाव से मेरे साथ हुए अन्याय को दूर करने का प्रयास किया। वे सफल भी हुए। मेरे बहनोई द्वारा उन्हें दिया गया एक ही नोटिस कारगर साबित हुआ।

"तो आपने बी.एड करने के लिए गार्गोटी क्यों चुना?"

"पिताजी ने मुझसे कहा, 'पद्मा, तुमने बीए तो कर लिया है। यहाँ आते ही बी.एड. कर लो। तुम्हें कहीं भी शिक्षिका की नौकरी मिल जाएगी। हर महिला को इतना सशक्त होना चाहिए कि वह अपने पैरों पर खड़ी हो सके! इसके अलावा, छत्रपति शाहू महाराज ने भी महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने की नीति अपनाई थी। वे चाहते थे कि उनकी बहू, जो कम उम्र में विधवा हो गई थी, डॉक्टर बने, लेकिन रानी इंदुमती के लिए दुर्भाग्यवश, छत्रपति शाहू महाराज का उसी वर्ष देहांत हो गया। यह सब इतिहास झुंझरराव को ज्ञात था। मैंने झुंझरराव को पिताजी कहना शुरू कर दिया। क्योंकि सही मायने में, वे मेरे मित्र, मार्गदर्शक और संरक्षक थे।"

"अच्छा, अब मुझे याद आया, आप इस सज्जन से गरगोटी के इसी शिक्षण संस्थान में मिले होंगे।"

"हां, लेकिन उस समय मुझे आपकी कही हुई कोई बात समझ नहीं आई!"

मैंने आपको देशमुख का सिर्फ एक पहलू बताया। उससे पहले, उसने शहर के एक राजनीतिक नेता की बेटी से शादी की थी। वहाँ से, वह उस लड़की के गहने और पैसे लेकर इंग्लैंड पहुँच गया था। वहाँ भी, उसने 'वैलेंटीना' नाम की एक लड़की से प्रेम निवेदन किया। उसका प्रभावशाली व्यक्तित्व, अंग्रेजी पर उसकी पकड़ और झूठ बोलने की उसकी कुशलता ही वे कारण थे जिनकी वजह से वह लड़की उसके झांसे में आ गई।

पद्माबाई ने पूछा, "क्या शादी से पहले आपको इनमें से कुछ भी समझ नहीं आया था?"

"बिल्कुल नहीं। अगर उन्हें पता होता, तो क्या कोई जानबूझकर इस आग में कूदता?"

"हे भगवान, मृणालताई, मैं आपके पास एक अच्छा विचार लेकर आई हूँ। मैं आपकी बहुत आभारी हूँ!"

"तुम पर मेरा क्या एहसान है? अपने पिता का सम्मान करो, उन्होंने ही तो तुम्हें मुझसे मिलने की सलाह दी थी, है ना?"

"हाँ, देशमुख ने भी मुझे खूब लुभाया। वो इस संतरे के बाग का नाम तुम्हारे नाम पर रखेगा, अमरावती के अहिल्याबाई गर्ल्स स्कूल में तुम्हें अध्यापिका की नौकरी देगा। सिर्फ तुम ही मेरी बर्बाद हो चुकी शादीशुदा जिंदगी को बचा सकती हो!" उसने मुझे खूब लुभाया।

हे भगवान! पद्मताई, यह तो बहुत अच्छा हुआ कि आप सही समय पर मेरे पास आईं!

उस दिन पद्माबाई मृणाल के आग्रह पर पुणे में ही रुकीं। अगली सुबह धैर्यशील अपनी पत्नी और बच्चों के साथ लौट आया। उसने भी पद्माबाई को पहले कभी प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा था। जब उसे बात समझ आई, तो उसने कहा,

"यह बहुत अच्छा है कि आपको हमारे मृणाल से मिलने का मौका मिला!"

"मैं इससे भी बेहतर हो गई हूँ! मृणालताई, जब भी मौका मिले कोल्हापुर आना। राजारामपुर में मेरा एक छोटा सा बंगला है।"

0-0

अध्याय 21

जब प्रोफेसर देशमुख के गरगोटी से जाने का समय आया, तो वे राजारामपुरी स्थित पद्मबाई के बंगले पर उनसे मिले।

"तो आपका फैसला पक्का है?"

"जी हां, हर दिन उठकर अपना फैसला बदलना मेरी फितरत में नहीं है," पद्माबाई ने दृढ़ता से कहा।

"देखो, क्या तुम झुंझरराव की रखैल बनकर रहना पसंद करोगी या मेरी विवाहित पत्नी बनकर सम्मान के साथ जीना पसंद करोगी!"

"देखिए, श्रीमान देशमुख, मुझे लगा था कि जब मैं आपको अपना फैसला बता दूंगी तो आप मुझसे नहीं मिलेंगे!"

"लेकिन आपने ऐसा एकतरफा फैसला कैसे लिया?"

मैंने यह निर्णय एकतरफा नहीं लिया है, बल्कि पूरी तरह विचार करने के बाद और आपकी पहली पत्नी से व्यक्तिगत रूप से मिलने के बाद लिया है। आपके हित में यही होगा कि आप अब से मुझसे न मिलें।

"मैं अपने हित और हानि को भली-भांति जानता हूँ। इस बारे में सोचो। भले ही झुंझरराव की पत्नी आज तुम्हारी मित्रता के लिए राजी हो रही है, जरूरी नहीं कि वह कल राजी हो जाए। भले ही उसका पति न हो, उसे थोड़ा तो शर्म आती होगी, है ना?"

"श्री देशमुख, मैं इस विषय पर आपसे और बात नहीं करना चाहता।"

"तो क्या मैं झुंझरराव से बात करूं?"

"वे आपसे मिलना तक नहीं चाहते। जब मैंने उन्हें आपके अतीत के बारे में बताया, तो उन्होंने कहा, 'फिल्म 'इट्स नॉट मी' के काज़ी जैसे कई महान लोग आज समाज में आज़ादी से घूम रहे हैं।"

"लेकिन क्या उनके लिए आपसे दोस्ती करना उचित है, जबकि उनकी एक मिलनसार पत्नी, एक विवाहित वयस्क बेटा और एक बहू है?"

"श्री देशमुख, अगर आपमें हिम्मत है तो पापा से मिलिए! उन्हें अच्छी तरह पता है कि उन पर क्या जचता है और क्या नहीं! उनसे ज्यादा व्यावहारिक व्यक्ति आपको नहीं मिलेगा।"

देशमुख को सांत्वना देना असंभव था। जब वे संस्थान पहुंचे, तो उन्होंने पद्मा सावंत को देखा, जो असमय विधवा हो गई थीं, एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्मी थीं और आज असहाय महसूस कर रही थीं, फिर भी उन्होंने अपनी आवाज बुलंद की और बोलीं। प्रोफेसर देशमुख, जो जाने ही वाले थे, बोले,

"यह सच है कि महिलाओं का बाहरी रूप धोखा दे सकता है। चूंकि तुम असहाय और लाचार हो, इसलिए मैंने तुम पर विशेष ध्यान दिया और तुम्हें पास कराया। मेरी वजह से ही तुम्हें यह बी.एड. की डिग्री मिली है।"

"क्या आप वही बात सार्वजनिक रूप से कहेंगे जो आप अभी मुझसे कह रहे हैं?"

मुझे इसकी जरूरत क्यों है?

"तुम बेबस गृहिणियां, जो जहां भी जाती हो खूबसूरत लड़कियों को बहकाती हो, इंग्लैंड क्यों भाग गईं?"

"भागने के लिए नहीं। पीएचडी करने के लिए! पद्माबाई, मैं जा रहा हूँ, लेकिन याद रखना, यह रिश्ता मेरे साथ है! मैंने तुम्हारे पत्र संभाल कर रखे हैं।"

"बेशक, ये पत्र तुम्हारी असलियत जाने बिना लिखे गए थे। अगर तुमने इन पत्रों का दुरुपयोग किया, तो तुम्हें 'न भूत, न भविष्य' जैसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा! हिम्मत रखो! वरना मुझे पापा को बताना पड़ेगा कि तुम मुझे किस तरह की धमकी दे रहे हो!"

"पापा? ये किस तरह के सदाचारी व्यक्ति हैं? पूरी दुनिया जानती है कि किस तरह का व्यक्ति कर्नल शिवराम सावंत की विधवा को उनके मोटर होम से ले जाकर, इतनी कम उम्र में आपके साथ प्रेम संबंध बना सकता है।"

अपने पिता के शर्मिंदा होने के बाद, पद्माबाई उठीं और राजारामपुरी पुलिस स्टेशन को फोन किया।

"हेलो इंस्पेक्टर वागले साहब, मैं पद्मा सावंत हूँ। मैं गरगोटी शिक्षण संस्थान में पढ़ रही हूँ। वहाँ के अंग्रेजी प्रोफेसर, श्री देशमुख, मेरे बंगले पर आए हैं और मुझे 'ब्लैकमेल' कर रहे हैं। क्या आप उन्हें या किसी अन्य सब-इंस्पेक्टर को तुरंत भेजेंगे?"

पद्माबाई ने जानबूझकर ऊंची आवाज में बात की थी। दूर से आती पुलिस जीप के सायरन की हल्की आवाज सुनकर प्रोफेसर देशमुख अपने सिर पर फेल्ट की टोपी पहनकर वहां से बाहर निकल आए।

पद्माबाई ने राहत की एक लंबी सांस ली। उन्होंने इंस्पेक्टर वागले से कहा, जो दरवाजे पर आई पुलिस जीप से उतर रहे थे,

"प्रोफेसर देशमुख ने आपका नाम लेते ही तुरंत वहां से चले गए!"

"देशमुख?"

"जी हां। वे अमरावती से हैं।"

फिर पद्माबाई ने संक्षेप में बताया कि उन्हें हमें क्यों बुलाना पड़ा। जाते-जाते उन्होंने कहा, “आजकल तो डिग्री का दावा करने वाले कई निकम्मे लोग शिक्षा के क्षेत्र में घुस आए हैं। अगर वे कभी दोबारा यहाँ आने की हिम्मत करें, तो हमें तुरंत बता देना। मुझे परसों झुंझरराव मोरे का संदेश मिला था। अपना ध्यान रखना। हो सकता है कोई तुम्हें परेशानी में डाल दे!”

हे भगवान! अब तो पापा पागल हो गए हैं। मुझे अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद यहाँ आते और बंगले में अकेले देखकर पापा ने ज़रूर सही अंदाज़ा लगाया होगा कि कोई मुझे परेशान करेगा! वो तो बड़े ही महान इंसान हैं!

"यह तो वाकई बहुत बढ़िया है, वरना इतने सालों के अंतराल के बाद, क्या इस उम्र में कोई कानून की डिग्री हासिल करना चाहेगा? जब वे आपको फोन करें, तो उन्हें बता देना कि मैं आ चुका हूँ और जा चुका हूँ!"

मैं आपको बता दूं, उन्हें बहुत अच्छा लगेगा।

इसके बाद प्रोफेसर देशमुख ने पद्मबाई नाम त्याग दिया। पूरा जिला झुंझरराव को जानता था, जो उनके पीछे एक पर्वत की तरह खड़े थे। कुछ उन्हें एक कुशल शिकारी के रूप में जानते थे, तो कुछ उन्हें एक समाज सुधारक के रूप में, जिन्होंने अपने इकलौते बेटे यशोमती का विवाह संग्राम से करवाकर सामाजिक परिवर्तन की नींव रखी!

झुंजाराव हमेशा किसी न किसी समस्या से जूझते रहते थे। अब एक समस्या यह थी कि संग्राम द्वारा अदालत में विक्रम के खिलाफ गवाही देने के कारण नारायणराव डांगरे उन्हें परेशान

करने लगे थे। तो अब झुंजाराव पद्मा के साथ आगे क्या करें, जिसने गरगोटी में रहते हुए बी.एड. की डिग्री पूरी कर ली थी?

उसने प्रो. देशमुख का विषय अपने मन से निकाल दिया था। उसके सामने एक के बाद एक समस्याएँ आती जा रही थीं, और वह समय-समय पर उन समस्याओं के समाधान भी सुझा रही थी। उसके चार दिन बाद अखबार में एक विज्ञापन छपा। 'कोल्हापुर के एम.एल.जी. हाई स्कूल में एक महिला अंग्रेजी शिक्षिका की आवश्यकता है।'

झुंजाराव वह संख्या लेकर पद्माबाई के पास आए। उन्होंने कहा, 'देखो पद्मा, यहाँ महारानी लक्ष्मीबाई गर्ल्स हाई स्कूल को एक अंग्रेजी शिक्षिका की आवश्यकता है। मैं नहीं चाहता कि बी.एड. पूरा करने के बाद तुम घर पर बैठी रहो!'

मैं भी यही सोच रहा था कि आगे क्या करूं। अगर मुझे यहां नौकरी मिल जाए तो बहुत अच्छा होगा!

सरलाबाई ने उदास चेहरे से उससे पूछा कि क्या झुंझरराव पद्माबाई की समस्या से बाहर निकल पाएगा या नहीं।

"सुशील की बच्ची चंदा केरल के एक बेकर के बेटे के साथ भाग गई है। सुशील ने दो दिन से कुछ खाया भी नहीं है।"

"चलो गाड़ी में बैठते हैं। चलो हम दोनों जाकर खुद देखते हैं कि यह कैसा है।"

सुशीलाबाई अपनी बहन से मिलने वाले मामूली गुजारे पर जैसे-तैसे गुजारा कर रही थीं। वह बेबी चंदा के लिए एक अच्छा घर ढूंढकर उसकी शादी करना चाहती थीं। चंदा दिखने में सुंदर और पढ़ी-लिखी थी। इसके अलावा, उसे अपने देवर झुंझरराव का भी समर्थन प्राप्त था।

बेबी के दोस्तों का एक बड़ा समूह था। उसे अपने दोस्तों के साथ समय बिताना अच्छा लगता था। लेकिन हाल ही में उसका व्यवहार कुछ अजीब सा हो गया था। इसी वजह से सबको पता चला कि वह फर्नांडीस के बेटे के साथ भाग गई है।

झुंजाराव सरलाबाई के साथ सुशीलाबाई से मिलने और यह जानने आए थे कि वास्तव में क्या हुआ था।

सुशीलाबाई को उन दोनों को देखकर गहरे दुख का अनुभव हुआ। सरलाबाई ने उन्हें गले लगाया और उनके दुख को कुछ हद तक कम किया।

झुंजाराव ने सुशीलाबाई से सिर्फ एक सवाल पूछा, "बच्चा अब कितने साल का है?"
"वह चार दिन पहले ही अठारह साल की हुई!"
"तो अगर उसने फर्नांडेस के बेटे से शादी कर ली, तो इसे गैरकानूनी नहीं माना जा सकता! लेकिन मुझे बताओ, जब तक बात इस हद तक नहीं पहुंच गई, तब तक तुम चुपचाप कैसे बैठे रहे?"
सदमे से उबरते हुए उसने कहा, "तुम कहाँ बैठी हो? सरलेला तो कहती ही रही कि मुझे बेबी की शादी के बारे में कुछ देखना चाहिए!"
"हाँ। यह सच है, लेकिन बेबी कहाँ जाती है? वह क्या करती है? आपको इस पर नज़र रखनी चाहिए थी! बेबी की शादी करवाना मेरे लिए ज़्यादा मुश्किल नहीं था। लेकिन मैंने सोचा, अगर उसकी आगे पढ़ने की इच्छा है, तो उसे पढ़ने दो! लेकिन वह लड़का और वह कहाँ से आए?"
"ये फर्नांडीस हैं, मालाबार बेकरी के मालिक। कोल्हापुर की मालाबार बेकरी मशहूर है। आप जानते ही हैं। हाल ही में फर्नांडीस बेकरी अपने बेटे को सौंपने और बेलगाम में एक और बेकरी शाखा शुरू करने में व्यस्त थे। वो लड़का काफी आकर्षक है।"
"ऐसे कई छोटे लड़के हैं जो बिल्कुल वैसे ही दिखते हैं। लेकिन बेबी का उस लड़के से रिश्ता मजबूत करने के लिए, बेबी और उस लड़के का किसी न किसी समय एक-दूसरे के संपर्क में आना जरूरी है!"
"अब उसकी सहेलियाँ मुझे बता रही हैं। वो लड़का बेबी से कभी-कभार मिलता था। कभी-कभी वो रोटी लाने जाती थी! अरे जीजाजी, यहाँ 12 वीं गली में आपको मालाबार बेकरी के उत्पाद मिल जाएँगे। वो लड़का कभी-कभार वहाँ बैठ जाता था! बेबी, जो रोटी लाने जाती थी, कभी-कभार एक बड़ा सा केक लेकर आती थी! अगर मैं उससे पूछती कि वो केक क्यों लाई, तो वो कहती कि आज किसी सहेली का जन्मदिन है। मैं उसे केक उपहार में देने जा रही थी। उसकी सहेलियों को कोई परेशानी नहीं होती थी। मैं भी इन छोटी-मोटी बातों को नज़रअंदाज़ कर देती थी। लेकिन अब मुझे इसका भारी खामियाजा भुगतना पड़ रहा है।" सुशीलाबाई फिर रोने लगीं!

"अगर मैं रोऊँगी तो क्या होगा? मुझे तो बस बेबी की चिंता है। क्या फर्नांडीस का वो बेटा उसे चार दिन केरल घुमाएगा और फिर उसे अकेला छोड़ देगा? अगर वो उससे शादी कर ले तो ठीक है!"
"शादी?" सरलाबाई ने बीच में ही कहा।
‘‘ओह, वे ईसाई हैं...?’’
"यह अपनी जाति का प्रदर्शन करने का अवसर नहीं है। भले ही वह लड़का अच्छा इंसान हो और उसने बेबी के साथ विश्वासघात न किया हो, इतना ही काफी है! जातिगत भेदभाव का समय समाप्त हो गया है!"
"आपने देखा कि मेरे पति के मुझे छोड़कर चले जाने के बाद मैंने गरिमा के साथ अपने दिन कैसे बिताए। लेकिन उस एक कार्ड ने मेरी आंख पर चोट पहुंचा दी!"
"यह मत सोचो कि काला जादू खत्म हो गया है। मैं आज मलाबार बेकरी जाऊंगी। मैं उसके पिता से मिलूंगी। वह मुझे अच्छी तरह जानते हैं। मैं उन्हें मना लूंगी, बेबी और तुम्हारे बेटे की शादी करवा दूंगी! हम किसी भी बात का विरोध नहीं करेंगे!"
"मैंने यशोमती के विवाह का विरोध किया था, इसलिए भाग्य ने मुझे यह दिया।"
सरकार ने अपनी मूंछें घुमाते हुए कहा, "सुशीलाबाई, किसी के भाग्य में क्या लिखा है, इस बारे में सोचने की कोई ज़रूरत नहीं है। नन्ही चंदा छोटी नहीं थी। वह अपनी रुचियों और हितों को अच्छी तरह समझती थी। एक उम्र में युवा एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं! यह प्रकृति का नियम है। हमें बस इस बात की खुशी है कि फर्नांडीस बहुत दयालु व्यक्ति हैं। वे अपने बेटे के दूसरी जाति की लड़की चुनने पर उससे नाराज़ नहीं होते! वे लगभग तीस-चालीस वर्षों से कोल्हापुर में रह रहे हैं। छत्रपति राजाराम महाराज सुबह नाश्ते में मालाबार बेकरी की रोटी खाते थे! खिस्मास उनकी पत्नी के लिए डोनट्स बनाकर महल भेजा करते थे। फर्नांडीस महल में दिवाली की दावत कभी नहीं भूलते थे। मैं फर्नांडीस को अच्छी तरह जानता हूँ, उनकी एक छोटी बहन थी, बन्नी। वह बहुत बुद्धिमान थी। कौन जाने वह घर से कहाँ गायब हो गई? जवानी की दहलीज पर कौन भरोसा कर सकता है?"
"तो क्या पूरा परिवार ही ऐसा है?" सुशीलाबाई ने पूछा।

"देखो, सुशीलाबाई, किसने किससे शादी की, इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है। महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या शादी के बाद लड़की खुश रहेगी या नहीं!"
झुंझरराव के आने के बाद से सुशीलाबाई काफी हद तक ठीक हो गई हैं।
"चाहे कहीं भी हो। लेकिन उसे खुश रहना चाहिए। मैं बस यही चाहती हूँ!" उसने कहा।
"जी हां," झुंझरराव कुर्सी से उठते हुए बोले, "अब तुमने क्या कहा? कोई बात नहीं! अब से 'मेरी आंख पर चोट लगी है' जैसे शब्द मत बोलना! जो होना था उसके बाद ज्यादा सोचने से केवल कष्ट ही होता है।"
यह सर्वविदित था कि नन्ही चंदा घर से भाग गई थी। लेकिन झुंझरराव के निर्देशों के अनुसार, सुशीलाबाई ने इस मुद्दे को किसी के सामने नहीं उठाया।
उस शाम जब यशोमती चावल चुन रही थी, सरलाबाई ने उससे पूछा, "जब तुम पद्मा के साथ रहती थी, तो बेबी कभी-कभी अपनी सहेलियों के साथ पद्मा के घर आती थी, है ना?"
"काश मैं ऐसा कर पाती, लेकिन उस समय बेबी के किसी भी दोस्त को मेरे प्रति बेबी के प्यार के बारे में कोई जानकारी नहीं थी!"
"आजकल पढ़ी-लिखी लड़कियां इतनी भोली नहीं होतीं। लेकिन तुम्हें उसके अफेयर के बारे में उसकी किसी सहेली से कैसे पता नहीं चला?"
"मम्मी, अगर मुझे ज़रा भी अंदाज़ा होता, तो मैं उसका पीछा करके कुछ जानकारी ज़रूर ले आता! भले ही पापा को अब मामला समझ आ गया है, लेकिन उन्हें इसमें कुछ भी असामान्य नहीं लगा, है ना?"
"तुम्हारे पापा को विदेश में पैदा होना चाहिए था। उनके विचार थोड़े अलग हैं। उनका मानना है कि जाति और धर्म के आधार पर लोगों के बीच मतभेद नहीं होने चाहिए।"
"अब, अगर बेबी चंदा के पिता को पता चले कि बेबी ने फलटन में अंतरजातीय विवाह किया है, तो वे कितने क्रोधित होंगे?"
"लेकिन शोर मचाने से इसका क्या लेना-देना है?"
"रिश्ता? अरे, चाहे कुछ भी हो जाए, वो उसका जैविक पिता है। अगर ज़रा भी शक हो कि हमारे परिवार में पहले ऐसा कुछ हुआ होगा, तो वे लड़की को गोली मारने की बात करेंगे! क्या

तुमने देखा कि तुम्हारी शादी में भी कितने लोगों की नाकें और आंखें फोड़ दी गईं? समाज में कितने लोग हैं जो दस-बीस साल पीछे हैं!"
"सुशीलाबाई को अब एक अलग समस्या का सामना करना पड़ रहा है!"
"कौन सा?"
"डैफल उन्हें हर महीने डेढ़ हजार रुपये गुजारा भत्ता दिया करता था। कौन जाने अब वे उन्हें सिर्फ एक हजार रुपये ही देंगे या नहीं?"
झुंजारराव अगले ही दिन मालाबाड़ी चले गए। फर्नांडीस को संदेह था कि वह एक-दो दिन में उनके पास आ जाएँगे।
‘‘या, या, सरकार.’’
"सरकार, तुम्हारा क्या मतलब है? अब तुम हमारे दुश्मन बन गए हो। अगर वे एक-दूसरे से प्यार करते थे, तो उनके भाग जाने का क्या कारण था?"
"ऐसा कहने की कोई जरूरत नहीं थी, आपका प्रगतिशील रवैया पूरे महाराष्ट्र में सर्वविदित है।"
फर्नांडीस का हाथ अपने हाथ में लेते हुए झुंजाराव ने कहा, "तुम्हें लगेगा ही नहीं कि कुछ अजीब हुआ है। लेकिन दाफला, इस इलाके में उसके कुछ रिश्तेदार कुछ समय तक उसका पीछा करते रहेंगे! वैसे, वे दोनों अभी कहाँ हैं?"
"मेरी बहन उसे पणजी में रखती है। लेकिन मैं जल्द ही उससे बेलगाम में अपनी बेकरी शाखा का प्रबंधन करने के लिए कहूंगा!"
"तो आपको उनके प्रेम प्रसंग के बारे में पहले से पता था?"
"तुम्हारा क्या मतलब है? जब भी बेबी चंदा हमारी बेकरी में आती थी, वह जोसेफ से बातें करती रहती थी। फिर मैंने एक बार जोसेफ से पूछा।"
"यह किसकी बेटी है?"
"झुंजर्राव मोर्या की भाभी, वह और उनकी मां यहां किराए के दो कमरों में रहती हैं, उनके माता-पिता को यह पसंद नहीं है।"
"लेकिन क्या तुम सचमुच उस लड़की से सिर्फ चार दिनों के लिए मजे के लिए प्यार करते हो?"

उसने कहा, "पापा, ऐसी कोई बात नहीं है, मैं उसकी शादी ईसाई रीति-रिवाजों के अनुसार कानूनी तौर पर करवाऊंगा। लेकिन उसकी मां हमारी शादी को स्वीकार नहीं करेगी, यही समस्या है।"

"कोई दिक्कत नहीं, आप सीधे गोवा जाइए, आंटी एलिज़ा को सब कुछ बता दीजिए। वहीं अपनी शादी रजिस्टर करवा लीजिए। आजकल ज़माना तेज़ी से बदल रहा है। लोगों के पास इस बात की चिंता करने का समय नहीं है कि किसने किससे शादी की। आपको बेबीचंदा को पणजी ज़रूर ले जाना चाहिए। उसने 18 वीं कक्षा पास कर ली है, है ना?"

"हां, यह दो दिन पहले समाप्त हो गया!"

"तो फिर कोई समस्या नहीं है।"

माता-पिता के बीच हुई इस चर्चा के बाद, जोसेफ ने कहा, "आपके कुछ रिश्तेदार आधुनिक सोच वाले हैं। मुझे नहीं लगता कि वे हमारी शादी का विरोध करेंगे।"

"नहीं, नहीं, जोसेफ को कोई आपत्ति नहीं होगी, लेकिन मम्मी और आंटी हमें बिल्कुल भी सहमति नहीं देंगी।"

झुंजाराव ने फर्नांडेस से दो घंटे तक बात की।

बेबीचंदा की समस्या उतनी जटिल नहीं थी जितनी झुंझरराव और उसकी माँ ने सोची थी। फर्नांडीस की सहमति से ही जोसेफ ने बेबीचंदा के साथ भागने का फैसला किया था।

"देखिए, श्री फर्नांडीस, उनकी शादी वहीं होगी। लेकिन यहां के लोगों को यह समझना चाहिए कि उनकी शादी कानूनी रूप से हुई है।"

"मुझे बताओ कि इसके लिए मुझे क्या करना होगा, मैं तैयार हूँ!" फर्नांडेस ने कहा।

"उनकी शादी का रिसेप्शन कोल्हापुर में आयोजित करना चाहिए। कम से कम यही होना चाहिए!"

‘‘कबूल! एकदम कबूल!’’

फर्नांडेस जोसेफ की शादी का रिसेप्शन आयोजित करने के लिए सहमत हो गए। उन्होंने अपनी सुविधानुसार बाद में तारीख तय करने का निर्णय लिया।

झुंझरराव के घर लौटते ही उन्हें खबर मिली कि पुष्पा हत्याकांड की सुनवाई पुणे की सत्र अदालत में होगी। लेकिन झुंझरराव को अब इस बात की चिंता करने की कोई जरूरत नहीं थी। संग्राम उस मामले में एक महत्वपूर्ण गवाह था।

"तो हमें इस 'कठिनाई' से बाहर निकलना होगा! हमारे दिमाग में चल रही उलझनें कभी खत्म नहीं होतीं!"

"यशोमती, तुम्हारी महिमा अब सीमा पार करने लगी है! संग्राम से कहो कि वह तुम्हारे लिए बगल वाले दरवाजे पर एक छोटी सी सरकार बना दे।"

‘‘जी SSS’’

यशोमती, जिसने थोड़े ही समय में मोरे परिवार के रीति-रिवाजों को आत्मसात कर लिया था, ने कहा, "पापा अब मुझसे स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के लिए कह रहे हैं!"

‘‘जरूर, जरूर!’’

0-0

नारायणराव डांगरे पाटिल, मुकदमा शुरू होने से पहले एक और प्रयास के रूप में झुंझरराव से मिलने आए। इस बार उनका लहजा कुछ नरम था।
झुंझरराव को सलाम करते हुए उन्होंने कहा,
"तो फिर सरकार को क्या करना चाहिए? मुझे विक्रम के भविष्य की चिंता सताने लगी है! सारे गवाह पुणे जिले से हैं। उनमें से एक भी हमारे प्रति सहानुभूति नहीं दिखाएगा। अच्छा होगा अगर कम से कम संग्रामबल, जो हमारा मित्र है, अपना जवाब थोड़ा बदल दे!"
झुंजाराव हँसे और बोले, “अरे, उसके बयान बदलने से मामले पर ज़्यादा असर नहीं पड़ेगा। तुम नेता लोग सिर्फ़ राजनीति जानते हो, कानून के बारे में कुछ नहीं जानते! अरे, संग्राम आज या कल ‘विरोधी’ हो जाएगा, इसलिए डीवाईएसपी चौधरी ने कार्यकारी मजिस्ट्रेट के सामने उसका बयान दर्ज कराया है। कल पुलिस उस कार्यकारी मजिस्ट्रेट से पूछताछ करेगी! हमारे संग्राम के खिलाफ़ केस दर्ज होगा क्योंकि उसने झूठी गवाही दी है! अब सिर्फ़ तुम्हारा वकील ही इससे निकलने का रास्ता निकाल सकता है! और कोई कुछ नहीं कर सकता।”
"देखो, सरकार, मैं मानता हूँ कि विक्रम गलत है। लेकिन उसे जीवन में कम से कम एक बार सुधरने का मौका तो दो!"
"माफ़ कीजिए नारायणराव, मैं पुष्पा हत्याकांड में आपकी मदद नहीं कर पाऊँगा। पुष्पा की माँ का कहना है कि आप उसके पुराने परिचित थे!"
"वह महिला अब जो चाहेगी वही कहेगी। उसने मुझे संदेश भेजा है। मुझे चार लाख रुपये दो। इसका मतलब है कि मैं अपना बयान बदल दूंगी।"
"तो उसे दे दो! लेकिन नारायणराव, चाहे वो कैसी भी गवाही दे, उसका कोई मतलब नहीं। वो बस इतना ही कह सकती है कि हमारी पुष्पा उस दिन विक्रम को अदालत ले जाने नहीं आई थी। लेकिन चश्मदीद गवाह का हम क्या करेंगे? हिलटॉप के चार कर्मचारियों में से एक को छोड़कर बाकी सभी ने विक्रम को 'फंसाया' है। देखो कहीं वो हमारे खिलाफ न हो जाएं! अगर तुम ऐसा कहते हो, तो विक्रम और हमारे बीच कोई दुश्मनी नहीं है। जो हुआ सो हुआ। पुष्पा फिर कभी जीवित नहीं होगी। अगर वो कानूनी तरीके से इस मामले से बचना चाहता है, तो

बचने दो! लेकिन साथ ही, मेरा संघर्ष भी इस मामले में बेवजह न उलझे। क्या मन में कुछ आया?"

"अब ध्यान करने का क्या फायदा?" नारायणराव उठते हुए बोले।

"एक मिनट रुको, मैं तुमसे कह रहा हूँ, तुम्हारा विक्रम बहुत शराब पीता था। उसका शौक महिलाओं को बहलाना था, और तुमने ही अप्रत्यक्ष रूप से उसे बर्बाद किया!"

"मैंने क्या किया?"

"उसे मर्सिडीज किसने दी? क्या आपने कभी गौर किया है कि वह कार में किसे घुमाता है? आपको यह भ्रम था कि आप पैसे और सत्ता की ताकत से कुछ भी कर सकते हैं।"

हकीकत यही थी। इसी वजह से नारायणराव में झुंझरराव से बहस करने का साहस नहीं था। नारायणराव सीधे गृह मंत्री के पास गए थे। लेकिन वहां सभी ने उन्हें 'अदालती मामला' बताकर टाल दिया।

निर्धारित तिथि पर पुष्पा हत्याकांड की सुनवाई पुणे सत्र न्यायालय में हुई।

'हिलटॉप' होटल के किसी भी गवाह ने आरोपी के पक्ष में कोई सबूत नहीं दिया। काले फौजदार और उप-मुखिया चौधरी गवाहों के पीछे लगे हुए थे। रासायनिक विश्लेषक की रिपोर्ट में आया था कि पुष्पा के कपड़ों पर लगे खून के धब्बे और आरोपी विक्रम के कपड़ों पर लगे खून के धब्बे एक ही 'ब्लड ग्रुप' के थे। जिस जगह विक्रम ने नशे में धुत होकर सड़क के बैरियर से टक्कर मारी थी, उस जगह का पंच और तालेगांव ढाबे पर विक्रम को पकड़ते समय उसकी कार की टूटी हुई दाहिनी हेडलाइट का पंच, दोनों से कोई सबूत नहीं मिला। अभियोजन पक्ष के सभी गवाहों के बयान बिल्कुल एक जैसे थे। यहां तक कि जब नारायणराव ने पुष्पा की मां को दो लाख रुपये देने का लालच दिया, तब भी उन्होंने एक ही बयान दिया। संग्राम ने भी बिल्कुल एक जैसा बयान दिया। जांच अधिकारी काले, ट्रैफिक इंस्पेक्टर तालेकर और उप-मुखिया चौधरी, जिन्होंने मामले की निगरानी की, ने भी गवाही दी। वे सभी पुलिस अधिकारी थे। यह सुनिश्चित करने के लिए पूरी सावधानी बरती गई कि पुणे जिले में सनसनी बन चुके इस मामले को किसी भी कारण से सुलझाया न जा सके।

अंततः, जब सारे सबूत पुख्ता हो गए, तो आरोपी विक्रम का बयान दर्ज किया गया। इसमें उसने अपना बचाव करते हुए कहा, "मैंने स्वेच्छा से शराब नहीं पी। संग्राम ने मुझे बहकाकर शराब पिलाई थी।"
जब कोई आरोपी नशे की हालत में अपराध करता है, अगर वह यह साबित कर दे कि किसी और ने उसे शराब पीने के लिए बहकाया था, तो उसे उस अपराध के लिए बहुत हल्की सजा मिल सकती है। लेकिन विक्रम यह साबित नहीं कर सका।
इसके बाद दोनों पक्षों के वकीलों ने अपनी दलीलें पेश कीं।
जज ने फैसले की तारीख की घोषणा कर दी। अब सबकी निगाहें मामले के नतीजे पर टिकी थीं।
झुंझरराव ने संग्राम को थोड़े समय के लिए एक अज्ञात स्थान पर भेज दिया।
फैसला सुनाए जाने तक झुंजाराव को पुणे में ही रहना था। उस शाम, झुंजाराव और थुबे धैर्यशीलराव थुबे के घर के बंगले के सामने बगीचे में बेंत की कुर्सियों पर बैठे थे। थुबे शराब नहीं पीते थे। वे सिर्फ बीयर पीते थे। एक-दूसरे से 'चीयर्स' करने के बाद, थुबे ने पूछा, "मामले का समग्र स्वरूप कैसा दिखता है?"
झुंजाराव ने कहा, "अभियोजन पक्ष के साक्ष्य उत्कृष्ट थे। लेकिन अंततः, निर्णय न्यायाधीश के हाथ में होता है! भले ही कोई न्यायाधीश हाल ही में न्यायाधीश बना हो, किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता।"
"यह सच है कि न्यायपालिका की पुरानी परंपरा अब नहीं रही! ओह, परसों पुणे में जो घटना घटी। दिन दहाड़े, थाने के सामने, गोपालदास धर्मशाला के सामने, मुंबई जा रहे दो टैक्सी चालकों के बीच मामूली कहासुनी हुई और उनमें से एक ने अपनी जेब से चाकू निकालकर दूसरे पर हमला कर दिया?"
तो? सबूतों का क्या हुआ?
"एक को छोड़कर दस चश्मदीदों ने कहा कि उन्होंने खुद चाकूबाजी देखी थी। चिकित्सीय साक्ष्य भी सही थे।"

"लेकिन मकसद के सबूत को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता; पहले मकसद के सबूत से ही इसे साबित करना पड़ता था, लेकिन जब अपराध चश्मदीदों द्वारा किया गया हो, तो मकसद के सबूत की कोई जरूरत नहीं होती," सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया है।

धैर्यशीलराव पेशे से वकील नहीं थे। लेकिन उन्हें कानून की पेचीदगियों की अच्छी जानकारी थी। झुंझरराव की तरह उन्होंने भी लॉ स्कूल बीच में ही छोड़ दिया था!

झुंजाराव ने कहा, “मुझे उस मामले के परिणाम की चिंता नहीं है। हालांकि, मुझे इस बात की चिंता है कि हमारे संग्राम द्वारा विक्रम के खिलाफ गवाही देने के बाद नारायणराव डांगरे पाटिल क्या कदम उठाएंगे।”

इसी बीच, बहादुर थुबे की चचेरी बहन मृणाल बंगले से बगीचे में आई। पास ही एक खाली कुर्सी पर बैठकर उसने झुंजाराव से पूछा,

"पद्माबाई क्या कहती हैं? वह मेरे पास आईं और एक दिन रुकीं! उनकी अगली योजना क्या है?"

"कोई योजना नहीं है। आपके पास आने से पहले वह कह रही थी कि वह देशमुख के साथ अमरावती जाएगी। लेकिन लगता है आपने उसका दिमाग पूरी तरह से बहका दिया है!"

मैंने उसे साफ-साफ कह दिया था कि अगर तुम जल्दबाजी में कोई फैसला लोगे तो बाद में पछताओगे! वह आदमी बहुत 'खतरनाक' है। सिर्फ उसकी अंग्रेजी पर पकड़ और लंदन लौटने के आधार पर मत फैसला लेना! मेरे पिता ने भी ठीक यही गलती की थी। उन्होंने उसकी उपाधियों और परिवार को देखा! फिर वे बैठ गए और इंतजार करने लगे। लेकिन तब तक समय बीत चुका था।

झुंजाराव ने व्हिस्की का एक घूंट लिया और कहा, “यह सच है कि औरतें जल्दी समझदार नहीं होतीं, चाहे वे कितना भी टोंपे खा लें! लेकिन जब वह आपके पास आई, तो उसने अचानक मेरे पैर पकड़ लिए। उसने कहा, “पापा, मैं गलत थी, आपने मुझे बचा लिया!” मैंने कहा, “मैंने क्या किया? मुझे बस इतना पता था कि किसी देशमुख ने मृणाल को परेशान किया था और उसे घर से निकाल दिया था, लेकिन जब मैंने और पूछताछ की, तो मुझे पता चला कि यह वही ‘देशमुख’ था जिसने पद्मा को बहकाया था, इसलिए मैंने उसे उससे मिलने और सच्चाई-झूठ का पता लगाने के लिए कहा।”

"आपने बहुत अच्छा किया। मुझे आपका यह तरीका बहुत पसंद आया!"
"तो, मेरी उम्र में, उसे सुरक्षा की ज़रूरत थी। खैर, अब यह विषय समाप्त हो गया है। परसों 'पुधारी' में एक विज्ञापन था कि एमएलजी में अंग्रेजी शिक्षक की 'रिक्ति' है। अब एमएलजी का प्रबंधन यूनिवर्सिटी हाई स्कूल के पास है। मैं भी कभी यूनिवर्सिटी हाई स्कूल का छात्र था, है ना? कुछ बहुत बुजुर्ग लोग मुझे जानते हैं।"
"अगर उन्हें वहां नौकरी मिल जाए तो बहुत अच्छा होगा।"
मैं भी कभी-कभार खेत के कामों में उसकी मदद करूँगा!
"लेकिन आपने कहा था कि संग्रामबल आजकल खेती में आपकी मदद कर रहा है, है ना?"
"ऐसा नहीं है कि वह खेती नहीं करता, लेकिन वह खेती पर उतना ध्यान नहीं देता जितना उसे देना चाहिए। मुझे कल जाकर वहीं रहना पड़ेगा।"
क्या यहाँ कोई आवास उपलब्ध है?
"यहां दो पुराने जमाने के कमरे हैं, लेकिन वे वहां चार कमरों वाला एक 'फार्म हाउस' बनाने की योजना बना रहे हैं। आजकल लोगों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। 'मजदूर' समय पर उपलब्ध नहीं होते। जब तक आप खुद इस समस्या का समाधान नहीं करते, तब तक कोई इलाज नहीं है।"
"क्या तुम कुल्हाड़ी अपने हाथ में लोगे?" उस बहादुर आदमी ने पूछा।
"अगर तुम रिश्वत लोगे, तो तुम्हें निगरानी करने के लिए वहीं रहना पड़ेगा!"
झुंजारराव थुबे परिवार को यह बात हमेशा पसंद थी। एक साहसी था और दूसरा 'व्यावहारिक'। दोनों को पूरा विश्वास था कि यदि वे बदलते समय के साथ तालमेल नहीं बिठाएंगे, तो वे अपना शेष जीवन सुखी ढंग से नहीं जी पाएंगे।
झुंजारराव जानबूझकर मुकदमे के नतीजे आने तक पुणे में ही रुके रहे। उन्हें नतीजे में कोई दिलचस्पी नहीं थी।
अंततः, परिणाम मिल गया।
न्यायाधीश ठाकुर ने आरोपी विक्रम को सात साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई। फैसले में उन्होंने कहा कि आरोपी विक्रम ने नशे की हालत में हाथ में पकड़ी हुई टूटी हुई व्हिस्की की बोतल से पुष्पा पर छत्तीस बार वार किया। परिणामस्वरूप पुष्पा को अत्यधिक

रक्तस्राव हुआ और उसकी मृत्यु हो गई। घटना के प्रत्यक्षदर्शी संग्राम मोरे ने भी एकसमान गवाही दी है।

विक्रम नारायणराव डांगरे पाटिल का इकलौता बेटा है। उसके पिता ने ही अनजाने में उसे बिगाड़ दिया है। इतनी कम उम्र में उसकी मनचाही रकम देने या मर्सिडीज जैसी कार दिलाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। लेकिन एक बार जब उन्हें असीमित शक्ति और धन मिल जाता है, तो कोई भी उनके बच्चों से सदाचारी होने की उम्मीद नहीं कर सकता!

इस मामले की जांच एक अजीब मोड़ लेने वाली थी। विक्रम द्वारा अपराध करने और हिलटॉप होटल से भाग जाने के बाद, संग्राम जब कमरे के बाहर इंतजार कर रहा था, तब अंदर आया तो उसने देखा कि खून से लथपथ पुष्पा अपनी आखिरी सांसें गिन रही थी। संग्राम गुस्से में विक्रम द्वारा तोड़ी गई व्हिस्की की बोतल को देख रहा था, तभी होटल के 3-4 वेटर अंदर आए। सबसे पहले उन्होंने संग्राम को देखा! इससे उन्हें भी लगा कि पुष्पा की मौत के लिए वही जिम्मेदार होगा।

लेकिन शांत मन से पूरी स्थिति का अवलोकन करने के बाद, पुलिस इंस्पेक्टर दिलीप काले को यकीन हो गया कि पुष्पा की हत्या संग्राम ने नहीं बल्कि उसके साथ आए विक्रम ने की थी। इसमें ट्रैफिक इंस्पेक्टर श्री तालेकर की गवाही भी बेहद अहम साबित हुई। तीनों, विक्रम, पुष्पा और संग्राम, लोनावला पहुँचने पर तालेकर से मिले थे। तालेकर ने तुरंत इंस्पेक्टर काले को बताया कि अपराध करने के बाद भागते समय विक्रम की कार एक बैरिकेड से टकरा गई थी। पुलिस विभाग, जो आमतौर पर सुस्त रहता था, इस बार बेहद सतर्क हो गया और उसने अपराध की जांच शुरू कर दी।

पुणे ग्रामीण पुलिस अधीक्षक कार्यालय से वायरलेस के माध्यम से संपर्क करने के तुरंत बाद, पुलिस ने ढाबे के पास विक्रम की मर्सिडीज कार को पकड़ लिया। विक्रम उसे एक रात तलेगांव स्थित ढाबे पर ले गया था। तलाशी लेने पर पता चला कि उसने शराब नहीं पी थी। उसकी मर्सिडीज कार की दाहिनी हेडलाइट टूटी हुई थी। कार के अवशेष लोनावला जाने वाली सड़क पर मिले। इन सभी घटनाओं के पंचनामा भी अदालत में सिद्ध हो चुके हैं।

आरोपी विक्रम का बचाव कर रहे वकील ने अपनी दलील में कहा है कि गवाह संग्राम ने उसे शराब पीने के लिए मजबूर किया। लेकिन जब संग्राम गवाह के तौर पर कटघरे में खड़ा था,

तब उसे ऐसा करने के लिए 'उकसाया' तक नहीं गया था। इसका मतलब है कि विक्रम ने स्वेच्छा से शराब पी थी। अगर यह मान भी लिया जाए कि संग्राम इसका कारण था, तो यह बचाव महज़ एक मनगढ़ंत दलील है। इसका तथ्यों से कोई लेना-देना नहीं है।
अब विक्रम के वकील का कहना है कि विक्रम ने इस हत्या की पूर्व योजना नहीं बनाई थी। भले ही ऐसा न हुआ हो, लेकिन शराब के नशे में किसी निर्दोष लड़की की हत्या करना किसी भी कारण से उचित नहीं ठहराया जा सकता।
अभियोजन पक्ष ने इस मामले को संदेह से परे साबित कर दिया है, इसलिए मैं आरोपी विक्रम को दोषी मानता हूँ। दरअसल, उसकी उम्र को ध्यान में रखते हुए, उसे आजीवन कारावास की सजा देने के बजाय, मैं उसे सात वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुना रहा हूँ।
इसके साथ ही उन पर 5 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया गया है। इस 5 लाख रुपये में से 4 लाख रुपये मृतक पुष्पा की माता शिलाबाई को दिए जाने हैं। जुर्माना न चुकाने पर आरोपी को तीन साल की कठोर कारावास की सजा भुगतनी होगी।
जी.एस.ठाकुर
अदालत में मौजूद नारायणराव डांगरे पाटिल को फैसला सुनने के बाद चक्कर आने लगे। उनके अंगरक्षकों ने तुरंत उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया।
आधे घंटे बाद जब उन्हें होश आया तो उन्होंने कहा, "विक्रम के वकीलों को बुलाओ और उनसे हाई कोर्ट में अपील करने के लिए कहो।"
वकील आया और नारायणराव से बोला, "पाटिल, क्या तुम मेरी सलाह सुनोगे?"
"क्या?"
"बिल्कुल भी अपील न करें, उच्च न्यायालय सजा बढ़ाने का नोटिस जारी कर सकता है।"
"इसका क्या मतलब है?"
"तो, कारण बताइए कि विक्रम की सजा क्यों नहीं बढ़ाई जानी चाहिए, यह एक नोटिस है! मेरी राय में, सात साल की सजा बहुत हल्की है। यदि आप चाहें, तो कोल्हापुर के अपने विशेष विशेषज्ञों से आगे की सलाह ले सकते हैं।"
नारायणराव ने इस बारे में सोचा और कहा, "ठीक है। मैं कोल्हापुर जाऊंगा और इस पर चर्चा करूंगा और फिर निर्णय लूंगा।"

उस सुबह जब झुंजाराव खेत जाने की तैयारी कर रहे थे, तभी अचानक उन्हें एक फोन आया।

"हेलो, झुंजाराव, आप यहाँ क्यों आए हैं, महोदय?"

"हाँ, मैं बोल रहा हूँ! तुम कौन हो?"

मैं नारायणराव डांगरे पाटिल हूँ!

"मुझे गलती से फोन तो नहीं मिल गया, है ना?"

"नहीं, नहीं, ऐसा कुछ नहीं हुआ। मैंने ही आपको फोन किया था!"

"बताओ, अब तुम मेरे साथ क्या कर रहे हो?"

मैं बस आपसे सलाह लेना चाहता था!

"मुझसे परामर्श करें?"

"जी हां, आपके साथ!"

"मेरे घर के दरवाजे आपके लिए हमेशा खुले हैं, बस मुझे आने से पहले बता दीजिएगा।"

"आज ठीक रहेगा क्या?"

अपनी घड़ी देखते हुए सरकार ने कहा,

"अच्छा, चलो फिर, मैं खेत में आम तोड़ने जाना चाहता था। तुम्हारे आने और जाने के बाद मैं भी आ जाऊँगा!"

मैं दस से पंद्रह मिनट में वहाँ पहुँच जाऊँगा।

"ठीक है!"

स्टैंड पर फोन का रिसीवर रखते हुए झुंझरराव सोचने लगे। "परसों, जब विक्रम का केस चल रहा था, तो नारायणराव, जो मेरी कोई बात सुनने को तैयार नहीं थे, अचानक इतने अहंकारी कैसे हो गए? क्या मेरे पास आने के पीछे उनकी कोई 'साजिश' थी? देखते हैं, अगर आए तो चले जाएंगे, उनके आए बिना बहस करने का क्या फायदा?"

चीनी कारखाने की गाड़ी रंकाला स्थित मोरिया परिवार के घर के सामने रुकी। नारायणराव गाड़ी से उतरे और अंदर आए। झुंझरराव ने उनका स्वागत किया।

नारायणराव ने इसकी शुरुआत की थी।

मैंने तुमसे परसों कुछ कहा था, कृपया उसे पूरी तरह भूल जाओ!

झुंजाराव ने उनसे हाथ मिलाते हुए कहा,
"देखो, नारायणराव, मैं उस समय इसके बारे में भूल गया था। कुछ बातें मन में रखने के लिए नहीं होतीं, और इसीलिए इंसान मुसीबत में फंसता रहता है।"
"आपको हमारे प्रदर्शन का नतीजा समझ आ गया होगा?"
"हां, मैं उस समय पुणे में था!"
"आप उसकी सात साल की कठोर कारावास की सजा के बारे में क्या सोचते हैं?"
झुंजाराव कुछ गंभीर हो गए और बोले,
मुझे लगता है कि सात साल की सजा 'मध्यम' सजा है, न कि कोई कड़ी सजा।
"हमारे वकील भी यही बात कह रहे हैं।"
आजकल के बच्चों को समझ नहीं आता कि क्या करें!
"अब जब तुम यहाँ तक आ ही गए हो, तो क्या तुम मुझे सच बताओगे?"
"ज़रूर, बताओ!"
"माता-पिता होने के नाते, हम अपने बच्चों के दुर्व्यवहार के लिए जिम्मेदार हैं। आपने ही विक्रम को मनचाहा पॉकेट मनी दिया, आपने ही उसे उस उम्र में मर्सिडीज कार दिलाई जब उसे इसकी जरूरत नहीं थी। क्या आपने कभी यह जानने की कोशिश की है कि वह अक्सर कहां जाता है और किसके साथ रहता है?"
"यह एक गलती है!"
"हमारा संग्राम भी शादी से पहले बहुत शांत रहता था, लेकिन शादी की रस्में गले में बंधते ही एकदम सीधा हो गया। तुम्हें विक्रम से एक-दो साल पहले ही शादी कर लेनी चाहिए थी!"
अब इसे निकालने का क्या फायदा!
"अब उससे जल्द से जल्द छुटकारा पाने का कोई तरीका सुझाओ!"
झुंजाराव ने कहा, "उसे कुछ दिनों के लिए जेल में रहने दो। कम से कम शराब से तो छुटकारा मिल जाएगा!"
"हर कोई यही कहता है, लेकिन अंत में मैंने कहा कि मैं आप जैसे व्यावहारिक सज्जनों से सलाह लेने आया हूं।"

"ठीक है। तुम दिल खोलकर मेरे पास आए, मुझे अच्छा लगा। अब मेरी सलाह सुनो, विक्रम को हत्या के लिए दी गई सात साल की सज़ा ज़्यादा नहीं है। इसके अलावा, अगर विक्रम जेल में ठीक से व्यवहार करता है, तो जेलर उसके अच्छे व्यवहार की रिपोर्ट भेज सकता है। बेशक, विक्रम की सज़ा एक-दो साल कम हो सकती है। उसकी पढ़ाई-लिखाई कितनी हुई है?"

"कॉलेज छोड़े हुए दो साल हो गए हैं, और मैं अभी तक कॉलेज गया भी नहीं हूँ!"

"हाँ, अब उसे कॉलेज के अगले दो साल जेल में ही पूरे करने दो - इस उम्र में गलतियाँ करने पर हम उसे क्यों निकाल दें? उसे सुधरने दो। अगर यही तुम्हारा कहना है, तो मैं जेल में उससे मिलने जाऊँगा और उसे 'समझाऊँगा'!"

मैं आज आपके पास इसलिए आया हूँ क्योंकि अगर आप इसे हटा दें तो आप इससे निकलने का रास्ता ढूंढ सकते हैं!

"ठीक है, मैं आठ से पंद्रह दिनों में येरवडा जाऊंगा और उनसे मिलूंगा!"

"वह तो बहुत भावुक लड़का है! मुझे किसी और बात का डर लग रहा है!"

"कैसे?"

"वह आत्महत्या तो नहीं करेगा, है ना?"

"चिंता मत करो, नारायणराव, जैसे ही वह जेल से रिहा होगा, हम उसकी शादी करवा देंगे।"

"लेकिन इस पूरी रामायण के बाद, उसे बेटी कौन देगा?"

"बिल्कुल भी चिंता मत करो। लोगों की याददाश्त बहुत कमज़ोर होती है। आपको ऐसा इसलिए लग रहा है क्योंकि ये घटनाएँ हाल ही में हुई हैं। लेकिन चार-पाँच साल बाद लोग भूल जाएँगे कि विक्रम को सज़ा भी मिली थी। जब हमारे संग्राम का यशोमती से विवाह हुआ था, तब इतना हंगामा हुआ था। लेकिन आज, दो-तीन साल बाद, किसी को याद भी नहीं है!"

बातचीत के दौरान झुंझरराव बीच-बीच में अपनी घड़ी देख रहे थे। इसी बीच पद्मा सावंत वहां आईं और झुंझरराव के पैरों पर सिर रखकर बोलीं, "पापा, देखिए, मुझे एमएलजी में शिक्षक की नौकरी पाने का आदेश मिला है!"

उसे अपने पैरों से धक्का देते हुए झुंजाराव ने कहा, "ठीक है, जाओ अपनी बहनों और यशोमती को बताओ!"

नारायणराव ने पद्मा सावंत के बारे में सुना था, लेकिन आज उन्हें उन्हें करीब से देखने का अवसर मिला।

पद्मा के प्रवेश करने से पहले, झुंजाराव ने नारायणराव से कहा, “देखिए, विधवा होने के बाद उसकी शिक्षा सात साल तक बाधित रही। लेकिन वह यहाँ आई और मैंने उसे गरगोटी के बी.एड. कॉलेज में दाखिला दिला दिया।”

नारायणराव ने कहा, "सरकार, आप कई लोगों को इसी तरह मार्गदर्शन दे रही हैं। उस दिन मैंने गुस्से में जो कहा था, उसे भूल जाइए! अब मुझे उस पर पछतावा है।" नारायणराव ने हाथ जोड़ लिए।

झुंझरराव का व्यक्तित्व पहली नज़र में कुछ कठोर प्रतीत होता था। लेकिन जो लोग उनके साथ रहते थे, वे अक्सर इस भ्रम से मुक्त हो जाते थे। वे अत्यंत दयालु थे। वे बिना सोचे-समझे बोलने वालों की भी शांत मन से सुनते थे। वे अपने मन को किसी भी प्रकार से विचलित नहीं होने देते थे। समय के साथ, ऐसा बिना सोचे-समझे बोलने वाला व्यक्ति अपने किए पर पछतावा करने लगता था। उनके स्वभाव की बारीकियों को समझना किसी के लिए भी आसान नहीं था।

नारायणराव के जाने के बाद, वे मोटरहोम बाहर लाए और पद्मा अंदर बैठकर सरलाबाई और यशोमती से बातें कर रही थीं। यशोमती ने बच्चे के जन्म के बाद धीरे-धीरे घर के काम करने शुरू कर दिए थे। वाशी नाका की एक महिला बर्तन धोने आती थी। लेकिन सरलाबाई खाना खुद बनाती थीं। कभी-कभार शिवाजी पेठ की एक महिला खाने आती थी, लेकिन उसका बनाया खाना बहुत फीका होता था। सरलाबाई उसके सामने बैठकर उसे निर्देश देती थीं। फिर भी, उसके हाथों में स्वाद का कोई ज्ञान नहीं था। सरलाबाई ने तब से खाना बनाना छोड़ दिया। उन्होंने यशोमती से कहा,

“एक नौकरानी कभी नहीं सोचती कि उसके द्वारा बनाया गया खाना उसके अपने लोग खाएंगे।” धीरे-धीरे उसने यशोमती को खाना बनाना सिखाना शुरू किया। तब तक यशोमती बच्चे को जन्म दे चुकी थी। दो महीने के आराम के बाद, उसने फिर से अपने छोटे भाई-बहनों को घर के कामों में मदद करना शुरू कर दिया। उदगीर जैसे एक दूरदराज के कोंकणी गांव

में धनगर परिवार में जन्मी यशोमती ने थोड़े ही समय में मोर्या परिवार के रीति-रिवाजों और परंपराओं को अपना लिया था।
कार स्टार्ट करने से पहले, झुंजाराव ने पद्मा से पूछा, "तुम ड्यूटी पर कब आना चाहती हो?"
"अगले मंगलवार को हमारा डेट है!"
"तो अगर आज आपका कोई काम नहीं है, तो चलिए खेत पर चलते हैं, क्या आप आएंगे?"
"हाँ! मैं आऊँगा, मैं सरलक्कों को बता दूँगा।"
"अक्का, मैं पापा के साथ खेत में आम तोड़ने जा रही हूँ।"
"ठीक है, जाओ, आजकल कोई लड़ाई नहीं हो रही है।"
"संग्रामबल कहाँ है?"
मुझे भी नहीं पता, अपने पिताजी के बारे में सोचो!
"ठीक है, मैं रास्ते में पूछता रहूंगा!"
कार शिवाजी पुल पार करके रत्नागिरी रोड में प्रवेश कर गई।
झुंजाराव ने कहा, “पद्मा, पच्चीस साल पहले इस सड़क पर बिल्कुल भी यातायात नहीं होता था। लेकिन अब देखो, एक के बाद एक गाड़ियां चल रही हैं।”
इस सड़क पर यातायात बढ़ने का कारण क्या है?
इसके कई कारण हैं। एक कारण विशाल जनसंख्या है, जिसमें विलासिता के लिए पन्हाला जाने वाले लोगों की बढ़ती संख्या भी शामिल है!
"पापा, जब मैं छोटी थी, तो अपने माता-पिता के साथ पन्हाळा आई थी, और वहाँ का माहौल इतना शांत था कि कुछ माँगने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी। अब, जब हम परसों वहाँ गए, तो मैंने देखा कि पूरा पन्हाळा तबाह हो गया है! आसपास के पेड़ काट दिए गए हैं। जगह-जगह बंगले बन गए हैं। बीयर बार और होटल खुल गए हैं। जब ये सब होता है, तो शांति अपने आप भंग हो जाती है!"
"मैं भी पहले पद्मा नदी पर अपना दो या तीन कमरों वाला बंगला बनाना चाहता था, लेकिन अब मैं ऐसा नहीं चाहता!"
"अगर यह उस समय बना होता, तो मैं भी वहीं रुकता! गरगोटी गांव आज भी शांत है। गांव के लोग भी मिलनसार हैं। बाजार के दिनों में आसपास के गांवों से सब्जियां भरपूर मात्रा में आती

हैं! मानसून के चार महीनों को छोड़कर, उस गांव में जाकर चार दिन बिताना हमेशा अच्छा लगता है।"
बोलते हुए झुंजाराव ने कहा, "मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूं, यह थोड़ा संवेदनशील है।"
"बेशक, पूछिए!"
"पहले जब आप देशमुख से मिलते थे, तो कहते थे, 'देशमुख साहब, साहब को ये पसंद है, साहब को वो पसंद नहीं है,' पिछले छह-सात महीनों से आप 'सरमे' बन गए थे, लेकिन हाल ही में आपने देशमुख का नाम तक नहीं लिया है। ऐसा क्यों?"
"आपने मुझे पुणे जाकर मृणाल से मिलने को कहा था। तो मैं चला गया। उस बेचारे मृणाल ने बिना किसी झिझक के मुझे देशमुख प्रताप से मिलवा दिया। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई व्यक्ति इतना अनजान मुखौटा पहनेगा!"
"मास्क की बात तो छोड़िए, उसने अपने वैवाहिक जीवन के बाकी हिस्से के बारे में क्या कहा?"
"यह तो बहुत भयानक था पापा! मृणाल को अपनी यौन विकृति का बुखार चढ़ गया था। या तो उसे शारीरिक रूप से चोट पहुँचाए बिना उसकी कामेच्छा जागृत नहीं होती थी, और एक बार जागृत हो जाने पर, उसके अंदर का दरिंदा जाग उठता था। उसके सारे मुखौटे उतर जाते थे। वह बिस्तर पर बुरी तरह तड़पती थी। मृणाल ने मुझे बताया, 'कई बार मेरा मन करता था कि मैं उसकी जान ले लूँ! कभी-कभी तो आत्महत्या करने का भी मन करता था! खैर, मैं इन बातों के बारे में किसी को बता भी नहीं सका। मैंने सात महीने तक वह यातना सहन की, और एक रात मैं अमरावती छोड़कर चला गया। मैं पहले नागपुर आया। मेरी प्रेमिका वहाँ रहती है। मैं उसे भी सब कुछ नहीं बता सका। मैंने उससे कहा, 'मुझे तुरंत पुणे जाना है', उसने मुझे एक गाड़ी दी और भेज दिया। पुणे में मेरे अचानक आने पर मेरे पिता ने मुझसे पूछा, 'तुम इतनी अचानक कैसे आ गए? न कोई फोन आया, न कोई चिट्ठी?'"
मृणाल ने कहा, 'कारण तुम्हें बाद में पता चल जाएगा!' मुझे भी प्रो. देशमुख के बारे में तभी समझ आया जब तुमने मुझे पुणे जाकर मृणाल से मिलने के लिए कहा।'

"हां, मैंने जानबूझकर तुम्हें जाने को कहा था, क्योंकि औरतें सिर्फ दूसरी औरतों से ही अपने दिल की बात कहती हैं। मृणाल ने तुम्हें जितनी स्पष्टता से बताया, उतनी स्पष्टता से वह मुझे नहीं बता पाती! तो क्या देशमुख ने उसे वापस लाने की कोई कोशिश की?"
जब वह खुद पुणे आया, तो मृणाल ने उससे कहा, 'मुझे कड़े शब्दों में तलाक दे दो, वरना मैं तुम्हारा पर्दाफाश कर दूंगी। मैं तुम्हारा असली चेहरा दुनिया के सामने उजागर कर दूंगी! मैं अदालत में सबूतों के साथ साबित कर दूंगी कि तुमने मुझे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया है।'
"शाबाश! हमें ऐसी बेटियाँ चाहिए! नहीं तो, पति चाहे कितनी भी परेशानी खड़ी करे, बेटियाँ हमेशा वहीं बैठकर रोती रहती हैं!"
"लेकिन पापा, कोई विश्वास नहीं करेगा कि जो इतनी धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलता है, जो इंग्लैंड से लौटा है, वह प्रो. देशमुख जैसा है। अच्छा हुआ कि आपने मुझे मृणाल से मिलने की सलाह दी!"
"मुझे जाने दो, लेकिन क्या मृणाल का तलाक हो गया?"
"हां, उनके पिता करेंगे! 'चूंकि मृणाल के साथ मेरे वैचारिक मतभेद कभी हल नहीं होंगे, इसलिए मैं उससे अपना विवाह समाप्त कर रहा हूं,' उन्होंने कहा। अंततः, अदालत ने तलाक मंजूर कर दिया!"
"तो क्या मृणाल ने कभी पुनर्विवाह के बारे में सोचा है?"
"वो कहती है ना। लेकिन मुझे शक है कि उसका कोई 'बॉयफ्रेंड' है!"
"तुम्हारा इससे क्या मतलब है?"
"जब मैं वहां था, एक सज्जन ने मुझे तीन-चार बार फोन किया। फोन पर मृणाल उनसे कह रहा था, 'दो दिन इंतजार करो, मेरी एक गर्लफ्रेंड है! मैं तुमसे अभी जल्द ही नहीं मिल पाऊंगा!'"
"मैं समझ गया। यह तो स्वाभाविक ही है! मृणाल की उम्र लगभग आपकी ही होगी, है ना?"
"हाँ, मेरे और उसके जन्म में सिर्फ़ एक दिन का अंतर है, मेरा जन्म 7 जुलाई को हुआ था और उसका 8 जुलाई को! लेकिन पापा, आपकी वजह से मुझे एक गुणी, बुद्धिमान और विनम्र

दोस्त मिली है। एमएलजी में शामिल होने के बाद मैं उसे चार दिन अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित करूँगी।"

जैसे ही कार केरल घाट पर चढ़ने लगी, झुंजाराव ने कहा, "शाबाश, तुम्हें कोल्हापुर में ही अध्यापन की नौकरी मिल गई। मेरी तरफ से एक बड़ी जिम्मेदारी पूरी हो गई है।"

"पापा, आपने संग्राम के बच्चों को कहाँ भेजा?"

"देखो पद्मा, पुष्पा हत्याकांड चल रहा था ना? संग्राम चश्मदीद गवाह के तौर पर गवाही दे रहा था। नारायणराव डांगरे पाटिल ने उसे गवाही देने से रोकने की पूरी कोशिश की। लेकिन संग्राम का मुकर जाना नामुमकिन था। विक्रम को सज़ा मिलने के बाद नारायणराव कायरों की तरह बर्ताव करने लगे और संग्राम से बदला लेने की कोशिश करने लगे, इसलिए मैंने उसे बेंगलुरु में उज्ज्वला देसाई के पास भेज दिया। तुम उज्ज्वला को जानती हो ना?"

"वह तुम्हारी सौतेली बहन है, है ना? मैं उससे कभी व्यक्तिगत रूप से नहीं मिली, लेकिन उसकी एक बड़ी फैक्ट्री है। सरलाक्का ने मुझे पहले बताया था कि पास में ही उसका एक कॉफी बागान भी है।"

"अब सब कुछ सुलझ गया है। नारायणराव कल खुद मेरे पास क्यों नहीं आए?"

"जी हाँ, कैसा लगा, पापा?"

"नारायणराव और मेरे बीच ऐसी कोई दुश्मनी नहीं थी। मैंने कभी उनकी राजनीति में दखल नहीं दिया। अब, संयोग से संग्राम उस मामले में फंस गया। काले फौजदार और उप पुलिस अधिकारी वागले की निष्पक्ष जांच के कारण उसे रिहा कर दिया गया। लेकिन उसे विक्रम के खिलाफ गवाही देनी पड़ी। नारायणराव को यह सब बाद में पता चला और वे अनिच्छा से मेरे पास आए। भले ही विक्रम को सात साल की सजा हुई हो, वह 4-5 साल में रिहा हो जाएगा! खैर।"

अंबवाड़ा का मोड़ नज़दीक था। झुंझरराव की वैन को देखकर मजदूर गाड़ी की ओर दौड़ पड़े।

यशोमती ने कानून की पढ़ाई की। वह पहले ही स्नातक हो चुकी थी। झुंजाराव चाहते थे कि वह अंबावाड़ी में ही रहें और पन्हाला और मलकापुर की अदालतों में वकालत करें। हालांकि, झुंजाराव स्वयं अंत तक कानून की परीक्षा में बैठने में असमर्थ रहे। संग्राम तो स्नातक भी नहीं हो पाए थे। उन्हें इस बात का संतोष था कि कम से कम यशोमती ने उनकी दबी हुई इच्छा पूरी कर दी।

बेबीचंदा की शादी के अवसर पर फर्नांडीस ने रेजिडेंसी क्लब परिसर में एक भव्य स्वागत समारोह आयोजित किया। उन्होंने एक पुलिस बैंड मंगवाया। बिस्मिल्लाह गाने के लिए बनारस से शहनाई वादक को बुलाया। कोल्हापुर में फर्नांडीस के कई मित्र थे। स्वागत समारोह में कुल मिलाकर सरकारी कर्मचारी उपस्थित थे। जिस प्रकार राजस्थान से रुमाली रोटी और राजस्थानी मुर्गी बनाने वाले रसोइये बुलाए गए थे, उसी प्रकार गोवा की विशेष मछली बनाने वाले गोमंतक रसोइये भी बुलाए गए थे। फर्नांडीस कोल्हापुरी पगड़ी बांधकर मेहमानों का स्वागत कर रहे थे। बेबीचंदा नीले पंजाबी परिधान में जोसेफ के साथ मंच पर थीं। चूंकि फर्नांडीस ने निमंत्रण में केवल उपस्थिति में ही आशीर्वाद देने की बात कही थी, इसलिए सद्भावना के अलावा कोई कुछ नहीं लाया था। इस बात का कोई संकेत नहीं था कि यह एक अंतरजातीय विवाह है। सुशीलाबाई और सरलाबाई एक तरफ बैठी थीं। पद्मा समारोह में थोड़ी देर से पहुंचीं।

झुंजाराव बेबीचंदा के करीबी रिश्तेदार थे, इसलिए वे पारंपरिक पोशाक में आए थे - सिर पर पगड़ी, गले से बंद रेशमी कोट और पैरों में पैंट। मंगू केसरिया पटका, कोट और पैंट पहने हुए दिखाई दिए। फर्नांडीस के कुछ रिश्तेदार भी समारोह में उपस्थित थे।

जो लोग आ-जा रहे थे, वे झुंझरराव का अभिवादन कर रहे थे और पार्टी में शामिल होने से पहले उनसे औपचारिक रूप से बात कर रहे थे। कोल्हापुर के जाने-माने डॉक्टर, वकील, पुलिस अधिकारी और पुराने जागीरदार सभी दूल्हा-दुल्हन को आशीर्वाद देने के लिए मंच पर कतार में खड़े थे।

क्लैरिनेट की धुनें बंद हो जातीं, फिर बैंडमास्टर खड़े होकर अपनी छड़ी उठाते और पुलिस बैंड को अंग्रेज़ी धुन बजाने का निर्देश देते। स्वादिष्ट भोजन के बाद 'कसाटा' आइसक्रीम परोसी गई। समारोह रात करीब 11:30 बजे तक चला।

झुंजाराव को हाल ही में एकांत पसंद आने लगा था। वह केवल भोजन के लिए ही तीसरी मंजिल से नीचे आते थे। यहाँ तक कि दोनों बार चाय भी उन्हें ऊपर ही लानी पड़ती थी। उन्होंने खेतों में जाना भी कम कर दिया था। शिकार करना भी लगभग बंद हो गया था।

अब उनके पास बस एक ही काम बचा था। संग्राम का बेटा छोटा प्रताप। वह कभी-कभी झुंझरराव से पापा के बारे में पूछता था, आपने अब तक कितने बाघ मारे हैं, कैसे और कहाँ मारे हैं, वगैरह। झुंझरराव हमेशा उसके साथ नरमी से पेश आते थे।

संग्राम कृषि पर विशेष ध्यान देते थे। यशोमती भी समय-समय पर खेत में आकर रहती थीं। वे पन्हाला और मलकापुर की अदालतों में नियमित रूप से जाती थीं। उस क्षेत्र की पहली महिला अधिवक्ता होने के कारण लोग उनकी सराहना करते थे। महिलाओं के भरण-पोषण के मामलों को संभालने में उन्हें विशेषज्ञ माना जाता था। वे परित्याग के मामलों पर भी विशेष ध्यान देती थीं, अर्थात् पति द्वारा पत्नी को छोड़ देने और तलाक न लेने पर दूसरी पत्नी को द्विविवाह कानून के तहत अदालत में घसीटने के मामलों पर भी।

हाल ही में संग्राम की मॉरिस कार उनके पास थी। वह उसे खुद चलाती थीं। काम में उनकी एक महिला सहयोगी थीं। कभी-कभार जब वह कोल्हापुर जाती थीं, तो झुंझरराव उनसे सवाल करते थे। उस समय वे उन्हें कुछ बुनियादी सलाह देते थे। 'यशोमती, मैंने तुम्हें वकील सिर्फ इसलिए नहीं बनाया कि तुम इस पेशे में पैसा कमा सको, बल्कि इसलिए भी कि गरीब और कमजोर महिलाओं पर हो रहे अन्याय और अत्याचार को रोकने में उनकी मदद कर सको। सौभाग्य से, संग्राम अब खेती पर बहुत ध्यान दे रहा है। अगर वह अपनी पचास एकड़ जमीन पर अच्छी तरह खेती करे, तो उसके घर के खर्चे अच्छे से चलेंगे। तुम्हें बचपन से ही गाय-भैंस पालने का शौक रहा है। खेत में एक शेड बनाकर दो-तीन जाफराबादी भैंस पालने में कोई दिक्कत नहीं है। साथ ही, अगर तुम 155 लेगहॉर्न या रेड रोड आइलैंड जैसी मुर्गियां पालती हो, तो संग्राम का समय भी अच्छा बीतेगा। दरअसल, मैं ये सब काम जवानी में करना चाहती थी। लेकिन किसी न किसी काम में उलझती रही। बहुत सी बातें मन में अधूरी रह

गईं।' अगर मैं इस नजरिए से देखूं तो मुझे अभी 'रिटायर' हो जाना चाहिए। हर चीज से रिटायर हो जाना चाहिए!

कभी-कभी झुंजाराव यशोमती से कुछ कहते थे, और यशोमती कहती थीं, "पापा, आपकी सेहत अभी भी अच्छी है। आप जो चाहें कर सकते हैं! आप 'सेवानिवृत्ति' की बात क्यों करते रहते हैं?"

उन्होंने मुस्कुराते हुए अपनी मूंछों पर हाथ फेरा और कहा, "यशोमती, हालांकि अभी कुछ काम बाकी हैं, फिर भी मैं संतुष्ट हूं। मैंने अपनी कंपनी में आए लोगों की समस्याओं को अपनी पूरी क्षमता से हल किया है। मैं तुम्हें विस्तार से नहीं बताऊंगा। लेकिन हाल ही में एक विचार मेरे मन में बार-बार आ रहा है!"

"कौन सा?"

मैं छिप जाऊंगा!

"इसके बारे में सोचना भी मत, पापा। हम आपको कोई परेशानी नहीं देंगे और न ही आपसे कुछ उम्मीद करेंगे।"

"आप इस 'लेक व्यू' बंगले में हैं, यही बात हम सभी को सहारा देती है।"

हाल ही में झुंझरराव ने शराब पीना भी छोड़ दिया था। उनका खान-पान भी सादा था। वे शाम का भोजन लगभग न के बराबर ही करते थे।

यशोमती को पूरा यकीन था कि झुंझरराव जो भी उसके मन में लाए, वह उसे किए बिना नहीं रहेगी। इसलिए वह बार-बार नीचे बैठी सरलाबाई को बताती रहती थी,

"मम्मी, पापा की बात ध्यान से सुनो। उन्होंने हाल ही में मुझसे गुमनाम जीवन जीने के बारे में कई बार बात की थी। पिछले दिन उन्होंने मुझसे कहा, 'इंसान को तभी तक जीना चाहिए जब तक वह सक्रिय हो, दूसरों पर बोझ बनने तक जीना ठीक नहीं है!'"

"मैं क्या करूँ, महोदया? उन्होंने पिछले आठ दिनों से मुझसे बात तक नहीं की है। कम से कम अपने पिता को फोन तो कर दीजिए! उनके आने पर उन्हें थोड़ा बेहतर महसूस होता है!"

उस दिन मंगू रंकाला स्थित बंगले में रुका हुआ था। वे आधी रात तक उससे बातें करते रहे। वे लगभग 1:30 बजे सो गए। हमेशा की तरह, मंगू ने अपनी कमरबंद उतार दी और एक तकिया लेकर कंबल पर सो गया।

सुबह के तीन बज रहे होंगे। शिवाजी पेठ में मुर्गे बांग देने लगे थे। मंगू चाहे कितनी भी देर सोए, सुबह साढ़े तीन बजे के आसपास उठ जाता था। हमेशा की तरह, वह कंबल पर बैठ गया। उसकी नज़र झुंझरराव के पलंग पर पड़ी। झुंझरराव पलंग पर नहीं थे। वह जल्दी से सीढ़ियों से नीचे भागा। उसने सरलाबाई को जगाया।

"वैनी साहब, सरकार कहीं नजर नहीं आ रही!"

"क्या तुम्हें यह दिखाई नहीं दे रहा? ऐसा कैसे हो सकता है? क्या तुमने बाथरूम में देखा?"

“बगिता जी! आप क्यों नहीं जातीं!” मंगू चिल्लाती रही, “सरकार, सरकार।” लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। जल्द ही सुबह हो गई। सरलाबाई ने अंबवाद को फोन किया और संग्राम और यशोमती को सूचना दी। वे दोनों आधे घंटे के भीतर आ गए। कभी-कभी, सुबह-सुबह, झुंझरराव राधानगरी रोड पर स्थित ‘पुइखाड़ी’ नामक पहाड़ी पर टहलने जाते थे। संग्राम भी अपनी मॉरिस कार में वहाँ आते थे। लेकिन तभी यशोमती अपने सिसकियों को रोक नहीं पाईं।

पिताजी ने आखिरकार वही किया जो उन्होंने कहा था। उन्होंने गुमनामी में रहने की स्वीकृति स्वीकार कर ली।

संग्राम को फर्श पर एक मोटा लट्ठा मिला। यह झुंझरराव द्वारा घर छोड़ने से पहले लिखा गया एक लंबा पत्र था। वह इसे नीचे ले आया। उसने यशोमती और सरलाबाई के सामने इसे पढ़ना शुरू किया।

आज मैं अपने कई सालों के सपने को साकार कर रहा हूँ। मैं छिपने जा रहा हूँ। मैं हर तरह से संतुष्ट हूँ। आप सोच सकते हैं, मैं क्यों छिप रहा हूँ? कुछ बातें समझ से परे होती हैं। लेकिन यह मत सोचिए कि घर छोड़ने से मैं जीवन से ऊब गया हूँ। मेरे मन का 'घुमंतू' अब जाग उठा है। चिंता मत कीजिए कि घर छोड़ने के बाद मैं कहाँ रहूँगा, कहाँ खाऊँगा, कहाँ सोऊँगा। इस देश में अनगिनत लोग हैं जिनके पास न तो भोजन है, न वस्त्र, न आश्रय। फिर भी वे जीते हैं, है ना? हमारा देश 'असेतु हिमाचल' की तरह फैला हुआ है। मैं बिना कोई काम छोड़े इसे देखना चाहता हूँ। समुद्र तट मेरी पसंदीदा जगह है। मैं देवगढ़ जैसी किसी ऊँची चट्टान पर घंटों बैठकर नीले सागर को निहारना चाहता हूँ। मैंने कई बार यह महसूस किया है कि हम कितने

तुच्छ हैं, यहाँ तक कि सागर को देखकर भी। मैंने कई बार अंधेरी रात में लेटकर ग्रहों और तारों को निहारने का असीम आनंद अनुभव किया है।
लेकिन किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं भागकर कहीं छिप गया हूँ। अब, जो लोग मेरे जाने से दुखी होंगे, उनके लिए मेरे मन में ये चार शब्द हैं:-
श्रीमती सरलादेवी, आप आज तक मेरी साथी रही हैं, मेरे सुख-दुखों में मेरी सहेली रही हैं। जब मेरी परिवहन कंपनी बंद हो गई, तो हमें थोड़ी आर्थिक तंगी महसूस होने लगी। लेकिन सरला, आपने इसके बारे में किसी को बताया तक नहीं। वह 'आपातकालीन नसबंदी' सर्जरी जो आपने करवाई थी, जिससे बेटी पाने की आपकी इच्छा हमेशा के लिए समाप्त हो गई। परिणामस्वरूप, आपकी कामेच्छा भी समाप्त हो गई, लेकिन मेरे साथ अन्याय न करते हुए, आपने मुझे दूसरा परिवार शुरू करने की सलाह दी। भला किसे इतनी सौभाग्यशाली पत्नी मिल सकती थी जो मुझे ऐसी सलाह दे? बाद में, पद्मा सावंत से मेरी मुलाकात हुई। हमारी दोस्ती भी गहरी हो गई। लेकिन आपने इसे बड़ी सहजता से स्वीकार किया! मैं पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता, लेकिन अगर ऐसा कुछ है, तो काश मुझे फिर से आप जैसी पत्नी मिल जाए!
मेरे दूसरे वारिस संग्राम! तुमने कभी मेरी इच्छा के अनुसार काम नहीं किया, पढ़ाई ठीक से नहीं की, लेकिन साथ ही किसी भी चीज़ के आदी भी नहीं हुए। घर में रम से लेकर स्कॉच तक हर तरह की शराब थी, लेकिन मेरी अनुमति के बिना तुमने उन बोतलों को छुआ तक नहीं। अब, अगर तुम्हारे दोस्त बहुत ज़िद करते, तो तुम बस एक गिलास बीयर पीते। विक्रम डांगरे ने नशे में धुत होकर उस नर्तकी/अभिनेत्री की हत्या कर दी, उस हत्या का साया तुम पर भी पड़ा था। लेकिन तुम्हारी किस्मत से, या मेरी कृपा से, पुलिस को तुम्हारा नाम चार्जशीट से हटाना पड़ा। अब मुझे पूरा यकीन है कि अब से तुम बिना पूरी जानकारी लिए किसी से दोस्ती नहीं करोगे। इसी तरह, यशोमती जैसी सौम्य पत्नी पाकर तुम बहुत भाग्यशाली हो। लेकिन जब वह मोर्चे पर बहू बनकर आई, तो कितना बड़ा तूफान खड़ा हो गया था। सिर्फ मेरी वजह से ही वह तूफान शांत हुआ।
यशोमती! तुम मंगू की पुत्री हो, जिसे बचपन से ही मातृत्व का सुख प्राप्त था। लेकिन सृष्टिकर्ता ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ननद सरले जैसी स्नेहशील सास की योजना बनाई थी। भले ही उसने

विवाह से पहले तुम्हारी नाक और आंखें तोड़ दी हों, लेकिन बाद में उसने तुम्हें कभी बहू की तरह नहीं माना। मैंने तुम्हारी जन्म के समय उसके जीवन में आई उथल-पुथल को अपनी आँखों से देखा है। तुमने मुश्किल से तीन-चार साल की मराठी सीखी, वो भी उदगीर के धनगर वाडा के एक जर्जर स्कूल में। लेकिन जब मैं तुम्हें पद्मा की सहेली बनाकर राजारामपुरी लाया, तो तुमने दृढ़ता से अपनी पढ़ाई जारी रखी। आज तुम स्नातक हो चुकी हो और वकील की डिग्री भी प्राप्त कर चुकी हो। तुमने वकील बनने की मेरी लंबे समय से चली आ रही इच्छा पूरी कर दी। जब संग्राम को उस हत्या के मामले में गिरफ्तार किया गया था, तब तुमने अभी-अभी बच्चे को जन्म दिया था, लेकिन तब भी तुम दृढ़ता से कह रही थीं कि वह (संग्राम) कभी हत्या जैसा कृत्य नहीं करेगा। तुम्हारे विवाह समारोह के साक्षी उस शाही समारोह को जीवन भर नहीं भूलेंगे। छत्रपति और इंदौर के महाराजा की विशेष उपस्थिति ने समारोह को विशेष महत्व प्रदान किया।

मंगू! मैं तुमसे सच कहूँ, मैं पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मंगू और मेरे बीच सदियों पुराना रिश्ता है। उस रात! मैं उदगीर में मंगू की झोपड़ी के बाहर एक पलंग पर सो रहा था। मंगू मेरी एक आदत जानता था। मैं मच्छरदानी के बिना नहीं सो सकता। इसलिए उसने एक लंबी रस्सी से मेरी पलंग के चारों ओर मच्छरदानी बाँध दी थी। यशोमती, या यूँ कहें कि उस समय शेवंता ने उस रात जंगली मुर्गे का स्टू बनाया था। मैंने डेढ़ पेग रम पी थी। मैंने उस दिन मंगू को भी थोड़ी रम दी थी। मैं सो गया। आधी रात के बाद, हल्की हवा चली, मच्छरदानी के जाल से महसूस हो रही थी। दूर, बुलबुलें शहनाई बजा रही थीं। सामने के पेड़ पर असंख्य जुगनू एक साथ चमक रहे थे और बुझ रहे थे। उस स्वर्गिक वातावरण में सोने से पहले, दो अशुभ घटनाएँ घटीं। एक चूही चीखी। उसके बाद, धनगर बस्ती के काले कुत्ते भौंकने लगे। मंगू ने उसे भगा दिया। लेकिन बेचारा मंगू उन दो घटनाओं से बहुत परेशान हो गया था। उसे लगा कि कुछ बुरा होने वाला है। और आधी रात को तेंदुए ने मुझ पर हमला कर दिया। अगर एक पल की भी देरी होती, तो तेंदुआ मेरी खोपड़ी तोड़ देता। लेकिन मंगू ने सूझबूझ से काम लिया और अपनी हंसिया से तेंदुए की खोपड़ी तोड़ दी। मेरी जान बच गई।

मुझे अपने देश के वन विभाग के लोगों पर बहुत दया आती है। मंगू के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था, जिसने मेरी जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली थी। बाद में, उसे

बरी कर दिया गया। सब कुछ ठीक हो गया। वे खालें हमारे पुराने घर में बने शिकारगाह में रखी हैं। दरअसल, मुझे वह घटना आज भी याद है, जो किसी उपन्यास की कहानी जैसी लगती है।

मंगू और मैंने उस घटना से अपनी वफादारी का बंधन नहीं तोड़ा। हमारे बच्चों ने भी मंगू से अपना खून का रिश्ता तोड़ दिया। उस समय वह यशोमती नहीं, शेवंता थी। हमारे उससे संबंध बने और वह गर्भवती हो गई। हमने संग्राम की शादी भी बेलगाम की एक लड़की से तय कर दी थी। लेकिन जब मंगू शेवंता को लेकर रोते हुए मेरे पास आई, तो मुझे पूरी सच्चाई पता चल गई। तब मैंने बिना देर किए संग्राम की तय शादी तोड़ दी। संग्राम को शेवंता से शादी करने के लिए मजबूर होना पड़ा। लेकिन कुछ बातें घटित होने पर उचित नहीं ठहराई जा सकतीं। लेकिन बाद में हम सभी को लगा कि किसी और परिवार में हमें इतनी गुणी, सुंदर और नेक स्वभाव वाली बहू नहीं मिलती। खैर, अब यह इतिहास की बात है।

श्रीमती पद्मा सावंत: पद्मा, तुम सलाह लेने आई हो, सचमुच मुझसे प्यार कर बैठी हो। जब तुम गरगोटी में बी.एड की पढ़ाई कर रही थी, तब देशमुख नाम का एक बदमाश तुम पर अपना जादू चला रहा था। लेकिन सौभाग्य से, तुम्हें बहादुर थुबे की मौसी मृणाल से उसकी असलियत पता चल गई। पद्मा को समय रहते ही सतर्क कर दिया गया। अब उसे श्थु हाई स्कूल में नौकरी मिल गई है। उसे किसी विधवा और संस्कारी शिक्षक से शादी कर लेनी चाहिए। मेजर शिवराम सावंत असमय ही चले गए, लेकिन वे बहुत बुद्धिमान रहे होंगे। उन्होंने पहले ही लिख रखा था कि उनके बाद पद्मा को कैसे जीवन यापन करना चाहिए।

अब सुशीला दफला और उनकी बेटी बेबीचंदा ही बची हैं। सुशीला को मामूली भत्ता मिलता था। लेकिन उनके हाथों में गजब का हुनर है। जरी की साड़ियों पर कर्नाटक कढ़ाई करने में उनका कोई मुकाबला नहीं। साथ ही, सर्दियों में वे अच्छी ऊन से स्वेटर बुनती हैं। मैं उनके लिए शिमला से स्वेटर बुनने की मशीन लाया था।

बेबीचंदा शर्मीली और संकोची है, लेकिन प्यार में पड़ने पर ऐसी शर्मीली लड़कियां भी कुछ भी करने की हिम्मत कर लेती हैं। जोसेफ मालाबारी भी बहुत सुंदर और प्रतिभाशाली लड़का है। हम फर्नांडीस को 'मालाबारी' कहकर बुलाते थे। उसने कई साल कोल्हापुर में बिताए हैं। उसमें एक सच्चे कुलीन परिवार की संस्कृति झलकती है।

मेरा पोता प्रताप बहुत बुद्धिमान और समझदार है। एक दिन दोपहर में वह मुझसे पूछने आया, “डोंगरची मैना” का मतलब क्या होता है? मैंने उससे कहा, “तुम्हें अपनी बड़ी माँ से पूछना चाहिए।” फिर वह सरला के पास गया। सरला ने कहा, “तुम्हें अपने पापा और मम्मी से पूछना चाहिए।” लेकिन उनमें से कोई भी उसे नहीं बता सका। जैसे-जैसे वह बड़ा होगा, वह समझ जाएगा। “डोंगरची मैना” इन दो शब्दों ने हमारे परिवार को हिलाकर रख दिया।

ये मेरे सबसे करीबी साथी हैं। कुछ दिनों तक मैं दुविधा में रहा कि इन सबको अचानक छोड़ दूं या नहीं। लेकिन साथ ही, मैंने सोचा, 'अभी नहीं तो कभी नहीं।' फिर मैंने फैसला कर लिया। मेरी ये चिट्ठी पढ़कर किसी को आंसू नहीं बहाने चाहिए। भले ही मुझ पर कितनी ही मुसीबतें आई हों, मैंने कभी आंसू नहीं बहाए। दुनिया बहुत बड़ी है। समय के साथ कोई ये भी नहीं भूलेगा कि कोई झुंझरराव मोरे बन गया था। खैर।

“गुड बाय, टु ऑल ऑफ यू ऽऽ”

0-0-0-0

***** समाप्त *****

sjeet